पञ्चवर्षीय विकास-योजना के अन्तर्गत : पुराणानुशीलन

पुराण-विषयानुक्रमणी

प्रथम भाग

[राजनीतिक]

पुराण-विषयानुक्रमणी

प्रथम भाग

[राजनीतिक]
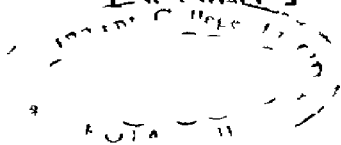
डॉ० राजबली पाण्डेय, एम० ए०, डी० लिट्.
प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व
तथा
प्रिंसिपल
भारती महाविद्यालय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी
सं० २०१४ वि०, १९५७ ख्रिष्टीय

प्रकाशक
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रथम संस्करण – १००० प्रतियाँ
सं० २०१४ वि०, १९५७ ख्रिष्टीय
मूल्य १५)

मुद्रक
शारदा मुद्रण, काशी

प्रस्तावना

भारतीय वाङ्मय मे पुराण-साहित्य का बहुत ही महत्त्वपूर्ण और ऊँचा स्थान है। अथर्ववेद[1] तो पुराण को अन्य वैदिक संहिताओं का समकक्ष समझता है। उसके अनुसार ऋक्, साम, छन्द और पुराण सभी यजुष् (यज्ञविधि) के साथ उत्पन्न हुए। ब्राह्मण-ग्रन्थों मे तो पुराण को वेद ही कहा है। शतपथ ब्राह्मण[2] मे अध्वर्यु यह कहते हुए पुराण की प्रशंसा करता है कि "पुराण वेद ही है। वह यही है।" उपनिषदों[3] में इस बात का व्याख्यान किया गया है कि महाभूत (ब्रह्म) के निःश्वास से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वाङ्गिरस्, इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषद्, श्लोक, सूत्र, अनुव्याख्यान, व्याख्यान ये सब निकले। छान्दोग्योपनिषद्[4] मे तो इतिहास-पुराण को पंचम वेद ही माना गया है। किन्तु उपर्युक्त कथनों से यह नहीं समझना चाहिए कि जिस "पुराण" का उल्लेख वैदिक साहित्य में है वह परवर्ती अष्टादश पुराण हैं। परन्तु यह सत्य है कि उसका समावेश अष्टादश पुराणों मे हो गया। इतना ही नहीं, भारतीय परम्परा का यह दावा है कि पुराण वैदिक साहित्य के ऊपर व्याख्यान और उपाख्यान हैं और इनकी सहायता के बिना आज वैदिक साहित्य समझा नहीं जा सकता :

यो विद्याच्चतुरो वेदान्साङ्गोपनिषदो द्विजः।
न चेत्पुराणं संविद्यान्नैव स स्याद्विचक्षणः॥
इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।
बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति॥

वायु० १।२००-१
पद्म० ५।२।५०-२
शिव० ५।१।३५

---

१ ऋच. सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिविदेवा दिविश्रितः॥ अथर्ववेद ११।७।२४

२ अध्वर्युस्तार्क्ष्यो वै पश्यतो राजेत्याह—पुराणं वेदः सोऽयमिति किञ्चित् पुराणमाचक्षीत।
शतपथ० १३।४।३।१३

३ बृहदारण्यक० २।४।१०, तुल० शतपथ० १४।६।१०।६

४ सहोवाच ऋग्वेद भगवोऽध्येमि यजुर्वेद सामवेदमथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम्।
छान्दोग्य० ७।१।१

(जो द्विज अङ्गों और उपनिषदों के साथ चारों वेदों को जानता है, किन्तु पुराण को सम्यक् प्रकार से नहीं जानता है, वह विचक्षण नहीं हो सकता। इतिहास-पुराण के द्वारा वेद का उपबृंहण (संवर्धन=अध्ययनाध्यापन) करना चाहिये। अल्पश्रुत से वेद डरता है कि यह मुझ पर प्रहार करेगा।)

पुराण ने कालक्रम से सम्पूर्ण वैदिक साहित्य के साथ अन्य नवोदित शास्त्रों को भी अपने विशाल प्राङ्गण में स्थान देना प्रारम्भ किया। पुराणों ने जब अपना परवर्ती पौराणिक स्वरूप ग्रहण किया तब इनमें निम्नलिखित विषय प्रविष्ट हुए।

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥ वायु० ४।१०

[सर्ग (सृष्टि-विज्ञान), प्रतिसर्ग (सृष्टि के अन्तर्गत विकास, लय और पुनः सृष्टि), वंश (देवता और ऋषियों की वंशावली), मन्वन्तर (चतुर्दश मनुओं का काल-विभाजन और घटना-वर्णन) तथा वंशानुचरित (राजवंशों का इतिहास), ये पुराणों के पञ्चलक्षण (विशिष्ट विषय) हैं।] वैदिक संहिताओं के समान ही पौराणिक साहित्य का संघटन भी प्रारम्भ हुआ। परम्परा के अनुसार वेदव्यास ने वैदिक संहिताओं को इनका वर्तमान रूप दिया। महाभारत-काल में वेदव्यास ने ही पुराणों की रचना की ऐसा माना जाता है। यदि यह सर्वथा सत्य न भी हो तो भी यह मानने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती कि प्रायः इसी समय प्राचीन पौराणिक परम्परा का संकलन और सम्पादन भी हुआ और इनके मुख्य विषय उपर्युक्त पाँच थे।

पुराणों में अपने विस्तार की अनन्त शक्ति थी। 'पुराण' का एक अर्थ था पुरा (पुराना)+ नव (नया)। इसके अनुसार प्रत्येक आनेवाले युग में पुराणों में नयी सामग्री जुड़ती गयी। इससे केवल पुराणों के कथा-भाग में ही वृद्धि नहीं हुई, अपितु विषय की दृष्टि से भी इनमें नये विषयों का समावेश हुआ। देश में प्रचलित जितने ज्ञान-स्रोत थे, इन सभी को यथासंभव आत्मसात् कर पुराणों ने विशाल संहिता का रूप ग्रहण किया। विष्णुपुराण में पुराणों के विस्तार और विकास का संकेत निम्नलिखित प्रकार से किया गया है :

"इसके पश्चात् पुराणार्थ के विशेषज्ञ वेदव्यास ने आख्यान, उपाख्यान, गाथा और कल्प-शुद्धि के सहित पुराण-संहिता को रचा। रोमहर्षण सूत व्यास जी के प्रसिद्ध शिष्य हुए। महामति व्यास ने इनको पुराण-संहिता का अध्ययन कराया। उस सूत के सुमति, अग्निवर्चा, मित्रायु, शांसपायन, अकृतव्रण और सावर्णी—ये छः शिष्य थे। इनमें से काश्यपगोत्रीय अकृतव्रण, सावर्णी और शांसपायन—ये तीनों तीन संहिताओं के कर्ता थे। उन तीनों संहिताओं की आधारभूत एक रोमहर्षण जी द्वारा रचित मूल संहिता थी। इन्हीं चार संहिताओं का सारभूत मैंने यह विष्णु-

पुराण संहिता बनायी है[१]।" पुराण सहिता में जो नये विषय अन्तर्मुक्त हुए उनकी व्याख्या इस प्रकार की गयी है :

स्वयं दृष्टार्थकथनं प्राहुराख्यानकं बुधाः।
श्रुतस्यार्थस्य कथनमुपाख्यानं प्रचक्षते॥
गाथास्तु पितृपृथ्वीप्रभृतिगीतयः।
कल्पशुद्धिः श्राद्धकल्पादिनिर्णयः॥ विष्णु० ६

[*विद्वानों ने स्वयं देखे हुए विषयो के कथन को आख्यान कहा है। सुने हुए विषय के* कथन को उपाख्यान कहा जाता है। पितर, पृथ्वी आदि के प्रशसात्मक गीतों को गाथा कहते हैं। श्राद्ध-कल्पादि का निर्णय कल्पशुद्धि है।]

पञ्चलक्षणात्मक पुराणो ने विकसित होकर पुराण सहिता का रूप धारण किया, किन्तु यह विकास यहीं रुका नहीं। पुराणसंहिताओं ने क्रमशः महापुराणों का रूप धारण किया। जिस प्रकार आधुनिक इतिवृत्त में आचार, व्यवहार, धर्म, भूगोल आदि सम्पूर्ण जीवन तथा सृष्टि का विवरण पाया जाता है, उसी प्रकार महापुराणों मे भी इन विषयों का अन्तर्भाव हुआ। ब्रह्मवैवर्त-पुराण मे पुराण, उपपुराण तथा महापुराण के लक्षण वर्णित हैं

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं विप्र पुराणं पञ्चलक्षणम्॥
एतदुपपुराणानां लक्षणञ्च विदुर्बुधा।
महताञ्च पुराणानां लक्षणं कथयामि ते॥
सृष्टिश्चापि विसृष्टिश्च स्थितिस्तेषाञ्च पालनम्।
कर्मणां वासना वार्ता मनूनाञ्च क्रमेण च॥
वर्णनं प्रलयानाञ्च मोक्षस्य च निरूपणम्।

---

१ आख्यानैश्चाप्युपाख्यानैर्गाथाभिः कल्पशुद्धिभिः।
पुराणसंहितां चक्रे पुराणार्थविशारदः॥
प्रख्यातो व्यास शिष्योऽभूत्सूतो वै रोमहर्षणः।
पुराणसंहितां तस्मै ददौ व्यासो महामतिः॥
सुमतिश्चाग्निवर्चाश्च मित्रायुश्शांसपायनः।
अकृतव्रणसावर्णी षट् शिष्यास्तस्य चाभवन्॥
काश्यपः संहिताकर्ता सावर्णिश्शांसपायनः।
रोमहर्षणिका चान्या तिसृणां मूलसंहिता॥
चतुष्टयेन भेदेन संहितानामिदं मुने॥ ३-६।१५-१६

उत्कीर्तनं हरेरेव देवानाञ्च पृथक् पृथक् ॥
दशविधं लक्षणं महतां परिकीर्तितम् ।
संख्यानञ्च पुराणानां निबोध कथयामि ते ॥ ब्रह्मवैवर्त० १३०।६

[हे विप्र ! सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर एवं वंशानुचरित पुराणों के पञ्च लक्षण हैं। विद्वानों ने उपपुराणों के भी ये ही लक्षण बतलाये हैं। तुमसे महापुराणों के लक्षण बतलाता हूँ। सृष्टि, विसृष्टि, स्थिति, उसका पालन, कर्म की वासना, मनुओं की क्रम से वार्ता, प्रलयों का वर्णन, मोक्ष का निरूपण, विष्णु एवं अन्य देवताओं का पृथक्-पृथक् उत्कीर्तन, महापुराणों के ये ही दशविध लक्षण बतलाये गये हैं। इनके पश्चात् पुराणों की संख्या बतलाता हूँ, सुनो।]

उपर्युक्त अवतरण में पुराण एवं उपपुराण के लक्षण एक ही बतलाये गये हैं। किन्तु स्पष्टतः उपपुराण पुराणों की अपेक्षा पीछे रचे गये और इनका स्वतंत्र ऐतिहासिक महत्व कम है। पुराणों में ही एकाधिक अतिरिक्त विषयों का समावेश कर तथा कभी कभी दूसरे पुराणों का सार-संग्रह कर पुराण-संहिताओं की रचना हुई थी। संहिताओं में नाना विषयों के संकलन तथा नियोजन से महापुराणों का प्रादुर्भाव हुआ। ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, वार्ता, अर्थनीति, समाजशास्त्र, राजनीति, छन्दशास्त्र, व्याकरण, पशुविज्ञान, रत्नपरीक्षा, आयुर्वेद, श्राद्धकल्प, व्रतकथा प्रभृति बहुत से नये विषयों का समावेश महापुराणों में हुआ। इस कथन में अत्युक्ति न होगी कि महापुराण अपने समय के विश्वकोष थे।

ऐसे विशाल तथा विश्वकोषीय साहित्य के विषयों का क्रमबद्ध एवं वर्गीकृत-परिचय भारतीय इतिहास तथा संस्कृत के अध्ययन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से इस प्रकार का थोड़ा प्रयत्न हुआ भी है। मद्रास विश्व विद्यालय के भूतपूर्व एवं दिवंगत विद्वान् तथा इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष प्रो० वी० आर० आर० दीक्षितार ने पाँच पुराणों—भागवत०, ब्रह्माण्ड०, मत्स्य०, वायु०, तथा विष्णु०—के आधार पर पुराणों की केवल नामानुक्रमणी (पुराण इण्डेक्स) नाम से प्रकाशित की थी। यह ग्रंथ उपयोगी है, किन्तु पर्याप्त व्यापक नहीं। ग्रंथ के देखते ही विषयगत जानकारी इससे प्राप्त नहीं हो सकती। अत. पुराणों की एक विषयानुक्रमणी की आवश्यकता थी।

दिवंगत आचार्य नरेन्द्रदेव जी के कुलपतित्व के समय प्रथम पञ्चवर्षीय विकास योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय को भारतीय प्राच्य विद्याओं के अनुशीलन के लिए भारतीय सरकार से सहायता मिली थी। उसी के अन्तर्गत पुराणानुशीलन को भी स्थान मिला। निश्चय हुआ कि "पुराण-विषयानुक्रमणी" प्रकाशित की जाय। इसकी निम्नाङ्कित विषय-योजना प्रस्तुत हुई :

१ भूगोल

(१) भुवन कोष (विश्व-भूगोल)

(२) भारतीय भूगोल

(३) भौतिक भूगोल

(४) स्थान-नाम

(५) खण्ड

(६) खगोल

२ जातियाँ, उपजातियाँ, समुदाय

३ जनपद

४ इतिहास एवं राजनीति

५ विधि एवं आचार (प्रथायें)

६ समाज

७ धर्म

८ दर्शन

९ साहित्य

१० कला

११ अर्थशास्त्र

इस योजना के प्रथम तीन भाग पौराणिक भूगोल के अन्तर्गत श्री डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, अध्यक्ष कला तथा स्थापत्य विभाग, भारती महा विद्यालय, का०वि०वि० को सौंपे गये। शेष चतुर्थ से एकादश भाग का काम प्रस्तुत लेखक को दिया गया। इस विभाजन के अनुसार प्रथम तीन भागों के विषय पौराणिक भूगोल के नाम से प्रकाशित होंगे। शेष की भाग-संख्या क्रमशः विषयानुसार चलेगी। प्रथम भाग राजनीतिक है। इसमें प्रायः पुराणों के "वंशानुचरित" अंश से सामग्री ली गयी है। इसके अन्दर प्रधानतया राजवंश, व्यक्तिगत राजा, राज्यावधि, जनपद, राज्य, नगर आदि दिये गये हैं। राजाओं की सम्पूर्ण जीवनी न देकर उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का ही उल्लेख किया गया है। राजनीति से सम्बन्ध रखने वाले कतिपय अन्य शब्द भी इस भाग मे आगये हैं। वंशानुचरित अथवा राजवंशावलियाँ लगभग छः हजार वर्ष पूर्व अयोध्या मे मानव वंश की स्थापना से लेकर चौथी शती के प्रारम्भ मे गुप्त साम्राज्य के प्रारम्भ तक पायी जाती हैं।

सामग्री-संकलन के स्रोतों के विषय में थोड़ा संकेत करना आवश्यक है। महापुराणों में निम्नलिखित की गणना की गयी है :

१–ब्रह्मपुराण
२–पद्मपुराण
३–विष्णुपुराण
४–शिवपुराण
५–भागवतपुराण
६–नारदीयपुराण
७–मार्कण्डेयपुराण
८–आग्नेयपुराण
९–भविष्यपुराण
१०–ब्रह्मवैवर्तपुराण
११–लिंगपुराण
१२–वराहपुराण
१३–स्कन्दपुराण
१४–वामनपुराण
१५–कूर्मपुराण
१६–मत्स्यपुराण
१७–गरुडपुराण
१८–ब्रह्माण्डपुराण
१९–वायुपुराण
२०–विष्णुपुराण

अठारह महापुराणों* में से केवल पाँच–वायु०, मत्स्य०, विष्णु०, ब्रह्माण्ड० तथा भागवत० में विशेषरूप से क्रमबद्ध वंशानुचरित और राजनीतिक वर्णन पाया जाता है। किन्तु अन्य

* विष्णु० तथा भाग० में, जो १८ महापुराणों की संख्या है, उसमें वायु० के स्थान पर शिव० का नाम है। इसके विपरीत मत्स्य० में शिव० के स्थान पर वायु० का नाम है। इनमें विष्णुधर्मोत्तर का उल्लेख नहीं है, किन्तु पुस्तक (वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई) में वह महापुराण कहा गया है।

पुराणों में भी आनुषंगिकरूप से सामग्री मिलती है। जिन पुराणों का अधिकतर उपयोग हुआ है, उनके *निम्नलिखित संस्करण काम में लाये गये हैं :—*

(१) ब्रह्मपुराण	श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, सं० १९६३ वि०
(२) विष्णुपुराण	जीवानन्द विद्यासागर संस्करण, कलकत्ता, सं० १९३९ वि०
(३) वायुपुराण	आनन्दाश्रम, पूना, सन् १९०५ ई०
(४) भागवतपुराण	निर्णय सागर, बम्बई, सन् १९२३ ई०
(५) मार्कण्डेयपुराण	श्री पंचानन तर्करत्न द्वारा सम्पादित, कलकत्ता, सं० १८१२
(६) अग्निपुराण	लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण-बम्बई, सम्वत् १९७० वि०
(७) भविष्यपुराण	श्री वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, सं० १९५७ वि०
(८) मत्स्यपुराण	आनन्दाश्रम, पूना।
(९) गरुडपुराण	जीवानन्द विद्यासागर संस्करण, कलकत्ता
(१०) ब्रह्माण्डपुराण	श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई सं०१९६३ वि०
(११) विष्णुधर्मोत्तरपुराण	श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, सं० १९६३ वि०

कहीं कहीं पर मत्स्यपुराण के गुरुमण्डल ग्रन्थमाला, कलकत्ता (१९५४ ई०) तथा विष्णु-पुराण के गोपाल नारायण मुद्रणालय, बम्बई (शक १८२४) संस्करणों का भी उपयोग किया गया है। ऐसी दशा में इनका अलग से उल्लेख हुआ है।

पौराणिक अध्ययन के सम्बन्ध में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि अभी तक उनके वैज्ञानिक पद्धति से सुसम्पादित संस्करण उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे संस्करण कब तक प्राप्त हो सकेंगे, यह कहा नहीं जा सकता। अतः प्रस्तुत प्रयास प्रारम्भिक अन्वेषण के रूप में किया गया है, इस आशा से कि भविष्य में इसी विषय पर अधिक प्रामाणिक विवरण सम्भव हो सकेगा। पुराणों के प्राप्त संस्करणों में बहुत से स्थलों पर पाठ भ्रष्ट हैं, जिनसे कभी कभी तो अभीष्ट अर्थ निकालना भी कठिन हो जाता है। विभिन्न पुराणों में एक ही व्यक्ति तथा स्थान के पाठान्तर मिलते हैं, वे यथासम्भव प्रस्तुत ग्रन्थ में दे दिये गये हैं। परन्तु सबसे बड़ी कठिनाई वहाँ उपस्थित होती है, जहाँ परस्पर एक ही राजवंश की पीढ़ियों में महान् अन्तर मिलता है। यदि एक पुराण के एक ही वंश में एक राजा तीसरी पीढ़ी में है तो दूसरे पुराण में वही राजा उसी वंश में चौथी अथवा

पाँचवीं पीढ़ी में[1]। इस प्रकार एक राजा जो एक पुराण में किसी का पुत्र है तो दूसरे पुराण में पौत्र अथवा प्रपौत्र। इन स्थलों में यथासम्भव समस्याओं के सुलझाने का प्रयत्न किया गया है, जहाँ ऐसा सम्भव नहीं हुआ है, वहाँ विभिन्न पुराणों के भेद स्पष्ट दिखा दिये हैं। पुराणों में व्यक्तियों के लिङ्गभेद भी मिलते हैं। एक पुराण में यदि कोई नाम स्त्रीवाचक है तो दूसरे पुराण में पुरुषवाचक[2]।

इन पुराणों में से मत्स्य०, वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के पाठों में बहुत ही समता है, विशेषकर वायु० और ब्रह्माण्ड० के बीच, ऐसा स्पष्ट लगता है कि इन तीनों का मूल कोई एक था। तीनों पुराण एक स्वर से कहते हैं कि इनमें भविष्यपुराण में वर्णित राजवंशावली ज्यों की त्यों ले ली गयी है :

तान् सर्वान् कीर्तयिष्यामि भविष्ये पठितान् नृपान्। मत्स्य० ११४
तान् सर्वान् कीर्तयिष्यामि भविष्ये पठितान् नृपान्। वायु० ११३-१५
भविष्ये ते प्रसंख्याताः पुराणज्ञैः श्रुतर्षिभिः। ब्रह्माण्ड० १।१।१७

राजवंशों का उल्लेख प्रामाणिकरूप से मुख्यतः उपर्युक्त तीन पुराणों में मिलता है। इसी प्रकार विष्णु० तथा भाग० के राजवंशवर्णनों में पर्याप्त समता है। केवल अन्तर यह है कि भाग० का वर्णन पद्य तथा विष्णु० का गद्य में है। पद्यात्मक होने से भागवत० में वर्णन की स्वतंत्रता कम है, अतः विवरण अत्यन्त संक्षिप्त है। प्रथम तीन पुराणों की तुलना में तो इन

---

१. उदाहरणार्थ देखिए, क्षत्रौजस् (पुराणविषयानुक्रमणी पृ० ८२-८३) वहाँ वायु० (९९।३१७) के अनुसार अजातशत्रु के पश्चात् क्षत्रौजस् का नाम आता है, किन्तु विष्णु० (४।२४।३) में क्षत्रौजस् का पुत्र बिन्दुसार और उसका पुत्र अजातशत्रु है। ब्रह्माण्ड० (३।७४।१३०) में भी इसी क्रम में अजातशत्रु का नाम तो आता है, किन्तु वहाँ बिन्दुसार के स्थान में बिम्बिसार पाठ है।

इसी प्रकार दिलीप (२) (पुराण विषयानुक्रमणी पृ० १२७) में विष्णु० (४।४।३८-३९) वायु० (८८।१८१-१८२) तथा भाग० (९।९।४१, ९।१०।१-२) के अनुसार दिलीप (द्वितीय) की वंश परम्परा इस प्रकार है—दिलीप—दीर्घबाहु—रघु—अज—दशरथ, किन्तु मत्स्य० (१२।४८-४९) में इसका क्रम रघु—दिलीप—अजक—दीर्घबाहु—अजपाल—दशरथ है:
(रघोरभूद्दिलीपस्तु दिलीपादजकस्तथा। दीर्घबाहुरजाच्चातश्चाजपालस्ततोनृप। तस्माद्दशरथो जातस्तस्य पुत्रचतुष्टयम्।)

२—उदाहरणार्थ देखिए, बध्यश्व, (पुराणविषयानुक्रमणी पृ० २२९) जिसमें मत्स्य० (५०।६) के अनुसार इन्द्रसेन ब्रह्मिष्ठ के पुत्र का नाम है—(इन्द्रसेन सुतस्तस्य) किन्तु वायु० (९९।२००) में इन्द्रसेना एक स्त्री का नाम है, जिसका पुत्र बध्यश्व है। (इन्द्रसेना यतो गर्भं बध्यश्वं प्रत्यपद्यत।)

दोनों का वर्णन सूचीमात्र है। विष्णु० तथा भागवत० के वर्णनों में कहीं कहीं अन्तर भी पाया जाता है, विशेषकर नामों और तिथिक्रम के सम्बन्ध में। गरुड० में वंशानुचरित और भी संक्षिप्त है। राजवंशों में केवल पौरव, ऐक्ष्वाकु तथा बार्हद्रथ का ही उल्लेख इसमें पाया जाता है। स्पष्टतः यह संकलन पूर्वोक्त पुराणों से पीछे का है। भविष्य० मूलतः वैसे तो बहुत पुराना और कतिपय पुराणों की राजनीतिक सामग्री का मूल स्रोत है, परन्तु परवर्ती प्रक्षेपों और मिश्रणों ने इसके पाठ को बहुत ही भ्रष्ट कर दिया है। अतिरंजन, वंशानुक्रम तथा तिथिक्रम में विपर्यय, काल्पनिक वर्णन आदि से इसका ऐतिहासिक मूल्य बहुत कम हो गया है। इसमें उन्नीसवीं शती तक की अर्वाचीन सामग्री का समावेश हुआ है।

पुराणों के सम्बन्ध में दूसरा विकट प्रश्न है, उनका रचना-काल और प्रामाणिकता। इनके स्थिर न होने के कारण बहुत से इतिहासकारों ने पौराणिक साक्ष्य की पूर्ण अवहेलना की और भारत के प्राचीन इतिहास के निर्माण में उनका उपयोग नहीं किया। परन्तु अब इस बात के पुष्कल प्रमाण उपलब्ध हैं कि पुराणों की अपनी मौलिक ऐतिहासिकता है और उनमें प्रभूत विश्वसनीय सामग्री है और उनको संहिता का रूप महाभारत के समय वेदव्यास ने दिया। इसमें सन्देह नहीं कि पुराणों के मूल अंश बहुत ही पुराने हैं, किन्तु जिस रूप में पुराण आज पाये जाते हैं वे रचना की दृष्टि से भाषा के आधार पर इतने पुराने नहीं माने जा सकते, साथ ही विषय की दृष्टि से भी उनके बहुत अंश परवर्ती तथा अर्वाचीन हैं। परन्तु फिर भी पाश्चात्य विद्वानों ने जितना पीछे उनको खींचा, उतने आधुनिक वे नहीं हैं।

श्री एच० एच० विलसन के मतों से पुराणों के काल के सम्बन्ध में बहुत भ्रम उत्पन्न हुआ। विष्णुपुराण का अध्ययन करते समय कुछ पुराणों में मुसलमानों का उल्लेख देखकर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि यह पुराण लगभग १०४५ ई० में लिखा गया। वास्तव में ऐसे अंश प्रक्षिप्त और बहुत पीछे के असम्पादित रूप में जोड़े हुए हैं। पुराणों के उल्लेख तथा अन्तः-साक्ष्य से पुराणों की प्राचीनता बहुत सुदूर तक प्रमाणित होती है।

अलबेरूनी (१०३० ई०) ने अपने ग्रन्थ "तहकीके हिन्द[१]" में अठारह पुराणों की सूची दी है और विष्णुपुराण में उल्लिखित कतिपय पुराणों का पर्यायवाची नाम भी दिया है। उसने यह भी लिखा है कि मैंने मत्स्य०, आदित्य० और वायुपुराणों को देखा भी था। अतः १०३० ई० के पूर्व परम्परागत अठारह पुराणों का अस्तित्व निर्विवाद है। हर्षचरित के लेखक बाण (६२० ई०) ने लिखा है कि जब वह शोणभद्र के किनारे स्थित अपने गाँव में गया तो उसने सुदृष्टि नामक कथावार से "पवमानप्रोक्त" पुराण का पाठ सुना[२]। स्पष्टतः 'पवमानप्रोक्त' वायु का पर्याय है।

१. सचाउ का अनुवाद, भाग १, पृ० १३०, १३१, २६४

२. हर्षचरित (बम्बई-संस्करण) पृ० ८६

बाण ने अपनी रचनाओं में अग्नि०, भागवत०, मार्कण्डेय०, वायु०, आदि पुराणों का उपयोग किया है। नेपाल दरबार पुस्तकालय में सुरक्षित स्कन्दपुराण की एक हस्तलिखित प्रति गुप्ताक्षरों में बंगाल में प्राप्त हुई है जो लिपिशास्त्र के आधार पर सातवीं शती की मानी जा सकती है[1]। इसके अतिरिक्त गुप्तकालीन कतिपय भूमिदान-पत्रों में पद्म०, भविष्य० ब्रह्म०, तथा गरुडपुराण के उद्धरण पाये जाते हैं,[2] जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि पाँचवीं शती ई० के पहले पुराण चिरपरिचित थे। वास्तव में पुराणों की प्रामाणिक राजवंशावलियाँ साम्राज्यवादी गुप्तों के आगमन के पूर्व ही समाप्त हो जाती हैं[3]। तीसरी शती में रचित मिलिन्द प्रश्न के प्रथम भाग में वेद और महाकाव्यों के साथ पौराणिक जानकारी का भी उल्लेख है। चौथी शती ई० पू० में लिखित अर्थशास्त्र से यह प्रकट है कि उस समय पुराण अपने प्रामाणिक रूप में वर्तमान थे। अर्थशास्त्र का लेखक कौटिल्य अथर्ववेद और इतिहास को चतुर्थ और पञ्चम वेद मानता है और इतिहास के अन्तर्गत पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका, उदाहरण, धर्मशास्त्र की गणना करता है[4]। पाँचवीं शती ई० के आपस्तम्ब धर्मसूत्र के तृतीय अध्याय मे भविष्य पुराण का उल्लेख पाया जाता है। श्री एफ० जी० पार्जिटर ने अपने ग्रन्थ "डायनेस्टीज आव दी कलि एज" (कलियुग राजवृतान्त)[5] में यह सिद्ध किया है कि भविष्यपुराण शुद्ध और मूल रूप में मत्स्य०, वायु०, ब्रह्माण्ड० आदि पुराणों का आदि स्रोत था। उन्होंने यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि पुराणों की राजनीतिक सामग्री का संकलन आन्ध्र वंश के राजा यज्ञश्री (द्वितीय शताब्दि ई० का अन्त) के समय में हुआ[6]। परिवर्द्धनों और प्रक्षेपों के होते हुये भी यह कहा जा सकता है कि पौराणिक सामग्री प्राचीन एवं प्रामाणिक है। हर्यङ्क-शैशुनाक वंश से लेकर आन्ध्र वंश तक जो पौराणिक वंशानुचरित अन्य साहित्यिक तथा पुरातात्विक साक्ष्यों से सम्पुष्ट है। कोई कारण नहीं कि हर्यङ्क वंश से पूर्व की पौराणिक राजनीतिक सामग्री उतनी विश्वसनीय न मानी जाय, यद्यपि अत्यन्त प्राचीन होने के कारण उसकी पुरातात्विक सम्पुष्टि संभव नहीं।

पौराणिक सामग्री की प्रामाणिकता और विश्वसनीयता के सूत्र पुराणों में पाये जाते हैं। वंश और वंशानुचरित का संकलन और संरक्षण कैसे होता था, इसका उल्लेख पुराणों में किया

---

१. ज० रा० ए० सो० १६०३, पृ० १६३
२. ज० रा० ए० सो० १६१२, पृ० २४८-५५
३. ब्यूह्लर : इंडियन ऐंटिक्वेरी, जिल्द १५ (१८६६) पृ० ३२३
४. १ । ५
५. क्लैरेंडन प्रेस, लंदन, १६१३
६. इन्ट्रोड० पृ० १३, (नोट-१)

गया है। "सूत" का इस कार्य से घनिष्ठ सम्बन्ध था। वायु पुराण के अनुसार देवताओं, ऋषियों तथा अत्यन्त तेजस्वी राजाओं के वंश का धारण (संरक्षण) एवं ब्रह्मवादियों द्वारा इतिहास-पुराण में उद्घोषित महात्माओं के श्रुत (परम्परा) का वर्णन सूत का कर्त्तव्य है।" पद्मपुराण[1] का भी प्रायः यही मत है। इससे प्रकट है कि राजवंशावलियों के संरक्षण का दायित्व सूत का था। सूत का मागध से सम्बन्ध था। वायुपुराण में गाथात्मक ढंग से इसका वर्णन है। वेन के पुत्र पृथु के यज्ञ के अवसर पर दोनों का प्रादुर्भाव हुआ। इससे यह अनुमान होता है कि महान् यज्ञों के समय राजाओं के वंश तथा यश का वर्णन सूत तथा मागध करते थे। इसी प्रकार सूत का सम्बन्ध "वन्दिन्" से भी था। एक स्थल पर "सूत" को "पौराणिक," "मागध" को "वंशप्रशंसक" और "वन्दिन्" को स्तावक कहा गया है। परम्परा से वंशों और वंशानुचरितों का संकलन और संग्रह होता रहता था। कई शब्दों से इसकी अभिव्यक्ति की गयी है, यथा, "श्रुत," "श्रुति" "स्मृति" "अनुशुश्रुत," इति नः श्रुतम्," "इति श्रुतम्" "इति श्रुतिः" आदि। जिस प्रकार धार्मिक क्षेत्र में श्रुति और स्मृति का प्रयोग वेद और धर्मशास्त्र के लिए हुआ है, उसी प्रकार पुराणों में इन शब्दों का प्रयोग लौकिक परम्परा तथा ख्याति के लिए किया गया है।

उपर्युक्त पदावली से प्रकट होता है कि पुराण-रचना की एक सर्वमान्य पद्धति थी। प्रत्येक राजवंश के अपने मागध, वन्दिन् तथा चारण होते थे जो उसकी वंश परम्परा को स्मरण रखते थे और उसकी यशगाथा को सुरक्षित। सूत का सम्बन्ध किसी एक राजवंश से नहीं था। उसका काम उच्च स्तर का और व्यापक होता था। वह देश के बहुसख्यक राजवंशों, देवताओं, ऋषियों तथा महात्माओं के इतिवृत्तों का संग्रह और संरक्षण करता था। सूत के ऊपर पुराणकार होता था, जो सूतों की सामग्री का पुनः संकलन और सम्पादन कर वंशावलियों और वंशानुचरित को पुराण का रूप देता था। विष्णु० (६।८४२) तथा वायु० (१०३।५८-६७) में ऐसे पुराणकारों की सूचियाँ निम्नाङ्कित प्रकार से दी हुई हैं :

विष्णुपुराण	वायुपुराण
१ कमलोद्भव	१ ब्रह्मा
२ ऋभु	२ मातरिश्व
३ प्रियव्रत	३ उशना
४ भागुरि	४ बृहस्पति
५ स्तवमित्र	५ सविता

---

१. अ० १।२७-२८

६	दधीच	६	मृत्यु
७	सारस्वत	७	इन्द्र
८	भृगु	८	वशिष्ठ
९	पुरुकुत्स	९	सारस्वत
१०	नर्मदा	१०	त्रिधामा
११	धृतराष्ट्र	११	शरद्वान
१२	पूरण	१२	त्रिविष्ट
१३	वासुकि	१३	अन्तरिक्ष
१४	वत्स	१४	अय्यारुण
१५	अश्वतर	१५	धनञ्जय
१६	कम्बल	१६	कृतञ्जय
१७	एलापत्र	१७	तृणञ्जय
१८	वेदशिरा	१८	भरद्वाज
१९	प्रमति	१९	गौतम
२०	जातुकर्ण	२०	निर्यान्तर
२१	वशिष्ठ	२१	वाजश्रव
२२	पराशर	२२	सोम शुष्म्य
२३	मैत्रेय	२३	तृणविन्दु
२४	शमीक	२४	दक्ष
		२४	(अ) शक्ति
		२५	पराशर
		२६	जातुकर्ण
		२७	द्वैपायन
		२८	रोमहर्षण
		२९	रोमहर्षणपुत्र

पुराणकार के पश्चात् संहिताकार पुराणों का परिवर्द्धन और सम्पादन करते थे। एक पुराणसंहिता में कई पुराणों का सार तथा सभी अतिरिक्त सामग्री अन्तर्भुक्त होती थी। कूर्म-पुराण (प्र० अ०) के अनुसार चार संहिताएँ थीं :

ब्राह्मी भागवती शौरी वैष्णवी च प्रकीर्तिताः।
चतस्रः संहिताः पुण्या धर्मकामार्थमोक्षदाः॥

[ब्राह्म, भागवत, शिव तथा विष्णु चार संहिताएँ पवित्र तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाली प्रसिद्ध हैं] कभी कभी पुराणों में "व्यास" और "पुराणकार" पर्याय के रूप में प्रयुक्त होते हैं। व्यास का शाब्दिक अर्थ था विस्तार (व्याख्या) करने वाला। आगे चलकर जब भारत की ऐतिहासिक परम्परा शिथिल पड़ गयी तब सूत का कार्य प्रायः समाप्त हो गया और उसके साथ ऐतिहासिक सामग्री का प्रथम सम्पादन होना भी बन्द हो गया। कथावाचक के रूप में व्यास का महत्व बढ़ गया, किन्तु इससे इतिहास-पुराण का शास्त्रीय संरक्षण न हो सका। यही कारण है कि भविष्य आदि पुराणों में पीछे जो सामग्री संगृहीत हुई वह परीक्षित और प्रामाणित नहीं है।

पुराणों की प्राचीनतर सामग्रियाँ अधिकाधिक प्रामाणिक हैं। पुराणों में ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख है जो प्राचीन इतिहास पुराण के विशेषज्ञ होते थे। उनके लिए 'पुराविद्'[१], "पुराणज्ञ"[२], "पुराणविद"[३], "पौराणिक"[४], "पुराणिक"[५] आदि विशेषणों का प्रयोग किया गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत में विद्वानों का एक ऐसा निश्चित वर्ग था जिसका काम पुराण इतिहास का अध्ययन संरक्षण और आगे आने वाली पीढ़ी को उसका सुसम्पादित दान था। ऐसी परिस्थिति में पौराणिक सामग्री पर्याप्त मात्रा में प्रामाणिक होती थी। भारतीय परम्परा में पुराणों की प्रामाणिकता और महत्ता वेदों के समान मानी गयी है। पुराण अपने को "वेदसहिता" अथवा "वेदैः सम्मित" मानते हैं। वायु० अपने को "पुराण वेद" कहता है। सारी पौराणिक परम्परा को "श्रुति" की संज्ञा दी गयी है और उनके पदों को "सूक्त" कहा गया है। वेदों का साक्षात्कार ऋषियों को हुआ था, बहुत से पुराण अपने को देवताओं द्वारा प्रोक्त बतलाते हैं; पद्मपुराण तो अपने को विष्णुरूप ही मानता है। इस परम्परा और मान्यता के पीछे तथ्य यह था कि वास्तव में वैदिक परम्परा ही अपनी परवर्ती और पार्श्ववर्ती प्रभा को समेटती हुई पुराणों में अवतरित हुई थी; हाँ, यह सम्भव है कि संकलन तथा सम्पादन में भ्रांतियाँ और त्रुटियाँ हुईं।

पुराणों के सम्बन्ध में कुछ प्रचलित भ्रांतियों का निवारण आवश्यक है। कुछ विद्वानों ने पुराणों को इसलिये अप्रामाणिक मानना स्वीकार किया कि इसके प्राचीन वर्णनों का कोई वस्तु-

---

१. वायु० ६५। १६, मत्स्य० ४४। १६, पद्म० ५। १३। ४

२. मत्स्य० ५५। ३; २७२। ३८, वायु० १०१। ७०

३. मत्स्य० ६०। १; पद्म० ४। ३। ४६। ५०

४. वायु० ८८। ६७। १६८; पद्म० ४। ११०। ४१६

५. पद्म० ४। ३। ५

प्रमाण नहीं मिलता। इस सम्बन्ध में सबसे बड़ी भूल यह मान्यता है कि सभी अत्यन्त प्राचीन घटनाओं और व्यक्तियों के लिए वस्तु-प्रमाण मिल सकता है। वास्तव में वस्तुप्रमाण की एक सीमा है। सीमित काल के पहले का वस्तु-प्रमाण अपनी क्षयशीलता के कारण नहीं मिल सकता। सीमित काल के भीतर भी जहाँ का जलवायु वस्तु-प्रमाण को शीघ्र नष्ट करने वाला या जहाँ की नदियाँ और उनकी बाढ़ वस्तु-प्रमाण को बहा ले जानेवाली हैं, वहाँ वस्तुप्रमाण नहीं प्राप्त हो सकता। पौराणिक परम्परा के प्रमाण में कई पुष्ट प्रमाण मिलते हैं। एक तो पुराणों का अपना अन्तः-प्रमाण है। उनके भीतर बहुत सी सामग्री समानरूप से कई स्थलों में पायी जाती है; इससे यह प्रकट होता है कि इसका आधार ठोस और प्रचलित परम्परा है, जिसके बारे में पुराण-विदों को सन्देह नहीं था। पुराणों के बाह्य-प्रमाण दो प्रकार के हैं—(१) साहित्य-प्रमाण और वस्तु-प्रमाण। पौराणिक परम्परा की पुष्टि संस्कृत के रामायण, महाभारत, महाकाव्य तथा नाटकादि से पुष्कलरूपमें होती है। यदि यह परम्परा वास्तविक न होती तो जनता के जीवन में इसका इतना गहरा प्रवेश नहीं होता। बौद्ध एवं जैन साहित्य से भी पौराणिक परम्परा का समर्थन होता है। मौर्य-वंश के अशोक से लेकर गुप्तों के आगमन तक के राजवंशों के सम्बन्ध के वस्तु-प्रमाण या पुरातात्विक प्रमाण बराबर मिलते हैं। इसके पूर्व का भारतीय इतिहास का वस्तु-प्रमाण संरक्षण में क्षम बालुकामय सिन्धु घाटी में ही मिलता है। पौराणिक परम्परा से सिन्धु-घाटी की सभ्यता का क्या सम्बन्ध है, यह कहना कठिन है, परन्तु सम्बन्ध असंभव नहीं।

पुराणों के सम्बन्ध में दूसरा बड़ा भ्रम पार्जिटर ने फैलाया। अपने ग्रन्थ ऐंश्यण्ट इण्डियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन्स[1] (प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक परम्परा) में उन्होंने यह प्रस्थापना की कि प्राचीन भारत में दो साहित्यिक परम्पराएँ थीं—ब्राह्मण-परम्परा और क्षत्रिय-परम्परा। उनके अनुसार वैदिक साहित्य ब्राह्मण–परम्परा का है। पुराण मूलतः क्षत्रिय परम्परा के थे, जिनको पीछे ब्राह्मणों ने अपने हाथ में कर लिया और अपने स्वार्थ के अनुरूप उसमें परिवर्तन किया। वास्तव में यह प्रस्थापना बिल्कुल निराधार है। भारतीय वाङ्मय अथवा साहित्य में इस प्रकार का कोई भेद नहीं था। द्विजाति (शिक्षित) मात्र को सम्पूर्ण वाङ्मय पर अधिकार था जितना ब्राह्मण का। ऋग्वेद के सरचक नव ऋषिपरिवारों में तीन- वैवस्वत, ऐल तथा चाक्षुप-क्षत्रिय थे। वैदिक ऋषियों में विवस्वान्, मनु, पुरूरवस्, ययाति, मान्धाता, विश्वामित्र आदि प्रसिद्ध ऋषि क्षत्रिय वर्ण के थे। इसी प्रकार पौराणिक, सूत, पुराणकार, संहिताकार, व्यास आदि में अधिकांश ब्राह्मण थे। अतः वैदिक तथा पौराणिक वाङ्मय में कोई भी एकान्ततः ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय नहीं कहा जासकता। यथार्थतः दोनो ही अविच्छिन्न भारतीय साहित्य के अङ्ग

१. देखिए, पृ० ४–१०

और समवेत भारतीय परम्परा के स्रोत हैं। हाँ, मूलत पौराणिक परम्परा ऐतिहासिक है और वैदिक-साहित्य धार्मिक। इसी कारण से राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से पुराण अपेक्षाकृत अधिक महत्व के हैं। प्राचीन भारत के वंशगत एवं राजनीतिक इतिहास के निर्माण के लिए पुराणों का साक्ष्य भाषा विज्ञान के अनुमानों और वैदिक साहित्य के आनुषंगिक संकेतों से कहीं अधिक प्रामाणिक तथा बहुमूल्य है

वंशानुचरित का संक्षिप्त परिचय

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, पुराण-विषयानुक्रमणी के इस भाग मे मुख्यतः वंशानुचरित और उसके सम्बद्ध विषय ही दिये गये हैं। इसलिये जिन राजवंशों का समावेश यहाँ हुआ है, उनका सक्षेप मे क्रमबद्ध परिचय दे देना आवश्यक है।

पुराणों में जितने भी राजवंश हैं, वे अपनी उत्पत्ति मनु से मानते हैं। वैसे तो चौदह मन्वन्तरों के चौदह मनु हैं, किन्तु वंशानुचरित की दृष्टि से दो मनु- स्वायंभुव [२८०*] और वैवस्वत [२८१] प्रसिद्ध हैं। स्वायंभुव मनु के वंशानुचरित में उनकी तथा उनकी स्त्री शतरूपा (शतरूपा) [२८०] की उत्पत्ति के साथ उत्तानपाद-वंश [३४] प्रियव्रत-वंश [२१७] तथा दक्षकन्या सन्तति का वर्णन पाया जाता है। इस राजवंश में उत्तम, [देखिए, प्रियव्रत, ऋषभ, पृ० २१७] कापिलेय, दक्ष-प्राचेतस् [देखिए, प्रचेतस् ३ पृ० ३००] ध्रुव, [१५४] पुरञ्जन, पुष्टि, पृथु [१६२] प्रचेतस् , [३०० (२)] प्रियव्रत, [३१७] भरत, [३५०] भद्राश्व, [३४८(१)] वेन, शत-शृंग, सुयश, सुशील आदि प्रसिद्ध राजा हुए।

वैवस्वत (विवस्वान=सूर्य से उत्पन्न) मनु [२८१ (७)] के वंश का इतिहास पुराणों में विशेष विस्तार के साथ दिया गया है। इस चतुर्युगी का कृतयुग यहीं से प्रारम्भ होता है। मनु सूर्य वश के प्रथम राजा थे। इन्हीं से चन्द्रवश तथा सौद्युम्न वंश भी चला। मनु के नव पुत्र थे[१]। तथा एक कन्या इला। नव पुत्र इक्ष्वाकु, [२२] नाभाग, [१२] नृग, [१६६ (१)] धृष्ट, [१५२] शर्याति, [ ] नरिष्यन्त, [१६७] प्रांशु, नाभानेदिष्ट [१६०] करूष [४१]

---

* यह पृ० स० पुराण विषयानुक्रमणी की है।

१. पुराणों में वैवस्वत मनु के पुत्रों के नामों में कुछ अन्तर तथा पाठान्तर मिलता है। भागवत० (८।१३। १-२) में वैवस्वत मनु के दस पुत्र माने गये हैं—इक्ष्वाकु (१) नभग (२) धृष्ट (३) शर्याति (४) नरिष्यन्त (५) नाभाग (६) दिष्ट (७) करूष (८) पृषध्र (९) तथा वसुमान् (१०)। विष्णु० (३।१। ३३-३४) में भी ठीक यही नाम हैं, किन्तु वहाँ नाभाग और दिष्ट पृथक् पृथक् न होकर एक ही नाम

और पृषध्र [१९७] थे। कहा गया है कि इला पहले मनु का ज्येष्ठ पुत्र इल थी, जो विजय करते समय शिव के शरवन (काम्यकवन) में प्रविष्ट हुआ और उमा के शाप से स्त्री हो गया। मनु के बाद इक्ष्वाकु मध्यदेश के राजा हुए और प्रमुख सूर्यवंश उनके द्वारा चला। उनकी राजधानी अयोध्या थी। नाभाग और उनके पुत्र अम्बरीष ने यमुनातट पर राज्य किया, किन्तु उनके वंशजों में आगे चलकर कोई प्रसिद्ध नहीं हुआ। धृष्ट से कई वशों की उत्पत्ति हुई, जो धार्ष्टक क्षत्रिय कहलाये। उन्होंने वाल्हीक (वल्ख) पर अधिकार कर लिया। शर्याति ने आनर्त (उत्तर सौराष्ट्र) में राज्य की स्थापना की। नरिष्यन्त के वशजों के विविध वर्णन पुराणों में पाये जाते हैं। कुछ के अनुसार उनके वंशज मध्य एशिया के तरफ चले गये और शक [ ] कहलाये। भागवत पुराण के अनुसार उनके कुछ वंशज अग्निवेश्यायन ब्राह्मण हो गये। प्रांशु के बारे में कुछ विशेष उपलब्ध नहीं होता। नाभानेदिष्ट के वंशजों ने वैशाली में राज्य किया। करूष से कतिपय क्षत्रियवंशों की उत्पत्ति हुई। उन्होंने करूष प्रदेश (रीवा-सरगुजा के निकट का प्रांत) में राज्य किया। वे अपनी सैनिक प्रतिभा के लिये प्रसिद्ध थे। पृषध्र अपने गुरु च्यवन की गाय मारने के कारण शूद्र हो गये और उनसे कोई राजवंश नहीं चला।

इक्ष्वाकु [३२] के वंशजों के इतिहास के दो संस्करण पाये जाते हैं। एक के अनुसार उनके सौ पुत्र थे, जिनमें ज्येष्ठ विकुक्षि, [३८९] नेमि [१६१] और दण्डक प्रसिद्ध थे। उनमें से पचास शकुनि [(५)] के नेतृत्व में उत्तरापथ तथा दूसरे अड़तालीस वशाति की अध्यक्षता में दक्षिणापथ चले गये। दण्डक और उनके वंशजों ने दण्डकारण्य पर अपना अधिकार जमाया।

(नाभागोदिष्ट) मानने के कारण इनकी संख्या नव ही मानी गयी है। भाग० (९।१।१२) में दूसरे स्थान पर मनु की स्त्री श्रद्धा से उत्पन्न पुत्रों का नाम कुछ अन्तर के साथ है—इक्ष्वाकु (१) नृग (२) शर्याति (३) दिष्ट (४) धृष्ट (५) करूष (६) नरिष्यन्त (७) पृषध्र (८) नभग (९) तथा कवि (१०)। ब्रह्माण्ड० (२।३८।३०-३२) में वैवस्वत मनु के निम्न नव नाम हैं—इक्ष्वाकु (१) नृग (२) धृष्ट (३) शर्याति (४) नरिष्यन्त (५) नाभागोदिष्ट (६) करूष (७) पृषध्र (८) तथा प्रांशु (९)। ब्रह्माण्ड० (३।६०।२-३) में दूसरे स्थान पर भी इनके नामों का उल्लेख है, किन्तु वहाँ कोई अन्तर नहीं है। वायु० (८५।४) के अनुसार वैवस्वत मनु के निम्न नव नाम हैं—इक्ष्वाकु (१) नहुष (२) धृष्ट (३) शर्याति (४) नरिष्यन्त (५) प्रांशु (६) नाभागोदिष्ट (७) करूष (८) पृषध्र (९)। वायु० (६४।२९) में दूसरे स्थान पर यद्यपि पुत्रों की संख्या नव ही है, किन्तु नामों में अन्तर है—इक्ष्वाकु (१) नाभाग (२) धृष्ट (३) शर्याति (४) नरिष्यन्त (५) नाभ उद्दिष्ट (६) करूष (७) पृषध्र (८) तथा वसुमान् (९)।

इक्ष्वाकु के पश्चात् विकुक्षि अयोध्या के सिहासन पर बैठे। इनके कई पुत्र हुए। ज्येष्ठ ककुत्स्थ [४७] अयोध्या के राजा हुए। अन्य पुत्रों से पन्द्रह मेरु के उत्तर मे राजा हुए और एक सौ चौदह पुत्रों ने मेरु के दक्षिण मे अपना राज्य स्थापित किया।

इक्ष्वाकु के दूसरे पुत्र निमि [१८१] से विदेह का निमिवंश चला। इनका प्रधान नगर जयन्त था, जिसके बारे मे कोई विशेष वर्णन नहीं मिलता। इनके पुत्र मिथि [३०८] के नाम पर मिथिला नगरी बसी, जो आगे चलकर विदेह की प्रसिद्ध राजधानी हुई।

पुराणों मे ऐसा कहा गया है कि इला शिव के प्रसाद से पुन पुरुष (सुद्युम्न नामक) हो गयी। सुद्युम्न [४५७(१)] प्रतिष्ठान (=वर्तमान प्रयाग के पास झूसी) छोड कर पूर्व मगध की ओर चले गये। उनके तीन पुत्र गय [६३ (४)] उत्कल [३४ (१)] तथा हरिताश्व [४७३] (विनताश्व अथवा विनत) हुए। गय ने गया नगरी बसायी और मगध पर राज्य किया। उत्कल के नाम पर उत्कल प्रदेश का नाम पडा और वहाँ पर उनके वंशजों का राज्य स्थापित हुआ। हरिताश्व के बारे में कहा गया है कि पूर्व के प्रदेशों पर उनका राज्य था, जो कुरुओं (उत्तर कुरु) के राज्य का सीमावर्ती था। इन तीनो के वशज सौद्युम्न कहलाये।

मनु की पुत्री इला [देखिए पुरूरवा, १८६] का विवाह सोम (चन्द्र) के पुत्र बुध से हुआ। इनसे पुरूरवस् [१८६] नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो ऐल (इला से उत्पन्न) अथवा चन्द्रवश (सोम से उत्पन्न) का प्रवर्तक था। इसकी राजधानी प्रतिष्ठान थी। ऐल वश का तीव्रता से विकास और विस्तार हुआ। प्रतिष्ठानके उत्तर मे अयोध्या का ऐक्ष्वाकुवश प्रबल था और दक्षिण मे कारूष वश। अत' इसका विस्तार पश्चिमोत्तर दक्षिण पश्चिम तथा गगा के किनारे किनारे पूर्व मे हुआ। पुरूरवा का ज्येष्ठ पुत्र आयु [३०] प्रतिष्ठान के सिंहासन पर बैठा। उसके दूसरे पुत्र अमावसु [१४] ने पश्चिम में एक राज्य स्थापित किया, जिसकी राजधानी आगे चल कर कान्यकुब्ज हुई। आयु का पुत्र नहुष [१५८] प्रतिष्ठान का राजा हुआ और उसके दूसरे पुत्र क्षत्रवृद्ध [८२] ने काशिराज्य की स्थापना की। नहुष के कई पुत्रों में यति [३१६] और ययाति [३२१] विख्यात थे। यति ने मुनि होकर अपना राज्याधिकार त्याग दिया। ययाति प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजा हुआ। उसके समय मे ऐल शक्ति का चतुर्मुखी और व्यापक विस्तार हुआ। ययाति की दो रानियाँ थीं—(१) भार्गव ऋषि शुक्राचार्य की कन्या देवयानी [देखिए, ययाति ३२१] तथा (२) असुर राजा वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा [देखिए, ययाति ३२१]। प्रथमा से यदु [३१६] तथा तुर्वसु [११४] नामक दो पुत्र तथा द्वितीया से द्रुह्यु [१४१] अनु [९] तथा पुरु [१८३ (३)] नामक तीन पुत्र हुए। ययाति के बाद उसका आज्ञाकारी कनिष्ठ पुत्र पुरु प्रतिष्ठान के सिंहासन पर बैठा। शेष ने बाहर अपना राज्य स्थापित किया। इन्हीं पाँचो से प्रसिद्ध पाँच राजवशों (१) यादव [३२६] (२) तुर्वसु (३)

द्रुह्यु (४) आनव (५) पौरव की उत्पत्ति हुई, जिनका उल्लेख वेदों में भी पाया जाता है। यदु का राज्य चर्मण्यवती (चम्बल) वेत्रवती (वेतवा) तथा केन (शुक्तिमती) की घाटी में था। द्रुह्यु का राज्य यमुना के पश्चिम और चम्बल के उत्तर में था। अनु का राज्य गंगा-यमुना दोआब के ऊपरी भाग में था। तुर्वसु का राज्य रीवा के चारों ओर विस्तृत था। यादव वंश अपने अगले विकास में दो मुख्य शाखाओं यादव तथा हैहय [७०६] में बट गया। उत्तर में यादवों और दक्षिण में हैहयों का राज्य था। यादवों में चक्रवर्ती राजा शशबिन्दु [८००] हुआ जिसने अपने पड़ोसी राज्यों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। किन्तु उसकी मृत्यु के बाद उसका राज्य उसके पाँच पुत्रों में बट गया और उसका महत्व कम हो गया।

ऐलवंश की शक्ति कुछ शिथिल पड़ने पर उत्तर कोसल का बल बढ़ा। द्वितीय युवनाश्व [३३३ (४)] और उसका पुत्र मान्धाता [३०२] दोनों ही प्रतापी राजा हुए। मान्धाता ने शशबिन्दु की पुत्री बिन्दुमती [२३३] से विवाह किया। वह महान् विजयी हुआ और उसने चक्रवर्ती की उपाधि धारण की। कहा गया है कि जहाँ से सूर्य उगता है और जहाँ अस्त होता है, वहाँ तक मान्धाता का राज्य था। वह प्रसिद्ध यज्ञकर्ता और मन्त्रद्रष्टा ऋषि भी था। उसके तीन पुत्र पुरुकुत्स, [१८४] अम्बरीष [११] और मुचुकुन्द [देखिए मान्धाता पृ० ३०२] हुए। ऐसा लगता है कि पुरुकुत्स [१८४] ने भी दक्षिण में विजय पायी, क्योंकि उसकी रानी का नाम नर्मदा था। मुचुकुन्द की सेनायें भी विन्ध्य की ओर पहुँची। उसने मान्धाता और परिका नामक नगरियों को विन्ध्यपादों में बसाया। इसके अनन्तर कान्यकुब्ज राज्य का विस्तार होने पर कोसल की शक्ति को धक्का लगा और हैहयों, आनवों तथा द्रुह्यु वंश को पुन बढ़ने का अवसर मिला।

हैहयों की शक्ति चम्बल घाटी के दक्षिण में फिर प्रबल हुई। हैहय राजाओं में से साहञ्जि [४०७] ने साहञ्जनी नामक नगरी बसायी और उसके पुत्र महिष्मत् [२६६] ने मान्धाता-नगरी को जीतकर उसका नाम माहिष्मती रखा। इसी वंश में आगे चलकर भद्रश्रेण्य [२४७] ने पूर्व में विजय करते हुए काशी पर अधिकार किया। हैहयों ने परवर्ती राष्ट्रकूटों और मराठों की तरह उत्तर भारत पर आक्रमण कर उसे दुर्बल बना दिया। इसी बीच क्षेमक [८७] और रावण [३११] नामक राक्षसों के उत्तर पर आक्रमण हुए। लगभग इसी समय उत्तर में आनव-वंश की शक्ति बढ़ी। इसमें प्रसिद्ध राजा महाशाल [२६५] और महामनस् [२६०] हुए। इनमें महामनस् को चक्रवर्ती तथा सात द्वीपों का सम्राट् कहा गया है। उसके पुत्र उशीनर [३८] और तितिक्षु [११४] से आनवों की दो शाखायें चलीं। उशीनर के नेतृत्व में एक शाखा ने पूर्वी पंजाब में यौधेय, अम्बष्ठ, नवराष्ट्र, कृमिला आदि राज्यों की स्थापना की। उशीनर के पुत्र

शिवि [४२५] से पश्चिमी पंजाब में शिविवंश चला। शिवि के चार पुत्रों ने वृषदर्भ [४०६] मद्रक (मद्र) [२५६(१)] कैकय [७४] सुवीर ने अलग अलग राज्यों की स्थापना की। इसका परिणाम यह हुआ कि पश्चिमोत्तर पंजाब के द्रुह्यु-वंश को और पश्चिम हटना पड़ा। उस वंश के गान्धार [६५ (१)] नामक राजा ने गान्धार राज्य की स्थापना की। द्रुह्यु वंश ने यहाँ से बढ़कर मध्य एशिया तक अपना राज्य स्थापित कर लिया। उनके साथ भारतीय संस्कृति भी वहाँ पहुँची। आनवों की दूसरी शाखा ने तितिक्षु [११४] के नेतृत्व में वैशाली और विदेह होते हुए सुदूर पूर्व में पहुँच कर सौद्युम्नों के राज्य पर अधिकार किया। आनवों ने यहाँ एक नया राज्य स्थापित किया जो आगे चलकर अंग कहलाया। कान्यकुब्ज के राजा कुश के समय में उसके छोटे पुत्र अमूर्तरयस ने सौद्युम्नों को हराकर दक्षिण मगध पर अधिकार कर लिया।

जैसा कि पहले कहा गया है, सूर्यवंश की शार्यात शाखा आनर्त में स्थापित हुई थी। इस समय उनकी राजधानी कुशस्थली [६४ (१)] पर पुण्यजन [देखिए, कुशस्थली १, पृ० ६४] राक्षसों ने अधिकार कर लिया और शर्याति के वंशजों को भाग कर अन्यत्र शरण लेनी पड़ी। उनमें से अधिकांश हैहय-तालजंघों में मिल गये। सगर [४३७] द्वारा हैहयों के पराजय होने पर जागल प्रदेशों में वे जा बसे।

हैहयों में कृतवीर्य [७०] का पुत्र अर्जुन (सहस्रार्जुन) [१५] बड़ा विजेता हुआ और उसके समय में पुनः हैहयों का प्राधान्य स्थापित हुआ। कर्कोटक [३९] नागों से उसने माहिष्मती छीन ली और नर्मदा से लेकर हिमालय तक के प्रदेशों पर विजय प्राप्त की। उसने लंका के राजा रावण को, जो विजय के लिए उत्तर पर चढ़ आया था, हराया और कुछ समय तक उसको माहिष्मती में बन्दी रखकर छोड़ दिया। हैहयों का भार्गव पुरोहितों से संघर्ष चल रहा था। हैहयों से पीड़ित होकर भार्गव उत्तर भारत में वापस आ गये। उन्होंने अयोध्या और कान्यकुब्ज के क्षत्रिय राजवंशों से विवाह-सम्बन्ध किया और अपनी शक्ति बढ़ा ली। अयोध्या और कान्यकुब्ज का हैहयों से पहले से ही वैर था। भार्गव परशुराम [३४६] ने इसका उपयोग किया और उनकी सहायता से अर्जुन को परास्त कर मार डाला। अर्जुन के पुत्र ने परशुराम के पिता जमदग्नि [देखिए, राम (१) ३४६] का वध किया। इसपर परशुराम अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने हैहयों का ध्वंस किया।

हैहय अर्जुन का सबसे प्रसिद्ध पुत्र जयध्वज [११०] था, जिसने अवन्ति में राज्य किया। उसके अन्य पुत्र सूर तथा सूरसेन [देखिए, अर्जुन पृ० १५–१६] थे। जयध्वज का पुत्र तालजंघ [११३] था। उसके कई पुत्रों में वीतिहोत्र था, जिसके वंशजों का उल्लेख अथर्ववेद में भी पाया जाता है। भार्गवों से पराजित होने पर कुछ समय के लिए हैहयों की शक्ति घट गयी, किन्तु कुछ

समय बाद उनकी शक्ति पुनः पाँच वंशों के रूप में प्रकट हुई। ये वंश थे, वीतिहोत्र, शार्यात, भोज, अवन्ति तथा तुण्डिकेर, जो सब मिलकर तालजंघ कहलाते थे। इन्होंने उत्तर पर आक्रमण करना फिर प्रारंभ किया। इनके सामने कान्यकुब्ज राज्य का पतन हुआ। उन्होंने पश्चिमोत्तर से शक, [यवन ३२० (१)] काम्बोज, [देखिए, यवन] [पारद, १७६ (१)] तथा पह्लवों [१७४] की सहायता से अयोध्या पर आक्रमण किया। वहाँ का राजा बाहु [२३२] निर्वासित हुआ और और्व भार्गव के आश्रम में मरा। उसकी रानी ने और्व के आश्रम में ही सगर को जन्म दिया। हैहयों की विजयिनी सेना वैशाली और विदेह तक पहुँची थी। हैहयों के आक्रमण के समय वैशाली में क्रमशः करन्धम [४२] उनके पुत्र अवीक्षित [२२] और उनके पुत्र मरुत्त [२८७ (२)] राज्य कर रहे थे। हैहयों की बढ़ती हुई शक्ति को इन वैशाल राजाओं ने रोका। करन्धम का समकालीन यादव राजा परावृत् [१७२] था, जिसके दो पुत्र विदिशा में थे। उसका छोटा लड़का ज्यामघ ने [१११] दो बड़े भाइयों से निर्वासित होकर नर्मदा के ऊपरी भाग में मेकला, मृत्तिकावती और ऋक्ष पर्वतों में, जहाँ नाग आदि जातियाँ रहती थीं, अपने राज्य की स्थापना की। शुक्तिमती (केन) के किनारे उन्होंने अपना अधिष्ठान बनाया। अपने लड़के विदर्भ [३९३ (३)] के साथ ज्यामघ दक्षिण की ओर गया और ताप्ती के किनारे विदर्भ राज्य की स्थापना की। उसकी राजधानियाँ विदर्भ और कुण्डिन में थीं।

काशी के ऊपर हैहयों के आक्रमण की बात लिखी जा चुकी है। वाराणसी से निकल जाने पर भी काशी के राजाओं ने अपने राज्य के पूर्वी भाग से हैहयों के साथ लड़ना जारी रखा। द्वितीय दिवोदास [१२८ (१)] के पुत्र प्रतर्दन [२०२] ने वीतहव्यों [४०७ (४) (वीतिहोत्रों) को हराया और अपना राज्य वापस लिया, यद्यपि वाराणसी नगरी पर अधिकार नहीं हो सका, जो उस समय राक्षसों के हाथ में थी। उसके पुत्र वत्स [३७४] ने युद्ध को और आगे बढ़ाया और कौशाम्बी पर अधिकार कर लिया, जिसके कारण कौशाम्बी का राज्य वत्सराज्य कहलाया। वत्स के पुत्र अलर्क [२१] ने हैहयों का पीछा किया और राक्षसों से अपनी राजधानी वाराणसी वापस ले ली।

त्रेतायुग के प्रारम्भ में कोसल (अयोध्या) का भाग्य फिर पलटा खाया। सगर उस समय तक वयस्क हो चुका था। तालजंघ-हैहयों को पराजित कर उसने अयोध्या वापस ली। इसके पश्चात् अपने वंश के अन्य शत्रुओं को उत्तर भारत में परास्त किया। दक्षिण बढ़कर उसके प्रतिशोध में हैहयों का ध्वंस किया और उनकी शक्ति बहुत दिनों तक संभल नहीं पायी। जिन विदेशी जातियों ने अयोध्या पर आक्रमण किया था, उनके नाश करने का आयोजन उसने किया, किन्तु कुलगुरु वसिष्ठ के कहने पर उनको अधीन करछोड़ दिया। फिर विदर्भ पर उसने आक्रमण

किया और वहाँ की राजपुत्री से विवाह कर सन्धि कर ली। शूरसेन ने यादवों को भी हराया और उनसे अधीनता स्वीकार करायी। सगर बड़ा विजयी और प्रतापी सम्राट् था। उसके साठ सहस्र पुत्रों के सागर-उत्खनन की कथा प्रसिद्ध है। सगर ने दीर्घकाल तक शासन किया। अपने ज्येष्ठ पुत्र असमंजस [२४] के प्रजापीडक होने के कारण उसे राज्याधिकार से वंचित किया, इसलिए उसका दूसरा पुत्र अंशुमान् [१] सिंहासन पर बैठा। अंशुमान् के द्वितीय उत्तराधिकारी भगीरथ [२४२] और भगीरथ के तृतीय उत्तराधिकारी अम्बरीष [१२] (१) नाभागी के समय कोशल का महत्व पुनः बढ़ा।

सगर के विजयों के कारण भारत में केवल थोड़े से राज्य बचे रहे। पूर्व में वैशाली, विदेह और अंग, मध्यदेश के काशी, रीवा के आस पास तुर्वसु वंश, दक्षिण में विदर्भ और चम्बल की घाटी में यादवों के राज्य जीवित थे। ऐसा लगता है कि सगर की मृत्यु के बाद उपर्युक्त राज्यों का पुनरुत्थान हुआ और विदर्भ के यादवों की शक्ति फिर बढ़ी। विदर्भ के तीन पुत्र थे, उनमें एक भीमकथ (क्रथ) [देखिए, ज्यामघ १११] विदर्भ का उत्तराधिकारी हुआ। दूसरे पुत्र कैशिक [८० (३)] के पुत्र चिदि [१०५] (१) ने यमुना के दक्षिण में चैद्य राज्य की स्थापना की। तीसरे पुत्र लोमपाद [३६६ (७)] ने एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। पूर्व में अंग का आनव राज्य पाँच भागों में बँट गया। बलि [२२७ (३)] के पाँच पुत्र अंग, [देखिए बलि (३) २२७] वंग [देखिए, बलि (३) २२७] कलिंग, [देखिए बलि (३) २२७] पुण्ड्र [देखिए, बलि (३) २२७] और सुह्म [देखिए, बलि (३) २२७] थे। इन्हीं के नाम पर राज्यों के नाम पड़े। अंग की राजधानी मालिनी [३०४] थी, जो आगे चलकर राजा चम्प के नाम पर चम्पा अथवा चम्पावती कहलायी।

पौरवों की शक्ति मान्धाता के समय से ही दब गयी थी। सगर के अवसान के बाद पौरव दुष्यन्त [१३२] ने अपने वंश की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित की। शकुन्तला [४१४] से उत्पन्न दुष्यन्त का पुत्र भरत [७५१ (३)] बड़ा विजयी और धर्मात्मा था। वह सर्वदमन की उपाधि से प्रसिद्ध था। उसका राज्य सरस्वती से लेकर गंगा तक विस्तृत था। ऐसा जान पड़ता है कि इस समय पौरवों की राजधानी प्रतिष्ठान न होकर गंगा-यमुना दोआब के उत्तरी भाग में दूसरा नगर था, जो आगे चलकर हस्तिन् [४५६] के नाम पर हस्तिनापुर कहलाया। भरत के वंशज "भरता." अथवा "भारताः" हुए, जो भारतीय इतिहास में अपनी शक्ति और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध हैं। भरत के पंचम उत्तराधिकारी हस्तिन् ने हस्तिनापुर नाम नगर बसाया। थोड़े समय के ही बाद तृणबिन्दु [११५] के पुत्र विशाल [४०३] ने उत्तरी बिहार में विशाला नामक नगरी बसायी।

यादवों की शक्ति कई छोटी छोटी शाखाओं में बट गयी। सतपुड़ा पर्वत के पश्चिमी अंचल में निषध नाम का छोटा-सा राज्य था, जहाँ का राजा भारतीय साहित्य में प्रसिद्ध नल [१५८] था।

अजमीढ [३] और द्विमीढ नामक हस्तिन् के दो पुत्र थे। इनके समय में पौरवों का विस्तार तथा उनके नये राज्यों की स्थापना हुई। हस्तिन् के चचेरे भाई रन्तिदेव [३३८] सांकृति ने चम्बल के किनारे दशपुर में अपनी राजधानी बनायी और एक नये राज्य की स्थापना की। बरेली के आस पास के प्रदेश में द्विमीढ ने भी एक छोटे से राज्य की स्थापना की। अजमीढके बाद उसका राज्य तीन पुत्रों में बट गया। एक की राजधानी हस्तिनापुर बनी रही। क्रिवि (पञ्चाल) [१६६ (३)] के दो भाग हो गये। अहिच्छत्र अर्थात् उत्तरी पञ्चल की राजधानी अहिच्छत्रा अथवा छत्रावती और दक्षिण पञ्चाल की राजधानी काम्पिल्य अथवा माकन्दी थी। मूल शाखा हस्तिनापुर का परवर्ती इतिहास लुप्तप्राय है, केवल ऋक्ष [४८०] का नाम सुरक्षित है। संवरण के समय से फिर पौरवों का उल्लेख होने लगता है। भर्म्यांश्व [देखिए, भद्राश्व २४६ (३)] तथा पञ्चाल [१६६) (३)] के पाँच पुत्र थे जिनका सयुक्त नाम पञ्चाल [१६६ (३)] था। इनमें से मुद्गल [३०६] के वंशज मौद्गल्य ब्राह्मण हो गये। उसके पौत्रों में से एक वद्ध्यश्व [२६६, ३७७] क्षत्रिय रहा, जिसका पुत्र दिवोदास [१२८ (२)] विजयी और प्रतापी राजा हुआ। दिवोदास और उसके उत्तराधिकारियों के विजयों के उल्लेख ऋग्वेद में पाये जाते हैं। ये ब्रह्मण्य क्षत्रिय थे, जिन्होंने वैदिक संस्कृति के प्रचार में बहुत बड़ा भाग लिया।

बीच में अयोध्या की स्थिति फिर डवाँडोल हो गयी थी। कल्माषपाद [४६] के बाद पारिवारिक षडयन्त्रों से राजवंश की दो शाखायें हो गयीं। किन्तु पञ्चाल का वेग कम होने पर द्वितीय दिलीप खट्वांग [१२७] ने कोशल की स्थिति फिर सुधारी और उसके वंशज रघु [२३४] अज [७] और दशरथ [१२४ – (१)] के समय तो अयोध्या की प्रभूत श्रीवृद्धि हुई। रामायण के अनुसार दशरथ का पूर्व में विदेह अग तथा मगध, पञ्जाब मे केकय, सिन्धु तथा सौवीर, पश्चिम में सौराष्ट्र तथा दाक्षिणात्य राज्यों से मैत्री का सम्बन्ध था। मध्यदेश मे केवल काशी का उल्लेख पाया जाता है।

दशरथ के राम, [३४९ (७)] लक्ष्मण [३६५] भरत [७५० (७)] और शत्रुघ्न [४१६(१)] चार पुत्र थे। राम के समय कोसल का इतिहास फिर प्रकाशित हो उठता है। उनके पूर्व राक्षसों के कई आक्रमण उत्तर भारत पर हो चुके थे। उत्तर भारत के यादवों और हैहयों ने दक्षिणापथ के पश्चिमोत्तर में अपना राज्य स्थापित किया था। परन्तु अभी तक पौराणिक इतिहास में उत्तर

दक्षिण का घनिष्ठ सम्बन्ध प्रकट नहीं होता। राम के बहुत पूर्व अगस्त्य आदि ऋषियों ने दक्षिण जाने वाले मार्गों का अनुसधान और सूर्यवश के दण्डक नामक राजपुत्र ने दण्डकारण्य का पर्यवेक्षण किया था। इससे अधिक वर्णन पुराणों मे नहीं मिलता। दण्डकारण्य के दक्षिणपूर्व मे जनस्थान था, जहाँ वानर तथा ऋक्ष चिह्नधारी जातियाँ रहती थीं और उनके भी दक्षिण लका में राक्षसों का राज्य था, जहाँ से निकल कर वे सुदूर दक्षिण भारत पर आक्रमण करते और कभी कभी उत्तर भारत तक पहुँचते थे।

राम का विवाह-सम्बन्ध पूर्व में विदेहराज जनक की कन्या सीता से हुआ था। जब उनका युवराज्याभिषेक होने जा रहा था तो विमाता कैकेयी के षड्यन्त्र से पिता द्वारा निर्वासित होकर उन्हें दण्डकारण्य जाना पड़ा। प्रयाग, चित्रकूट, होते हुए वे पञ्चवटी पहुँचे। उस समय राक्षसों के उपद्रव से जनस्थान के निवासी और दण्डकारण्य के ऋषि मुनि त्रस्त थे, राम ने बहुतों को त्राण दिया। इससे क्रुद्ध होकर राक्षसों के तत्कालीन राजा रावण ने सीता का अपहरण किया। सीता की खोज मे राम पम्पापुरी पहुँचे जहाँ सुग्रीव [४३०] और उनके मत्री हनुमान से उनकी भेंट हुई। सुग्रीव किष्किन्धा के वानर राजा वालि का छोटा भाई था। जो राज्य से निष्कासित था। राम और सुग्रीव की मैत्री हुई। राम ने वालि वालि [३८७] को मार कर सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा बनाया। सुग्रीव की सहायता से राम ने समुद्र पर पुल बाँधकर लका पर आक्रमण किया। रावण का वध कर उन्होंने उसके भाई विभीषण को राजा बनाया और सीता को वापस लाये। दशरथ का देहावसान पहले ही हो चुका था। अयोध्या लौटकर राम ने दीर्घ काल तक सुख और शान्ति के साथ आदर्श शासन किया। दिग्विजय कर अश्वमेधयज्ञ का भी अनुष्ठान किया। इन्हीं आदर्श गुणों के कारण राम मर्यादापुरुष और ईश्वर के अवतार माने जाते हैं। वे ऐक्ष्वाकु वश के अतिम प्रतापी सम्राट् थे।

राम ने अपने साम्राज्य का बटवारा अपने भतीजों और पुत्रों के बीच कर दिया। भरत के पुत्र तक्ष [११२] और पुष्कर [१८८ (१)] ने गान्धार जीता, तक्षशिला [देखिए, पुष्कर १८८ (१)] तथा पुष्करावती [देखिए, पुष्कर १८८ (१)] नामक दो नगरियाँ बसायीं और वहीं अपने अपने राज्य स्थापित किये। लक्ष्मण के दो पुत्र अगद [देखिए, लक्ष्मण ३६५] और चन्द्रकेतु [देखिए, लक्ष्मण ३६५] थे। हिमालय की तलहटी (बस्ती गोरखपुर कारपथ) में उन्होंने अगदीया और चन्द्रचका नाम की नगरियों को अपनी राजधानी बनायी। शत्रुघ्न के दो पुत्र शूरसेन [४३० (३)] और सुबाहु [४६१] थे। शत्रुघ्न द्वारा जीते हुए यादव सात्वतों के मथुरा के निकटवर्ती प्रदेश में उन्होंने अपना राज्य स्थापित किया जो शूरसेन के नाम

से प्रसिद्ध हुआ। राम के दो पुत्र कुश [देखिए, लव ३६७] और लव [३६७] थे। कुश ने कुशस्थली अथवा कुशावती नामक नगरी कारपथ के पूर्व देवरिया में बसायी, जो आगे चल कर कुशीनगर कहलायी[1]। लव ने उसके और पूर्वदक्षिण में शरावती नगरी को अपनी राजधानी बनाकर राज्य किया। कुछ दिनों के बाद कुश कुशावती छोड़कर, अयोध्या वापस आये और लव ने कोसल के उत्तरी भाग में श्रावस्ती को अपनी राजधानी बनायी। इन राज्यों का इतिहास आगे चलकर अन्धकारमय हो जाता है और पौरवों और यादवों की शक्ति फिर बढ़ जाती है।

यादवों का राज्य सात्वत [४७५ (१)] के चार पुत्रों में बँट गया, जिनके नाम भजमान [२४३ (१)] देवावृध [देखिए, बभ्रु पृ० ७१६ (१)] अन्धक, [६ (१)] और वृष्णि [४१० (२)] थे। भजमान के राज्य के बारे में कुछ निश्चित ज्ञात नहीं है। देवावृध ने पर्णाशा (पश्चिमी मालवा में बनास नदी) के किनारे अपना राज्य स्थापित किया और क्रमश पश्चिमोत्तर बढ़ कर इसने तथा उसके पुत्र बभ्रु [७१६ (१)] और उसके वंशजों ने मातृकावत (शाल्व देश में आबू के आस पास) में राज्य किया। अन्धक ने यादवों के मुख्य केन्द्र मथुरा में राज्य किया। इसके दो पुत्र कुकुर [५८] और भजमान (द्वितीय) [७४३ (२)] थे। कुकुर और उसके वंशज कंस [देखिए, जरासन्ध ११०] के समय तक वहाँ राज्य करते रहे। भजमान के वंशजों ने (जो मुख्यतः अन्धक कहलाते रहे) अलग राज्य की स्थापना की। महाभारत युद्ध के समय इनका राजा कृतवर्मा [७० (२)] था। वृष्णियों का राज्य द्वारका (गुजरात) में था। यादवों के अन्य राज्य विदर्भ, अवन्ति और दशार्ण में थे। संभवतः माहिष्मती में अभी हैहयों का राज्य अवशेष था। भोज [२६४ (५)] मूलतः हैहयों की शाखा में थे, परन्तु आगे चलकर यादवों के साथ मिल गये। उग्रसेन [३३] और उसका पुत्र कंस भोजशाखा में से ही थे। कृतवर्मा भी इसी शाखा का था। विदर्भ का भीष्मक [२५६-६०] और उसका पुत्र रुक्मिन् [३५७] भी इसी वंश के थे। भोजों की शाखा बड़ी थी और भोज शब्द का प्रयोग यादवों के बहुत बड़े भाग के लिए होता था।

---

१. कुशस्थली उत्तर कोशल में अयोध्या से अनतिदूर होनी चाहिये जहाँ से कोसल का शासन हो सकता था। इसीलिये कुश ने उसको अपनी दूसरी राजधानी बनायी। पद्मपुराण (२७१। ५४-५) ने भूल से इसको गुजरात की कुशस्थली (द्वारका) से मिला दिया है। कालिदास (रघुवंश १६।३१) ने भी कुशस्थली से कुश के लौटने के समय रास्ते में विन्ध्य का वर्णन किया है, जो भ्रान्त है। वाल्मीकि रामायण में जो कुशावती का वर्णन है, उससे उसकी भौगोलिक स्थिति स्पष्ट हो जाती है। बौद्ध साहित्य में कुशी नगर में कुश के राज्य का वर्णन पाया जाता है।

पौरवों में प्रायः इसी काल मे उत्तर पञ्चाल में क्रमशः शृञ्जय, उसका पुत्र च्यवन [१०६-७ (१)] पिजवन और उसका पुत्र सुदास [४५६ (३)] सोमदत्त राज्य करते रहे। च्यवन और सुदास ने पौरव राज्य का बहुत विस्तार किया। ऋग्वेद के दशराज्ञ-युद्ध में सुदास की यश-गाथा सुरक्षित है। सुदास ने पहले हस्तिनापुर के राजा संवरण को यमुना तट पर हराया। समीपवर्ती राज्यों ने सुदास के विरुद्ध संघ बनाया, जिसमें पुरु (हस्तिनापुर का संवरण) मथुरा के यादव, आनववंशी शिव (शिवि), गान्धार के पश्चिमी राज्य, शूरसेन के मत्स्य, तुर्वसु आदि सम्मिलित थे। परुष्णी (रावी) के किनारे सुदास ने इसी संघ को हराया। संवरण ने सिन्धु के किनारे किसी दुर्ग में शरण ली। सुदास के बाद उसका पुत्र सहदेव [४४८ (३)] और पौत्र सोमक [४६८] हुआ। सोमक के समय से सुदास के वंश का ह्रास प्रारम्भ हो गया। संवरण पंजाब से वापस आ गया और वसिष्ठ की सहायता से हस्तिनापुर वापस ले लिया। उसने उत्तर पाञ्चाल भी जीता। संवरण का पुत्र कुरु बड़ा विजेता और प्रतापी हुआ। उसने अपने राज्य की सीमा प्रयाग तक बढ़ायी। इसी के नाम पर कुरुक्षेत्र और कुरुजंगल नाम पड़े। उसके वंशज कौरव अथवा कुरु कहलाये। कुरु के पौत्र द्वितीय जनमेजय [देखिए, परीक्षित (२) १७३] के समय इस वंश का ह्रास होने लगा। उत्तर पञ्चाल के बारे में कुछ मालूम नहीं, किन्तु द्विमीढ-वंश और दक्षिण पञ्चाल के नीप वंश (जिसकी राजधानी काम्पिल्य थी), का पुनरुत्थान हुआ। परन्तु थोड़े ही काल के अनन्तर कुरु के वंशज वसु [३८० (५)] ने चेदि-राज्य जीतकर वहाँ अपना राज्य स्थापित किया और चैद्योपरिचर कहलाया। उसने शुक्ति-मती (शुक्तिमती नदी के किनारे स्थित) को अपनी राजधानी बनायी। उसने पूर्व में मगध और पश्चिम में मत्स्य राज्य को जीता। इन्हीं विजयों के कारण वह सम्राट् और चक्रवर्ती कहलाया। उसके पाँच पुत्र थे, जिनमें उसने अपने साम्राज्य का बटवारा किया। उसके बड़े पुत्र बृहद्रथ [२३८ (२)] को मगध मिला। उसने गिरिव्रज को राजधानी बनाकर बार्हद्रथ वंश की स्थापना की। उसके समय से मगध भारत की साम्राज्यवादी परम्परा में प्रसिद्ध हुआ।

भारत के परवर्ती इतिहास में कौरवों की शक्ति और बढ़ी। हस्तिनापुर के राजा प्रतीप [२०६] और शान्तनु [देखिए, भीष्म २५६] ने कौरव राज्य की प्रतिष्ठा बढ़ायी। ब्रह्मदत्त [२४० (१)] के नेतृत्व में दक्षिण पञ्चाल का भी यश बढ़ा। किन्तु द्विमीढ-वंश के उग्रायुध [३३] ने उत्तर पञ्चाल को परास्त और दक्षिण पञ्चाल को ध्वस्त किया। शान्तनु की मृत्यु के पश्चात् उसने कौरवों पर भी आक्रमण किया, परन्तु शान्तनु के पुत्र पराक्रमी भीष्म [२५६]

ने उसे परास्त कर मार डाला। इससे उत्तर पञ्चाल तो फिर स्वतंत्र हो गया, पर दक्षिण पञ्चाल पर कौरवों का आधिपत्य स्थापित होगया।

कौरवों के साथ ही पूर्व में मगध की शक्ति का विकास हुआ। जरासंध [११०–११] ने पड़ोसी राज्यों के ऊपर अपना साम्राज्य स्थापित किया। पश्चिम में मथुरा के राजा और उसके दामाद कंस ने भी उसका आधिपत्य स्वीकार किया। कंस बड़ा अत्याचारी और गणतंत्री अंधक-वृष्णि-संघ का शत्रु था। इस संघ के नेता, वसुदेव [३८१ (१)] के पुत्र कृष्ण [७२ (३)] ने कंस का वध किया। इससे क्रुद्ध होकर जरासंध ने मथुरा पर कई बार आक्रमण किया। पहले तो अंधक-वृष्णि और भोजक-कुकुर संघ ने कंस का सामना किया, किन्तु स्वल्पसाधनता के कारण मथुरा छोड़कर वह कृष्ण के नेतृत्व में सुराष्ट्र में द्वारका चला गया और यादवों ने वहाँ अपना प्रबल राज्य स्थापित किया।

हस्तिनापुर में शन्तनु [४२०] के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र भीष्म [२५६] ने प्रतिज्ञाबद्ध होने से राजा होना अस्वीकार किया। इसलिए उनके अन्य लड़कों चित्राङ्गद [१०४] और विचित्र-वीर्य [३६१] में से विचित्रवीर्य राजा हुए। उनके पुत्र धृतराष्ट्र [१५०] और पाण्डु [१७४] हुए। धृतराष्ट्र के अन्धे होने के कारण पाण्डु राजा हुए। परन्तु धृतराष्ट्र के दुर्योधन आदि सौ पुत्रों ने, जो कौरव कहलाये, राज्य के लिए दावा और युद्ध किया। पाण्डु के पाँच पुत्र युधिष्ठिर [३२६] भीम [२५८] अर्जुन [१७ (२)] नकुल [देखिए, पाण्डु १७४] तथा सहदेव [४३७ (१)] पाण्डव कहलाये। पाण्डु के मरने के बाद धृतराष्ट्र राजा हो गये। कौरवों और पाण्डवों में घोर कलह प्रारम्भ हुआ। इसी बीच में उत्तर पञ्चाल में पृषत का पुत्र द्रुपद ने द्रोणा-चार्य का अपमान किया। द्रोण ने कौरव-पाण्डव की सहायता से द्रुपद को जीतकर पूरे पञ्चाल पर अधिकार कर लिया। परन्तु समझौता होने पर उत्तर पञ्चाल को अपने अधिकार में रखा और दक्षिण पञ्चाल द्रुपद को वापस कर दिया। द्रुपद की पुत्री द्रौपदी [१४२] से अर्जुन का विवाह हुआ और महाभारत के युद्ध में शृंजयों और सोमकों के साथ वे पाण्डवों की ओर से लड़े।

पाण्डवों ने धृतराष्ट्र से अपना दाय—(कौरव राज्य) वापस माँगा। धृतराष्ट्र ने उन्हें खाण्डवबन का छोटा प्रदेश दिया, जहाँ जंगल साफ कर उन्होंने इन्द्रप्रस्थ को अपनी राजधानी बनायी। पर इससे वे संतुष्ट नहीं हुए और समस्त कुरुराज्य का अधिक भाग पाने का वे प्रयत्न करने लगे। इसी बीच में अन्य शक्तियों से उनका सम्पर्क और संघर्ष हुआ। यादव-संघ के नेता कृष्ण की सहायता से भीम और अर्जुन ने जरासंध को मारा। इसके अनन्तर स्वयं

कृष्ण ने जरासन्ध के दूसरे सहायक और दामाद शिशुपाल [४२६] का भी वध किया। इसके अनन्तर पाण्डवों ने फिर अपने दायों की मॉंग की। कौरवों ने अस्वीकार किया। महाभारत का भीषण गृहयुद्ध प्रारम्भ हुआ। प्राय सारा देश दो दलों में बँट गया। पाण्डवों के साथ मत्स्य, चेदि, कारुष, काशी, दक्षिण पञ्चाल, पश्चिम मगध और पश्चिम सुराष्ट्र के राज्य थे। कौरवों की तरफ सम्पूर्ण पञ्जाब के राज्य, उत्तर भारत के कोसल आदि शेष राज्य और दक्षिणापथ के उत्तरी राज्य थे। इस समय कोसल का राजा बृहद्बल [२३६] था। भयानक और विध्वंसक युद्ध हुआ। अन्त में पाण्डव विजयी हुए और युधिष्ठिर कौरव साम्राज्य के अधिकारी होकर हस्तिनापुर के राज्य सिंहासन पर आसीन हुए।

महाभारत युद्ध के कुछ वर्षों बाद धृतराष्ट्र जंगल में चले गये और वहीं दावानल में जल कर भस्म हो गये। इसके बाद होने वाली घटनायें पुराणों में भविष्यत् काल में कही गयी हैं। महाभारत के अन्तिम काल में भी इनका उल्लेख है, कुछ ही समय बीतने पर द्वारका के यादवों का गृहयुद्ध से ही दुःखद अन्त हुआ। कृष्ण वन में सोते समय एक भील के बाण से विद्ध होकर मरे। जब अवशिष्ट यादवों को लेकर अर्जुन द्वारका से इन्द्रप्रस्थ जा रहे थे तब राजस्थान के आभीरों ने उनपर आक्रमण किया और उनकी स्त्रियाँ छीन लीं। अर्जुन ने यादवों में से कुछ को यत्र तत्र बसाया, जैसे हार्दिक्य के पुत्र को मार्तिकावत (आबू के पास), युयुधान [३३२] के पौत्र को सरस्वती के तट पर और वज्र [३७२ (२)] के नेतृत्व में वृष्णियों को कहीं मथुरा और इन्द्रप्रस्थ के बीच में बसाया। महाभारत के भयानक विनाश से पाण्डव स्वयं राज्य से ऊब गये थे। अर्जुन के पौत्र परीक्षित [१७३ (१)] को हस्तिनापुर का राज्य सौंप कर युधिष्ठिर के नेतृत्व में पाण्डव स्वेच्छा से हिमालय में गलने चले गये। उनके स्वर्गारोहण के साथ महाभारत-कालीन इतिहास समाप्त होता है। इसके बाद का इतिहास पुराणों में कलियुग राजवृत्तान्त के नाम से प्रसिद्ध है।

महाभारत-युद्ध में भयानक संहार हुआ और इसने विशेषरूप से उत्तर भारत के राज्यों को दुर्बल बना दिया। पश्चिमोत्तर में नाग वंश ने तक्षशिला को अपने अधिकार में कर उधर के प्रदेशों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। उनके राजा तक्षक ने हस्तिनापुर के राजा द्वितीय परीक्षित [१७३ (१)] को मार डाला[१]। परीक्षित के पुत्र तृतीय जनमेजय [१०८ (४)] के

१ [तक्षक सर्प ने परीक्षित को डस लिया। भाग० १२।६।११-१२]

समय कुछ काल के लिए कौरवों की शक्ति पुनर्जीवित हो उठी। अपने पिता के वध से क्रुद्ध होकर जनमेजय ने नागों पर आक्रमण कर उनका घोर विनाश किया, जिसकी कथा नाग-यज्ञ के रूप में दी हुई है। किन्तु भारत के परवर्ती इतिहास में नागों की शक्ति उत्तरोत्तर बढती गयी। जनमेजय के बाद उसके चतुर्थ उत्तराधिकारी के समय हस्तिनापुर गगा की बाढ से बह गया। इस कारण से और मुख्यतः पश्चिमोत्तर के आक्रमणों के दबाव से कौरव हस्तिनापुर छोड कर दक्षिण पञ्चाल होते हुए वत्स प्रदेश में चले आये और कौशाम्बी को राजधानी बनाकर राज्य करने लगे। इस घटना से राजवंशों का मिश्रण हुआ। दक्षिण पञ्चाल के राजवश, कुरु, पञ्चाल तथा वत्स के राजवश कौरव-पौरव कहलाने लगे। यह घटना लगभग नवीं शती ई० पू० की है। वत्स-राज्य के कौरव पौरवों में प्रसिद्ध राजा उदयन [३५] हुआ जो भगवान बुद्ध का समकालीन था और भारतीय साहित्य में प्रसिद्ध है।

महाभारत के परवर्ती राजवशों में प्राय. उत्तर भारत के ही राजवशों का इतिहास मिलता है, जिनमें कोसल, काशी, विदेह, अङ्ग, कुरु, पञ्चाल, शूरसेन, अवन्ति आदि अधिक प्रसिद्ध दक्षिण में विन्ध्य के पार्श्व में वीतिहोत्र, हैहय, अश्मक, कलिंग, आन्ध्र आदि का उल्लेख है। इस समय से पुराणों में पश्चिमोत्तर भारत का इतिहास बन्द हो जाता है। जहाँ पञ्जाब और सीमान्त का उल्लेख भी है, वहाँ इधर की जातियों का वर्णन भ्रष्ट और पतित जातियों के रूप में और स्थानो का वर्णन अपवित्र स्थानों के रूप में पाया जाता है। इसका कारण यह है कि पश्चिमोत्तर भारत में उत्तरोत्तर विदेशी जातियाँ मिलती गयीं, जिनका आचार-विचार शास्त्रीय आचार विचार से नहीं मिलता था। इसलिए परम्परावादी पुराणों की दृष्टि में उनका महत्व घटता गया।

पौराणिक कलियुग राजवृत्तान्त में सब से अधिक क्रमबद्ध वर्णन मगध-साम्राज्य का मिलता है। वास्तव में बार्हद्रथों से लेकर गुप्तों के समय तक का इतिहास ही भारत की साम्राज्यवादी परम्परा का इतिहास है। परन्तु मगध के इतिहास के अतिरिक्त अन्य स्थानीय तथा विदेशी राजवशों का उल्लेख भी पुराणों में पाया जाता है। भविष्य पुराण ने तो राजवशों की परम्परा को उन्नीसवीं शती ई० पू० तक पहुँचा दी है। इधर के राजवशों का इतिहास प्रायः विदित है अत उनका अनुसूचनमात्र करना पर्याप्त होगा। प्रसिद्ध राजवशों की सूची निम्नलिखित प्रकार है:

(१) कुरु-पञ्चाल

(२) कुरु-पौरव

(३) इक्ष्वाकु

(४) बार्हद्रथ

(५) प्रद्योत-वंश

(६) शैशुनाग-वंश

(७) नन्दवंश

(८) मौर्य वंश

(९) शुङ्ग-वंश

(१०) कण्व-वंश

(११) आन्ध्र-वंश

(१२) गुप्तवंश

भविष्य में वर्णित मध्यकालीन तथा भावी राजवंश[१]

(१) प्रमर वंश

(२) चपहानि (चाहुमान)

(३) अग्नि वंश

(४) शालिवाहन वंश

(५) तोमर वंश

(६) शुक्ल वंश

(७) परिहर (प्रतिहार)

(८) गुलाम वंश

(९) तैमूर वंश

---

१. भविष्य में वर्णित परवर्ती राजाओं का इतिहास भ्रान्त एवं अविश्वसनीय होने के कारण प्रस्तुत ग्रन्थ में उसका समावेश नहीं किया गया।

(१०) मुगल वंश
(११) गुरुण्ड वंश
(१२) मौन वंश
(१३) नाग वंश
(१४) यदु वंश

राजनीतिक दृष्टि से प्रसिद्ध जातियों की सूची अक्षर-क्रम से निम्नलिखित हैः—

आन्ध्र [२७ (२)]
आन्ध्रक [देखिए, गान्धार (२) ६५ पृ०]
आभीर [३०]
कङ्क [४७ (२)]
कटक [४८]
काम्बोज [देखिए, यवन (१) पृ० ३२२]
किरात [५७]
कुश [६३ (४)
खश [८७ (२)]
गर्दभिल [६४]
गान्धार [६५ (२)]
गुरुण्ड [देखिए, मरुण्ड पृ० २८६]
तुखर [देखिए, गान्धार (२) पृ० ९५]
तुषार [११५]
दशार्ण [१२५]
निषाद [१६४ (१)
पश्चक [१६४ (१)]
पतंग [१७० (१)]

इस भाग मे जिन राजाओं के नाम दिये गये हैं, वहाँ पहले उनका वश, तदनन्तर उस वश की शाखा, तत्पश्चात् पीढ़ी-क्रम-सख्या दी गयी है। विभिन्न पुराणों में जहाँ पीढ़ी-क्रम सख्या मे अन्तर है, वहाँ उसका उल्लेख कर दिया गया है। कतिपय राजाओं की वश-शाखा और पीढी-क्रम का पता नहीं है। ऐसी अवस्था में उनका उल्लेख सभव नहीं था। भिन्न भिन्न राजवशों में एक ही नाम के कई राजा पाये जाते हैं। उनका पृथक् पृथक् उल्लेख हुआ है और

उनकी क्रमशः संख्या (१), (२), (३) आदि दे दी गयी है। उदाहरणार्थ, भरत नामक चार राजा विभिन्न वंशों मे उत्पन्न हुए (दे० पृ० सं० २५०–२५१)। जो शब्द (व्यक्ति-वाचक को छोड़कर) अनेकार्थक हैं, अथवा उसके अर्थ में कुछ आंशिक मतभेद है, वहाँ एक ही शब्द दिया गया है और उसके विभिन्न अर्थों का निर्देश कर दिया गया है। [देखिए पाणिग्राह, पृ० सं० १७८)। जिन शब्दों के विवेचन मे कई पुराणों का प्रायः समान मत मिलता है, वहाँ पाद-टिप्पणी में उनका नाम सामान्यत अंकित है, जैसे, आनक-दुन्दुभि (२६) किन्तु जहाँ किसी वर्णनीय व्यक्ति अथवा विवेच्य शब्द के विभिन्न अंगों का पृथक् पृथक् उल्लेख पुराणों में पाया जाता है, अथवा उनमे परस्पर मतभेद है, वहाँ पाद टिप्पणी में पृथक् पृथक् संख्या पुराणों के नाम के पहले दे दी गयी है। अनुक्रमणिका के संग्रथन में विषय-नाम पहले मोटे अक्षरो में मुद्रित हैं। उनके पाठान्तर अथवा पर्याय उनके सामने बड़े कोष्ठ के भीतर अंकित है। जनपदों के तथा अन्य कुछ वंश आदि के नाम, जो प्रायः बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं, वे मौलिकरूप में छोटे कोष्ठ में भी दे दिये गये हैं। जैसे जनपद, महाराष्ट्र (महाराष्ट्राः) [२६३] तथा, वंश, माधव (माधवाः) पृ० ३०१। इसके पश्चात् छोटे अक्षरों में आवश्यक विवरण है। विवरण के नीचे मूल स्रोतों के संकेत हैं।

अनुक्रमणिका के इस भाग के प्रणयन मे कतिपय सहयोगियों और मित्रों से सहायता मिली है। मेरे शोध-सहायक (रिसर्च असिस्टेन्ट्स्) डा० हरिशंकर कोटियाल एम० ए० पी० एच० डी० तथा श्री योगेश शास्त्री, एम० ए०, ने सामग्रियों के चयन मे बहुत प्रयत्न किया है और वे इस ग्रन्थ के तैयार करने में निरन्तर सहयोग देते रहे हैं। मेरे भूतपूर्व शिष्य एवं मित्र श्री मंगलनाथ सिंह और श्री राय आनन्द कृष्ण से भी योजना और मुद्रण के सम्बन्ध में सामयिक सहायता मिलती रही है। मैं इन सभी का आभारी हूँ। शारदा मुद्रण, वाराणसी ने इस ग्रन्थ का छापना स्वीकार किया, जिसके लिये उसके व्यवस्थापकों का आभार मानता हूँ। संकलित शब्दों की चिटों की प्रतिलिपि करने तथा प्रेस की प्रति टंकित करने में श्री गोपाल राम त्रिपाठी से भी सहायता मिली है। बहुत प्रयत्न करने पर भी छापे की कुछ अशुद्धियाँ ग्रन्थ में यत्र-तत्र रह गयी हैं। कृपालु पाठक इसके लिए क्षमा करेंगे।

विजया दशमी सं० २०१४ वि०
काशी हिन्दू विश्व विद्यालय

राजबली पाण्डेय

पुराण-विषयानुक्रमणी

प्रथम भाग

(राजनीतिक)

अंशुमान् ऐक्ष्वाकुवंश । असमञ्जस का पुत्र था । अपने पितामह सगर के बाद वही सिंहासन पर बैठा । सगर के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर अश्व की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया था ।[1] सगर के साठ सहस्त्र पुत्रों के कपिलमुनि के तेज से भस्म हो जाने के उपरान्त वह पाताल में कपिल के आश्रम में पहुँचा और अपने विनम्र तथा भक्तिपूर्वक व्यवहार से कपिल मुनि को प्रसन्न किया । प्रसन्न होकर कपिल मुनि ने न केवल उसे अश्व ले जाने की आज्ञा दी अपितु यह भी वरदान दिया कि उसका पौत्र गङ्गा को स्वर्ग से ले आयेगा जिससे कि उसके पितरों का (सगर के साठ सहस्त्र पुत्रों का) उद्धार होगा । अश्वमेध के अश्व को वापस लाया जिससे राजा सगर का यज्ञ सम्पन्न हो गया ।

१—रामायण, बालकाण्ड ३९।७।
वायु० ८८ । १६६
विष्णु० ४ । ४ १३-१७
ब्रह्माण्ड० ३ । ५१ । ५१, ५४ । १७ तथा ५१, ५६ । ५६, ३०,
भाग० ६ ।१ । २ । १५ व ८, तथा २७-२६-३१ में ६ । ६ । १'२

अक्रोधन चन्द्र-वंश, पौरव शाखा, अयुतायु का पुत्र । देवातिथि का पिता । पौरववंश का ४०वाँ राजा । मत्स्य० के अनुसार स्वरितायु का पुत्र । भागवत पुराण

में पाठ क्रोधन है और पिता का नाम अयुत है।

विष्णु० ४।२०।३
वायु० ६६।२३२
मत्स्य० ५०।३७
भाग० ६।२२।११

अग्निमित्र — शुङ्ग-वंश। पुष्यमित्र का पुत्र। राज्यावधि आठ वर्ष[1]। मत्स्य० में अग्निमित्र का नाम नहीं है। पुष्यमित्र के बाद वसुज्येष्ठ और वसुज्येष्ठ के बाद वसुमित्र[2]। क्या वसुज्येष्ठ और अग्निमित्र एक ही हैं अथवा अग्निमित्र सिंहासन पर ही नहीं बैठा।

१—वायु० ६६।३३८, विष्णु० ४।२४।१०, ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५१
भाग० १२।१।१३
२—मत्स्य० २७२।२८

अग्निवर्ण — सुदर्शन का पुत्र। ऐक्ष्वाकु-वंश की कुश से प्रवर्तित शाखा।

वायु० ८८।२१०
विष्णु० ४।४।४८
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२०६-१०
भाग० ६।१२।५

अङ्ग — चन्द्र-वंश। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित पूर्वीय आनव शाखा। बलि का दीर्घतमस् द्वारा सुदेष्णा के गर्भ से उत्पन्न क्षेत्रज पुत्र। अनु की १४वीं पीढ़ी में तथा

तितिक्षु की छठी पीढ़ी में[१]। इसने अंग जनपद की स्थापना की[२]।

१—वायु० ९९।२८, विष्णु० ४।१८।१, मत्स्य० ४८।२६ तथा ७७ भाग० ९।२३।५, ब्रह्माण्ड० ३।७४।३७

२—वायु० ९९।३३, विष्णु० ४।१८।२, भाग० ९।२३।५–६, ब्रह्माण्ड० ३।७४।३३,८७

अज ऐक्ष्वाकु-वंश। राजा रघु का पुत्र। मत्स्यपुराण में अज को दिलीप का पुत्र माना गया है।

विष्णु० ४।४।४०
वायु० ८८।१८४
भाग० ९।१०।१
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१८४
मत्स्य० १२।४८

अजक (१) प्रद्योत वंश। विशाखयूप का पुत्र। राज्यावधि ३१ वर्ष[१]। विष्णु० के अनुसार जनक और मत्स्य० के अनुसार सूर्यक।

१—वायु० ९९।३१३, विष्णु० ४।२४।२, मत्स्य० २७२।४, भाग० १२।१।३ ब्रह्माण्ड० ३।७४।१२६

अजक (२) चन्द्र वंश। कान्यकुब्ज शाखा। सुनह का पुत्र। अमावसु की ७वीं पीढ़ी में[१]। ब्रह्मपुराण के अनुसार अजक सुनन्द का पुत्र। सुनन्द

सम्भवतः सुनह का बनाया हुआ रूप है[१]।

१—विष्णु० ४।७।२ ९०५।१६, वायु० ९१।९०, हरिवंश० २६।१०,
ब्रह्माण्ड० ३।६६।२०,७४।१२६

२—ब्रह्म० ८।२१

अजमीढ़

पौरव-वंश। हस्तिन् का पुत्र। पौरव-वंश की २८वीं पीढ़ी में।

विष्णु० ४।१९।१०
वायु० ९९।१६६
भाग० ९।२१।२१-२२,
मत्स्य० ४९।४८

अजातशत्रु

शैशुनाग-वंश। बिम्बिसार का पुत्र। वंश पीढ़ी-क्रम छठीं। राज्यावधि पच्चीस वर्ष। मत्स्य० के अनुसार राज्यावधि सत्ताइस वर्ष।

वायु० ९९।३१८
विष्णु० ४।२४।३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१७५
मत्स्य० २७२।१०
भाग० १२।१।६अ

अञ्जन

निमिवंश। शकुनि कुनि (कुणि) का पुत्र और निमिवंश की २८वीं पीढ़ी में। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार शकुनि का पुत्र

सागत था। विष्णु० में अर्जुन के पिता का नाम कुणि है।

वायु० ८६।२०
विष्णु० ४।५।१३
ब्रह्माण्ड० ३।६४।२०

अतिथि

ऐक्ष्वाकुवंश। कुश का पुत्र और श्रीरामचन्द्र का पौत्र।

विष्णु० ४।४।४८
वायु० ८८।२०१
कूर्म० ६।८८
भाग० ६।१२।१
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२०१
मत्स्य० १२।५२

अतिबल

गन्धर्वों का राजा।

वायु० ६२। १८८

अतिबाहु

स्वायम्भुव मनु का पुत्र।

वायु० ३१।१७

अतिविभूति

सूर्य (मानव)-वंश, नाभि नेदिष्ट शाखा खनिनेत्र का पुत्र, पीढ़ी क्रम सख्या ११, वायु० तथा भागवत० में अतिविभूति को कोई स्थान नहीं दिया गया है।

विष्णु० ४।१।१६

अधिसीम कृष्ण

पौरव वंश अश्वमेध दत्त का पुत्र। परिक्षित के बाद चौथी[1] पीढ़ी में उसका पुत्र निचक्षु। वायु० के अनुसार अधिसीम कृष्ण को परपुरञ्जय कहा गया है।

मत्स्य पुराण के अनुसार अधिसीम कृष्ण शतानीक का पुत्र था। शतानीक ने अश्वमेध यज्ञ किया था उसी के फलस्वरूप यह पुत्र हुआ। (अथाश्वमेधेन शतानीकस्य वीर्य्यवान् यज्ञेऽधिसीमकृष्णाख्य)[2]

उसने तीन वर्ष पुष्कर में वृहद्यज्ञ किया तथा दो वर्ष कुरुक्षेत्र में। उसके पुत्र का नाम निचक्षु था[3]। भागवत के अनुसार शतानीक का पुत्र सहस्रानीक। सहस्रानीक का पुत्र अश्वमेधज और उसका असीमकृष्ण[4] असीमकृष्ण और अधिसीमकृष्ण सम्भवतः एक ही व्यक्ति के नाम हैं।

वायु० से ज्ञात होता है कि वायु० का पाठ असीम कृष्ण के समय में हुआ था[5]। अधिसीम कृष्ण ने कुरुक्षेत्र में दीर्घकाल तक यज्ञ किया। वहाँ यज्ञ के लिए दीक्षित ऋषियों के दर्शनार्थ नैमिषारण्य में सूत आए। इसी अवसर पर ऋषियों ने पुराण सुनने की इच्छा प्रकट की तब वृहस्पति के कहने पर सूत लोमहर्षण ने उन्हें यह पुराण सुनाया[6]।

१—विष्णु०४।२१।२, वायु० ३९९।२५७

२—मत्स्य० ५०।८१ के अनुसार।

३—मत्स्य०५०।७८, वायु० ९९।२५९

४—भाग० ९।२२।३९

५—असीमकृष्णे विक्रान्ते राजन्येऽनुपमत्विषि प्रशासतीमां धर्मेण भूमिं भूमिसत्तमे। वायु० १।१२

६—वायु० १।१२-४७

अन्तर्धान

पृथु के पुत्र विजिताश्व का दूसरा नाम। [1] यह नाम इसलिए पड़ा कि शक्र से उसे अन्तर्धान होकर चलने का वरदान मिला था (अन्तर्धानगमि शक्राल्लब्धान्तर्धान सहित [2])। विष्णु पुराण के अनुसार—अन्तर्धान का शिखण्डिनी

से हविर्धान नामक पुत्र उत्पन्न हुआ[३]। किन्तु भागवत में अन्तर्धान की दो स्त्रियाँ हैं, शिखण्डिनी तथा नभस्वती। शिखण्डिनी से उसके तीन पुत्र हुए। पावक, पवमान तथा शुचि। ये वशिष्ठ के शाप से उत्पन्न हुए थे किन्तु फिर योग गति कोप्राप्त हुए। नभस्वती से विभाद के कर्मानुसार शिखण्डिनी से उत्पन्न हुआ[४]।

१—भाग० ४। २४। ३, विष्णु० १। १४।१, वायु० ३। ३२, मत्स्य० ४। ४५, ब्रह्माण्ड० २। ३७। २३

२—भाग० ४। २४। ३

३—विष्णु० १। १४। १

४—भाग० ४। २४। ५, विष्णु० १। १४। २

अन्तःपुराध्यक्ष

यह राजा के अन्त पुर की देखभाल करता था। इस पद पर ऐसा व्यक्ति नियुक्त किया जाता था जो राजा का विश्वासपात्र और चरित्र का शुद्ध हो जिससे कि भ्रष्टाचार तथा अन्य दोषों से अन्त पुर की रक्षा हो सके। अन्त पुराध्यक्ष प्राय अवस्था मे वृद्ध होता था। उसमें ये विशेषताएँ आवश्यक समझी जाती थीं— ऊँचे कुल का परम्परागत, सुभागी, आचरणशुचि तथा विनीत स्वभाव। उसके अधीन बहुत से अन्त पुर के सेवक होते थे जिनमें स्त्रियाँ तथा पुरुष दोनों थे किंतु वृद्ध व्यक्ति ही अधिकाश में अन्त पुर की सेवा में नियुक्त होते थे।

मत्स्य० २१५।४०,

अग्नि० २२०।३,

विष्णु धर्मोत्तर ६०।।२।।२४।४२

अन्धक

यादव-वंश। सात्वत तथा कौशल्या का पुत्र। अन्धक के केकयराज की पुत्री से चार पुत्र थे। कुकुर, भजमान्, शुचि तथा कम्बल

वर्हिप। अन्धक को महाभोज भी कहा जाता है।

विष्णु० ४।१४।८ पृ० ५५५
मत्स्य० ४४।४७ तथा ६१
भाग० ९।२४।६
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१, ३६ तथा ५३
वायु० ९६।२

अन्धक यादवों की एक शाखा। शाल्व के पुत्र अन्धक से प्रवर्तित। उनका राजा उग्रसेन था। कंस की मृत्यु से उन्हें बड़ी शान्ति मिली। प्रभास में वे लोग आपस में कटकर मर गये। कृष्ण भी यादव वंश के थे।

भाग० १।११।१०, १४।२५, ३।४।२०,
वायु० ८६।२८,
भाग० १०।१।६६, ३६।२५।५४,६।२४।६३, १०।४५।१५, ११।२६।३६।३०।१८
ब्रह्माण्ड० ३।६१।२३७१।८५ १४३–४४
मत्स्य० १४४।३६ ४४।६१।८५, ४७।३०,
वायु० ९६–४०

अन्धक (वायु०) शुङ्ग-वंश। वसुमित्र का पुत्र। वंश-पीढ़ी क्रम पाँचवीं[1]। ब्रह्माण्ड० तथा भाग० में पाठ भद्रक है तथा मत्स्य० में अन्तक। पार्जिटर[2] ने अन्धक पाठ स्वीकृत किया है। विष्णुपुराण में आर्द्रक है।

१—वायु० ९९। ३३६, विष्णु० ४। २४। १०, ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५२,
मत्स्य० २७२।२८, भाग० १२।१।१७
२—डायनेस्टीज आफ दि कलि एज, पृ० ३०

पुत्री का विवाह करना स्वीकार किया[१]। वह लड़ने में चपल था[२]। सूर्य ग्रहण के अवसर पर वह स्यमन्तक पंचक क्षेत्र में गया। वहाँ मुसल-युद्ध में सत्यार्थ के साथ अनिरुद्ध का युद्ध हुआ[३]। अनिरुद्ध का पुत्र वज्र था।[४] मुसलयुद्ध में केवल वही बचा था।

१—सम्पूर्ण कथा के लिए देखिए भाग० १०वाँ स्कंध ६१ से ६३ अ०।
२—भाग० ११।१४।३०
३—भाग० ११।३०।१६
४—भाग० १०।६०।३३,३६-७

अनु

चन्द्र (पौरव) वंश। ययाति और शर्मिष्ठा का पुत्र। आनव वंश का प्रवर्तक[१]। ययाति के राज्य के उत्तरी भाग का स्वामी[२]। अनु के तीन पुत्र थे, सभानर, पक्ष और परपक्ष[३]। विष्णु० के अनुसार उनके नाम सभानर, चाक्षुप तथा परमेक्षु हैं। देवयानी के पिता शुक्र के शाप से जरा को प्राप्त ययाति ने अनु से बुढ़ापा अपने ऊपर लेने को कहा किन्तु अनु ने स्वीकार न किया। अतः ययाति ने उसे शाप दिया कि उसकी संतति युवा अवस्था को प्राप्त होकर नष्ट हो जायगी और वह स्वयं अग्निप्रस्कन्द रोग से पीड़ित हो कर मरेगा[४]। म्लेच्छ जाति अनु की संतान मानी जाती है[५]।

१—विष्णु० ४।१८।१, मत्स्य० २४।५४, ३२।१०
२—वायु० ११।५६, ६३।१७, विष्णु० ४।१०।१८, ब्रह्माण्ड० ३।६८।६०, ७३।१२६, भाग० ६।१६।२२
३—वायु० ६६।१२ १३
४—मत्स्य० ३३।२१ २८
५—वही ३४।३०

अनुविन्द

यादववंशान्तर्गत वृष्णि-कुल के राजा सूर की पुत्री राज्याधिदेवी तथा अवन्तिराज का पुत्र। अवन्तिराज कौन था यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता[१]। इसके भाई का नाम विन्द था और बहिन का नाम मित्रविन्दा था। संभवतः विंद और अनुविन्द वृष्णियों या कृष्ण से

द्वेष रखते थे यद्यपि उनकी बहिन मित्रविन्दा कृष्ण को पति रूप में चाहती थी, किन्तु दोनों भाई इसके विरुद्ध थे। उसे वे दुर्योधन को देना चाहते थे। स्वयंवर के अवसर पर कृष्ण अनेक राजाओं के देखते देखते उसे बलपूर्वक हर ले गये[2]। दोनों भाइयों ने श्रीकृष्ण के विरुद्ध जरासन्ध की सहायता दी। जब जरासन्ध ने मथुरा को घेरा तो उसने विन्द और अनुविन्द दोनों भाइयों को दक्षिण द्वार पर नियुक्त किया था।[3]

१–वायु० ९६।१४७, विष्णु० ४।१४।११, भाग० १०।५८।३१

२–भाग० १०।५८।३०-३१

३–भाग० १०।५०।२

अनेनस्

निमि वंश, क्षेमारि का पुत्र। निमि-वंश का ३६वाँ राजा[1]। वायु० के अनुसार ३६वाँ राजा सुनय है[2], भाग० के अनुसार राजा समरथ। क्षेमाधि (क्षेमाद्रि) का पुत्र।[3]

१–विष्णु० ४।१०।१३

२–वायु० ८९।२२

३–भाग० ९।१४।२३-२४

अभयद

पौरव वंश। मनस्यु का पुत्र। पौरव वंश का १०वाँ राजा।
विष्णु०, ब्रह्म० के अनुसार अभयद वायु० के अनुसार जयद।

विष्णु० ४।१९।१

वायु० ९९।१२१

ब्रह्म० १०।२

अभिजित्

यादव वंश। अंधक शाखा। तुम्बुरुसखा का पुत्र, अन्धक कुल की ७वीं पीढ़ी में। भाग० में पाठ दरियोत है।

वायु० ९६।११७

ब्रह्माण्ड० ३।७०।११६

अभिजित्

यादव वंश, अन्धक शाखा। अन्धक [भव—] चन्दनोदक दुन्दभि का पुत्र तथा पुनर्वसु का पिता[1]। वायु० के अनुसार अभिजित् के पिता का नाम रेवतनन्दनोदक तथा भाग० में केवल चन्दनोदकदुन्दभि दिया है। पर अन्धक वंश का प्रवर्तक उपरोक्त अन्धक से भिन्न है।

१—विष्णु० ४।१४।४, वायु० ९६।११६, भाग० ९।२४।२८ ब्रह्माण्ड० ३।७१।११९

अभिमन्यु (१)

चाक्षुष मनु का पुत्र[1]। विष्णु० के अनुसार वह मनु और नड्वला का पुत्र था[2]।

१—ब्रह्माण्ड० २-३६।८०, १०७, मत्स्य० ४।४२, वायु० ६२।६८ तथा ९१
२—विष्णु० १।१३।५

अभिमन्यु (२)

पौरव वंश, कुरुशाखा। सुभद्रा अर्जुन का पुत्र। जब पाण्डव वन में गये तो कृष्ण पाण्डवों से मिलने आये थे। वे द्रौपदी और अभिमन्यु को द्वारका ले गये[1]। वह बहुत बड़ा योद्धा था और महाभारत युद्ध में उसका पराक्रम विशेष स्मरणीय है। उसे अतिरथों का विजेता[2] तथा रथी कहा गया है[3]। उसने बृहद्बल को मारा[4]। उसका विवाह मत्स्यराज विराट् की पुत्री उत्तरा से हुआ था। जिससे परीक्षित् उत्पन्न हुआ[5]। युद्ध में वह जयद्रथ द्वारा मारा गया[6]। उसका पुत्र परीक्षित पाण्डवों की मृत्यु के बाद सिंहासन पर बैठा।

१—विष्णु० ४।२०।१२, वायु० ९९।२४९, ९९।१७६, भाग० ९।२२।३३, मत्स्य० ५०।५६, ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७८
२—भाग० ९।२२।३८, विष्णु० ४।२०।१८
३—वायु० ९९।१७२, ९९।२४९
४—विष्णु० ४।४।१२
५—वायु ९९।२४९ विष्णु ४।२०।१८, भाग० ९।२२।३४, मत्स्य० ५०।५९
६—भाग० १०।७८।३०

अभूमि

यादव वंश। वृष्णिशाखा। अश्विनी तथा अक्रूर का पुत्र[1]। विष्णु० वायु० तथा भाग० के अनुसार अक्रूर के पुत्रों के नाम देववान और उपदेव थे[2]। वायु० के अनुसार अभूमि श्वफल्क के छोटे भाई चित्रक के पुत्रों में से एक था[3]। विष्णु० में चित्रक पृथु विपृथु इत्यादि कई पुत्रों के होने का उल्लेख है। सबके नाम नहीं दिये गये हैं पर अभूमि भी उन्हीं में से एक रहा होगा[4]।

१—मत्स्य० ४५।३३

२—विष्णु० ४।१४।२, वायु० ९६।११२, भाग० ९।२४।१८

३—वायु० ९६।११४

४—विष्णु० ४।१४।२

अम्बरीष (१)

ऐक्ष्वाकु वंश। नाभाग का पुत्र। राजा भगीरथ की दूसरी पीढ़ी में। सिन्धुद्वीप का पिता अम्बरीष एक योग्य राजा माना गया है। वायु० और विष्णु० के अनुसार उसके राज्य में प्रजा त्रयताप से पीड़ित नहीं थी।

एव वंशपुराणज्ञा गायन्ति नः परिश्रुतम्
नाभागेरम्बरीषस्य भुजाभ्यां परिपालिता
बभूव वसुधात्यर्थं तापत्रयविवर्जिता।

वायु० ८८।१७१-१७२
विष्णु० ४।४।१८
ब्रह्म० ८।२४
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१७०

अम्बरीष (२)

मानव वंश। नाभाग के पुत्र। विष्णु के भक्त। उन्हें महान् भागवत कहा गया है[1]। वे सातों द्वीपों के स्वामी थे। किन्तु इस अतुल वैभव के होने पर भी इसे लोष्ठवत् समझते और भगवद्भक्ति में लीन रहते थे। उन्होंने योग के महत्व को समझा। वे मन, वचन और शरीर से भगवद्-भक्ति में लीन हो गये। निर्जन भूमि में सरस्वती की धारा लाने के उद्देश्य से उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया जिसमें वशिष्ठ, असित, गौतम इत्यादि ऋत्विज थे। विष्णु ने प्रसन्न होकर उन्हें चक्र प्रदान

किया। उन्होंने एक वर्ष तक द्वादशी व्रत रखा। व्रत के समाप्त होनेपर पुन तीन दिन तक उपवास किया और मधुवन में विष्णु की पूजा कर ब्राह्मणों को प्रभूत दान दिया। ब्राह्मणों को तृप्तिपूर्वक भोजन कराने के उपरान्त वे पारण करने का उपक्रम कर रहे थे कि दुर्वासा ऋषि वहाँ अतिथि होकर आ पहुँचे। अम्बरीष ने दुर्वासा की विधिवत् पूजा कर भोजन करने के लिए उनसे अनुनय किया। दुर्वासा ने भोजन करना स्वीकार कर लिया और स्नान करने के लिए यमुना चले गये। वे कालिन्दी के जल में जाकर ध्यान में लीन हो गये। बहुत समय बीत चला। इधर पारण का समय बीता जा रहा था। अत धर्मसंकट के समय राजा ने पुरोहितों से परामर्श किया कि ऐसे समय पर क्या किया जाय? पुरोहितों ने उन्हें केवल जल पीकर पारण करने की अनुमति दी। अम्बरीष ने वैसा ही किया। दुर्वासा आवश्यक धार्मिक कृत्य कर लौटे और यह जानकर कि अम्बरीष ने पारण कर लिया बहुत क्रुद्ध हुए और उन्होंने कालानल के सदृश दीप्त कृत्या बनाकर अम्बरीष पर प्रहार किया। अम्बरीष किंचित् भी विचलित नहीं हुए। विष्णु के चक्र ने कृत्या को नष्ट कर दिया और दुर्वासा का पीछा किया। दुर्वासा अपने प्राणों के रक्षार्थ ब्रह्मा, विष्णु और शिव के पास गये किन्तु उन्हें वहाँ भी शरण नहीं मिली। अन्त में विष्णु के कहने पर दुर्वासा अम्बरीष के पास आये और उन्होंने क्षमायाचना की। तब अम्बरीष ने चक्र से लौटने के लिए प्रार्थना की और दुर्वासा का पिंड छूटा। इसके उपरान्त उन्होंने दुर्वासा को भोजन कराया। राजा को आशीर्वाद देकर दुर्वासा स्वर्गलोक को चले गये। अपने पुत्रों को राज्य सौंपकर अम्बरीष भगवद्-भक्ति में लीन होने के लिए वन को चले गये[2]। अम्बरीष के तीन पुत्र थे—विरूप, केतुमान् तथा शम्भु[3]।

१–भाग० ६।४।१२

२–भाग० ६।४ तथा ५ अध्याय सम्पूर्ण तथा ६।६।१, ब्रह्माण्ड० २।७३।७४, ३।३४।३६, वायु० ८८।१७१, विष्णु० ४।२।८-७, ४।३।८, मत्स्य० १२।२० तथा ४८

३–भाग० ६।६।१

अम्बरीष (३) ऐक्ष्वाकु वंश। मान्धाता और बिन्दुमती का पुत्र। युवनाश्व का पिता।

(यह युवनाश्व मान्धाता के पिता युवनाश्व से भिन्न है[१])।

१–वायु० ८८।७०-७२, विष्णु० ४।२।१८, ४।३।५, ब्रह्माण्ड० ३।६३।७०

अमर्ष या मर्ष

ऐक्ष्वाकु वंश, सुसन्धि का पुत्र[१]। वायु० के अनुसार मर्ष सहस्वान् एक ही राजा था। किंतु विष्णु० में अमर्ष पाठ है और सहस्वान् के स्थान में महस्वान् नाम है और महस्वान् को मर्ष (अमर्ष) का दूसरा नाम न मानकर मर्ष (अमर्ष) का पुत्र माना गया है। भाग० के अनुसार अमर्षण सन्धि का पुत्र और महस्वान् का पिता था। पार्जिटर में सहस्वान् और अमर्ष एक ही माने गये हैं[२]।

१–विष्णु० ४।४।४८, वायु० ८८।२११, मत्स्य० ६।१२।७, भाग० ६।१२।७, ब्रह्माण्ड० ३।६४।२१६

२–पार्जिटर, ए० इ० हि० ट्रे० पृ० १४६

अमावसु

चन्द्र-वंश। पुरूरवा के तृतीय पुत्र अमावसुने नया राज्य स्थापित किया और उससे एक नया राजवंश प्रारम्भ होता है। पार्जिटर ने अमावसु के वंशजों को कान्यकुब्ज शाखा में माना है परन्तु पुराणों में कहीं भी स्पष्ट रूप से नहीं लिखा है कि अमावसु का राज्य कान्यकुब्ज में था।

विष्णु० ४।७।२
वायु० ९१।५१
हरि० २७।१
ब्रह्मा० ३।६६।२३
भाग० ६।१५।१
ब्रह्म० ८।११

अयुतायु (१)

पौरव वंश। आराधी (आराधि) का पौत्र, महाबल का पुत्र। पौरव वंश का ३६वाँ राजा। विष्णु० के अनुसार अयुतायु आरावी (आराधी) का ही पुत्र है। आरावी और अयुतायु के बीच महाबल नाम नहीं आता है।

विष्णु० ४।२०।३
वायु० ९९।२३२

अयुतायु (२)

चन्द्र वंश, बृहद्रथ द्वारा स्थापित मागध शाखा। सोमाधि का पौत्र और श्रुतश्रवा का पुत्र। कलियुग के मगध के राजाओं में जो सोमाधि के पश्चात् आते हैं उनमें इसका पीढ़ी क्रम तीसरा है। राज्यावधि २६ वर्ष[1]। मत्स्य० के अनुसार श्रुतश्रवा का पुत्र अप्रतीप था[2]।

१—वायु० ९९।२९९ विष्णु० ४।२३।२ ब्रह्माण्ड० ३।७४।१११
भाग० ९।२२ ४६
२—मत्स्य० २७१।२१

अयुतायु, अयुताश्व

ऐक्ष्वाकु वंश, सिन्धुद्वीप का पुत्र और ऋतुपर्ण का पिता।

भाग० ९।९।१६-१७
ब्रह्मा० ३।६३।१७२
विष्णु० ४।४।१८
वायु० ८८ १७३

अर्क

पुरु वंश, वसु का पुत्र। उसकी स्त्री का नाम वासनी था।

भाग० ९।२१।३१

अर्जुन

यादव वंश, हैहय शाखा, कृतवीर्य का पुत्र। हैहय वंश की १०वीं पीढ़ी में। उसकी सहस्र भुजायें थीं, इसलिए वह सहस्त्रार्जुन भी कहा गया है। भगवान् दत्तात्रेय की अयुत वर्ष तक आराधना के उपरान्त उसने चार वरदान पाये—सहस्र भुजाएँ, अधर्म सेवा निवारण, (अधर्में दीयमानस्य सद्भिस्तस्मान्निवारणम्), धर्म से पृथ्वीविजय तथा धर्म से उसका पालन, शत्रुओं से पराजय न पाना तथा निखिल संसार में प्रख्यात पुरुष के हाथ मृत्यु। भाग० के अनुसार उसे अणिमा, महिमा इत्यादि अष्ट सिद्धियाँ तथा योगेश्वरत्व प्राप्त था[1]। कार्तवीर्य्य सहस्त्रार्जुन सात द्वीपों का स्वामी था और उसने छः वसुओं का उपभोग किया। इस सप्त-द्वीपवती पृथ्वी में उसने दश सहस्र यज्ञ किये। इन यज्ञों की वेदिकाएँ सुवर्ण की होती थीं[2] (काञ्चनवेदिका) और उन वेदियों के यज्ञ-स्तम्भ भी सोने के ही थे। उन यज्ञों को देखने के लिये विमानस्थ देवता तथा गंधर्व और अप्सरायें

नित्य आती थीं।[३] (सर्वदेवैर्महाभागैर्विमानस्थैरलंकृता। गधर्वैरप्सरोभिश्च नित्यमेवोपशोभिता ॥)

उसके विषय में यह कथा प्रसिद्ध है —

नून न कार्तवीर्यस्य गतिं यास्यति मानवा (पार्थिवा)।
यज्ञैर्दानैस्तपोभिर्वा प्रश्रयेण दमेन च (विक्रमेणश्रुतेन च)॥
अनष्टद्रव्यता च तस्य राज्येऽभवत्।[४]

उसके राज्य में प्रजा सुखी थी और यथाकाल वृष्टि होती थी[५]। अर्जुन की राजधानी माहिष्मती थी। यह नगर उसने कर्कोट नागों से जीता था। कहा गया है कि एक सहस्र नागों की सहायता से कर्कोट सभा को जीत कर उसने वहां नगर बसाया।

स हि नागसहस्रेण महिष्मत्या नराधिप
कर्कोटसभा जित्वा पुरी तत्र न्यवेशयत्।[६]

सहस्रार्जुन इतना बलशाली था कि वह रावण को भी जीत कर उसे बन्दी बना कर महिष्मती ले आया। रावण के पिता पुलस्त्य के बहुत अभ्यर्थना करने पर ही सहस्रार्जुन ने रावण को मुक्त किया[७]। पुराणों के अनुसार उसके राज्य की अवधि पचासी हजार वर्ष मानी जाती है[८]। कार्तवीर्य अर्जुन के एक सौ पुत्र थे, जिनमें पांच मुख्य थे, उनके नाम इस प्रकार हैं—शूर, शूरसेन, वृषण, मधुध्वज तथा जयध्वज। जयध्वज का राज्य अवन्ति में था। जयध्वज को ही कार्तवीर्य के वंश को चलाने वाला माना जाता है[९]। विष्णु के अवतार परशुराम ने कार्तवीर्य अर्जुन का वध किया[१०]।

१—विष्णु० ४।११।३, वायु० ६८।६ १२, ब्रह्म० ११।१६२-६४, भाग० ६।१५।१६, ब्रह्माण्ड० ३।६९।६ १३

२—वायु० ६४।२१, विष्णु० ४।११।१२, भाग० ६।२३।२३, ब्रह्माण्ड० ३।६९।१४, ब्रह्म० ११।१६६

३—वायु० ६४।१६ १८, ब्रह्मा० ३।६९।१६ १८, ब्रह्म० ११।१६८ ६६

४—विष्णु० ४।११।४ ५, ब्रह्म० ११।१७३, वायु० ६८।१६, ब्रह्माण्ड० ३।६९।२०

५—ब्रह्म० ११।१७४—७५

६—वायु० ६४।२३, विष्णु० ४।११।८, भाग० ६।२३।२६, ब्रह्माण्ड० ३।६९।२२

७—वायु० ६४।२६, विष्णु० ४।११।१६, ब्रह्माण्ड० ३।६६।२६

८—वायु० ६४।२३, विष्णु० ४।११।६, भाग० ६।२३।२६, ब्रह्माण्ड० ३।६६।२३

६—वायु० ६४।५०, विष्णु० ४।११।७, ब्रह्माण्ड० ३।६६।५० भाग० ६।२३।२७, महा० ११।२००-१, मत्स्य० ४३।४६

१०—वायु० ६४।४७, विष्णु० ४।११।७, ब्रह्माण्ड० ३।६६।५०, भाग० ६।२३।२७, महा० ११।२००-१, मत्स्य० ४३।४६

अर्जुन (२)

चन्द्र (पौरव शाखा) वंश। पाण्डु और कुन्ती का इन्द्र से उत्पन्न पुत्र। द्रौपदी से उसको श्रुतकीर्ति नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, उलूपी से इरावान्, मणिपुर के राजा की पुत्री से बभ्रुवाहन, तथा सुभद्रा से अभिमन्यु[1]। अर्जुन ने खाण्डववन का दाह किया। अग्नि ने सन्तुष्ट हो अर्जुन को धनुष, श्वेत अश्वयुक्त रथ, अक्षय तूण और अभेद्य कवच दिया[2]। उसी समय अर्जुन ने मय नामक असुर को अग्नि-बन्धन से मुक्त किया। कृतज्ञता स्वरूप मय ने भी पाण्डवों के लिए एक ऐसी सभा बनायी जिसमें दुर्योधन को जल और स्थल ठीक न मालूम होने से भ्रम हो जाता था[3]। जब कृष्ण सत्या से विवाह कर द्वारिका लौट रहे थे तब अन्य राजाओं ने कृष्ण को रोका, उस अवसर पर अर्जुन ने बाणों की वर्षा कर शत्रुओं को भगाया[4]। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर वे जरासन्ध का वध करने के लिए ब्राह्मण के वेश में श्रीकृष्ण के साथ गिरिव्रज गये। जरासन्ध ने श्रीकृष्ण से इसलिए युद्ध नहीं किया कि वे डर से मथुरा छोड़कर द्वारिका चले गये थे अत उन्हें वह भीरु समझता था। अर्जुन से भी वह इसलिये नहीं लड़ा कि उसने अर्जुन को बल और पराक्रम में अपने समान नहीं माना। अत उसने भीम से लड़ना स्वीकार किया। कृष्ण के संकेत पर भीम ने जरासन्ध के दो टुकड़े कर दिये। जरासन्ध का वध कर तीनों हस्तिनापुर लौटे[5]।

अपने वनवास काल में अर्जुन तीर्थ यात्रा में भ्रमण करते हुए प्रभास पहुँचे। वहाँ सूचना मिली कि बलराम सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से करना चाहते हैं। किन्तु अर्जुन स्वयं सुभद्रा से विवाह करना चाहते थे। अत उन्होंने वर्षा ऋतु के चार महीने त्रिदण्डी का वेश बना कर द्वारिका में व्यतीत

किये। इसी बीच बलराम ने उन्हें अपने घर में निमंत्रित किया और श्रद्धा पूर्वक भोजन कराया। वहाँ सुभद्रा से उनका साक्षात्कार हुआ। दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो गये। एक दिन देवयात्रा के अवसर पर सुभद्रा जब रथ पर बाहर निकली तो कृष्ण की अनुमति से अर्जुन सुभद्रा को हर ले गये। बलराम क्षुब्ध हुए, किन्तु श्रीकृष्ण तथा अन्य मित्रों ने उनका क्रोध ही शान्त किया। अन्त में बलराम ने प्रसन्न हो अपनी बहिन के लिए अनेक उपहार भी भेजे[६]।

महाभारत युद्ध के समय अपने सम्बन्धियों को युद्ध के लिए उपस्थित देख अर्जुन को विषाद हुआ और उन्होंने युद्ध के लिए अनिच्छा प्रकट की। कृष्ण ने उन्हें विश्वरूप का दर्शन कराया और अपना कर्तव्य पूरा करने लिए उपदेश देकर युद्ध के लिए उत्साहित किया[७]। अर्जुन ने सिन्धुराज के पुत्र जयद्रथ का वध कर अभिमन्यु की मृत्यु का प्रतिशोध लिया[८]।

अश्वत्थामा ने द्रौपदी के पाँचों सोते हुए पुत्रों को मार दिया था। अर्जुन ने इसका प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा द्रौपदी से की और वह अश्वत्थामा को पकड़ कर द्रौपदी के समक्ष ले आये। ब्राह्मण तथा गुरु-पुत्र होने के कारण अर्जुन ने अश्वत्थामा का वध नहीं किया, कृष्ण के संकेतानुसार अश्वत्थामा का चूड़ामणि ले कर ही उसे छोड़ दिया[९]।

उग्रसेन के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर अर्जुन द्वारिका में कृष्ण के अतिथि थे। इस अवसर पर एक ब्राह्मण ने आकर कृष्ण से कहा कि आपके राज्य में राजा के दोष के कारण मेरे पुत्र पैदा होते ही मर जाते हैं। यह सुनकर अर्जुन ने ब्राह्मण के शिशु की मृत्यु से रक्षा करने की प्रतिज्ञा की और वे धनुष लेकर सूतिकागृह पहुँचे। किन्तु ब्राह्मण का नवजात शिशु पैदा होते ही मर गया। अर्जुन उस शिशु की खोज में यम, इन्द्र तथा अन्य देवताओं के यहा गये, और द्विजशिशु को न पाने से अपने को प्रतिज्ञा से च्युत होते देख कर उन्होंने अग्नि में प्रवेश करने का निश्चय किया। वे अग्नि में प्रवेश करने ही वाले थे कि कृष्ण ने उन्हें रोक दिया। अर्जुन को लेकर वे नारायण धाम पहुँचे और ब्राह्मण के सब बच्चों को लेकर कृष्ण अर्जुन द्वारिका लौटे।

बच्चे ब्राह्मण को लौटाये गये। तत्पश्चात् उन्हों ने यज्ञ में भाग लिया[१०]।

भाग० तथा मत्स्य० से अर्जुन के अन्य पराक्रमों की सूचना मिलती है। कि उन्होंने इन्द्र को खाण्डव वन में हराया। वे किरात-वेश में शिव को प्रसन्न कर पाशुपत अस्त्र लाये। उन्होंने नीवात कवचों को पराजित किया[११]।

इन्द्रलोक जाकर अकेले ही उन्होंने साठ हजार दानवों का संहार किया। ये दानव देवताओं के यज्ञ में विघ्न डालते थे[१२]।

बन्धुओं से मिलने के लिए अर्जुन द्वारिका गये। वहाँ कृष्ण के स्वर्गलोक-प्रस्थान तथा मुसल-युद्ध में समस्त यादवों के संहार की सूचना उन्हें मिली। वे उग्रसेन इत्यादि यादवों का प्रेत-कृत्य कर के यादवों को लेकर इन्द्रप्रस्थ लौट रहे थे। वापस लौटते हुए अर्जुन पर आभीर तथा अन्य दस्युओं ने आक्रमण किया और यादव स्त्रियों का अपहरण कर लिया। अर्जुन गाण्डीव धनुष से बाण चलाने में असमर्थ रहे। हताश हो वे इन्द्रप्रस्थ लौटे। उन्होंने युधिष्ठिर, कुन्ती इत्यादि को यादव-संहार तथा श्रीकृष्ण के स्वर्ग जाने की सूचना दी[१३]।

१—भाग० ६।२२।२६—३३, ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५४ तथा ७८, विष्णु० ४।१४।१०, ५।१२।१८—२४

२—भाग० १०।५८।१३—२८

३—वही० १०।५८।५४

४—वही० १०।८५।५४

५—वही० १०।७२।१३—१६ तथा २६ ३२, १०।७२।४४ ४८

६—वही० १०।८६।२ १२

७—वही० १०।७८।२१ २५

८—वही० ३४—३५

९—वही० १।७।१५—१७

१०—वही० १०।८६।२२—६४

११—वही० १०।८६।२४ ४—५, मत्स्य० ६।२६

१२—वही० ६।६।३६

१३—वही० १।१२।३२, १४।१ तथा २३, १५।५—२७ तथा ३२, ११।३०।४७—४८, ३१।२१—२५, मत्स्य० ७०।१२, विष्णु० ५।३८।५—६ १२—२४, २८—२६

अर्थदूषण

अर्थ या अर्थ के साधनों का दुरुपयोग। राजा के लिए आदेश है कि वह अर्थदूषण रोके। प्राकार (आकर, खानें इत्यादि) तथा दुर्गों का दुरुपयोग, देश और काल का ध्यान न रखते हुए अयोग्य को दान देना अर्थदूषण माने गये हैं।

मत्स्य० २२०।११-१३
अग्नि० २२।६-७

अर्हस्

यादवों की एक जाति। ये द्वारिका में रहते थे। 'मधुभोजदशार्हार्ह-कुकुरान्धकवृष्णिभिः। आत्मतुल्यबलैर्गुप्ता नागैर्भोगवतीमिव ॥'

भाग० १।११।११;

अरिजित्

वृष्णि-वंश। कृष्ण और भद्रा का पुत्र।

भाग० १०।६१।१७

अरिञ्जय [रिपुञ्जय, पुरञ्जय]

बृहद्रथ-वंश का अन्तिम राजा। वीरजित् (विश्वजित्, भाग०; विष्णु०) का उत्तराधिकारी। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि वह वीरजित् (विश्वजित्) का लड़का था। रिपुञ्जय का सुनिक नाम का मन्त्री था उसने स्वामी के साथ विश्वासघात कर उसे मार डाला और अपने पुत्र प्रद्योत को राजा बनाया। राज्यावधि ५० वर्ष। वायु पुराण में बृहद्रथ-वंश का अन्तिम राजा। बृहद्रथ से लेकर अरिञ्जय तक ३२ राजा हुए। सब ने मिलकर एक हजार वर्ष तक राज्य किया।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१२१
वायु० ९९।३०८
विष्णु० ४।२३।३
विष्णु० ४।२४।१
मत्स्य० २७१।३०; २७२।१
भाग० १२।१।२

अरिमर्दन

चन्द्र वंश। यादवों की सात्वत शाखा। श्वफल्क तथा गान्दिनी के बारह पुत्रों में से एक। विष्णु० में अरिमेजय है।

वायु० ९६।११०
भाग० ९।२४।१६
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१११
विष्णु० ४।१४।२

अरिष्टकर्मा [अनिष्टकर्मा]

आन्ध्रवंश, पट्टुमान का पुत्र। पार्जिटर में दिये पुराण वृत्तान्त के अनुसार राज्य काल २५ वर्ष[1]। विष्णु० के अनुसार १०वाँ राजा[2], किन्तु पार्जिटर के अनुसार १६वाँ (पुलोमा के पश्चात्)।[3] पुलोमा और पट्टुमान को एक ही राजा माना गया है, मत्स्य० में अरिष्टकर्मा का उल्लेख नहीं है।

१—पार्जिटर० डा० आ० क० ए० पृ० २६ तथा ४०
२—विष्णु० ४।२४।१२, ब्रह्माण्ड०३।७४।१६४, भाग० १२।१।२८
३—पार्जिटर डा० आ० दि० क० ए० पृ० ३६ तथा ४०

अरिष्टनेमि

श्रुतजित् (निमिवंश भाग० के अनुसार पुरुजित्) का पुत्र, निमि-वंश का २१वाँ राजा[1]। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार निमि वंश की ३०वीं पीढ़ी में सुवर्चस् का पुत्र श्रुत था। अरिष्टनेमि का कोई उल्लेख नहीं है।[2]

१—विष्णु० ४।५।१३, भाग० १०।९।२३
२—वायु० ९।२०-२१, ब्रह्माण्ड० ३।६४।२०-२१

अलर्क

चन्द्र-वंश। काशी शाखा। वत्स का पुत्र। ब्रह्माण्ड० के अनुसार द्युतमान् का पुत्र, प्रतर्दन का पौत्र काशिराज की ६वीं पीढ़ी में। उसने ६० हजार छ सौ वर्ष तक राज्य किया[1]। उसके विषय में यह श्लोक प्रसिद्ध है[2] :

षष्टिवर्षसहस्त्राणि षष्टिवर्षशतानि च अलर्कादपरो नान्यो बुभुजे मेदिनीं पुरा।

वायु० के अनुसार लोपामुद्रा के प्रसाद से उसे दीर्घ आयु प्राप्त हुई क्षेमक राक्षस को मार कर उसने काशी नगरी बसायी[3]। मत्स्य० के अनुसार वह शिव का भक्त था। उनके ही प्रसाद से उसे काशी नगरी पुन प्राप्त हुई। अन्त में सब कुछ शिव को अर्पण कर वह शिव लोक को प्राप्त हुआ।[4]

१-विष्णु० ४।८।८, ब्रह्माण्ड० ३।६७।६६, भाग० ६।१७।२८

२-विष्णु० ४।८।८, वायु० ६२।६६-६० तथा ७२, ब्रह्माण्ड० ३।६७।७०

३-वायु ६२।६६-६८, ब्रह्माण्ड० ६।६७।७१-७२

४-मत्स्य० १८० ८२

स्मरण रहे कि राजा दिवोदास के समय निकुम्भ के शाप से वाराणसी [illegible] हो गयी थी।

वायु० ६२।५३

अविक्षित् (अविक्षि)

सूर्य (मानव) वंश। नाभानेदिष्ट शाखा। करन्धम का पुत्र। पीढ़ी क्रम सख्या बारह[1]। विष्णु० तथा भाग० के अनुसार तेरहवाँ स्थान[2]।

१—वायु० ८६।८

२—विष्णु० ४।१।१६, भाग० ६।२।२८

अश्मक

ऐक्ष्वाकु वंश के राजा सौदास का पुत्र। ब्राह्मणी के शाप से सौदास स्त्री-सभोग नहीं करता था। अत उसने अपनी रानी दमयन्ती से नियोग द्वारा पुत्रोत्पत्ति के लिए कुलगुरु वशिष्ठ को नियुक्त किया। सात वर्ष तक जब वह गर्भ बाहर नहीं निकला तो रानी ने पेट पर पत्थर के आघात से उसे बाहर निकाला। अत उस पुत्र का नाम अश्मक हुआ। वायु० में नियोग से पुत्रोत्पत्ति का वर्णन है किन्तु गर्भ के अन्दर रह जाने तथा प्रस्तर प्रहार से बाहर निकालने का कोई वर्णन नहीं है।

विष्णु० ४।४।३६

ब्रह्माण्ड० ३।६३।१४४

वायु० ८८।१७७

भाग० ६। ।३८-४०

अश्वपति

मद्रराज। उसके कोई सन्तति नहीं थी। वह सावित्री की पूजा करता था। दस महीने के उपरान्त सावित्री राजा के सामने प्रकट हुई और बोली कि राजन्! तुम मेरे भक्त हो। मैं तुमसे तुष्ट हूँ। तुम्हें मेरे वरदान से पुत्री—रत्न प्राप्त होगा। कालान्तर में उसकी पत्नी मालती ने एक पुत्री को जन्म दिया जिसका नाम भी सावित्री ही रखा गया। उसका विवाह सत्यवान् से हुआ।

मत्स्य० २०८।५।११

अश्वमेध दत्त (अश्वमेधज)

पौरव वंश। शतानीक का पुत्र। परीक्षित की तीसरी पीढ़ी में। मत्स्य० में अश्वमेधदत्त का कोई स्थान नहीं है। शतानीक का पुत्र अधिसीमकृष्ण माना गया है जो कि अन्य पुराणों के अनुसार अश्वमेधदत्त का पुत्र माना गया है।

विष्णु० ४।२२।२
वायु० ९९।२५७
भाग० ९।२२।३९

अशोक

मौर्य्यवंश। बिन्दुसार का पुत्र। मौर्य्यवंश का तृतीय शासक। राज्यावधि २७ वर्ष। भाग० के अनुसार वारिसार का पुत्र। मत्स्य० में शक पाठ अशुद्ध है।

भाग० १२।१।१३
वायु० ९९।३३२
विष्णु० ४।२४।८
मत्स्य० २७२।२३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१४५

अष्टक

चन्द्र वंश। विश्वामित्र और दृषद्वती का पुत्र। अष्टक-गण का प्रवर्तक अमावसु की १२वीं पीढ़ी में।

विष्णु० ४।७।१७
वायु० ९१।१०३
भाग० ९।१६।३६

अष्टवर्ग

अष्टवर्ग के अन्तर्गत कृषि, वणिकपथ्, दुर्ग, सेतु, कुंजर बन्धन, खनि, सेना तथा शून्य जनपदों में जनसंख्या को बढ़ाना सम्मिलित है। राजा का आदेश है कि वह इन आठ चीजों का संरक्षण एवं सवर्धन करें।

अग्नि २३८। ४४-४५

अस्त्राचार्य

यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि अस्त्राचार्य का कार्य केवल युवराज एवं विशिष्ट राजकुमारों को अस्त्र-शिक्षा देने का था अथवा सारी सेना को। यह मानना ही अधिक सगत होगा कि केवल राजघर के लोगों को शिक्षा देने का भार अस्त्राचार्य के ऊपर रहा होगा। उदाहरणार्थ :—द्रोणाचार्य धृतराष्ट्र के यहाँ अस्त्राचार्य थे और वे केवल राजकुमारों को ही शिक्षा देते थे।

असमंजस

ऐक्ष्वाकु वंश। राजा सगर का पुत्र, यद्यपि पार्जिटर ने उसकी गिनती ऐल वंश के राजाओं में की है। पुराणों से यह स्पष्ट है कि यह पुरवासियों के अनिष्ट में रत रहने के कारण पिता द्वारा त्याग दिया गया था।

वायु० ८८-१६६
विष्णु० अंश ४। ४। ४ पृ० ४६६
भाग० ९। ८। १५-१६
ब्रह्माण्ड० ३। ५१। ३८-६१, ६३। १६० तथा १६५

अहम्याति
[अर्हयाति]

पौरव वंश। सम्पाति का पुत्र। पौरव वंश की १४वीं पीढ़ी में। वायु० के अनुसार बहुगव का पुत्र संजाति और संजाति का पुत्र रौद्राश्व[1]। किन्तु विष्णु० और भाग० के अनुसार सम्पाति के पश्चात् अर्हयाति (अहंपाति) और अर्हयाति का पुत्र रौद्राश्व[2]।

१—वायु० ९९।१२२
२—विष्णु० ४।१९।१; भाग० ९।२०।३

अहीनगु [अनीह]

ऐक्ष्वाकु वंश। देवानीक का पुत्र। भाग० में पाठ अनीह है। वायु के अनुसार परिपात्र का पिता माहक। विष्णु के अनुसार अहीनगु का पुत्र रूप।

विष्णु० ४।४।४८
वायु० ८८।२०६
ब्रह्म० ६।६१
भाग० ६।१२।२

अहीनर [वहीनर]

पौरव। सोम वंश। उदयन के बाद राजा हुआ। पौरव राजा परिचित के बाद उसकी क्रम संख्या २५ है। वायु० में यह नाम नहीं आता। मेधावी और दण्डपाणि के बीच के जिन राजाओं का मत्स्य० तथा विष्णु० में उल्लेख है, वायु० मे नहीं है।

मत्स्य ५०।८८
भाग० ६।२२।४३

अक्षयाश्व

सूर्य वंश, वैवस्वत मनु का वंश। संहताश्व का द्वितीय पुत्र। विष्णु० में संहताश्व के पुत्र कृशाश्व का ही उल्लेख है।

वायु० ८८।६३
विष्णु० ४।२।१३

आगावह

यादव वंश, वृष्णि-शाखा। वसुदेव तथा वृकदेवी का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१८०

आग्नीध्र

स्वायंभुव मनु का पौत्र, प्रियव्रत का पुत्र। प्रियव्रत ने सात द्वीपों को अपने सात पुत्रों में बांट दिया था। आग्नीध्र जम्बु द्वीप का स्वामी था[१]। उसने पुत्र की तरह प्रजा का पालन किया। उसके कोई पुत्र नहीं था। अतः वह देवांगनाओं के क्रीडा-पर्वत की द्रोणी पर भगवान् ब्रह्मा की एकाग्र मन से आराधना करने लगा। इस पर ब्रह्मा ने पूर्वचित्ति नाम की अप्सरा को

उस द्रोणी में भेजा जहाँ आग्नीध्र तप कर रहा था। उस अप्सरा पर आग्नीध्र आसक्त हो गया। १००० वर्ष तक उसने पूर्वचित्ति के साथ भोग-विलास में जीवन बिताया। उससे राजा के नौ पुत्र हुए, नाभि, किम्पुरुष, हरिवर्ष, इलावृत्त, रम्यक, हिरण्मय, कुरुभद्र, अश्वकेतु और माल। इन नौ पुत्रों को जन्म देने के बाद पूर्वचित्ति अप्सरा, ब्रह्मा के पास लौट गयी। आग्नीध्र ने जम्बु-द्वीप का राज्य अपने नौ पुत्रों में बाँट दिया। वह काम से तृप्त नहीं हुआ था। दिन रात उसी अप्सरा का ध्यान करने से उसे, वही लोक प्राप्त हुआ। उसकी मृत्यु के बाद उसके नौ पुत्रों ने मेरु की नौ पुत्रियों से विवाह किया[२]।

१—भाग० ११।२।१५, ५।१।२५ तथा ३३

२—भाग० ५।२।१-२३, ब्रह्माण्ड० २।१४।४४-५३, विष्णु० २।१।७।१२,१६-२४

आनक-दुन्दुभि

यादव वंश, वृष्णिशाखा। शूर के पुत्र वसुदेव का नाम। जब पैदा हुआ तो शूर के घर में दुन्दुभि तथा आनक बजने लगे : वसुदेवस्य जातमात्रस्यैव एतद् गृहे भगवदंशावतारमव्याहतदृष्ट्या पश्यद्भिर्देवैः दिव्या आनकाः दुन्दुभयश्च वादिताः।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१४६।२१७

मत्स्य० ४६।२ तथा ११

विष्णु० ५।२।८ तथा १६

वायु० ९६।१४४ ४५

विष्णु० ४।१४।२९

आनका

उग्रसेन का पुत्र।

विष्णु० ४।१४।२०

आनन्द

प्लक्षद्वीप में दुन्दुभि नामक पर्वत से मिला हुआ एक राज्य।

ब्रह्माण्ड० २।१४।३९, ४७, १६

आनर्त (१) कृष्ण के राज्य का पश्चिम प्रदेश, जोकि द्वारिका से इन्द्रप्रस्थ जाते हुए मार्ग म पडता था।

भाग० १।११।१
वही० १०।७१।२१

आनर्त (२) शर्याति का पुत्र, रेव(त) का पिता। उसके पुत्र रोचमान ने कुशस्थली से आवर्त साम्राज्य पर शासन किया।

भाग० ६।३।२७
वायु० ८६, २३ २४
विष्णु० ६।४।१, ६३ ४
मत्स्य० १२।२१।२

आनर्त (३) आनर्त देश की जनता जिस पर रेवत ने शासन किया था।

भाग० १।१०।३५, १४।२५, ६।३।२८,१०।५२।१५
मत्स्य० ११४।५१

आनर्तपुरी आनर्त की राजधानी।

भाग० १।१४।२५।१०।५२।६

आन्ध्र (१) आन्ध्र वंश के राजा, जिनकी संख्या ३० थी। इस वंश के राजाओं ने ४५६ वर्ष तक पृथ्वी में शासन किया।

भाग० १२।१, २२ २८

आन्ध्र (२) एक जाति जो हरि अर्चना से पवित्र हो गयी थी।

भाग० २।४।१८

आपादबद्ध — शातकर्णि का पुत्र। ३० वर्ष तक राज्य किया।

वायु० ९९।३५१

आवन्ति — संभवतः इस जनपद का नाम अवन्तिनामक राजा के नाम से पड़ा। मत्स्य-पुराण के अनुसार हैहय वंश के राजा कार्तवीर्यार्जुन के एक पुत्र का नाम अवन्ति था[१]। इसी से इस देश का नाम आवन्ति पड़ा। कार्तवीर्यार्जुन के एक सौ पुत्र थे जो तालजंघ कहलाये। उनमें से पाँच कुल विख्यात हुए—वीतिहोत्र, शर्यातक, भोज तथा आवन्ति। लिंग-पुराण के अनुसार कार्तवीर्यार्जुन के पाँच पुत्रों के नाम सूर, सूरसेन, धृष्ट, कृष्ण और जयध्वज थे। जयध्वज ने आवन्ति में राज्य किया[२]। विष्णु० तथा अग्नि० के अनुसार यदुवंश के शूर की पुत्री राजकुमारी राज्याधिदेवी का आवन्ति के राजा के साथ विवाह हुआ। इस विवाह से दो पुत्र, विन्द तथा उपविन्द उत्पन्न हुए[३]। महाभारत में विन्द और अनुविन्द नाम के दो राजाओं का उल्लेख है[४]। वे सम्भवतः पुराणों में उल्लिखित विन्द और उपविन्द हैं। इन्होंने दुर्योधन को कुरुक्षेत्र की लड़ाई में सहायता दी थी। पद्म-पुराण में आवन्ति एक महान् जनपदों में गिना गया है[५]। आवन्ति के लोगों ने जरासंध को यादवों के विरुद्ध सहायता दी थी।[६] ब्रह्माण्ड० तथा मत्स्य० के अनुसार विन्ध्य में रहने वाली एक जाति है[७]। मत्स्य० के अनुसार आहुक की भगिनी आहुकी का विवाह किसी आवन्ति के राजा से हुआ था[८]। ऊपर हम उल्लेख कर चुके हैं कि यादव राजकुमारी राज्याधिदेवी का विवाह एक आवन्ति-राज से हुआ था।

१—मत्स्य० ४३।४९
२—वही ४८
३—विष्णु० ४।१२।१०,
४—म० भा० उ० प० १९। २४
५—विष्णु धर्मोत्तर० १।९
६—भाग० १०।५०।३, ११।२३।९
७—ब्रह्माण्ड० २।१६।६५, ३।२९।११, ६९।५०-५२, मत्स्य० ११४।५४
८—मत्स्य० ४४।७०

आसन

प्राचीन राजनीति में षाड्गुण्य (परराष्ट्र) नीति में से एक, जिनमें इसका दूसरा स्थान है। दूसरे राजा के प्रति शत्रुता प्रकाशित करके उससे लड़ने के लिए सेना सहित प्रयाण करने की अपेक्षा अपने ही स्थान (दुर्ग आदि को सुदृढ़ बनाकर) पर शत्रु का सामना करने के लिए उद्यत रहना[1]। कुछ लोग इसे उदासीनता समझते हैं[2]।

१—अग्नि० २३४।१६
२—डीक्शनरी आफ इन पृ० ३० पृ० ३२०

आहुक

यादव वंश। सात्वतान्तर्गत अन्धक-शाखा। पुनर्वसु का पुत्र। देवक तथा उग्रसेन का पिता[1]। दो पुत्र काशिराज की पुत्री से उत्पन्न हुए थे[2]। आहुक की बहिन का नाम आहुकी था। वह अवन्ति राज आहुकान्ध को ब्याही गयी[3]। कंस आहुक का पौत्र था। कंस आहुक तथा उग्रसेन दोनों से द्वेष रखता था[4]। मथुरा पर जरासन्ध के आक्रमण के पूर्व कृष्ण ने आहुक से युद्ध के सम्बन्ध में परामर्श किया[5]। तृतीय आक्रमण के समय वह उग्रसेन, कृतवर्मा आदि के साथ नगर रक्षा में उद्यत था[6]। जब कृष्ण कुरुक्षेत्र की लड़ाई से लौटे तो आहुक ने अन्य नगर निवासियों के साथ कृष्ण का स्वागत किया[7]। सूर्य ग्रहण के अवसर पर वह स्यमंतपंचक गया था[8]। वायु० तथा मत्स्य० के अनुसार वह एक तेजस्वी राजा था। कभी वह असत्य नहीं बोला। वह दानशील था, शुद्ध चित्त और विद्वान् था। भोजों में जो कोई पैदा होता, वह आहुक से वेतन पाता था[9]। उसके पास बड़ी सेना थी जिसमें दस हजार रथ थे, ८ नियुत घोड़े तथा २१ हजार हाथी थे[10]। प्रभास में मुसल-युद्ध में यादवों के संहार की सूचना दारुक द्वारा उसे मिली[11]।

१—वायु० ९६।१२०।२३, विष्णु० ४।१४।४५
२—ब्रह्माण्ड० ३।७१।१२८
३—ब्रह्माण्ड० ३,७१।१२८
४—भाग० १०।३६।३८
५—भाग० १०,५०।८
६—भाग० १०।५१।२६

-

७—भाग० १०।८०।१३
८—भाग० १०।८२।५
९ —मत्स्य० ४४।६६।६९, वायु० ९६।१२२–१२३
१० —वायु० ९६।१२३–१२४, मत्स्य० ४४।६७
११ —भाग० ३७।५९

आभीर — दश आभीर राजा। आन्ध्रों के समकालीन।

मत्स्य० २७३।१८
वायु० ९९।३५९
पार्जिटर पृ० ४५

आयु — पुरूरवा का पुत्र। उसने राजा बाहु की पुत्री से विवाह किया। उससे उसके पाँच पुत्र हुए :—नहुष, क्षात्रवृद्ध, रम्भ, रजि तथा अनेना। आयु राज्य प्रतिष्ठान में ही था। उसके और चार भाइयों ने अलग अलग राज्य स्थापित किये।

विष्णु० ४।८।१
वायु० ९१।५१ तथा ९२।१–२
मत्स्य० २४।३३–५
ब्रह्माण्ड० ३।६६।२२ तथा ६०, ६७।१
भाग० ९।१५।१, १७।१

आयुताश्व [आयुतायु] — ऐक्ष्वाकु वंश का राजा तथा सिन्धु द्वीप का पुत्र था।

वायु० १८८।७३
विष्णु० ४।४।१८
भाग० ९।९।१६–१७
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१७२
मत्स्य० १२।४६

आरावी [आराधि]

चान्द्र पौरव वंश, कुरुशाखा। कुरु के द्वितीय पुत्र जह्नु का कुल, जयत्सेन (जयत्सेन) का पुत्र। वायु० में पाठ आराधि तथा भाग० में राधिक है।

विष्णु० ४।२०।३
वायु० ९९।२३१
भाग० ९।२२।१०

इन्द्रद्युम्न

एक द्रविड़ पाण्ड्य राजा। विष्णु का भक्त। जब वह तप कर रहा था तो अगस्त्य उसके आश्रम में आये। जब अगस्त्य के आतिथ्य-सत्कार के लिए वह आगे नहीं बढ़ा तो ऋषि ने क्रुद्ध होकर उसे शाप दिया। इन्द्रद्युम्न ने इसे ईश्वर की इच्छा समझ कर सन्तोष किया। वह दूसरे जन्म में हस्ति-राज हुआ। उसे अपने पूर्व जन्म का स्मरण था। इन्द्रद्युम्न का आख्यान कूर्म—पुराण में है।

भाग० ८।४।७-१२
ब्रह्माण्ड० २।१४।६४
वायु० ३३।५४
विष्णु० २।१।३६
मत्स्य० ८३।४७।४८

इन्द्रपालित

मौर्य वंश। बन्धुपालित का पुत्र। कुनाल का पौत्र। पीढ़ी क्रम संख्या ६६। इसकी राज्यावधि पुराणों में नहीं दी हुई है। विष्णु० तथा भाग० के अनुसार छठा राजा सगत था।

वायु० ९९।३३५
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१४७
भाग० १२।१।१४
विष्णु० ४।२४।८

इन्द्रजाल

षाड्गुण्य कूटनीति सम्बन्धी उपायों में इन्द्रजाल का स्थान अन्तिम है। इसमें चतुरंग सेना का प्रदर्शन और अपनी सहायता के लिए देवताओं की

सेना दिखलाने, शत्रु को आतंकित करने के लिए रक्त वृष्टि करने और राजभवन के सामने शत्रु के कटे हुए सिरों का प्रदर्शन करने का विधान है।

मत्स्य० २२२।२

अग्नि० २४०।४६, ६६—६८

इलिन [ऐनिल]

पौरव वंश। तंसु का पुत्र और रन्तिनार का पौत्र। पौरव वंश का १६ वां राजा। वायु० के अनुसार ऐनिल यसु का पुत्र था। भाग० के अनुसार रन्तिनार का पुत्र तंसु न हो कर सुमति है और सुमति का पुत्र रैभ्य। पार्जिटर ने अपनी वंशावली सूची में इसे नहीं लिया है।

विष्णु० ४।१६।२

वायु० ६६।१२८ ६

भाग० ६।२२।६

इलिविल

ऐक्ष्वाकु वंश। विष्णु० के अनुसार वह शतरथ (दशरथ) का पुत्र था[1], और मूलक का पौत्र। वायु० में इसका नाम ऐलिविल है तथा भाग० में ऐटविड[2]। पार्जिटर ने ऐक्ष्वाकु वंशावली[3] में इस राजा का नाम ऐडविड वृद्ध शर्मन् दिया है।

१—विष्णु० ४।८।३८

२—वायु० ८८।१८०, भाग० ६।६।४१

३—पार्जिटर वंशावली सूची ऐ० इन्डि० हि० ट्रे० पृ० १४६

इक्ष्वाकु

मानव वंश। वैवस्वत मनु का पुत्र[1]। ऐक्ष्वाकु वंश का प्रवर्तक। विष्णु० के अनुसार इक्ष्वाकु क्षुवन्तमनु का पुत्र था। घ्राण-क्रिया से उत्पन्न प्राणिम[2]। एक सौ पुत्रों में से विकुक्षि निमि दण्ड मुख्य था और शकुनि प्रमुख पचास पुत्र उत्तरा-पथ के राजा हुए तथा अड़तालिस दक्षिणापथ के।

१—वायु० ८५।४ (आनन्दाश्रम संस्करण)

विष्णु० ४।२।३

भाग० ६।६।४

मत्स्य० १२।२५-२८
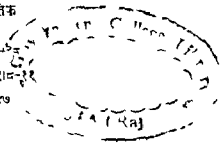
ब्रह्माण्ड० ३।६१।८-११

ब्रह्म० ५।४४-४७

उक्थ [औंक, स्थल, उय, उक]

ऐक्ष्वाकु वंश। छल का पुत्र[1]। कुश के पश्चात् २२वाँ राजा। वायु० में उक्थ के स्थान पर औंक लिखा है[2]। पार्जिटर में भी उक्थ[3] ही स्वीकृत हुआ है। भाग० में पर स्थल है[4]।

१—विष्णु० ४।४।४८
२—वायु० ८८।२०१
३—पार्जिटर पृ० १४६,
४—भाग० ९।१२।२

उग्रसेन

यादव वंश, अन्धक शाखा। आहुक का पुत्र। अन्धक वंश की दसवीं पीढ़ी में। उसे कुकुर वंश का भी कहा जाता है[1]। कुकुर की आठवीं पीढ़ी में।

१—विष्णु० ४।१४।५, वायु० ९६।१२८, ब्रह्माण्ड० ३।७१।१२८ भाग० ९।२४।२१, मत्स्य० ४४।७१
२—मत्स्य० ४४।६१–७२ विष्णु० ४।१४।४–५, भाग० ९।२४।१९–२१ ब्रह्म० १३।४६–५५

उग्रायुध

चन्द्र-वंश। पौरव शाखा। द्विमीढ शाखा। कृत का पुत्र[1]। उग्रायुध के काल की स्मरणीय घटना यह है कि उसने पाञ्चालाधिपति पृषत के पूर्वज (पितामह) नील को युद्ध में मारा था। वायु० से ज्ञात होता है कि उसने भल्लाट के पुत्र जनमेजय को उसकी प्रजा नीपों के विरुद्ध युद्ध में सहायता की और उनका संहार किया[2]।

१—विष्णु० ४।१९।१४, वायु० ९९।१९१, मत्स्य० ४९।५७
भाग० ९।२१।२९
२—वायु० ९९।१९०

उत्कल (१)

सौद्युम्न-वंश। सुद्युम्न इला का पुत्र। उत्कल ने दक्षिणापथ में उत्कल जनपद की नींव डाली[1]। उत्कल का उल्लेख अन्य स्थानों पर भी मिलता है। मध्यदेश का एक जनपद माना गया है। वायु० मत्स्य० तथा ब्रह्माण्ड० में कुछ स्थानों पर[2] उत्कल विन्ध्य की एक जाति मानी गयी है।

१—वायु० ६६।२४०, ८५।१६, भाग० ६।१।४१, ब्रह्माण्ड० ३।७।१८; ब्रह्म० ५।१८, मत्स्य० १२।१७

२—वायु० ४५।१३२; मत्स्य० १२।१७०; ११४।३२; ब्रह्माण्ड० २।१६।४२ तथा ६३, ३।७।८, ३५८, ६०।१८

उत्कल (२)

सूर्य-वंश। ध्रुव और इला का पुत्र। उसने राज्य नहीं करना चाहा। अतः राज्य त्याग कर तप में अपने को लीन किया।

भाग० ४।१०।२, १३।६-१०

उत्तानपाद

स्वायंभुव मनु और शतरूपा के पुत्र। ध्रुव के पिता[1]। उनकी दो स्त्रियाँ थीं, सुनीति और सुरुचि। सुनीति के पुत्र का नाम ध्रुव और सुरुचि के पुत्र का नाम उत्तम था। उत्तानपाद सुरुचि और उसके पुत्र से विशेष स्नेह करता था। एक समय ध्रुव अपने पिता की गोद में बैठे हुए थे उस समय सुरुचि ने उसे डाँटते हुए कहा, "तुम ईश्वर की प्रसन्न करो। जब मेरी कोख से उत्पन्न होगे तभी तुम्हें यह सौभाग्य प्राप्त होगा"। यह बात ध्रुव को चुभ गयी और उन्होंने तप करने के लिए वन की ओर प्रस्थान किया। यह सुनकर उत्तानपाद को बहुत दुःख हुआ। जब ध्रुव अपना तप पूरा कर लौटे तो उत्तानपाद ने उन्हें राज्यसिंहासन पर बिठाया और स्वयं वन को चले गये[2]।

१—भाग० ३।१२।५५, विष्णु० १।११।१, मत्स्य० ४।३४, वायु० १।६६, १०।१६, ५७।५७, १०४।१२२

२—विष्णु० १।११ से १२ अ० तक, भाग० ४।८।८ १५, ६५-७८ मत्स्य० १२५।५, १२७।२२, वायु० ५१।६, वनं विरक्तः प्रातिष्ठद्विमृशन्नात्मनो गतिम् (भाग० ४।९।६७)

उदक्सेन

चद्र-वंश। पौरव शाखा। द० पाञ्चाल शाखा विश्वक्सेन का पुत्र, भल्लाट का पिता। द० पाञ्चाल वश, पीढ़ी क्रम सख्या १८।

वायु० ९९।१८१
विष्णु० ४।१९।१३
मत्स्य० ४९।५९
भाग० ९।२१।२६

उदयन

पौरव वश के भावी (परीक्षित के बाद के) राजाओं में शतानीक द्वितीय के बाद राजा हुआ उदयन का पुत्र अथवा उत्तराधिकारी अहीनर (वहीनर)। वायु० मे मेधावी और क्षेमक के बीच केवल दो राजा आते हैं—दण्डपाणि और निरमित्र। अतः शतानीक द्वितीय और उदयन का उल्लेख उसमें नहीं मिलता है।

परीक्षित के बाद वह २४वाँ राजा है। भाग० में शतानीक द्वितीय के पुत्र का नाम दुर्दमन है।

विष्णु० ४।२१।३
मत्स्य० ५०।८६
भाग० ९।२२।४१

उदयी [उदयाश्व, उदासी, आजय]

शैशुनाग वश। दर्भक का पुत्र और नन्दिवर्धन का पिता। वंश पीढ़ीक्रम सख्या ८ राज्यावधि ३३ वर्ष, विष्णु० में दर्भक का पुत्र उदयाश्व[१]। वायु० के अनुसार दर्शक का पुत्र। भाग० मे दर्भक का पुत्र आजय है। मत्स्य० के अनुसार वशक का पुत्र उदासी। उदयी ने चौथे वर्ष गगा के दक्षिण तट पर कुसुमपुर (पाटलिपुत्र, आधुनिक पटना) नगर बसाया[२]।

१—ब्रह्माण्ड० ७४।१३२, विष्णु० ४।२४।३
२—वायु० ९९।३१९, ब्रह्माण्ड० ३।७४।१३३, भाग० १२।१।६
मत्स्य० २७२।११

उदावसु निमि-वंश। मिथि जनक का पुत्र और निमिवंश की तीसरी पीढ़ी में।

वायु० ८६।६
विष्णु० ४।५।१२
भाग० ६।१३।१४
ब्रह्माण्ड० ३।६४।६

उन्नेता स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में प्रतिहर्ता का पुत्र।

वायु० ३३।५६
ब्रह्माण्ड० २।१४।६६
विष्णु० २।१।३७
भाग० ५।१५।५

उपगुप्त निमि-वंश। उपगुरु का पुत्र। निमि की इकतालीसवीं पीढ़ी में[1]। किन्तु वायु० के अनुसार इकतालीसवाँ राजा श्रुति था[2]। विष्णु० में श्रुत और उपगुप्त दोनों पाठ हैं।

१—विष्णु० ४।५।१३, भाग० ६।१३।२४ २५
२—वायु० ८६।२३

उपगुरु विष्णु० के अनुसार सात्यरथ के पुत्र निमि वंश का चालीसवाँ राजा। किन्तु पार्जिटर की वंश सूची में सत्यरथ का पुत्र माना गया है। यह पहिले ही कहा जा चुका है कि पार्जिटर ने सात्यरथ को वंशावली में ग्रहण नहीं किया।

विष्णु० ४।५।१३
भाग० ६।१६।२४

उपेक्षा कूटनीति के चार उपायों में इसका पाँचवाँ स्थान है। विशेषरूप से न्यून शक्तिवाले राजा को अपने से बलवान् राजा के प्रति इस उपाय का प्रयोग

करना चाहिए। जब राजा यह समझे कि साम की नीति से शत्रु का अभिमान ही बढ़ेगा, दान के प्रयोग से धन का ही नाश होगा और भेद तथा दण्ड की नीति के प्रयोग से उसकी नीति का रहस्य प्रकट हो जायगा, जिससे उसका दुष्परिणाम भोगना पड़ेगा तब उसे चाहिए कि वह उपेक्षा की नीति अपनाए। ऐसी स्थिति में जब शत्रु का न कोई अनिष्ट हो सकता हो, न राजा स्वयं कोई उपद्रव कर सकता हो, तो राजा को उपेक्षा-भाव अपनाना चाहिए[१]।

१—अग्नि० २३४।५६, मत्स्य० २२२।२

उल्मुक (१) मानव वंश। औत्तानपादि ध्रुव का कुल। चक्षुष् मनु और नड्वला का पुत्र[१]।

१—भाग० ४।१३।१६

उल्मुक (२) यादव वंश। वृष्णि शाखा। बलराम और रेवती का पुत्र। प्रभास के मुसल-युद्ध में अपने गोत्र भाइयों से वह भी लड़ा।

भाग० ११।३०।१७
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१६६
विष्णु० ४।१५।२०, ५।२५।१६

उशद्रथ [बृहद्रथ] चन्द्र-वंश, पूर्वी आनव शाखा। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित। तितिक्षु का पुत्र। अनु की दसवीं पीढ़ी में। मत्स्य० में पाठ बृहद्रद है। भाग० में रुशद्रथ।

वायु० ९९।२८
विष्णु० ४।१८।१
ब्रह्माण्ड० ३।७४।२५
मत्स्य० ४८।२२
भाग० ९।२३।५

उशना

सुयज्ञ का पुत्र। क्रोष्टु से प्रारम्भ, यादव वंश में क्रमसंख्या ११[1]। यह एक धार्मिक राजा कहा जाता है। इसने एक सौ अश्वमेध यज्ञ किये[1]। विष्णु० के अनुसार उशना तम का पुत्र था,[2] पृथुश्रवा का पौत्र, चक्रवर्ती शशबिंदु का प्रपौत्र। भाग० के अनुसार धर्म का पुत्र।

१—वायु० आनन्दाश्रम ९५।२३ मत्स्य० ४४।२३
२—विष्णु० ४।१२।२ भाग० ९।२३।३४, ब्रह्माण्ड० ३।७०।२३ २४

उशीनर

चन्द्र-वंश। पश्चिमी आनव शाखा। महामना का ज्येष्ठ पुत्र। अनु की ८वीं पीढ़ी। उसके पाँच पत्नियाँ थीं जिनसे उसके पाँच पुत्र उत्पन्न हुए। मृगा से मृग, नवा से नव, कृमी से कृमि, दर्वा से सुव्रत और दृषद्वती से शिवि उत्पन्न हुए। इसमें से प्रत्येक ने अपने लिए छोटे छोटे राज्य स्थापित किये। इन राज्यों के नामों से अनुमान होता है कि ये सब उत्तर-पश्चिम में थे। शिवि के नाम से शिवपुर प्रसिद्ध हुआ। मृग ने योधेय जनपद में अपना राज्य स्थापित किया। नव ने नवराष्ट्र और कृमि ने कृमिलापुरी बसायी। सुव्रत ने अम्बष्ठ जनपद स्थापित किया। ब्रह्म-पुराण में उशीनर को पुरु वंश के राजाओं में रखा गया है किन्तु यह क्रम ठीक नहीं है।

वायु० ९९।१९।२२
विष्णु० ४।१८।१
ब्रह्म० ११।२१
मत्स्य० ४८।१५-१८
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१७
भाग० ९।२३।२

उष्ण

पौरव वंश। निचक्षु का पुत्र। परीक्षित की छठी पीढ़ी में। उसकी राजधानी कोशाम्बी थी। मत्स्य० में निचक्षु के स्थान पर पाठ विविक्षु है और विविक्षु के पुत्र का नाम भूरिज्येष्ठ था।

विष्णु० ४।२१।३
वायु० ९९।२७२
मत्स्य० ५०,८०

उर्जवह

निमि-वंश। वायु० के अनुसार मुनि तथा विष्णु० के अनुसार शुचि का पुत्र। निमि-वंश की २६वीं पीढ़ी में।

वायु० ८६।१६
विष्णु० ४।५।१३
ब्रह्माण्ड० ३।६४।२०

कर्कोटक [कर्कोट]

एक काद्रवेय नाग[1]। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० में महिष्मती में कर्कोट नागों की एक सभा का उल्लेख है। हैहय वंश के विख्यात राजा कार्तवीर्यार्जुन ने कर्कोटों की सभा को जीतकर वहां महिष्मती नगर बसाया[2]। मत्स्य० में कर्कोट नागों की सभा का उल्लेख नहीं है, केवल यह कहा गया है कि कार्तवीर्य अर्जुन ने कर्कोट के पुत्र को जीत कर वहां महिष्मती नगरी बसायी[3]।

१-ब्रह्माण्ड० २।२३।१७, ३।७।३४, ४।२०।५३, ३३।३६, मत्स्य० ६।३९
विष्णु० १।२१।२२
२-वायु० ६४।२६, ब्रह्माण्ड० ३।६६।२६
३ मत्स्य० ४३।२६

कर्ण

पृथा (कुन्ती) का कानीन (विवाह से पहिले उत्पन्न) और अधिरथ का अपविद्ध पुत्र[1]। उसे अधिरथ नामक सूत ने मंजूषा के अन्दर रखा हुआ गंगा में बहता हुआ पाया था। अधिरथ ने ही उसका पालन पोषण किया[2]। अधिरथ का सम्बन्ध अङ्ग राज-वंश से इस प्रकार बतलाया जाता है—पूर्वी आनव वंशीय राजा बृहन्मना की दो स्त्रियां थीं, यशोदेवी और सत्या। यशोदेवी से उत्पन्न पुत्र गद्दी पर बैठा। किन्तु सत्या जाति की सूता (क्षत्रिय द्वारा ब्राह्मणी से उत्पन्न) थी। अतः उसका पुत्र भी जिसका नाम पुराणों के अनुसार विजय था, जाति का सूत ही माना गया।[3] विजय का पुत्र बृहत्। बृहत् का बृहद्रथ, बृहद्रथ का सत्यकर्मा और उसका पुत्र अधिरथ। अधिरथ ने कर्ण को अपना पुत्र बनाया[4]। वायु० के अनुसार बृहद्भानु का पुत्र धृति, उसका पुत्र धृतव्रत, उसका पुत्र सत्यकर्मा, और उसका पुत्र अधिरथ[5]। महाभारत में दिये हुए वृत्तान्त से यह विदित होता है

कि दुर्योधन ने कर्ण को अंग की गद्दी पर बैठाया।

१—भाग० ६।२३।१३
२—वायु० ६६।११८
३—वायु० ६६।११६ ११८, विष्णु० ४।१८।५-६, मत्स्य० ४८।१०५-७
४—वायु० ६६।११६ १४, विष्णु० ४।१८।८६, मत्स्य० ४८।१०८७
भाग० ६।१२८।११ १३
५—वायु० ६६।११६ १८

कम्बलबर्हि

यादव वंश। क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा का चौदहवाँ राजा। मरुत्त का पुत्र। विष्णु० और भाग० में मरुत्त और कम्बल नाम नहीं हैं। शितेषु (शितेषु) न० १२ के बाद रुक्म कवच आता है[१], जिसकी क्रम-संख्या हरिवंश के अनुसार १४ है। पार्जिटर ने भी यही क्रम लिया है। विष्णु० तथा भाग० के अनुसार उशना का पुत्र रुचक (विष्णु० में शितेषु) और उसके बाद रुचक के पाँच पुत्र जिनमें ज्यामघ सबसे छोटा था।

१—विष्णु० ४।१२।२, भाग० ६।२३

कर

प्रजा का आय में से वह हिस्सा, जो प्रजा के रक्षणार्थ राजा को प्राप्त होता है। ऐसा विदित होता है कि प्रारम्भ में राजा केवल उपज का षष्ठांश ही कर के रूप में लेता था। उस समय प्रजा सम्बन्धी राज्य के कार्य सीमित ही रहे होंगे। राज्य विस्तार, आर्थिक साधनों तथा व्यापार आदि के विकास और उन्नति के साथ साथ नवीन कर लिये जाने लगे। राज्य के कार्यों की सीमा विस्तृत होती गयी है और उनके व्यय के लिए आय के साधनों में भी वृद्धि हुई। पुराणों में दिये हुए करों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—शूद्र धान्य का षष्ठांश तथा शम्बी धान्य का दसवाँ हिस्सा। पशु और हिरण्य का क्रमशः पाँचवाँ तथा छठा हिस्सा। गन्ध, औषधि, रस, फूल, पुष्प, शाक इत्यादि तथा मिट्टी के बर्तनों पर छठा हिस्सा। शिल्पी लोग कर के स्थान में राजा के लिए महीने में एक दिन काम करते थे। राजा के लिए आदेश है कि वह प्रजा को

अधिक कर से पीड़ित न करे[१]। जिस प्रकार सूर्य अपनी रश्मियों से आठ महीने जल लेता है, उसी प्रकार राजा भी धीरे धीरे प्रजा से कर ले —

अष्टौ मासान् यथादित्यस्तोय हरति रश्मिभि
तथाहरेत् कर राष्ट्रान्नित्यमर्कव्रत हि तत् ।

अत्यधिक कर प्रजा मे विद्वेष उत्पन्न करता है और राष्ट्र के पतन का कारण होता है।

१—मत्स्य० २१७।२

करूष [करुष]

पुराणों के अनुसार वैवस्वतमनु के नव पुत्रों मे से एक का नाम करूष या करुष था। वायु० आदि में करूष तथा विष्णु० में करुष पाठ है। करुष की सतति ही कारुष क्षत्रिय जाति हुई। करुष के पुत्र वृद्धशर्मन् को भी कारुष कहा गया है[१]। भाग० तथा वायु० मे कारुष नरेश दन्तवक्र का उल्लेख है[२]। समीपवर्ती राज्यों में कारुषों के समकालीन दमघोष, शिशुपाल, धृष्टकेतु, मत्स्यों में विराट थे और कारुषों का चेदि तथा यादव वश दोनों से वैवाहिक सम्बन्ध था। वायु० मत्स्य० तथा विष्णु० के अनुसार कारुष वृद्धशर्मा का वसुदेव की पुत्री श्रुतदेवी से विवाह हुआ था[३]। कुरुक्षेत्र की लड़ाई में कारुषों ने केकय, पचाल, मत्स्य, चेदि तथा कोशल राज्यों के साथ पाण्डवों की सहायता की थी। एक स्थान पर ऐसा उल्लेख है कि काशि-कारुष की सेनाओं का नेतृत्व चेदि-नरेश धृष्टकेतु ने किया था[४]।

स्थान निर्णय—

महाभारत मे कारुषों का उल्लेख मत्स्य, काशि, चेदि तथा पञ्चालों के साथ आया है[५]। विष्णु० में चेदि के साथ उनका नाम आया है[६]। पार्जिटर के मतानुसार कारुष जनपद वत्स तथा कोशल के दक्षिण मे, चेदि तथा पूर्व की ओर मगध के बीच मे था। अर्थात् प्राचीन कारुष राज्य आधुनिक रीवाँ से मिलता जुलता है[७]। रामायण, बाल-काण्ड के अनुसार प्राचीन कारुषों की निवासभूमि आधुनिक शाहाबाद (बिहार) थी[८]। प्रचलित कथा के अनुसार शाहाबाद के दक्षिणी भाग (सोन और कर्मनाशा के बीच) को कारुष देश कहते थे। इसकी पुष्टि शाहाबाद जिले के अन्तर्गत मसार नामक ग्राम से प्राप्त शिलालेख से भी होती है।

उसमें इस जनपद को कारुष देश कहा गया है[९]। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यहीं से वे दक्षिण पश्चिम में (रीवाँ) जाकर बसे। कारुषों का एक उपनिवेश पुण्ड्रवर्धन में भी था। भाग० में कारूष द्वारा कृष्ण पर गदा सहित आक्रमण करने का उल्लेख है।[१०] पुराणों में कारुषों को (विन्ध्य-पृष्ठनिवासिन.) विन्ध्य श्रेणी में रहनेवाला कहा गया है[११]।

१—विष्णु० ४।१, १४ वायु० ८६।२, मत्स्य० २२।१४, ११४।४८, ब्रह्माण्ड० २३।६१।२, भाग० ६।२।१६

२—भाग० ६।२४ ३६ पार्जिटर ए० इ० हि० ट्र० पृ० ११६

३—वायु० ६६।१४८-१५६, मत्स्य० ४६।२-६

४—विष्णु० ४।१४।१०-१३

५—महाभारत भीष्मपर्व ४७।४, ५६।१३, ५४।८, द्रोणपर्व ८।२८

६—विष्णु० ४।१४।११

७—पार्जिटर जे० ए० एस० बी० १८६५ पृ० २५५, जे० आर० ए० एस० १६१४ पृ० २७१

८—रामायण बाल-काण्ड सर्ग २७ श्लो० १८-२३

६—मार्टिन ईस्ट इण्डिया भाग० १ पृ० ४०५ नन्दलाल दे ५०६५, जे० टि० पृ० ६५, कनिंघम आर्केओलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट ३ पृ० ६७-७२

१०—भाग० १०।७८।८

११—वायु० ४५।१३१ मत्स्य० ११४, ५४; मार्कण्डेय ५७।५३-५५

करन्धम सूर्य-वंश। मानव शाखा। नाभाग-नेदिष्ट शाखा। वायु० तथा भाग० के अनुसार खनिनेत्र का पुत्र। पीढ़ी क्रम संख्या ११। किंतु विष्णु० के अनुसार खनिनेत्र का पुत्र अतिविभूति। अतिविभूति का पुत्र करन्धम। इस प्रकार इस पुराण के अनुसार करन्धम का स्थान वंश पीढ़ी में बारहवाँ है।

१—विष्णु० ४।१।१६; वायु० ८६।७; भाग० ६।२।२५

करम्भि [करम्भ, करम्भक] क्रोष्ट से प्रवर्तित, यादव शाखा। शकुनि का पुत्र—ज्यामघ की १४वीं पीढ़ी में[१]। ब्रह्माण्ड० तथा मत्स्य० में करम्भि के स्थान पर करम्भक है,

हरिवंश में करम्भ पाठ है[२]।

[१] विष्णु० ४।१२।१६, भाग० ६।२४।५, वायु० ६५-४३
[२] ब्रह्माण्ड० ७०।४।७, मत्स्य० ४४।४२

कल्मापपाद

ऐक्ष्वाकु वंश। सुदास का पुत्र और ऋतुपर्ण का पौत्र। सुदास का पुत्र होने के कारण यह सौदास नाम से प्रसिद्ध है। इसका दूसरा नाम मित्रसह भी है। विशेष विवरण के लिए देखिए शीर्षक "सौदास"।

विष्णु० ४।४।१८
वायु० ८८।१७६
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१७६
मत्स्य० १२।४६
भाग० ६।६।१७

कल्कि

विष्णु का दसवाँ अवतार जो कलियुग के अन्त में अवतीर्ण होगा। ब्रह्माण्ड० के अनुसार उनका नाम विष्णुयशस् पाराशर्य (अर्थात् पराशर के पुत्र) होगा। भागवत के अनुसार सम्भल के मुख्य ब्राह्मण विष्णुयशस् के घर में कल्कि का प्रादुर्भाव होगा। उनके अश्व का नाम देवदत्त होगा। वे आठ ऐश्वर्यों से युक्त होंगे। देवदत्त पर आरूढ़ होकर विश्व में घूमते हुए वे दुष्टों का दमन करेंगे[१]। वे उन समस्त क्षत्रियों का संहार करेंगे जो म्लेच्छ हो गये थे[२]। जिस समय कल्कि अवतीर्ण होंगे उस समय कलि अपने पूरे प्रभाव में होगा। क्षत्रिय राजा प्राय लुप्त हो जायगे। जो कुछ बचेंगे उनका आचरण म्लेच्छों का सा हो जायगा। यवन, शक, काम्बोज आदि भारतवर्ष के विभिन्न भागों में राज्य करेंगे। यवन लोग सम्यक् रीति से राजपद पर आरूढ़ नहीं रहेंगे। अधार्मिक रीति से राज्य लेकर स्त्री और बच्चों की हत्या कर ये लोग राज्य करेंगे। युग-दोष से आक्रान्त ये राजा दुराचारी हो जायँगे। त्यागी और सत्यवादी न होकर ये लोभी और अनृतवादी हो जायँगे। धर्म-पोषक होने की अपेक्षा ये धर्म-नाशक होंगे। एक प्रकार की अराजकता सी समस्त देश में व्याप्त होगी। *प्रजा भी राजाओं का अनुसरण करेगी और वर्णाश्रम*

धर्म से च्युत हो जायगी। धर्म का लोप होने पर देश की समृद्धि एवं वैभव नष्ट-प्राय हो चुकेगा। प्रजा, व्याधियों से पीड़ित होगी। जीविका के साधन नष्ट हो जायँगे। सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए कोई साधन नहीं रह जायगा। प्रजा व्यवसायों को छोड़, नगर और ग्रामों से दूर जाकर जंगलों में शरण लेगी। आर्य, म्लेच्छों की भाँति पशु-पक्षियों का वध कर मृगया से जीवन-यापन करेंगे। अन्न न होने के कारण मनुष्य खर, उष्ट्र, अजा, एडक इत्यादि पशुओं को पाल कर जीवन-यापन करने लगेंगे। शौच और आचार का नाम भी नहीं रह जायगा। प्रजा श्रेष्ठ-धर्म छोड़ कर तुच्छ-धर्म अपनायेगी। श्रुति और स्मृति विहित वर्णाश्रम धर्म शिथिल हो जायगा। ब्राह्मण शूद्रों के लिए यज्ञ करने लगेंगे और शूद्र वेद आदि पढ़ने लगेंगे। शूद्र द्विजातियों के साथ मिश्रित हो जायँगे। ब्राह्मण, वृत्ति के लिए शूद्रों की परिचर्या करेंगे। इस प्रकार वर्णसंकरता सारे देश में व्याप्त होगी[३]। इस दशा का अन्त विष्णुयशस् करेंगे। आयुधों से सुसज्जित शतसहस्र ब्राह्मणों की सेना लेकर वे धर्म-विद्वेषी द्रविड़ सिंहल, गांधार, पारद, पह्लव, यवन, शक, तुषार, बर्बरपुलिंदि, दरद, खश, लम्पक, अन्धक, किरात तथा अन्य म्लेच्छ जातियों का संहार करेंगे। कहा गया है कि कल्कि-अवतार विष्णुयशस् अदृश्य होकर पृथ्वी पर विचरण करेंगे[४]। वृषलप्राय अधार्मिक लोगों का संहार कर वे प्रजा को समृद्ध बनायेंगे। इस प्रकार धर्म संस्थापन कर अपने अनुयायियों के साथ गंगा और यमुना के मध्य में, संभवतः प्रयाग में शरीर त्याग करेंगे[५]। अपने ब्राह्मण सैनिकों सहित कल्कि के चले जाने पर तथा राजाओं के नष्ट होने पर प्रजा में एक बार फिर अराजकता फैल जायगी जो कल्कि के आने के पूर्व थी।' यह कलि के अन्त की स्थिति है। इसके पश्चात् फिर कृतयुग का आरम्भ होगा[६]

१—विष्णु० ४।२४।२६, मत्स्य० ४७।२४८, २७३।२७, २८५।७, भाग० १२।२।१८-२३, ब्रह्माण्ड० ३।७३।१०४

२—भाग० १०।४०।२२, विष्णु० ४।२४।२६-२७

३—वायु० ६६।२६०-४११, ४२४-२१

४—वायु० ६८।१०५-६, विष्णु० ४।२४।२७

५—वायु० ६८।१७८

६—वायु० ६८।१२० २५

कलिङ्ग

कलिङ्ग का उल्लेख अंग और वंग के साथ पुराणों में आता है। आनव वंश की पूर्वी शाखा के राजा बलि की स्त्री सुदेष्णा के पाँच पुत्र हुए, अंग, वंग, कलिङ्ग, पुण्ड्र तथा सुह्म। इनमें से प्रत्येक ने पूर्व में अपने अपने नाम से राज्य स्थापित किया। कलिङ्ग के नाम से उसके राज्य का नाम कलिङ्ग देश पड़ा[1]। महाभारत के अनुसार जरासन्ध का आधिपत्य अंग, वंश, कलिङ्ग तथा पुण्ड्र पर था[2]। मार्कण्डेय पुराण में शतद्रु के तट पर एक कलिङ्ग उपनिवेश का उल्लेख है। किन्तु यह भूल जान पड़ती है, जैसा कि पार्जिटर कहते हैं—उत्तर में कलिंग के होने का कुछ भी आधार नहीं है। *मत्स्य पुराण में आवन्त तथा कलिङ्ग साथ साथ आते हैं*[3]। किन्तु कलिंगों और आवन्तो का समीपवर्ती होना कहीं नहीं पाया जाता। पुराणों में कलिङ्गों को 'दक्षिणापथवासिन' कहा गया है। मार्कण्डेय० में उन्हें दक्षिण के देश *महाराष्ट्र, महीषक, शबर तथा पुलिंद के साथ रखा* गया है[4]। महाभारत के आधार पर डा० राय चौधरी का मत है कि वैतरणी से लेकर आन्ध्र देश की सीमा तक कलिंग देश था[5]। कलिङ्गों *का उल्लेख पाणिनि में भी है*[6]। *बौधायनधर्मसूत्र में कलिङ्ग को संकीर्ण* योनि देशों में रखा है[7]। महाभारत आदि पर्व में क्षेम, उग्रतीर्थ, कुहर, मतिमान्, मनुष्येन्द्र, ईश्वर आदि कई राजाओं का उल्लेख है[8]। कलिङ्ग *के कई राजाओं का मध्यदेश के राजाओं से वैवाहिक सम्बन्ध था*[9]। कलिङ्ग उत्कल से भिन्न है। यहाँ कलिङ्ग को मध्यदेश का जनपद कहा गया है[10]।

१—विष्णु० ४।१८।२-३ वायु० ६६।२८, ३३-४ ब्रह्माण्ड० ३।७४।२७ तथा ३३ भाग० ६।२३।५६, मत्स्य० ४८।२५ तथा २६

२—महाभारत १२।८

३—मार्कण्डेय० ५७।३७, मत्स्य० ११३ ३६

४—मार्कण्डेय० ५७-४६-४७

५—पो० हि० ऑफ इण्डिया पृ० ७५

६—पाणिनि ४।१।१७०

७—बौधायनधर्मसूत्र १।१।३०-१

८—महाभारत आदिपर्व ६१।६०

९—वही०

१०—"गोधा भद्रा कलिंगा मागधा चोत्कलैः सह"। ब्रह्माण्ड० ३।१६।५२

कण्डरीक

पञ्चाल के राजा ब्रह्मदत्त का मंत्री। इस सम्बन्ध में विशेष विवरण के लिए देखिये मत्स्य०।

मत्स्य० २०।२४ तथा २१।३१

कण्व वासुदेव
[काण्वायन]

शुंग-वंश के अंतिम राजा देवभूति (मत्स्य० के अनुसार देवभूति) का मंत्री। देवभूति को मार करवह स्वयं राजा बना और कण्व-वंश की नींव डाली। इस वंश में चार राजा हुए, जिन्होंने ४५ वर्ष तक राज्य किया। मत्स्य० में पाठ काण्वायन है।

विष्णु० ४।२४।११
वायु० ६६।२४३-४६
मत्स्य० २७२।३२ तथा ३४ ३५
ब्रह्माण्ड० ३।७४
भाग० १२।१।१६

कपिलाश्व

ऐक्ष्वाकु वंश के राजा, धुन्धुमार के तीन पुत्रों में से एक।

वायु० ८८।६१
विष्णु० ४।२।४२
ब्रह्माण्ड० ३।६३।६३
भाग० ६।६।२४

कपोत-रोमन्

यादव वंश। अन्धक-शाखा। धृष्ट का पुत्र। अन्धक-वंश का चौथा राजा।

वायु० ६६।११६
मत्स्य० ४४।६३
भाग० ६।२४।२०

कङ्क (१)

यादव वंश, अन्धक शाखा। उग्रसेन का पुत्र। कंस का भाई[1]। उसकी पुत्री अन्धक की रानी थी[2]। विष्णु० में पाठ कङ्क है।

१—भाग० १०।४४।४० विष्णु० ४।१४।५
२—मत्स्य० ४४।६१ तथा ७४, वायु० ९६।१३

कङ्क (२)

इस जाति के सोलह राजा आन्ध्रों के समकालीन थे। अन्य पुराणों में पाठ शक है।

भाग० १२।१।२९

ककुत्स्थ

ऐक्ष्वाकु वंश के तीसरे राजा पुरञ्जय का दूसरा नाम। उसका यह नाम क्यों पड़ा इसका वृत्तान्त इस प्रकार है—

त्रेतायुग में देवताओं और असुरों में भीषण युद्ध हुआ। असुरों ने देवताओं को पराजित कर दिया। देवता विष्णु के पास गये और उनसे उपाय पूछा। भगवान् विष्णु ने कहा कि ऐक्ष्वाकु वंश के राजा शशाद का पुरञ्जय नाम का पुत्र है, मैं अपने एक अंश से उसमें अवतीर्ण होऊँगा। अतः आप लोग असुरों के वध के लिए उससे सहायता लें। यह सुन कर देवतागण पुरञ्जय के समीप गये और उससे युद्ध में सहायता के लिए प्रार्थना की। पुरञ्जय ने केवल इस रूप में जाना स्वीकार किया कि मैं इन्द्र के कन्धे पर सवार होकर असुरों से युद्ध करूँगा। देवता-गण इसके लिए सहमत हो गये। इन्द्र ने वृषभ का रूप धारण किया और वृषभ के ककुद् पर बैठ कर पुरञ्जय ने असुरों का संहार किया। पुरञ्जय ने इन्द्र के ककुद् पर स्थित होकर देवताओं से युद्ध किया, अतः उसका नाम ककुत्स्थ पड़ा[1]। इसी से उनके वंशज काकुत्स्थ भी कहलाते हैं।

१—विष्णु० ४।२।८-१२, वायु० ८८।२४-२५, ब्रह्माण्ड० ३।६३।२५
भाग० ९।६।१२

ककुद्मिन्

वैवस्वत मनु का वंश। रेवत का पुत्र रैवत (ककुद्मिन्) और शर्याति का पौत्र। विशेष विवरण के लिये देखिए शीर्षक रैवत।

वायु० ८६।२६
विष्णु० ४।१।२०
मत्स्य १२।२३
भाग० ६।२।२६
ब्रह्माण्ड० ३।६१।२०

कटक

एक जाति, जिसे कल्कि ने जीता था।

ब्रह्माण्ड० २।३१।८४

कवि (१)

वृष्णि-वंश। कृष्ण और कालिन्दी का पुत्र।

भाग० १० । ६१ । १४, ६०–३४

कवि (२)

स्वयंभुव मनु का पौत्र। प्रियव्रत और बर्हिष्मती का पुत्र। वह जीवन-पर्यन्त ब्रह्मचारी रहा। विष्णु० में भी प्रियव्रत के वंश के राजाओं के नाम हैं किन्तु उनमें कवि नाम का कोई राजा नहीं है।

भाग० ५ । १ । २५–२६

कवि (३)

स्वायम्भुव मनु का वंश। प्रियव्रत प्रवर्तित, शाखा। ऋषभ का पुत्र। वह भागवत था। उसने निमि को भागवत धर्म की शिक्षा दी।

भाग० ५ । ४ ११, ११ । २ २१, ३३–४१

कवि (४)

वैवस्वत मनु का पुत्र। उसने राज्य के समस्त सुखों का त्याग कर हरि-भक्ति में अपना मन लगाया और अल्पायु में परब्रह्म पद प्राप्त किया।

भाग० ६।१।१२, २।१५

कवि (५) [कपि]

पौरव वंश। दौष्यन्ति भरत के कुल में। उरुक्षव (उभक्षय वायु०) और विशाला का पुत्र। इसने तप के प्रभाव से क्षत्रिय से ब्राह्मण पद प्राप्त किया। यह काव्यों के तीन श्रेष्ठ महर्षियों में से एक माना जाता है। भाग० के अनुसार कवि दुरितक्षय का पुत्र था। विष्णु० में पाठ कपि है और उसके पिता का नाम उरुक्षय है। वायु० में भी पाठ कपि है।

मत्स्य० ४६।३६
विष्णु० ४।१६।१० (बम्ब० संस्क० गो० ना०)
वायु० ६६।१६३
भाग० ६।२१।१६

काश्य [काव्य]

अजमीढ के कुल में, सेनजित् का पुत्र। वायु० में पाठ काव्य है।

विष्णु० ४।१६।११ (बम्ब० संस्क० गो० ना०)
वायु० ६६।१७२
भाग० ६।२१।२३

काश्य-दुहिता

काश्य की पुत्री। आहुक की पत्नी। देवक और उग्रसेन की माता।

मत्स्य० ४४।७०—१

काश [काश्य]

चन्द्र-वंश (पौरव)। सुहोत्र का पुत्र। पुरूरवा की पाँचवीं पीढ़ी में। भाग० में पाठ काश्य है।

विष्णु० ४।८।२
वायु० ६२।३
महाभा० ३।६७४
भाग० ६।१७४

काशिराज (१)

चन्द्र-वंश। काश का पुत्र। ऐल पुरूरवा की छठी पीढ़ी में[१]। वायु० के अनुसार काश का पुत्र दीर्घतपा है। विष्णु० में काश के पुत्र का नाम काशिराज है और उसका पुत्र दीर्घतमा है। भाग० में काश्य का पुत्र काशि, उसका पुत्र राष्ट्र तथा उसका पुत्र दीर्घतमा[२] है।

१—विष्णु० ४।८।२ (बम्ब० संस्क० गो० ना०)
२—वायु० ६२।६ भाग० ६।१७।४

काशिराज (२)

काशिराज का राज्य अनावृष्टि से पीड़ित था। वहाँ श्वफल्क को ले जाया गया जिससे वृष्टि हुई। काशिराज ने पुरस्कारस्वरूप श्वफल्क को अपनी कन्या गान्दिनी विवाह में दी। गान्दिनी और श्वफल्क का पुत्र अक्रूर था। काशिराज की दूसरी पुत्री जयन्ती थी जो वृषभ को ब्याही गयी। यह काशिराज समवत काश का पुत्र रहा होगा।

वायु० ९६।१०३—५
विष्णु० ४।१३।८६ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
मत्स्य ४५।२६

काशी

पुराणों में एक जनपद माना गया है। यह एक बहुत प्राचीन राज्य है। शाङ्खायन श्रौत-सूत्र में काश्य नामक राजा का उल्लेख है[१]। शतपथ-ब्राह्मण में राजा काश्य नाम के एक राजा का उल्लेख है। शतानीक ने उसके घोड़े लिये और गोविताान यज्ञ किया। उसके पश्चात् काश्य के राजा ने स्वयं यह यज्ञ किया[२]। बृहदारण्यक तथा कौषीतकि उपनिषद् में काशिराज अजातशत्रु का उल्लेख है[३]। बौधायन-श्रौत सूत्र में लिखा है कि पुरूरवा के पुत्र आयु ने संसार को त्याग कर काशी, कुरु, पञ्चाल देशों मे विचरण किया[४]। पुराणों के अनुसार काशी का नाम काश्य (काशिराज) के नाम से पड़ा। पुरूरवा के पौत्र क्षत्रवृद्ध की दूसरी पीढ़ी में सुहोत्र हुआ।

सुहोत्र का पुत्र काशी, उसका पुत्र काशिराज और काशिराजका पुत्र धन्वन्तरि हुआ। धन्वन्तरि का पौत्र[1] दिवोदास हुआ। उसके राज्यकाल में किसी के शापवश नगर राक्षसों से आक्रान्त था। दिवोदास ने राज्य छोड़ कर गोमती के तट पर अपना राज्य बसाया। वायु० के अनुसार दिवोदास ने भद्रश्रेण्य के एक सौ पुत्रों को मार कर फिर वाराणसी में प्रवेश किया। किन्तु उन्होंने भद्रश्रेण्य के पुत्र दुर्मद को नहीं मारा। सम्भवतः दुर्मद ने वाराणसी को फिर ले लिया। दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन ने फिर दुर्मद को पराजित किया[7]। आगे कहा गया है कि प्रतर्दन के पौत्र अलर्क ने क्षेमक राक्षस को मार कर फिर वाराणसी को बसाया[8]। सम्भवतः प्रतर्दन के बाद वाराणसी फिर शत्रु के हाथ में चली गयी, जिसे अलर्क ने लौटा दिया। महाभारत में दिये हुए वृत्तान्त के अनुसार काशी का राजा हर्यश्व वीतिहव्य सम्बन्धियों द्वारा मारा गया। उसका पुत्र सुदेव भी राजा होने पर वीतिहव्यों द्वारा मारा गया। हर्यश्व के पौत्र दिवोदास ने बनारस बसाया। किन्तु वीतिहव्यों ने दिवोदास को भी हराया। बृहस्पति ने उसके लिए यज्ञ किया। जिसके फलस्वरूप उसका पुत्र प्रतर्दन हुआ जिसने वीतिहव्यों को हराया। प्रतर्दन ने वाराणसी को अपनी राजधानी बनायी और दानशीलता के कारण बहुत ख्याति प्राप्त की। दोनों वृत्तान्तों में भिन्नता है। किन्तु इतना स्पष्ट है कि हैहयों ने काशी के राजाओं को पराजित किया और हैहय-राज भद्रश्रेण्य काशी में राज्य किया। भद्रश्रेण्य को काशी का अधिपति भी कहा गया है[9]। महाभारत के अनुसार काशी के राजा की पुत्री सर्वसेनी दौष्यन्ति भरत को ब्याही गयी थी।

काशिराज की पुत्री अम्बा, अम्बालिका को भीष्म स्वयंवर से बलपूर्वक ले आये थे। काशी के एक राजा की पुत्री गान्दिनी श्वफल्क नाम के यादव को ब्याही थी, जिससे अक्रूर नामक पुत्र हुआ।[10] भाग० के अनुसार काशिराज पुण्ड्रक जरासन्ध को यदुओं के विरुद्ध युद्ध में सहायता दी थी।[11] काशिराज पुण्ड्रक जरासन्ध को श्रीकृष्ण के विरुद्ध सहायता दी थी। कृष्ण ने पुण्ड्रक को हराया और काशी को जला डाला।[12] काशी का उल्लेख हमेशा कोशल के साथ मध्य-देश के जनपदों

के साथ आता है।[१३] पन्चाल, काशी मत्स्य तथा मगध जनपदों को गंगा के किनारे बताया गया है । मत्स्य० तथा ब्रह्माण्ड० में बताया गया है कि काशि-कुश आदि एक सौ राजाओं ने राज्य किया।[१४]

१—शाङ्खायन श्रौत सूत्र, १६।२९।५
२—शतपथ ब्रा० १३।५।४।१६
३—बृहदारण्यक उप० २।१।१, कौशीतकि उप० ४।१
४—बौधायन श्रौत सूत्र, १८।४४
५—वायु० ९२।१।६, विष्णु० ४।८।२
६—वायु० ९२।२४-२६
७—वही० ६१।६४
८—वही० ९२।६८
९—वही ८४।७
१०—विष्णु० ४।१३।५५-५६
११—भाग० १०।५०।३
१२—विष्णु० ५।३४।३२-३६
१३—वायु० ४५।११०, मत्स्य० ११४।३५, १६३।३७, २७३।७३, मार्कण्डेय० ५७।३३, ब्रह्माण्ड० २।१६।४१, १८।५१, ३।७४।२१३
१४—मत्स्य० २७३।७३, ब्रह्माण्ड० ३।७४।२६९

काम्पिल्य [कपिल] (१) कुरु-वंश की एक शाखा। वायु० के अनुसार भेद के पाँच पुत्रों में से एक । इन पाँचों पुत्रों के नाम से पञ्चाल देश का नाम पड़ा । पाँचों ने पृथक् पृथक् जनपद स्थापित किये । भाग० में काम्पिल्य के पिता का नाम भर्म्याश्व है। काम्पिल्य भी पञ्चालों की एक शाखा का राजा था। इसका राज्य कहाँ था इस सम्बन्ध में कोई सूचना पुराणों में नहीं मिलती। मत्स्य० में पाठ कपिल है किन्तु काम्पिल्य पाठ ही अधिक संगत है।

वायु० ९९।१९६
भाग० ९।२१।३२
मत्स्य० ५०।३

काम्पिल्य (२)

राजा नीप के पुत्र समर की राजधानी।

वायु० ९९।१७४-१७९
विष्णु० ४।१९।११ [बम्ब० संस्क० गी० प्रे०]
भाग० ९।२१।२५

काम्या

कर्दम प्रजापति और श्रुति की पुत्री। वह स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत को व्याही गयी। उससे दस पुत्र हुए जो स्वायंभुव मनु के सदृश थे। उसकी दो पुत्रियाँ थीं जिनसे क्षत्रिय जाति का प्रारम्भ हुआ।

ब्रह्माण्ड० २।११।३२ ३४, १४।४

कानीन

देवदत्त के पुत्र अग्निवेश्य, जो भगवान् अग्नि के अवतार थे और बाद मे कानीन जातूकर्ण्य के नाम से लोक में विख्यात हुए। इन्हीं से ब्रह्म कुल आग्निवेश्यायन प्रवर्तित हुआ।

भाग० ९।२।२१ २२

पुराण इण्डेक्स प्र० भा०, सम्पादित दीक्षितार, पृ० ३४७ में देवदत्त का उपनाम अग्निवेश्य भ्रामक प्रतीत होता है। सम्भवतः यहाँ विराम सम्बन्धी त्रुटि रह गयी है।

काञ्चन-प्रभ [काञ्चन]

चन्द्र वंश की कान्यकुब्ज शाखा। भीम का पुत्र। कान्यकुब्ज शाखा के प्रथम पुरुष। अमावसु की तीसरी पीढ़ी में। भाग० में पाठ काञ्चन है। विष्णु० में भी यही पाठ है।

विष्णु० ४।७।२
वायु० ९१।५३
हरिवंश० २७।३
ब्रह्माण्ड० ३।६६।२४
भाग० ९।१५।३

काण्वायन

शुङ्ग-वंश के अंतिम राजा देवभूति (भाग०) देवभूमि (मत्स्य० तथा ब्रह्माण्ड०) को, उसके मंत्री कण्ववंशी वसुदेव ने मार कर, कण्ववंश का

राज्य स्थापित किया। भाग० के अनुसार उसके पुत्र का नाम भूमित्र था, भूमित्रका पुत्र नारायण और नारायण पुत्र सुशर्मा था। ये ही चारों राजा काण्वायन कहे गए हैं। इन्होंने ३४५ वर्ष तक राज्य किया।[1] ब्रह्माण्ड० में वसुदेव को भी कण्वायन कहा गया है। उपर्युक्त चारों राजाओं के लिए भी यहाँ कण्वायन ही पाठ है, ब्रह्माण्ड० में इनका राज्य-काल केवल ४५ वर्ष है।

मत्स्य० २७२,३२-३५
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५६ १५८
भाग० १२।१।१९-२०

१—काण्वायना इमे भूमिं चत्वारिंशच्च पञ्च च।
शतानि त्रीणि भोक्ष्यन्ति वर्षाणां च कलौयुगे॥
[भाग० १२।१।२१]

कायस्थ

ये राज्य-कर्मचारी थे, जो भूमि सम्बन्धी कार्यों से सम्बद्ध थे। समस्त भूमि-कर वसूल करना तथा भूमि सम्बन्धी कागज-पत्रों का काम इनके ही हाथ में था। प्रजा पर कर घटा या बढ़ाकर बहुत अत्याचार करते थे। इसीलिए राजा के लिए आदेश है कि वह प्रजा को कायस्थ आदि राज भृत्यों से बचाए :

सुभगाविटमीतेव राजवल्लभतस्करैः।
भक्ष्यमाणा प्रजा. रक्ष्या कायस्थैश्च विशेषत ॥
अग्नि० २२२।११ १२

कारूप

वैवस्वत मनु के नव पुत्रों में एक जिसका नाम करूप था और जिसके वंशज कारूप कहलाये। वे उत्तरापथ के धार्मिक एवं ब्राह्मण-भक्त क्षत्रिय राजा हुए।

विष्णु० ३।१।२४
वायु० ६४।३०, ८८।८, ८६।२
मत्स्य० ११।४१, १२।२४
ब्रह्माण्ड० ३।३८।३१
भाग० ६।२।१६

कालानल चन्द्र-वंश। आनव शाखा। समानर का पुत्र। अनु की तीसरी पीढ़ी में[१]। यह राजा बड़ा विद्वान् कहा जाता है[२]। देखिए कालानर पृ० ५५

१—विष्णु० ४।१८।१
२—वायु० ९९।१३

कालक शिशुनागों के समकालीन चौबीस राजा।

वायु० ९९।३२३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१३६

कालचक्र वानरों का राजा।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३५

कालतोयक [कालतोपक] उत्तरापथ का एक जनपद। यह जनपद मणिधान्यकों के राज्य के अंतर्गत माना गया है। वायु० में पाठ कालतोपक है।

वायु० ९९।३८४
मत्स्य० ११४।४०
ब्रह्माण्ड० २।१६।४६ तथा ३।७४।१९६

कालानर [कोलाहल, कालानल] चन्द्रवंश। अनु का पौत्र, समानर का पुत्र। सृंजय का पिता। मत्स्य० में पाठ कोलाहल है। वायु० में कालानल।

विष्णु० ४।१८।१
मत्स्य० ४८।११
वायु० ९९।१३-१४,
भाग० ९।२३।१-२

कालनाभ असुरों का राजा। हिरण्याक्ष और भानु का पुत्र। हिरण्यकशिपु का भतीजा। बलि और इन्द्र में होने वाले देवासुर-संग्राम में कालनाभ ने

भाग लिया। उसने यम के साथ भी युद्ध किया। वृत्र और इन्द्र के संग्राम में वृत्र का साथ दिया।

भाग० ७।२।१८, ८।१०।२०, तथा २१, ६।१०-२०
वायु० ६७।८७, ६८।१६
विष्णु० १।२१।३
मत्स्य० ६।२७
ब्रह्माण्ड० ३।५।३०, ३।६।२०

कालमूर्ति

वानर राजा।

ब्रह्माण्ड० ३।७,२३२

कालयवन

यवनेश्वर का पुत्र। वह बड़ा क्रूर एवं निर्दयी था। उसका पिता उसे राज्याभिषिक्त कर तप के लिए वन को चला गया। वह अपने को शक्तिशाली समझता था। एक समय उसने नारद से पूछा कि शक्तिशाली योद्धा कौन है, जिससे मैं युद्ध कर अपनी वीरता दिखा सकूँ। नारद ने उसे बताया कि यादव बड़े वीर हैं। यह सुनकर म्लेच्छों की एक महान् सेना लेकर इसने द्वारिका पर आक्रमण किया। कृष्ण से जब उसका साक्षात्कार हुआ उस समय वे निःशस्त्र थे। वे मुचकुन्द की गुफा की ओर दौड़े और उसमें प्रविष्ट हो गये। कालयवन ने भी उसी गुफा में प्रवेश किया और मुचकुन्द को ही श्रीकृष्ण समझ कर उन पर, एक भारी पाद-प्रहार किया। मुचकुन्द जब खड़े हुए और उन्होंने कालयवन की ओर क्रोध से देखा तो कालयवन भस्म हो गया।

भाग० १०।५०।४४-६, ५१।१-१२
विष्णु० ५।२३।५-८, १७-२२

किम्पुरुष

जम्बू द्वीप का एक खण्ड (वर्ष)। यह वर्ष हिमालय के दूसरी ओर माना गया है[1]। विष्णु० तथा भाग० के अनुसार किम्पुरुष नियमत का पौत्र और आग्नीध्र के नव पुत्रों में से एक था। आग्नीध्र ने जम्बू-द्वीप के विभिन्न वर्ष

अपने पुत्रों में बाँट दिये[२]। किम्पुरुष को हेमकूट दिया। भाग० में किम्पुरुष के राजा द्युम्न का उल्लेख है। जरासन्ध और कृष्ण के मध्य में होने वाले युद्ध में द्युम्न जरासन्ध की ओर से लड़ा था। जरासन्ध ने गोमन्त पर जिस समय चढ़ाई की, उस समय वह गोमन्त पर्वत के पश्चिम की ओर नियुक्त किया गया था[३]। परीक्षित ने दिग्विजय के अवसर पर जिन उत्तर के देशों को जीता था, उनमें किम्पुरुष भी एक था[४]।

१—भाग० ५।१६।६, मत्स्य० ११३।२६, ११४।५६।६३५, १२१।४६, वायु० ३४।२८, विष्णु० २।२।१२ (बम्ब० संस्क० गो० ना०)

२—विष्णु० २।१।१७ तथा १६,

३—भाग० १०।५२।११

४—भाग० १।१६।२२ (बम्ब० संस्क० नि० सा०)

किरात

उत्तरापथ की जाति जिसे दौष्यन्ति भरत ने जीता था[१]। भाग० में इनका उल्लेख हूण, पुलिन्द, अनध, यवन, खश, आदि बाह्य जातियों में किया गया है[२]। महाभारत में यवन, काम्बोज, गांधार, बर्बर आदि उत्तरापथ की जातियों में इनकी गणना है[३]। अर्जुन ने उत्तरापथ की दिग्विजय में किरातों को जीता था। भीम तथा नकुल क्रमशः पूर्व और पश्चिम में विजयी हुए थे। सभापर्व में किरातों की दो जातियों का उल्लेख है। इसके अनुसार कैलास, मन्दर पर्वत तथा मानसरोवर के पार्श्ववर्ती देश में किरातों का जनपद था। इससे ज्ञात होता है कि किरात जाति हिमालय की पर्वत श्रेणियों पर पश्चिम से पूर्व तक बसी हुई थी। आज भी ये किरात हिमालय में बिखरे पड़े हैं। इन किरातों में कुछ तो सभ्य थे और उनका हस्तिनापुर के राजाओं के साथ अच्छा सम्बन्ध था।[४] किरातों के उत्तरापथ में होने की पुष्टि टॉलमी से भी होती है। उसके अनुसार किरादाई (किरोही) सेरिन्दियाना की जातियों में से यह एक थी।

किरादाई का उल्लेख पेरिप्लस आफ एरिथ्रियन सी में भी है।[५] इससे यह प्रमाणित होता है कि पूर्व में किरात जाति रहती थी। किरात लोग सिक्किम के पश्चिम में भी रहते थे। किरातों का राज्य नेपाल

में भी था। आभीरों के बाद नेपाल में किरात-वंश ने राज्य किया।

१—मत्स्य० १२१-४६, मार्कण्डेय० ५७।४०
 भाग० ६।२०।३०

२—भाग० २।४।१८

३—महाभा० १२।२०७।४३

४—महाभा० स० प० २५।१००२, २६।१०८६, ३२।१२६६, ४।११६—२०, १६।
 १०८६ पार्जिटर, मार्कण्डेय० पृ० ३२२

५—वि० चं० ला ट्राइब्स इन् एन्शियंट इण्डिया पृ० २८३

कुकुर

यादव वंश। सात्वत-शाखा। विष्णु० के अनुसार अन्धक का पुत्र और धृष्ट का पिता। मत्स्य० के अनुसार कङ्क की दुहिता के चार पुत्रों में से एक और वृष्णि का पिता। किन्तु भाग० के अनुसार कुकुर वह्नि का पिता है। वायु० के अनुसार सत्वक और काशिराज की दुहिता से चार पुत्र हुए जिनमें ज्येष्ठ का नाम ककुद है। ककुद और कुकुर एक ही ज्ञात पड़ते हैं। क्योंकि ककुद के अन्य तीन भाइयों के नाम जो वायु० में पठित हैं, वे अन्य पुराणों से मिलते जुलते हैं। सत्वक की अपेक्षा अन्धक पाठ अधिक उपयुक्त है। पार्जिटर ने भी यही पाठ स्वीकार किया है।

विष्णु० ४।१४।४
मत्स्य० ४४।६१-६२, ७२
भाग० ६।२४।१६
वायु० ६६।११५

कुजम्भ

एक असुर। तारकासुर के राज्याभिषेक में उसने भाग लिया था। वह देवासुर युद्ध में तारक की सेना का सेनाध्यक्ष था। उसने कुबेर के साथ भी युद्ध किया था।

मत्स्य० १४६।२८, १४७।४२-५०, १४६।७६-१२१ (पूना संस्क०)

कुम्बि

दानवराज बलि का एक पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।५।४२

कुञ्जर

एक वानर सामंत। अञ्जना का पिता और हनुमान के पिता केसरी का श्वसुर।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२२३, तथा २५०

कुण्डक [क्षुलिक]

ऐक्ष्वाकु वंश। क्षुद्रक का पुत्र और सुरथ का पिता। इक्ष्वाकु वंश के भावी (महाभारत युद्ध के पश्चात्) राजाओं में इसका छत्तीसवाँ स्थान है। वायु० के अनुसार क्षुद्रक का पुत्र क्षुलिक और क्षुलिक का पुत्र सुरथ है।

वि पु० ४।२२।३ (बम्ब० संस्क० गो० ना०)

वायु० ६६।२६०

कुण्डपायिन्

कुण्डपायिनों की जो माता थी वही निध्रुव की पत्नी थी, अर्थात् कुण्ड पायिनों के पिता का नाम निध्रुव था। किंतु यहाँ निध्रुव की पत्नी का क्या नाम था, स्पष्ट नहीं है

च्यवनस्य सुकन्यायां सुमेधा समपद्यत।
निध्रुवस्य तु या पत्नी माता वै कुण्डपायिनाम्॥

ब्रह्माण्ड ३।८।३१

वायु० ७०।२७

पुराण इंडेक्स प्र० भा० सम्पादित दीक्षितार पृ० ३८६ में कुण्डपायिन्, निध्रुव और सुमेधा के पुत्र माने गए हैं, जिसके अनुसार सुमेधा निध्रुव की स्त्री ठहरती है।

कुण्डिकेर [तुण्डिकेर]

यादव वंश। वैश्य क्षत्रियों की एक शाखा।

मत्स्य० ४३।४६, वायु० ६४।५२

ब्रह्माण्ड० ३।७०।५३

कुण्डिन

विदर्भों की राजधानी।[1] शाल्व ने यहाँ यदुवंशियों के विनाश के लिए राजाओं के सामने प्रतिज्ञा की थी[2]।

१—भाग० १०।५३।७,

२—भाग० १०।७६।२,

कुरुस — भाग० के अनुसार मनु का एक पुत्र मत्स्य० के अनुसार भार्गव गोत्रकार।

भाग० ४।१३।१६
मत्स्य० १९५।२२,१९६।२७

कुन्तल — दक्षिणापथ का एक जनपद। कुन्तल का उल्लेख मार्कण्डेय० में दो बार आया है।[१] इसकी गणना काशी तथा कोशल देशों के साथ की गयी है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि कुन्तल मध्यदेश का एक जनपद था।[२] किन्तु भाग० में अश्मक, गोवर्धन, नासिक तथा आन्ध्र आदि जनपदों के साथ कुन्तल का नाम आया है, जिससे प्रतीत होता है कि यह जनपद दक्षिण में था। कनिंघम के अनुसार मध्य देश का कुन्तल चुनार है। ए० एस० आर० में कुन्तलपुर ग्वालियर में माना गया है।[३] चालुक्यों के समय में कुन्तल देश की सीमा—पूर्व में गोदावरी नदी पश्चिम में अरब सागर, उत्तर में नर्मदा तथा दक्षिण में तुङ्गभद्रा थी[४]। स्मरण रहे कि महाभारत में विभिन्न दिशाओं में कुन्तलों का देश माना गया है। भीष्म पर्व के एक स्थल के अनुसार कुन्तल मध्यदेश में जान पड़ता है, दूसरे के अनुसार दक्षिण में और तीसरे के अनुसार कुन्तल पश्चिम में रखा गया है।[५] कुन्तल जरासन्ध के मित्रराष्ट्रों में से था अथवा उसी के अधिकार में था। यदुओं के विरुद्ध युद्ध में कुन्तलों ने जरासंध का साथ दिया था[६]। यह कुन्तल मध्य देश का कुन्तल रहा होगा। कुछ भी हो ऐतिहासिक दृष्टि से दक्षिण का कुन्तल ही महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। शिलालेखों तथा अन्य साहित्यिक प्रसङ्गों से ज्ञात होता है कि शातकर्णि वंश के बहुत से राजाओं ने कुन्तल में राज्य किया था। मत्स्य० में कुन्तल शातकर्णि का उल्लेख है[७]। गुप्तों का भी कुन्तल के राजाओं से वैवाहिक सम्बन्ध था।

१—मार्क० ५५४।३५, वायु० ४५।११०, १२७, ४७।४२

२—महाभारत० २।१६ ४१

३—ए० एस० आर० ११।१२३

४—जै० टि० पृ० १०६

५—महाभा०, भीष्मपर्व ६।३४७, ६।३६७, ६।३४६
६—भाग० १०।८०।३
७—मत्स्य० ३७३।८

कुन्ति [कीर्ति] (१) यादव वंश। हैहय शाखा। यदु के ज्येष्ठ पुत्र सहस्रजित से प्रवर्तित हैहय का पौत्र, धर्मनेत्र का पुत्र। वायु० के अनुसार उसका नाम कीर्ति था और पिता का नाम धर्मतन्त्र था।

वायु० ६४।५
विष्णु० ४।११।३
मत्स्य० ४३।६
भाग० ६।२३।२२

कुन्ति (२) यादव वंश। क्रथ का पुत्र। ज्यामघ की चौथी पीढ़ी में।[1] हरिवंश के अनुसार वह भीम का पुत्र था। किंतु यहाँ पर भीम विदर्भ का पुत्र माना गया है और यह स्पष्ट है कि विदर्भ के पुत्र क्रथ, कौशिक तथा लोमपाद थे।[2] अन्य पुराणों में भी यही तीन पुत्र विदर्भ के माने जाते हैं। इससे हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि भीम क्रथ का ही दूसरा नाम रहा होगा। पार्जिटर भी क्रथ और भीम एक ही मानते हैं।

१—विष्णु० ४।१२।७-१५
भाग० ६।२४।३
मत्स्य० ४४।३८-३६
२—हरिवंश० ११६।२३
पार्जिटर पृ० १५६

कुन्तिभोज शूर का मित्र। उसके कोई संतान नहीं थी। अत शूर ने अपनी पुत्री पृथा कुन्ति भोज को पुत्री के रूप में दे दी। कुन्ति-भोज की पुत्री होने के कारण वह कुन्ती कहलायी।

वायु० ६६।१४६-५०,

मत्स्य० ४६।७
विष्णु० ४।१४।१०
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५१-५२

कुन्ती

अंधक वंशीय शूर की पुत्री पृथा। कुन्तिभोज के कोई पुत्री नहीं थी अतः उसने पृथा को पुत्री मान लिया था। फलतः पृथा का नाम कुन्ती पड़ा। जब कुन्ती पिता के घर में ही थी, एक समय दुर्वासा ऋषि आये और आतिथ्य-सत्कार से प्रसन्न होकर उसे देवहूति-मंत्र सिखाया जिससे वह देवताओं को अपने पास बुला सके। एक दिन उस मंत्र की परीक्षा के लिए कुन्ती ने सूर्य का आवाहन किया। सूर्य आये और कुन्ती वास्तविक रूप में उन्हें देखकर विस्मित हुई। वह सूर्य से विनयपूर्वक बोली—'देव! मैंने केवल प्रेम परीक्षा के लिए ही तुम्हें बुलाया था। किंतु सूर्य ने कहा कि मेरा दर्शन निष्फल नहीं होता। तुम्हें पुत्र उत्पन्न होगा यह कह कर वे स्वर्ग चले गये। तदनन्तर कुन्ती के पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने लोकापवाद के भय से उसे गंगा में बहा दिया, जिसका नाम कर्ण पड़ा। कहा जाता है कि वह कान से पैदा हुआ था, अत. उसका नाम कर्ण हुआ। कुन्ती कुरु-वंश के राजा पाण्डु को व्याही गयी थी।

भाग० ९। २४, ३१-३६
ब्रह्माण्ड० ३। ७१। १५१-१५२
मत्स्य० ४६। ७

कुबेर

विश्रवा और इडविडा का पुत्र। यक्षों का राजा। अलकाधिप। उसके तीन पुत्र थे। जिनमें विशाल ज्येष्ठ था।[१] यक्षों द्वारा अपने सौतेले भाई उत्तम की मृत्यु का समाचार सुन ध्रुव ने अनेक यक्षों का संहार किया। किंतु इन्द्र के समझाने पर ध्रुव कुबेर से मिले। कुबेर ध्रुव से प्रसन्न हुए और उन्हें वरदान दिया।[२]

१—भाग० ६।७।३२-३३, ४।१।३७, ११।११, वायु ४०।८, ४७।१, ७०।३८, ६७।२

२—भाग० ४।१२।१-२

कुवलयाश्व — ऐक्ष्वाकु वंश। बृहदश्व का पुत्र। ऐक्ष्वाकु वंश का ग्यारहवाँ राजा। इसे धुन्धुमार भी कहा जाता है, क्योंकि इसने धुन्धु नामक राक्षस को मारा था।

भाग० ६ । ६ । २१–२३
वायु० ८८ । २८
मत्स्य० १२ । ३१

कुश (१) — ऐक्ष्वाकु-वंश। श्री रामचन्द्र जी के पुत्र। उनका राज्य कोशल था। उन्होंने अयोध्या छोड़कर राजधानी कुशस्थली बनायी थी। उनके पुत्र का नाम अतिथि था।

वायु ८८ । १९८,
विष्णु० ४ । ४ । ४७
भाग० ६ । ११ । ११,
मत्स्य० १२ । ५१
ब्रह्माण्ड० ३६३।१९८

कुश (२) — चन्द्रवंश। अमावसु से प्रवर्तित कान्यकुब्ज शाखा। गय का पुत्र। उसके चार पुत्र थे जो वेदों में निष्णात थे। भाग० के अनुसार अजक का पुत्र। विष्णु० के अनुसार बलाकाश्व का पुत्र।

वायु० ९१ । ६२
भाग० ६ । १५ । ३–४
विष्णु० ४ । ७।३

कुश (३) — विदर्भ का पुत्र।

भाग० ६ । २४ ।१

कुश (४) — एक जाति।

ब्रह्माण्ड० ३ । ७४ । २१८
मत्स्य० २७३ । ७२

कुशध्वज

निमि वंश। सीरध्वज का पुत्र। सकाश्य का राजा[1]। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० में सकाश्य के स्थानपर केवल काश्य ही है। संकाश्य का राज्य किस प्रकार कुश ध्वज को प्राप्त हुआ, इसका वृत्तान्त रामायण में है। कहा गया है कि सकाश्य के राजा सुधन्वा ने मिथिला पर आक्रमण किया था। उसने जनक को कहला भेजा कि यदि मुझे सीता न ब्याही गयी तो युद्ध होगा। जनक ने सीता का देना अस्वीकार किया फलस्वरूप दोनों के बीच युद्ध हुआ। युद्ध में सकाश्य का राजा मारा गया और उसका राज्य जनक के हाथ में आ गया। उसने अपने भाई कुशध्वज को सकाश्य का राजा बनाया।[2]

१—वायु० ८६।१८, विष्णु० ४।५।१२,
ब्रह्माण्ड० ३, ६४, १९, भाग० ९।१३।१९

२—रामायण, बाल काण्ड ७१।२६।६

कुशनाभ

वैवस्वत मनु का पुत्र।

मत्स्य० ११।४०–४१

कुशस्थली (१)

आनर्त देश की राजधानी। यह अमरावती की भाँति सुन्दर नगरी थी। एक समय आनर्त के पौत्र रैवत अपनी पुत्री रेवती के लिए उचित वर के सम्बन्ध में ब्रह्मा से परामर्श करने के लिए ब्रह्मलोक गये, और वहाँ दिव्य गन्धर्व संगीत सुनने में इतने तल्लीन हो गये कि उन्हें किसी बात का ध्यान नहीं रहा। ब्रह्मा के स्मरण दिलाने पर जब रैवत लौटे तो इसी बीच पुण्यजन नामक राक्षसों ने कुशस्थली को लूट कर नष्ट कर दिया।

विष्णु० ४।१।१९,
वायु० ८६।२४–२५।८८।१।२
ब्रह्माण्ड० ३।६१।२०
भाग० ९।१०।२७

कुशस्थली (२)

कोशल देश की राजधानी। कुश ने अयोध्या से हटाकर कुशस्थली अपनी राजधानी बनायी[1]। डा० राजबली पाण्डेय के अनुसार यह कुशस्थली कुशावती अथवा कुशीनगर है, जो उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद में स्थित है।

१—वायु० ८८।१९९, ब्रह्माण्ड० ३।६३।१९९,
२—डॉ० रा० ब० पाण्डेय गोरखपुर जनपद का इतिहास पृ० ७५

कुशाग्र

चन्द्र (पौरव) वंश। मगधराज बृहद्रथ का पुत्र।

वायु० ९९।२२३,
विष्णु० ४।१९।१८
मत्स्य० ५०।२८-२९,
भाग० ९।२२।६

कुशाम्ब (१)
[कुशाश्व, कुशिक]

चन्द्र-वंश। अमावसु के कुल में कुश का पुत्र। गाधि का पिता। कुशाम्ब ने इन्द्र सदृश पुत्र पाने के लिए एक हजार वर्ष तक तप किया था। स्वयं इन्द्र ही पुत्र रूप में कुशाम्ब के यहाँ पैदा हुए और गाधि कौशिक के नाम से विख्यात हुए। वायु० में पाठ कुशाश्व है। ब्रह्माण्ड० में कुशाम्ब और कुशिक दोनों है।

वायु० ९१।६२
विष्णु० ४।७।३-४
भाग० ९।१५।४
ब्रह्माण्ड० ३।६६।३२-३४

कुशाम्ब (२)
[कुश]

चन्द्र-वंश। पौरव शाखा। भाग० के अनुसार उपरिचर का पुत्र चेदिराज है। वायु० तथा मत्स्य० में पाठ कुश है।

भाग० ९।२।६
विष्णु० ४।१९।१९
मत्स्य० ५०।२७
वायु० ९९।२२२

कुशावर्त

ऋषभ का पुत्र

भाग० ५।४।१०

कुशाश्व
[कुशस्तम्ब]

चन्द्र (ऐल) वंश । कान्यकुब्ज शाखा ।
कुश का पुत्र । अमावसु की दसवीं पीढ़ी में ।

वायु० ६१।६२

कुशीतक

यदु-वंश । वृष्णि शाखा । वसुदेव और रोहिणी का पुत्र ।

वायु० ९६।१६३,
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१६५

कुसुम (१)

एक वानर-राज ।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२२१

कुसुम (२)

गंगा के दक्षिण किनारे पर स्थित एक नगर । इसे उदायी (उदयी,ब्रह्माण्ड०) ने अपने राज्य के चौथे वर्ष में बसाया था ।

वायु० ९९ । ३१९
ब्रह्माण्ड० ३ । १२२ । ३२

कुहू

हिमालय से निकलने वाली एक नदी ।

ब्रह्माण्ड० २।१६।२५
मत्स्य०:११४-२१
वायु० ४५।९५

कुक्षिमित्र

यादव वंश। वृष्णि शाखा। वसुदेव और मदिरा का पुत्र।

वायु० ९६।१९९,
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७०–१७२

कुक्षेयु

चन्द्र वंश। पौरव शाखा। रौद्राश्व और अप्सरा से उत्पन्न आठ पुत्रों में से एक।

भाग० ९।२०।४

कुटक

दक्षिण के एक जनपद का नाम। ऋषभ संन्यास वेश में जिन देशों में घूमे उनमें कुटक भी एक था।

भाग० ५।६।७ तथा ९

कुकण

भजमान का पुत्र।

विष्णु० ४।१३।२

कृत [१]

चन्द्र-वंश। काशि शाखा। जय का पुत्र। हर्यवन का पिता।

भाग० ९।१७।१७

कृत [२]

यादव वृष्णि वंश। वसुदेव और रोहिणी का पुत्र

भाग० ९।२४।४९

कृत [३]
[कृमि, कृतक]

पौरव वंश। च्यवन का पुत्र। उपरिचर का पिता।[१] मत्स्य० में पाठ कृमि है। वायु० के अनुसार कृत (कृतक) के पुत्र का नाम विद्योपरिचर है। विष्णु० के अनुसार कृतक।

१—वायु० ९९।२१९। विष्णु० ४।१९।१९
मत्स्य० ५०।२५

कृत [४]

चन्द्रवंश। पौरव द्विमीढ शाखा। सन्नतिमान् का पुत्र। वायु० के अनुसार पौत्र।[1] कृत ने हिरण्यनाभ कौशल्य से योग की शिक्षा ग्रहण की थी। उसने चौबीस साम संहिता का प्रवचन किया था।[2]

१—विष्णु० ४।१६।१३ भाग० ६।२१।२८,
मत्स्य० ४६।७८

२—वायु० ६६।१८६।६०
मत्स्य० ४६।७६

कृतकृत्य

वानरराज

ब्रह्माण्ड० ३।७।२४१

कृतञ्जय

ऐक्ष्वाकु वंश के कलियुग के राजा धर्मिन् का पुत्र। रणञ्जय का पिता किन्तु वायु० के अनुसार पितामह। भाग० के अनुसार बर्हि का पुत्र।

विष्णु० ४।२२।३, (बम्ब० संस्क० गी० ना०)
वायु० ६६।२८७
भाग० ६।१२।१२

कृतधर्मन्

चन्द्र वंश। सङ्कृति का पुत्र।

वायु० ६३।११,
ब्रह्माण्ड० ३।६८।११

कृतध्वज

मानव वंश के अन्तर्गत निमिवंश। भाग० के अनुसार धर्मध्वज का पुत्र तथा केशिध्वज का पिता। विष्णु० तथा वायु० में कृतध्वज नाम नहीं मिलता।

भाग० ६।१३।१६–२०

कृतरथ [कृतिरथ, कीर्तिरथ] निमि-वंश। प्रतिबंधक का पुत्र। भाग० में पाठ कृतिरथ है, वायु० तथा ब्रह्माण्ड० में कीर्तिरथ। इन दोनों में पुत्र का नाम देवमीढ़ है। कृतरथ, कृतिरथ और कीर्तिरथ के पिता का नाम वायु०, ब्रह्माण्ड० तथा भाग० में क्रमश: प्रतित्वक, प्रतिम्बक और प्रतीपक है।

१—विष्णु० ४। ५। १२
ब्रह्माण्ड० ३। ६४। ११-१२
२—भाग० ६। १३। १६
वायु० ८६। ११-१२

कृतिरात [कीर्तिराज, कीर्तिरात] महाधृति का पुत्र। निमिवंश का अठारहवां राजा। भाग० तथा विष्णु० के अनुसार कृतिरात। वायु० के अनुसार कीर्तिराज तथा ब्रह्माण्ड० में कीर्तिरात।

विष्णु० ४। ५। १२
वायु० ८६। १३
ब्रह्माण्ड०। ३। ६४। १३
भाग० ६। १३। १७

कृतलक्षण यदुवंश। सात्वत शाखा। वृष्णि उपशाखा। वृष्णि और माद्री का पांचवां पुत्र।

मत्स्य० ४५।१-२

कृतवर्मन् (१) हैहय वंश। विष्णु० तथा भाग० के अनुसार धनक का पुत्र। ब्रह्माण्ड० तथा वायु० में कृतवर्मन् के पिता नाम कनक है।

विष्णु० ४।११।३,
वायु० ६४।८
मत्स्य० ४३।१३,
ब्रह्माण्ड० ३।६६।८
भाग० ६।२३।२३

कृतधर्मन् (२)　　हृदीक का ज्येष्ठ पुत्र ।

भाग० ६।२४।२७
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१४०,
मत्स्य० ४४।८१

कृतवीर्य　　यादव हैहय वंश । धनक का पुत्र । नवीं पीढ़ी में[1] । च्यवन ऋषि के शाप से उसके सौ पुत्र नष्ट हो गये थे । उसने सूर्य की उपासना की । सूर्य ने उसे एक व्रत सिखाया, जिसके करने से उसे दीर्घ-जीवी पुत्र प्राप्त हुआ[2] ।

१—विष्णु० ४।११।१२
वायु० ६४।८
ब्रह्माण्ड ३६६।८
२—मत्स्य० ६८।७-१२

कृतशर्मा　　इध्यड़ा का पुत्र ।

वायु० ८८।१८१

कृताहार　　एक वानराधिप

ब्रह्माण्ड० ३।७।१८०

कृति [१]　　पौरव वंश । नहुष का पुत्र ।

विष्णु० ४।१०।१,
भाग० ९।१८।१
ब्रह्माण्ड० ३।६८।१२

कृति (२)

निमिवंश। बहुलाश्व का पुत्र। निमि-वंश का पन्द्रहवाँ राजा।

विष्णु० ४।५।१२
ब्रह्माण्ड० ३।६४।१२

कृमि

पश्चिमी आनव शाखा। कृमी और उशीनर का पुत्र। उसकी राजधानी कृमिलापुरी थी। भाग० में पाठ क्रमि है।

वायु० ६६।२०-२२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।२०-२१,
भाग० ६।२३।३

कृश

पश्चिमी आनव शाखा। कृशा और उशीनर का पुत्र। राजधानी वृषला-पुरी। अन्य पुराणों मे पाठ कृमि है।

मत्स्य० ४८।१८। तथा २१

कृशशर्मन्

ऐक्ष्वाकु वंश। इडविड का पुत्र और दिलीप खट्वाङ्ग का पिता। यह पाठ केवल ब्रह्माण्ड० में पाया जाता है। अन्य पुराणों में इलविल, इडविड का पुत्र विश्वसह है। देखिए शीर्षक विश्वसह।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।१८१

कृशाश्व (१)

ऐक्ष्वाकु वंश। संहताश्व का पुत्र। प्रसेनजित् (भाग०, सेनजित्) का पिता। भाग० में कृशाश्व के पिता का नाम बर्हणाश्व है।

विष्णु० ४।२।१३,
वायु० ८८।६२,
ब्रह्माण्ड० ३६३।६५
भाग० ६।६।२५

कृशाश्व (२) सूर्य (मानव) वंश । नाभाग नेदिष्ट शाखा । सहदेव का पुत्र । सोमदत्त का पिता । पीढ़ी क्रम संख्या तीस ।

वायु० ८६।२०

कृष्ण (१) अन्धक वंश । सात्वत शाखा । अज्ञात का पुत्र ।

मत्स्य० ४४।८४
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१४३
वायु० ९६।१४१

कृष्ण (२) आन्ध्र वंश । ब्रह्माण्ड० के अनुसार सिन्धुराज का भाई । भाग० के अनुसार वर्नी का भाई । विष्णु० के अनुसार शिप्रक का भाई । श्रीशान्तकर्णि का पिता । राज्यावधि १० वर्ष । मत्स्य० तथा वायु० में इस प्रसङ्ग में कृष्ण का नाम नहीं है ।

विष्णु० ४।२४।१२
वायु० ९९।३४६
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६२
भाग० १२।१।२२
मत्स्य० २७३।२

कृष्ण (३) हरि के अवतारों में से एक । कृष्ण का अवतार वसुदेव और देवकी के पुत्र रूप में हुआ था । अवतार होने के पहले देवकी के गर्भ में उन्हें स्थित जान कर ब्रह्मा तथा अन्य देवताओं ने उनकी स्तुति की[1] । उनके इस अलौकिक जन्म के बाद उन्हें आधीरात में यमुना के पार नन्दव्रज में यशोदा के यहाँ पहुँचा दिया गया । उसी समय यशोदा से योग-माया का भी जन्म हुआ, जिसे कृष्ण के स्थान पर मथुरा ले आया गया[2] । तदनन्तर योगमाया के जन्म की सूचना कंस को दे दी गयी[3] । भाग० में इनके अलौकिक

कार्यों का उल्लेख है। शिशु अवस्था मे श्रीकृष्ण ने अपने मुख में यशोदा को समस्त विश्व का रूप दिखा दिया था।[४] एक बार उन्होंने गोवर्धन पर्वत को छत्र की भांति उठाकर वर्षा से गोकुल की रक्षा की थी।[५] गोपियों के साथ कृष्ण की रास-लीला का भाग० में अत्यन्त मनोहर वर्णन है[६]। एक समय कृष्ण और अर्जुन ने द्वारका निवासी एक ब्राह्मण के मृत बालकों को स्वर्ग से लाकर उनके पिता को सौंप दिया था। श्रीकृष्ण अपनी सोलह सहस्र स्त्रियों के साथ विहार करते हुए भूलोक में बहुत काल तक रहे। उनकी प्रत्येक पत्नी से दस दस पुत्र हुए। भगवान् कृष्ण के परम यशस्वी पुत्रों में अठारह तो महारथी थे, जिनके नाम प्रद्युम्न, अनिरुद्ध दीप्तिमान्, भानु, साम्ब, मधु आदि हैं।[१] कृष्ण भगवान् का अवतार दैत्यों के नाश तथा पृथ्वी के भार को हलका करने के लिए हुआ था। एक ऋषि द्वारा शापित यदुवंश का नाश करने का उन्होंने विचार किया। ब्रह्मा तथा अन्य देवताओं ने भगवान् कृष्ण से वैकुण्ठ लौट जाने के लिए प्रार्थना की। भगवान् ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। उद्धव ने भी श्रीकृष्ण के साथ वैकुण्ठ जाने की इच्छा प्रकट की, किन्तु भगवान् कृष्ण ने उन्हें यहीं पृथ्वी म विचरण करते हुए हरि का निरन्तर चिन्तन करने का उपदेश दिया। भगवान् ने उन्हें भक्ति, ज्ञान, धर्म आदि का स्वरूप बताया। उद्धव जी ने तदनुसार अपना धार्मिक जीवन बिताया और अन्त में हरि रूपी परम पद को प्राप्त हुए।[२] उधर जब यदु कुल का नाश हो गया तो भगवान् कृष्ण एक पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ गये। भगवान् के चतुर्भुज शरीर की प्रभा से चारों दिशाएँ आलोकित हो रही थीं। उस समय एक बहेलिये ने भगवान् के अरुण-कान्ति से युक्त चरण-तल को हिरण समझ कर अपने बाण से बेध दिया। जब उसने आकर देखा कि ये तो चतुर्भुज पुरुष हैं, तब दुखित एवं भयभीत होकर वह उनके चरणों पर गिर पड़ा और उसने क्षमा मांगी। भगवान् ने उसे सान्त्वना दी और कहा—"तू बड़े भाग्य से प्राप्त होने वाले स्वर्ग में निवास कर।" भगवान् का यह आदेश प्राप्त कर बहेलिया उनकी तीन बार परिक्रमा कर विमान द्वारा स्वर्ग चला गया। तदनन्तर श्रीकृष्ण जी भी अपने धाम जाने का विचार करने लगे और इसका सन्देश अपने सारथी दारुक द्वारा द्वारका भेज दिया। भगवान् श्रीकृष्ण के स्वधाम जाने के समय ब्रह्मा, शिव, इन्द्र आदि देवगण वहाँ आए और उनका

गुणगान करने लगे। श्री कृष्ण के राजनीतिक जीवन के लिए देखिए—दन्तवक्त्र का द्वारका, जरासन्ध, चेदि (२)।

१—भाग० १०।२ अ०
२—वही १०।३।४६-५१
३—वही १०।४।१-२
४—वही १०।७।३७
४ अ—वही १०।२५।१६
५—वही १०।२६।१-२१
६—वही १०।८६।६१-६२, वही १०।६०।२६-३३
७—वही ११।१।५५, ११।६।२६-२७ तथा ११।६।३१ ११।६।४८-४६ ११।७।५-१२, ११।२०।४७
८—वही ११।३०।२५-४०, ११।३१।१-७, ११।३१।२०

कृष्ण-द्वैपायन (४) पराशर के पुत्र। ब्रह्माण्ड० के अनुसार उनकी माता का नाम काली था। महाभारत के अनुसार उनकी माता सत्यवती थी। वेदों को चार संहिताओं में विभक्त करने का श्रेय उन्हीं को प्राप्त है।

भाग० ६।२२।२१
वही १२।४।४१
वायु० १।१०, २३।२२६
ब्रह्माण्ड० ३।८।६२
विष्णु० ३।४।५-६
वही ६।२।३२
महा० इण्डे० पृ० ६३०

केकय शिवि का पुत्र।[1] उसके नाम के आधार पर राज्य का भी नाम पड़ा। इस देश के राजा अर्थात् केकयराज ने श्रुतकीर्ति से विवाह किया, जिससे पाँच पुत्र हुए।[2] (पञ्चकैकेयाः पुत्रा बभूवुः)

१—ब्रह्माण्ड० ३।७४।२२-२३
मत्स्य० ४८।१६-२०
वायु० ६६।२३-२४
२—विष्णु० ४।१४।११ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
वही ४।१८।२१

केतुमत्, केतुमान् (१) ऐक्ष्वाकु वंश। भाग० के अनुसार ऐक्ष्वाकु वंश के प्रसिद्ध राजा अम्बरीष के पुत्रों में से एक।

भाग० ६।६।१

केतुमत्, केतुमान् (२) चन्द्र-वंश। पौरव के अन्तर्गत काशि शाखा। धन्वन्तरि का पुत्र और भीमरथ का पिता।

वायु० ६२।२३।
ब्रह्माण्ड० ३।६७।१२
भाग० ६।१७।५

केतुमत्, केतुमान् (३) चन्द्र वंश। काशि शाखा। सुनीथ का पौत्र और क्षेम का पुत्र। सुकेतु का पिता। केवल ब्रह्माण्ड० में ही यह नाम पाया जाता है[1]। विष्णु० तथा वायु० में सुनीथ का पुत्र सुकेतु, (सुकेतन, भाग०) और सुकेतु का पुत्र धर्मकेतु है[2]।

१—ब्रह्माण्ड० ३।६७।७१
२—वायु० ६२।६६-७० विष्णु० ४।८।६ भाग० ६।१७।८

केतुमाल स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के कुल में उत्पन्न। आग्नीध्र (अग्नीध्र, वायु०) और पूर्वचित्ति का पुत्र। जम्बू-द्वीप के नव वर्षों में से गन्धमादन वर्ष का स्वामी। उसी के नाम से इस वर्ष का नाम केतुमाल पड़ा।

भाग० ५।२।१६
वायु० ३३।४० तथा ४५
विष्णु० २।१।१७ तथा २३
ब्रह्माण्ड० २।१४।४७ तथा ५३

केरल (१) अण्डीर के पाण्ड्य आदि चार पुत्रों में से एक। उसके (अण्डीर के) पाण्ड्य, केरल, चोल तथा कुल्य चार पुत्र थे। उनके नाम से कुल्य,

पाण्ड्य, केरल और चोल जनपद विख्यात हुए।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।६

केरल (२)

दक्षिणापथ का एक जनपद[1]। तीर्थ-यात्रा के समय बलराम केरल भी गये थे[2]। सूर्य-ग्रहण के अवसर पर स्यमन्तपंचक क्षेत्र जानेवाले विविध देशों के राजाओं में केरल के नृपति का भी उल्लेख है।

१— वायु० ४५।१२४ ४७।५२
मत्स्य० ११४।४६
ब्रह्माण्ड० २।१६।५६
भाग० १०।७६।१६
वही १०।८२।१३

केवल

सूर्य (मानव वंश) नाभागनेदिष्ट शाखा। नर का पुत्र। पीढ़ी-क्रम संख्या १६।

वायु० ८६।१४
विष्णु० ४।१।२० [वन्ध० संस्क० गो० ना०]
भाग० ६।२।३०
ब्रह्माण्ड० ३।८।३६

केशिध्वज

निमिवंश। कृतध्वज का पुत्र[1]। किन्तु विष्णु० के अनुसार धर्मध्वज जनक का पुत्र कृतध्वज और उसका पुत्र केशिध्वज। धर्मध्वज जनक के दूसरे पुत्र मितध्वज का पुत्र खाण्डिक्य जनक था। खाण्डिक्य जनक कर्म-मार्ग में अत्यन्त विशारद था। किन्तु केशिध्वज भी आत्मविद्या विशारद था। दोनों एक दूसरे के शत्रु हो गये। केशिध्वज ने खाण्डिक्य का राज्य छीन कर उसे राज्य से निकाल दिया। खाण्डिक्य जनक अपने मंत्री और पुरोहितों के साथ वन में रहने लगा। केशिध्वज ने कर्मकाण्ड द्वारा मृत्यु से तरने की

इच्छा से अनेक यज्ञ किये। इसी बीच एक व्याघ्र ने हविर्दुग्ध के लिए नित्य दुही जाने वाली गायको मार डाला। राजा ने ऋत्विजों से इसका प्रायश्चित्त पूछा। उन्होंने कशेरु के पास जाने के लिए कहा। कशेरु ने उसे शुनक के पास भेजा। शुनक ने उससे कहा कि केवल खाण्डिक्य ही इस विषय में कुछ बता सकता है। अत केशिध्वज कृष्णचर्म धारण किये हुए खाण्डिक्य के पास पहुँचा। खाण्डिक्य ने यह जानकर कि मेरा शत्रु मुझे यहाँ मारने आया है, केशिध्वज पर बाण चलाने के लिए अपना धनुष उठाया। किन्तु जब केशिध्वज ने उससे कहा कि मैं आपका वध करने के लिए नहीं आया, किन्तु आपकी सहायता से कुछ संशय दूर करने के लिए आया हूं, तब उसने बाण अलग रख दिये। केशिध्वज ने खाण्डिक्य से धेनु-वध का प्रायश्चित्त पूछा। खाण्डिक्य ने प्रायश्चित्त की सम्पूर्ण विधि उसे बता दी। राजा ने अपने राज्य में लौटकर प्रायश्चित्त-विधि की और वह यज्ञ सम्पूर्ण कर कृतकृत्य हुआ। तदुपरान्त वह गुरु-दक्षिणा देने के लिए खाण्डिक्य के पास गया और उसने उससे प्रार्थना की कि आप गुरु-दक्षिणा लें, क्योंकि आपके उपदेश से ही मैंने अपना यज्ञ पूरा किया है। मन्त्रियों ने खाण्डिक्य को परामर्श दिया कि आप अपना राज्य वापिस मांगे। किंतु खाण्डिक्य ने पृथ्वी का राज्य तुच्छ समझा और केशिध्वज से कहा कि यदि आप गुरु-दक्षिणा देना ही चाहते हों तो मुझे समस्त क्लेशों को दूर करने वाले आत्म-ज्ञान की शिक्षा दें। केशिध्वज ने खाण्डिक्य को ज्ञान की शिक्षा दी और तत्पश्चात् अपने नगर को लौटा। अपने पुत्र को राज्याभिषिक्त कर वह योग-सिद्धि के लिए वन को चला गया और वहाँ एकान्त में यम, नियम आदि से अपने को शुद्ध एवं निर्मल बनाकर विष्णुरूप ब्रह्म में लीन हो गया।[२]

१—भाग० ९।१३।२०–२१

२—विष्णु० ६।६।५–५० [बम्ब० सं० गो० ना०]

वही ६।७।१०१–१०४

केशिन् यादव वंशान्तर्गत वृष्णि-वंश। शूर के पुत्र वसुदेव और कौशल्या का पुत्र।

भाग० ९।२४।४८

केशिनी (१) विदर्भ-राज की पुत्री। सगर की ज्येष्ठा रानी। असमञ्जस की माता। और्व के वरदान से केशिनी का पुत्र वंशकर्ता हुआ।

भाग० ९।८।१५
ब्रह्माण्ड० ३।४९।२ तथा ५६
वही ३।५१।३७
वायु० ८८।१५५-१६०
विष्णु० ४।४।१-५

केशिनी (२) सुहोत्र की स्त्री और जह्नु की माता।

ब्रह्माण्ड० ३।६६।२५

कैकेय [केकय, कैकय] एक जाति। (जनपद)[1]। प्रस्तुत प्रसंग में कैकेय शब्द का प्रयोग केकय देश के निवासी के अर्थ में अधिक उचित प्रतीत होता है। वायु० में पाठ कैकय है।[2] भाग० में कैकेय तथा कैकय दोनों पाठ मिलते हैं। विष्णु० में धृष्टकेतु नामक एक केकयराज का उल्लेख है, जिससे सन्तर्दन आदि पाच (कैकेय) पुत्र हुए। रुक्मिणी के विवाह में कैकेय लोग भी उपस्थित थे। राजसूय यज्ञ के अवसर पर दिग्विजय के लिए उद्यत अर्जुन के साथ कैकय (कैकेय) भी थे। शिशुपाल ने राजसूय यज्ञ के अवसर पर श्री कृष्ण को गालियाँ दीं। वहाँ उपस्थित लोगों में जो शिशुपाल को मारने के लिए शस्त्र खड़े हुए थे, कैकेय (कैकय) भी थे।[3]

१—मत्स्य० ११४।४२
मार्कण्डेय० ५७।३७
२—वायु० ४५।११७
३—विष्णु० ४।१४।११
भाग० १०।५४।५८—५९
वही १०।७२।१३
वही १०।७४।४१

कोमला

मेघ राजाओं की राजधानी। कहा गया है कि नव मेघ राजाओं ने यहां राज्य किया था।

वायु० ९९।३७५–७६

कोलाहल

आन्ध्रों के समकालीन एक राजा का नाम।

मत्स्य० ४८।११

कोशल [कोशला]

कोशल में सूर्य अथवा ऐक्ष्वाकु वंश का राज्य था। इसकी राजधानी अयोध्या थी। कुश के समय में इसकी राजधानी कुशस्थली थी। वायु० के अनुसार यह कोशला राज्य विन्ध्य पर्वत पर स्थित था। (विन्ध्य-पर्वत सानुषु [1]) और उत्तर कोशल में लव का राज्य था। लव की राजधानी श्रावस्ती थी।[2] युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर कोशल के निवासी भी उपस्थित थे।[3] ब्रह्माण्ड० में सगर को कोशलेश्वर (कोशलेश्वर) कहा गया है।[4] ब्रह्माण्ड० के अनुसार परशुराम ने कोशल के महाबली राजाओं को पराजित किया था।[5]

१—वायु० ८८।१९९

२—वही ८८।२००

३—भाग० १०।७५।१२

४—ब्रह्माण्ड० ३।४८।१५

५—वही ३।४१।३६

कौशल

सात कोशल राजा। वे आन्ध्रों के समकालीन थे जो विदूर के स्वामी कहे गये हैं।

भाग० १२।१।३५

कौशल्या (१)

दशरथ की रानी तथा राम की माता।

ब्रह्माण्ड० ३।३७।२१

कौशल्या (२)　　सात्वत की स्त्री। सात्वत और कौशल्या के ६ पुत्र हुए:—भजि (वायु० तथा मत्स्य० में भजिन) भजमान, दिव्य, देवावृध, अन्धक और वृष्णि। इनमें चार पुत्रों से पृथक् पृथक् वंश हुए।

मत्स्य० ४४।४७
वायु० ६६।१—२
विष्णु० ४।१३।१
भाग० ६।२४।६
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१

कौशाम्बी　　कलियुग के पौरव वंश के राजाओं में नेमिचन्द्र (भाग०) नामक राजा हुए। वायु० में निर्वक्त्र तथा मत्स्य० में पाठ निवक्षु है। पहले वे हस्तिनापुर में निवास करते थे किन्तु हस्तिनापुर जब नदी की बाढ़ से नष्ट हो गया तब कौशाम्बी में रहने लगे।

वायु० ६६।२१
विष्णु० ४।२१।८
मत्स्य० ५०।७६
भाग० ६।२२।४०

कौशिक (१)　　विश्वामित्र का दूसरा नाम।

वायु० ८८।६०, ११२

कौशिक (२)　　यादव वंश। वृष्णि-शाखा। वसुदेव का वैशाली से उत्पन्न पुत्र।[१] जिसे वृक ने गोद लिया।[२] वायु० के अनुसार कौशिक की माता का नाम (सैव्या) शैव्या था।[३]

१—ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७४-१७५
२—वही ३।७१।१६१
३—वायु० ६६।१८२

कौशिक [कुश] (२) विदर्भ की स्नुषा से उत्पन्न दूसरा पुत्र। वह विद्वान् और धार्मिक राजा था। उसका पुत्र चेदि हुआ। उसी से चेदि वंश का प्रादुर्भाव हुआ। भाग० में पाठ कुश है।

विष्णु० ४।१२।१५
हरिवंश० ३६।२२
वायु० ९५।३६।३८
भाग० ९।२४।१

क्रतु आग्नेयी और उरु (कुरु) का पुत्र।

मत्स्य० ४।४३
विष्णु० १।३।९

क्रथ विदर्भ की स्नुषा से उत्पन्न पुत्र। ज्यामघ की तीसरी पीढ़ी में।

विष्णु० ४।१२।१५
हरिवंश० ३६।२०
भाग० ९।२४।१

क्रोधन कुरु-वंश। अयुत का पुत्र। देवातिथि का पिता। भाग०, विष्णु० तथा वायु० में पाठ अक्रोधन है। देखिए अक्रोधन।

भाग० ९।२२।११
विष्णु० ४।२०।६
वायु० ९९।२३२

क्षत्र-धर्म सोमवंश। पुरूरवा के पुत्र आयु का पौत्र। अनेनस् का पुत्र। प्रतिपक्ष का पिता। कृतधर्म के बाद उसके वंश का अन्त हो जाता है। विष्णु० तथा वायु० में अनेनस् का उल्लेख है, किन्तु उसकी सन्तति का कोई उल्लेख नहीं है।

भाग० ९।१७।७ तथा ११

क्षत्र-वृद्ध

पौरव। आयु का पुत्र। पुरूरवा का पौत्र। इसके पुत्र का नाम सुनहोत्र था। इन्होंने काशी राज्य की स्थापना की थी।

विष्णु० ४।८।१
ब्रह्माण्ड० ३।६८।३
भाग० ६।१७।१-२

क्षत्रिय

द्वितीय वर्ण। ब्रह्मा के वक्ष-स्थल से उत्पन्न[1]। क्षत्रिय का कर्तव्य प्रजा की रक्षा करना तथा ब्राह्मण के अतिरिक्त अन्य वर्णों से कर लेना है[2]। क्षत्रिय में इन गुणों का होना आवश्यक बतलाया है—शौर्य, वीर्य, धृति, तेज, त्याग, आत्मजय, क्षमा ब्रह्मण्यता तथा, प्रसाद[4]। विष्णु० के अनुसार युद्ध से जीवन यापन करना, (शस्त्राजीवी) और पृथ्वी की रक्षा करना राजा का कर्तव्य है। दुष्टों को दण्ड देने तथा सज्जनों की रक्षा से राजा को यज्ञादि कर्मों का फल प्राप्त होता है। वर्णाश्रम-धर्म की उचित व्यवस्था करने वाला राजा वांछित लोक को प्राप्त होता है[5]। कलियुग में क्षत्रियों में दोष आ गये। इन म्लेच्छ-प्राय क्षत्रियों का कल्कि ने अन्त कर दिया[6]। वे प्रायः छिन्न हो गये। महापद्म ने भी क्षत्रियों का नाश किया[7]। दान, यज्ञ और तप के प्रभाव से अनेक क्षत्रिय जातियाँ ब्राह्मण बन गयीं[8]।

१—वायु० ३०।२३२, ४५।११७।५८।१११।५७।५२, १००।२४६, १०१।५ ३५३।१०४ १, विष्णु० १।६।६
२—भाग० ७।११।१४-१५, मत्स्य० १०।३४।२०
३—भाग० ७।११।१७
४—भाग० ७।११।२२
५—विष्णु० ३।८।२६-२६
६—भाग० १०।४०।२२
७—भाग० १२।१।८
८—ब्रह्माण्ड० ३।१०।४६, २८।६६।६३।१४१, ६६।७७, ७१।२३१

क्षत्रौजस्

शिशुनाग वंश। क्षेमधर्मा का पुत्र। पीढ़ी-क्रम संख्या ४। राज्यावधि ४० वर्ष। वायु० के अनुसार अजातशत्रु क्षत्रौजस् से पहले आता है। किन्तु

विष्णु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार वह क्षत्रौजस् की तीसरी पीढ़ी में आता है।

विष्णु० ४।२४।३
वायु० ९९।३१७
ब्रह्माण्ड० ३।१४।१३०

क्षुद्रक

ऐक्ष्वाकु वंश के कलियुग के राजाओं में से प्रसेनजित् का पुत्र और कुण्डक का पिता। वायु० के अनुसार उसके पुत्र का नाम क्षुलिक है किन्तु भाग० तथा मत्स्य० के अनुसार रणक।

वायु० ९९। २८९।
विष्णु० ४। २२। ३
मत्स्य० २७१। ११
भाग० ९।१२।१४।१५

क्षुद्रभृत्

वसुदेव और देवकी का पुत्र। वह कंस द्वारा मारा गया। श्री कृष्ण जी उसे कुछ,क्षण के लिए रसातल से द्वारका लाये और माता पिता द्वारा देखे जाने के बाद फिर उन्होंने उसे स्वर्ग जाने की आज्ञा दे दी।

भाग० १०। ८५। ५१, ५९

क्षुधि

श्रीकृष्ण और मित्रवृन्दा का पुत्र।

भाग० १०। ६१। १६

क्षुप

सूर्य (मानव) वंश। नाभागनेदिष्ट का कुल। खनित्र का पुत्र। पीढी क्रम सख्या ७। उसके पुत्र का नाम विंश था। वायु०, विष्णु०, तथा भाग० में पाठ चाक्षुप है।

वायु० ८७। ५
विष्णु० ४। १। १९
भाग० ९। २। २४

क्षेम (१)

चंद्र (पौरव) वंश । बार्हद्रथ शाखा । शुचि का पुत्र । राज्यावधि २८ वर्ष ।

वायु० ६६ । ३०२
मत्स्य० २७१ । २५
विष्णु० ४ । २३ ३
भाग० ६ । २२ । ४८

क्षेम (२)

चंद्र (पौरव) वंश । द्विमीढ शाखा । उग्रायुध का पुत्र ।

वायु० ६६ । १९३
विष्णु ४ । १६ । २५
मत्स्य० ७ । ४६ । ७८
भाग० ६ । २१ । २६

क्षेमक (१)

निरमित्र (निरामित्र, वायु०) का पुत्र अथवा उत्तराधिकारी । परीक्षित के बाद क्रम संख्या २८वीं है । कलियुग के ऐक्ष्वाकु वंश के राजाओं में क्षत्रिय राजा, जो बहुत प्रसिद्ध हुआ—

ब्रह्मक्षत्रस्य यो योनिर्वंशो राजर्षिसत्कृत: ।
क्षेमकं प्राप्य राजानं स संस्था प्राप्स्यते कलौ ॥

विष्णु० ४ । २१ । ४
वायु० ६६ । २७७ तथा २७६
ब्रह्माण्ड० ३ । ७४ । २४५
मत्स्य० ५० । ८७ । ७

क्षेमक (२)

सुनीथ का पुत्र और केतुमान् का पिता । यह पाठ केवल ब्रह्माण्ड० में ही पाया जाता है ।

ब्रह्माण्ड० ३ । ६७ । ७३

क्षेमारि

संजय का पुत्र । निमि वंश का ३५ वाँ राजा ।

विष्णु० ४।५।१३

क्षेमजित्

शिशुनाग-वंश। काकवर्ण का पौत्र। क्षेम-धर्मा का पुत्र[१]। वायु० में काकवर्ण के स्थान पर शकवर्ण है और क्षेमधर्मा के स्थान पर क्षेमवर्मा है। क्षेमवर्मा का पुत्र अजात-शत्रु था[२]।

१—मत्स्य० २७२।८
२—वायु० ९९।३१५-३१७

क्षेमधन्वा

पुण्डरीक का पुत्र। ऐक्ष्वाकु वंश का राजा।

विष्णु० ४।४।४८
वायु० ८८।२०२

क्षेमधर्मा [क्षेमवर्मा क्षेमधोमा]

शिशुनाग वंश। काकवर्ण का पुत्र। शिशुनाग वंश का तृतीय राजा। राज्यावधि २० वर्ष। वायु० में शकवर्ण का पुत्र क्षेमवर्मा है और विष्णु० में क्षेमधर्मा है किन्तु मत्स्य० में पाठ क्षेमधोमा है, जो अशुद्ध प्रतीत होता है।

वायु० ९९।३१६-३१७
विष्णु० ४।२४।३
मत्स्य० २७२।६ [गुरुमण्डल० कलकत्ता]

खण्डपाणि

अहीनर का उत्तराधिकारी। परीक्षित के बाद उसकी क्रम संख्या २६वीं है।

विष्णु० ४।२१।४ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]

खगण

वज्रनाभ का पुत्र। उसके पुत्र का नाम विधृति था।

भाग० १२।३।६ [बम्ब० संस्क० नि० सा०]

खड्गधारी

राजा का रक्षक। उसे युवा, सुन्दर, कुलीन, कद में ऊँचा तथा अपने स्वामी का दृढ़भक्त होना चाहिए।

मत्स्य० २१५।१८
विष्णु ध० २।२४।१८

खनित्र

सूर्य (मानव वंश) नाभागोनेदिष्ट (विष्णु०) नाभागोदिष्ट (भाग०) शाखा। विष्णु० के अनुसार प्रजानि का पुत्र। भाग० के अनुसार प्रमति का पुत्र। पीढ़ी क्रम संख्या ६। विष्णु० में एक दूसरे खनित्र का भी उल्लेख है, जो विविंश का पुत्र है।

वायु० ८६।५
विष्णु० ४।१।१७ [वम्ब० सं० गो० ला०]
भाग० ६।२।२४ [वम्ब० संस्क० नि० सा०]

खनिनेत्र

सूर्य (मानव वंश) नाभागोदिष्ट (भाग०) नाभागोनेदिष्ट (विष्णु०) का कुल। भाग० के अनुसार रम्भ का पुत्र और विविंशति का पौत्र। विष्णु० में पाठ विविंश है, जिसका पुत्र खनित्र है। पीढ़ी क्रम संख्या १०।

वायु० ८८।७
विष्णु० ४।१।१६
भाग० ६।२।२५।

खट्वाङ्ग

ऐक्ष्वाकुवंश के राजा विश्वसह का पुत्र। यह चक्रवर्ती राजा माना जाता है। देव तथा दैत्यों के युद्ध में देवों की ओर से लड़ा और दैत्यों का संहार किया। जब उसे यह ज्ञात हुआ कि मेरी आयु मुहूर्तमात्र रह गयी है, तब वह अपने नगर को लौट आया और उसके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया। उसने अपने मन को पुत्र, कलत्र आदि सांसारिक क्षणभंगुर पदार्थों से हटाकर हरि-भक्ति में लगाया, जिससे उसकी बुद्धि विमल हो गयी। अन्त में उसे आत्मज्ञान प्राप्त हुआ और मुहूर्तमात्र में ब्रह्मलोक की प्राप्ति हुई। उसके पुत्र का नाम दीर्घबाहु था। भाग० द्वादश स्कन्ध के तीसरे अध्याय में, पुरूरवा, गाधि, नहुष, भरत आदि अनेक राजाओं के साथ खट्वाङ्ग का जो उल्लेख है, वह उपर्युक्त ऐक्ष्वाकु

खट्वाङ्ग ही प्रतीत होता है।*

भाग० ६।६।४१,४५।६।१०।१
वही २।१।१३।११।२३।३०
भाग० १२।३।६

* पुराण इन्डेक्स प्र० भा० वी० आर० रामचन्द्र दीक्षितार द्वारा सम्पादित, मद्रास १९५१, पृ० ४९५, में जो खट्वाङ्ग को भागवत १२।३।९ के अनुसार दैत्य माना गया है, वह नितान्त असंगत है।

खट्वाङ्ग (२) उपहूत पितरों की मानसिक पुत्री [1] यशोदा का पुत्र।[2] एक राजर्षि।[3]

१—ब्रह्माण्ड० ३।१०।८९
२—वही ३।१०।९०
३—वायु० ७३।४१

खट्वाङ्गद दिलीप का पुत्र।

वायु० ८८।१८२

खश [खस] (१) पूर्व का एक जनपद, जिसमें होकर चक्षु नदी बहती थी। वायु० में यह एक पर्वतीय जनपद माना गया है और वहां पाठ खस है।[2]

१—ब्रह्माण्ड० २।१८।४६ तथा ५० मत्स्य० १२१।४३, १४४।५७
२—वायु० ४५।१२५ वही ४७।४७

खश [खस] (२) एक पतित जाति जो हरि-भक्ति से पवित्र बनी।[1] भाग० में पाठ खस है। विन्ध्य-वन में रहने वाली एक निम्नकोटि की क्षत्रिय जाति[2] तथा निषाद[3]। महाभारत में खसों को शक और दरद जातियों के साथ अर्द्ध-सभ्य जातियों में परिगणित किया गया है।[4] हरिवंश० के अनुसार सगर ने उन्हें जीता और उन्हें नीच श्रेणी में रख दिया। अतः वे म्लेच्छ माने गये[5]। मत्स्य० में दिये हुए खशों को हम नेपाल के पूर्वज कह सकते हैं। प्रारम्भ में ये

अल्प संख्यक थे, किन्तु ब्राह्मणों से विवाह-सम्बन्ध होने से उनकी संख्या में वृद्धि हो गयी। वह उत्तर की एक बाह्य जाति मानी गयी है। एक स्थान पर उन्हें मेरु और मन्दर पर्वत के बीच शैलदा नदी के समीप रखा गया है[६]। मत्स्य० के अनुसार शैलदा नदी पश्चिम तिब्बत में वरुण पर्वत से निकलती है और पश्चिमी सागर में विलीन हो जाती है[७]। कुछ लोग खशों का सम्बन्ध काशगर से भी बताते हैं। मनु के अनुसार वे क्षत्रिय थे, किन्तु संस्कार न करने तथा ब्राह्मणों के प्रति आस्था न रखने से वे पतित हो गए थे[८]। एक स्थान पर मार्कण्डेय० में खशों को पर्वत श्रेणियाँ कहा गया है। दूसरे स्थान पर कच्छप के मध्य में शाल्व, नीप, शक और शूरसेन आदि जातियों के साथ रखा गया है[९]। महाभारत में उन्हें शैलदा नदी के समीप रखा गया है।[१०] यदि यह शैलदा नदी वही है, जिसे मत्स्य० में शैलदिका कहा गया है, तो खशों का स्थान तिब्बत या उससे कुछ आगे उत्तर-पश्चिम मानना चाहिए। सेन और पालवंशों के शिलालेखों में भी खशों का उल्लेख पाया जाता है। इससे ज्ञात होता है कि वे इनकी सेना में क्रीत सैनिक के रूप में भरती होते थे।[११]

१—भाग० २।४।१८
२—ब्रह्माण्ड० ३।२६।१४५
३—वही ३।६३।१२०
४—महाभा० सभापर्व ५१६।१८५६ वही द्रोणपर्व ११, ७२२।१२।१७,
५—हरिवंश० १४।७८४
६—महाभा० सभापर्व ५२।१८५८-२,
७—मत्स्य० १२०।३३
८—मनु० १०।४३।४
९—पार्जिटर, मार्कण्डेय० ३४६।३५०
१०—महाभा० सभा पर्व ५२।१८५६
११—हि० चं० ला०, ट्राइब्स इन् एन्० इ० पृ० ४००

खाण्डव

एक वन का नाम। जिसे अर्जुन ने अग्नि में जला दिया था। यहीं पर अर्जुन ने इन्द्र को भी पराजित किया था। इससे अग्निदेव अर्जुन पर बहुत प्रसन्न हुए

और उन्हें धनुष, श्वेत घोड़े, रथ, कवच आदि दिया। उसी समय अर्जुन ने मय (दानव) को जलने से बचा लिया जिससे वह प्रसन्न होकर अर्जुन का मित्र बन गया, और उनके लिए एक ऐसी अनोखी सभा का निर्माण किया, जिसमें दुर्योधन को जल में स्थल तथा स्थल में जल का भ्रम हो गया।

भाग० १। १५। ८

सोऽग्निस्तुष्टो धनुरदाद्धयान्श्वेतान्रथंनृप।
अर्जुनायाक्षयौ तूणौ वर्म चाभेद्यमस्त्रिभिः॥

भाग० १० ५८। २५
वही १० ७१। ४५-४६

खाण्डिक्य

निमि-वंश। मितध्वज का पुत्र। धर्मध्वज का पौत्र। केशिध्वज का चचेरा भाई। वह कर्मयोग का महान् ज्ञाता था। खाण्डिक्य को साधनरहित तथा दुर्बल समझ कर केशिध्वज ने द्वेषवश उसे राज्य के बाहर कर दिया। केशिध्वज की धर्मधेनु को एकबार व्याघ्र खागया। इसका प्रायश्चित्त जाननेके लिए वह अनेक विद्वानों के पास गया, किन्तु उसे कोई प्रायश्चित्त की विधि नहीं मिली। उसके उपरान्त शौनक ने उसे खाण्डिक्य के पास भेजा। पहले तो खाण्डिक्य उसे देखकर बहुत क्रुद्ध हुआ और उसे मारने के लिए आयुध उठाया, किन्तु केशिध्वज द्वारा यह कहने पर कि प्रायश्चित्त सम्बन्धी कुछ संशय दूर करने के लिए मैं आप के पास आया हूँ, वह शान्त हुआ। यद्यपि खाण्डिक्य के मंत्रियों ने केशिध्वजको मारने की सलाह दी, तथापि उदारचेता खाण्डिक्य ने यह कुत्सित कार्य नहीं किया, अपितु उसे प्रायश्चित्त सम्बन्धी अनेक विधियाँ बतलायीं। तदनुसार केशिध्वज ने प्रायश्चित्त कर यज्ञ समाप्त किया। केशिध्वज एकबार पुनः दक्षिणा देने के लिए तथा अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए खाण्डिक्य के पास गया, किन्तु खाण्डिक्य ने अर्थ को तुच्छ समझा और उससे दक्षिणा-स्वरूप में योग का ज्ञान प्राप्त करना स्वीकार किया। योग ज्ञान प्राप्त करने के अनन्तर खाण्डिक्य ने अपनी सम्पत्ति अपने पुत्र को सौंप दी और वन में तप करने चला गया।

विष्णु० ६।६।५-५०
वही ६।७।१०२-३
भाग० ६।१३।२०, २१
देखिए शीर्षक केशिध्वज

खेट　　एक छोटा ग्राम,[१] जो खर्वट से भी छोटा होता है।[२]

१—वायु० ६१।३०
२—विष्णु० ५।२।१२

ख्याति (१)　　औत्तानपादि ध्रुव के कुल में उरु और आग्नेयी का पुत्र।

विष्णु० १।१३।६-७
मत्स्य० ४।४२
ब्रह्माण्ड० २।३६।१०८

ख्याति (२)　　उल्मुक और पुष्करिणी से उत्पन्न ६ पुत्रों में से एक।

भाग० ४।१३।१७

ख्याति (३)　　कर्दम की पुत्री, जो भृगु को ब्याही गयी। उसके पुत्रों का नाम धातृ और विधातृ था तथा श्री नाम की एक पुत्री थी। श्री नारायण की स्त्री हुई। नारायण और श्री से बल तथा उन्माद (वायु०, बल और उत्साह) दो पुत्र हुए। श्री के अन्य मानस पुत्र भी थे। वायु० में निम्नलिखित पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है।*

भाग० ३।२४।२१-२३
वही ४।१।४३
ब्रह्माण्ड० २।६।५३ तथा ५४
वही ३।१।१।१

वायु० २८।२-३

भृगो ख्यातिर्विजज्ञेऽथ ईश्वरौ सुखदुःखयो शुभाशुभप्रदातारौ सर्वप्राणभृतामिह।

सम्भवत शुद्ध पाठ इस प्रकार होगा —

भृगो ख्यात्या विजज्ञाते ईश्वरौ सुखदुःखयो ।

शुभाशुभप्रदातारौ सर्वप्राणभृतामिह ॥ वायु० २८ । १

* पुराण इण्डेक्स प्र० भाग० दीक्षितार द्वारा सम्पादित पृ० ५०१ में वायु० के अनुसार जो ख्याति को भृगु की पुत्री माना गया है, वह नितान्त भ्रामक है। यही नहीं, ख्याति को नारायण की स्त्री थी के रूप में मानना भी ठीक नहीं है। वस्तुतः 'श्री' ख्याति की पुत्री थी।

गजाध्यक्ष

हाथियों का निरीक्षक। उसे ऐसा होना चाहिए जो नाना प्रकार के हाथियों के विषय में अच्छा ज्ञान रखता हो। हाथियों को जिस तरह सिखाया जाता है, तथा वन में किस प्रकार के हाथी होते हैं, उन्हें किस प्रकार पकड़ा जाता है, इन सब बातों का हस्त्यध्यक्ष को विशेष ज्ञान होना चाहिए।

मत्स्य० २१५।३५
विष्णुध० ३।२४।३५
अग्नि० २२०।१

गद (१)

वसुदेव और रोहिणी का पुत्र।[1] विष्णु० में गद को भद्रा और वसुदेव का पुत्र बताया गया है।[2]

१—भाग० ६।२४।४६
२—विष्णु० ४।१५।१५ [बम्ब० संस्क० गी० ना०]

गद (२)

श्रीकृष्ण के अनुज। जरासन्ध द्वारा मथुरा के आक्रमण के अवसर पर यह नगर के पश्चिम द्वार में रक्षा के लिए नियुक्त था। जरासन्ध ने जब तीसरी बार मथुरा पर आक्रमण किया तो गद ने बड़ी वीरता से युद्ध किया। रुक्मिणी को ले जाते हुए श्रीकृष्ण का पीछा करने वाले नृपों पर गद ने

आक्रमण किया। अनिरुद्ध को छुड़ाने के लिए जो कृष्ण की सेना बाणासुर के नगर के लिए गयी उसमें गद प्रमुख योद्धाओं में से था। शाल्व ने जब द्वारिका पर आक्रमण किया तब उसका सामना करने वाले साम्ब, अक्रूर आदि योद्धाओं में गद भी था। गद शाल्व से वीरता के साथ लड़ा और उसकी सेना का संहार किया।

भाग० १।१४।२८, ३।१।३५, ४।२३।१२, १०।४१।३२
वही १०।५४।६
वही १०।६३।२
वही १०।७६।१४

गभीर प्रभीर का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१८६

गम्भीर पुरु-वंश। पुरु की तीसरी पीढ़ी में, रभस का पुत्र। रम्भ का पौत्र। अक्रिय का पिता।

भाग० ९।१७।१०

गय (१) हविर्धान और आग्नेयी का पुत्र।

वायु० ६३।२३
ब्रह्माण्ड० २।३६।१०८, २।३७।२४
भाग० ४।२४।८

गय (२) स्वायम्भुव मनु का वंश। औत्तानपादि ध्रुव के कुल में। उल्मुक और पुष्करिणी का पुत्र।

भाग० ४।१३।१७

गय ३

स्वायंभुव मनु का वंश। ऋषभ के पुत्र भरत से निर्गत शाखा। नक्त और द्रुति का पुत्र। उसे भागवत पुराण में राजर्षि कहा गया है। संसार की रक्षा के हेतु वह विष्णु का अंशरूप पृथ्वी पर अवतीर्ण माना जाता है। उसने धर्मपूर्वक प्रजा का पालन-पोषण तथा शासन किया। उसने अनेक यज्ञ किये। विष्णु में उसकी परम भक्ति थी। वह ब्रह्म-ज्ञानी भी माना गया है। प्राचीन गाथाओं में उसके यश का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वह धर्म, वेद और ब्राह्मणों का पोषक था। उसकी पत्नी का नाम गयन्ती था। गयन्ती से उसके चित्ररथ सुगति, अवरोधन प्रमुख तीन पुत्र हुए।

भाग० ५।१५।६-१४ तथा १०।६०।४१
ब्रह्माण्ड० २।१४।६८
वायु० ३३।५७
विष्णु० २।१।३८

गय (४)

वैवस्वत मनुवंश। सुद्युम्न का पुत्र।[१] वह पूर्वी भारत का राजा था और गया उसकी राजधानी थी।[२] उसने राजर्षि पद को प्राप्त किया।[३] उसने एक महान् यज्ञ किया और ब्राह्मणों को प्रचुर धनराशि दान में दी। देवता उससे प्रसन्न हुए और उसे वरदान दिया कि गया-पुरी ब्रह्मपुरी की भाँति तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगी। अन्त में वह सम्पूर्ण भोगों को भोगकर विष्णु लोक को प्राप्त हुआ।[४]

१—मत्स्य० १२।१७
२—ब्रह्माण्ड० ३।६०।१८-१९
३—वायु० ८५।१८-१९
४—वायु० ११२।४-६

गय (५)

चंद्रवंश। बलाश्व का ज्येष्ठ पुत्र।

वायु० ९१।९१

गयन्ती

गय की पत्नी का नाम। उसके चित्ररथ, सुगति और अवरोधन तीन पुत्र थे। देखिए गय (३)

भाग० ५।१५।१४

गर्ग

प्रतर्दन का दूसरा पुत्र।

वायु० ९२।६५
ब्रह्माण्ड० ३।६७।६९

गर्दभिल [गर्दभिन]

सात गर्दभिलों का उल्लेख पुराणों में मिलता है। मत्स्य० विष्णु० और भाग० में पाठ गर्दभिल है[१]। इसके विपरीत वायु० और ब्रह्माण्ड में गर्दभिन पाठ है। किसी पुराण में इनकी राज्यावधि नहीं दी गयी है और न यही उल्लेख है कि किस जन-पद में इनका राज्य था।

१—विष्णु० ४।२४।१४, मत्स्य० २७३।१८, भाग० १०।१।२६
२—वायु० ९९।३५९, ब्रह्माण्ड० ३।७४।१७२

गवय

एक वानर जाति का राजा

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३२

गवाक्ष

एक वानर जाति का राजा।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२४३

गाधि

चंद्र (पौरव) वंश। कान्यकुब्ज शाखा। कुशाश्व (कुशिक) का पुत्र। इन्द्र का अवतार। कथा इस प्रकार है—कुशाश्व (कुशिक) ने इन्द्रतुल्य पुत्र

पाने की इच्छा से एक सौ वर्ष तक कठिन तप किया। अतः इन्द्र को स्वयं कुशिक के पुत्र के रूप में जन्म लेना पड़ा। कुशिक का पुत्र होने से गाधि कौशिक भी कहे जाते हैं। स्मरण रहे कि विश्वामित्र का भी दूसरा नाम कौशिक है। देखिए कौशिक (१)

विष्णु० ४।७।४-५
वायु० ९१।६३।६५

गान्धार (१)

चद्र (पौरव) वंश। अरुद्ध (आरद्वान्) का पुत्र। द्रुह्य की ४ थी पीढ़ी में। उसने उत्तर पश्चिम में गान्धार देश बसाया। ब्रह्माण्ड० के अनुसार गान्धार की चौथी पीढ़ी में प्रचेतस् के सौ पुत्र हुए, जो उत्र म्लेच्छाधिप कहे गये हैं।

वायु०९९।७।१०
विष्णु० ४।१७।१ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
ब्रह्माण्ड० ३।७४।११

गान्धार (२)

एक देश का नाम। मत्स्य० तथा ब्रह्माण्ड० में इसका यवन,सिन्धु सौवीर के साथ उल्लेख है[१]। मत्स्य० तथा ब्रह्माण्ड० में एक स्थान पर यह भी कहा गया है कि चक्षु नदी दरद, जगुण्ड, गान्धार, काश्मीर आदि देशों में होकर बहती है[२]। म्लेच्छ तथा धर्म विरोधी देशों की गणना में गान्धार देश का भी नाम आया है[३]। कलि के अन्तिम चरण में विष्णुयशस् नाम का ब्राह्मण पारद, पह्लव, यवन, शक, तुषार, पुलिन्द, दरद आदि जातियों का संहार करेगा[४]। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार भरत के पुत्र तक्ष और पुष्कर ने गान्धार में क्रमशः तक्षशिला और पुष्करावती नगरियों को बसाया[५]। रिज-डेविड का कथन है कि गांधार (कंधार) के अन्तर्गत पूर्वी अफगानिस्तान तथा पश्चिमी पंजाब रहे होंगे। देश के नामकरण के सम्बन्ध में देखिए गान्धार(१)

१—मत्स्य० ११४।४१, ब्रह्माण्ड० २।१६।४७
२—मत्स्य० १२१।४६, ब्रह्माण्ड० २।१८।४८
३—ब्रह्माण्ड० २।३१।८३
४—ब्रह्माण्ड० ३।७३।१०८-१११

५—वायु० ८८।१८६-९०, ब्रह्माण्ड० ३।६३।१९०-१

६—रिजडेविड्स्, बुद्धिस्ट इंडिया पृ० २८, कारमाइकेल लेक्चर १९१८ पृ० ५४

ग्रामाधिपति

ग्राम का अध्यक्ष। शासन-व्यवस्था के अनुसार राज्य कई विभागों में बँटा रहता था। राज्य शासन की इकाई ग्राम थी। ग्राम की शासन व्यवस्था ग्रामाधिपति के द्वारा होती थी। ग्रामेश का कर्तव्य था कि वह गांव में शान्ति स्थापित रखे और ग्राम के अन्दर होने वाली बुराइयों को रोके।[1] यदि परिस्थिति कुछ कठिन हो जाय और उसे वह न सँभाल सके तो उसे दशपाल को सूचित करना चाहिए।[2]

१—अग्नि० २२२।१

२—वही २२२।२

गुरुण्ड

तुषारों के पश्चात् १३ गुरुण्डों ने राज्य किया। मत्स्य० में पाठ गुरुण्ड है[1]। विष्णु० में पाठ मुण्ड है। विष्णु० के अनुसार राज्यावधि १९९ वर्ष।[2]

१—मत्स्य० २७३।२२ तथा २२

२—विष्णु० ४।२४।१४-१६

गौतमीपुत्र

आन्ध्र-वंश। शिवस्वाति (शिवस्वामी, वायु०) के बाद राजा हुआ। राज्यावधि २१ वर्ष।

मत्स्य० २७३।१२

विष्णु० ४।२४।१३

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६७

वायु० ९९।३५५

चकोरः शातकर्णिन्
[चकोरः स्वातिकर्ण]

आन्ध्रवंश। सुन्दरः शातकर्णिन् का पुत्र। आंध्रवंश का २१वाँ राजा। राज्यावधि केवल ६ महीना। मत्स्य० के अनुसार राजा का नाम चकोर स्वातिकर्ण है।

मत्स्य० २७३ । २१
विष्णु० ४ । २४ । १२
वायु० ९९ । ३५२

चक्र (१) कृष्ण और सत्यभामा का पुत्र ।
मत्स्य० ४७।१७

चक्र (२) विष्णु का आयुध । चक्रवर्ती राजा का चिह्न[१] । कृष्ण का आयुध[२] ।
१—वायु० ५७।६८
२—महा० स्वर्गारोहण, ४।१२७

चक्रवर्तिन् त्रेता-युग में साम्राज्य का पूरा विकास हो गया था । चक्रवर्ती राजा सर्वश्रेष्ठ माना जाता था । चक्रवर्ती राजाओं का प्रारम्भ भी त्रेता युग से ही माना जाता है[१] । चक्रवर्ती राजा के ये चिन्ह माने गये हैं—चक्र, रथ, मणि, स्त्री, निधि, अश्व, गज, खड्ग, चर्म, केतु, पुरोहित, सेनानी, रथकृत्, मंत्री धनुष आदि । ये चिह्न सभी चक्रवर्ती राजाओं में पाये जाते हैं । मत्स्य० में केवल सात चिह्नों का उल्लेख है[२] । ये चक्रवर्ती राजा विष्णु के अंशरूप में पृथ्वी पर अवतीर्ण होते हैं । बल, धर्म, सुख और धन ये चार शुभ सम्पदाएँ इनमें दिखाई देती हैं । ये चारों इनमें परस्पराविरोधभाव से रहती हैं । एक सपदा का होना दूसरी सपदा की स्थिति के लिए हानिकारक नहीं होता[३]। अर्थ, धर्म, काम और विजय इनको प्राप्त होते हैं । ये अणिमा आदि ऐश्वर्य तथा प्रभु-शक्ति से युक्त होते हैं । शास्त्र ज्ञान तथा तप से ये ऋषियों का सत्कार करते हैं और अपने बल से मनुष्यों और राक्षसों को पराजित करते हैं । इनके शारीरिक चिह्न दैवी (अमानुष) होते हैं[४] । इनके केश स्निग्ध, ललाट उच्च तथा जिह्वा प्रमार्जनी होती है, ओंठ और नेत्र ताम्रवर्ण के होते हैं । इनमें श्रीवत्स होता है । रोम ऊपर की ओर उठे हुए होते हैं । इनकी कटि कृश, और भुजाएँ दीर्घ होती हैं । इनकी गति गज की भाँति मन्द किन्तु गौरव-युक्त होती है, इनके पैर चक्र और

मत्स्य से तथा हाथ शंख और पद्म से चिन्हित रहते हैं। इनकी आयु ८५ हजार वर्ष होती है। इन चक्रवर्ती राजाओं की चार असंग गतियाँ आकाश, समुद्र, पाताल तथा पर्वतों में होती हैं। यज्ञ, दान, तप तथा सत्य यही त्रेता युग का धर्म है। इसी युग में वर्ण और आश्रम के अनुसार धर्म का प्रवर्तन होता है, मर्यादा रखने के लिए दण्डनीति प्रारम्भ होती है। प्रजा स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट रहती है। पुराणों में मुख्य चक्रवर्ती राजा पुरूरवा, मान्धाता, ययाति, रघु, दिलीप, राम, अम्बरीष, सगर, शशबिन्दु, दौष्यन्ति भरत, कार्तवीर्य अर्जुन आदि हैं। इससे भी पूर्व स्वायम्भुव मन्वन्तर में प्रियव्रत, पृथु, ऋषभ आदि चक्रवर्ती राजा हुए थे[५]।

१—वायु० ५७।७२-८५, ब्रह्माण्ड० २।२९।७१

२—वायु० ५७।६६, ८०, ब्रह्माण्ड० २।२९।७४—७६, मत्स्य० ५७।६३-६४

३—ब्रह्माण्ड० २।२९।७८—८१, वायु० ५७।७२

४—मत्स्य० १४२।६६—६६, ब्रह्माण्ड० २।२९।८०—८३, वायु० ५७।७४—७६

५—वायु० ५७।७८-८२, ब्रह्माण्ड० २।२९।८६—८६, मत्स्य० ७२।७५

चतुरङ्ग

चन्द्र (पौरव) वंश। आनव शाखा। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित। अनु की २० वीं पीढ़ी तथा तितिक्षु की बारहवीं पीढ़ी में लोमपाद का पुत्र।

वायु० ६६।१०४

विष्णु० ४।१८।४

चन्द्र (१)

यदु-वंश। वृष्णि-शाखा। श्रीकृष्ण और नाग्नजिति का पुत्र।

भाग० १०।६१।१३

चन्द्र (२)

विश्व-रन्धि का पुत्र। युवनाश्व का पिता।

भाग० ६।६।२०

चन्द्रगुप्त-मौर्य (१)

मौर्य वंश का प्रथम राजा। कौटिल्य ने नन्दों का उच्छेदन कर चन्द्रगुप्त को राजगद्दी पर बिठाया। राज्यकाल २४ वर्ष। वायु०, विष्णु० मत्स्य० और

ब्रह्माण्ड० में यह उल्लेख है कि १०० वर्ष के बाद यह राज्य मौर्यों के हाथ में आयगा। किन्तु परवर्ती श्लोक से विदित होता है कि इसके किसी पूर्ववर्ती राजाका नाम प्रमादवश छूट गया है। विष्णु० के पाठ से ज्ञात होता है कि चन्द्र गुप्त का राज्याभिषेक हुआ था, किन्तु मत्स्य० तथा वायु० में इसका उल्लेख नहीं है। वायु० में यही कहा गया है कि कौटिल्य, चन्द्रगुप्त को राज्य में स्थापित करेगा—चन्द्रगुप्त नृप राज्ये कौटिल्य स्थापयिष्यति।

वायु० ६६।३३१
विष्णु० ४।२४।७
मत्स्य० २७२।२१
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१४४

चन्द्रगुप्त (२)

हैहय-राज कार्तवीर्य का मन्त्री। ब्राह्मण धन के हरने की इच्छा न होने पर भी कार्तवीर्य अर्जुन को उसने जमदग्नि ऋषि से कामधेनु को बल से अथवा क्रय से लेने के लिए प्रेरित किया। तदनुसार वह कामधेनु लेने की इच्छा से ऋषि जमदग्नि के पास गया और धेनु लेने के लिए तर्क वितर्क करने लगा किन्तु जमदग्नि ने उससे कहा—"तुम धेनु नहीं ले जा सकते। राजा कार्तवीर्य स्वय इन्द्र से भी वह काम धेनु नहीं प्राप्त कर सकते।" किन्तु ज्योंही चन्द्रगुप्त उस धेनु को जमदग्नि के आश्रम से बलपूर्वक ले जाने लगे त्योंही जमदग्नि ने दृढ़ता पूर्वक दोनों हाथों से धेनु को कण्ठ से लगा लिया। राजा के अन्य नौकरों ने ऋषि को चारों ओर से घेर लिया और वे लाठी, कोड़े और मुष्टियों से उन्हें मारने लगे। प्रहार से उनके अस्थिबन्धन टूट गये और अचेत हो कर वे धरती पर गिर पड़े। जमदग्नि के गिरने पर चन्द्रगुप्त ने धेनु को शीघ्र ले जाने के लिए नौकरों को आज्ञा दी, किन्तु कामधेनु ने अपने बन्धन पैरों से खींचकर तोड़ डाले और बन्धनमुक्त होकर वह अपनी पूँछ और सींग से राजा के कर्मचारियों को मारने लगी और उन्हें भगाकर वह सब के देखते देखते स्वर्गलोक चली गयी। चन्द्रगुप्त निराश होकर राजा के यहाँ पहुँचा और उसे सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया। इस प्रकार दुष्ट मन्त्री की दुर्मन्त्रणा से कार्तवीर्य जमदग्नि परशुराम के कोप का भाजन बना।

ब्रह्माण्ड० ३।२८।३१३७

चन्द्रश्री [दण्डश्री : शातकर्णिन्, दण्डश्री: सातकर्णिन्, दण्डश्री: शान्तिकर्ण]

आन्ध्र-वंश। इस वंश का २८ वां राजा। विजय का पुत्र। राज्यावधि १० वर्ष। ब्रह्माण्ड० तथा वायु० में क्रमशः दण्डश्रीः-शातकर्णिन् और दण्डश्रीः-सातकर्णिन् पाठ है। मत्स्य० में चण्डश्रीः-शान्तिकर्ण पाठ है।

विष्णु० ४।२४।११ [बम्ब० सस्क० गो० ना०]
मत्स्य० २७३।१५ [कलकत्ता, गुरु०प्र०]
वायु० ९९।३५९
ब्रह्माण्ड० ३ । ७४ । १६६

चम्प

चन्द्र (पौरव) वंश। पूर्वी तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित आनव शाखा। अनु की २२ वीं तथा तितिक्षु की १४ वीं पीढ़ी में पृथुलाक्ष (पृथुलाश्व) का पुत्र।

विष्णु० ४ । १८ । ५
वायु० ९९ । १०४-१०५

चम्पा

पूर्वी आनव शाखा के राजा चम्प के नाम से प्राचीन मालिनी नगरी का नाम-करण चम्पा नगरी हुआ।

विष्णु ४ । १८ । ४
वायु० ९९।१०५-६
मत्स्य० ४८ । ९७
भाग० ९।८।१
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१९७

चम्पावती

नवनाक (नव नागवंशज) राजाओं की राजधानी।

वायु० ९९ । ३८२

चक्षु [चाक्षुप, पक्ष]

चन्द्र-वंश। अनु का पुत्र। वायु०में पाठ पक्ष है और विष्णु में चाक्षुप है।

वायु० ९९।११

विष्णु० ४।१८।१
भाग० ६।२३।१

चाक्षुष

ध्रुव औत्तानपादि के कुल में उत्पन्न रिपु और बृहती के पुत्र चक्षुष का अरण्य प्रजापति की पुत्री पुष्करिणी वारुणी से उत्पन्न चाक्षुष मनु नामक पुत्र।

विष्णु० १।१३।२-३
ब्रह्माण्ड० २।३६।१०१-१०५

चार

प्राचीनकाल में प्रजा के विषय में समुचित जानकारी प्राप्त करने के लिए तथा राज-कर्मचारियों के आचारण, कर्तव्य, स्वामिभक्ति आदि अनेक बातों का पता लगाने के लिए राजा का एक गुप्तचर विभाग होता था। राजा को चार-चक्षु कहा गया है। इसका तात्पर्य यह है कि इन गुप्तचरों के द्वारा ही राजा प्रजा का सुख दुःख, और उसकी भलाई बुराई जान सकता है तथा विद्रोह और राजभक्ति का पता लगा सकता है। गुप्तचर व्यवसायी, सांवत्सरिक, ज्योतिषी, परिव्राजक आदि के वेशों में घूमा करते थे, और वे गुप्त रीति से राज्य-सम्बन्धी सब बातों की सूचना देते रहते थे। राजा के लिए कहा गया है कि वह एक ही गुप्तचर के कहने पर विश्वास न करे, सब की बातें सुनकर ही निर्णय करे। गुप्तचर इस प्रकार नियुक्त होने चाहिए कि वे एक दूसरे को जान सकें तथा उनका भेद प्रजा न पा सके। राज्य के कर्मचारियों को चाहिए कि वे राजा के प्रति अनुराग रखने वालों में तथा उनसे द्वेष रखने वालों का पता लगाए और प्रजा के गुणों एवं दोषों का भी ज्ञान प्राप्त करें। इस प्रकार शुभ अशुभ बातों के विषय में गुप्तचरों द्वारा राजा ज्ञान प्राप्त कर ऐसे कार्य करे जो प्रजा तथा कर्मचारियों के लिए शुभदायक हों।

१—मत्स्य० २१४।६० [कलकत्ता, गुरु० प्र०]
अग्नि० २२०।१६-२०
२—मत्स्य० २१४।६१ [कलकत्ता, गुरु० प्र०]
अग्नि २२०।२१
३—मत्स्य० २१४।६२ [कलकत्ता, गुरु० प्र०]
अग्नि २२०।२२-२४
४—मत्स्य० २१४।८५-८६ [कलकत्ता, गुरु० प्र०]

चारु यादव वंश। वृष्णि-शाखा। रुक्मिणी और श्रीकृष्ण का पुत्र।

विष्णु० ५।२८।२

चारुगुप्त यादव वंश। वृष्णि-शाखा। श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र।

विष्णु० ५।२८।१

भाग० १०।६१।८

चारुचंद्र यादव वंश। वृष्णि-शाखा। श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र।

भाग० १०।६१।६८

चारुविन्द [चारु-विन्ध्य] यादव वंश। वृष्णि-शाखा। श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र। वायु में पाठ चारुविन्ध्य है।

विष्णु० ५।२८।२

वायु० ९६।२३८

चारुदेह यादव वंश। वृष्णिशाखा। श्रीकृष्ण तथा रुक्मिणी का पुत्र।

वायु० ५।२८।१

भाग० १०।६१।८

चारुदेष्ण यादव वंश। वृष्णि-शाखा। श्रीकृष्ण तथा रुक्मिणी का पुत्र।[1] शाल्व ने जिस समय द्वारका पर आक्रमण किया उस समय सुदेष्ण अन्य योद्धाओं के साथ द्वारका की रक्षा के लिए नियुक्त था।[2] श्रीकृष्ण द्वारा आयोजित अश्वमेध में चारुदेष्ण अश्वमेध के अश्व के साथ था।[3]

१—विष्णु० ५।२८।१, वायु० ९६।२३७, भाग० १०।६१।८, महाभा० ३।१२१।१९

२—भाग० १०।७६।१४

३—भाग० १०।८२।२२

चारुमती — यादव वंश । वृष्णि शाखा । कृष्ण और रुक्मिणी की पुत्री ।
विष्णु० ४।२८।२

चारुहास — यादव वंश । वृष्णि-शाखा । कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र ।
मत्स्य० ४७।१६
विष्णु० ४।२८।२

चित्रकेतु (१) — यादव वंश । वृष्णि-शाखा । कृष्ण और जाम्बवती का पुत्र ।
भाग० १०।६१।१२

चित्रकेतु (२) — ऐक्ष्वाकु वंश । लक्ष्मण का पुत्र ।
भाग० ६।११।१२

चित्रगु — यादव वंश । वृष्णि-शाखा । श्रीकृष्ण तथा नाग्नजिति का पुत्र ।
भाग० १०।६१।१३

चित्ररथ (१) — प्रियव्रत के वंश में गय और गयन्ती का पुत्र । सम्राट् का पिता ।
भाग० ५।१५।१४

चित्ररथ (२) — उक्त का पुत्र और कविरथ का पिता ।
भाग० ६।२२।४०

चित्ररथ (३)

चंद्र (पौरव) वंश। तितिक्षु द्वारा स्थापित पूर्वी आनव शाखा। अनु की १८ वीं तथा तितिक्षु की १० वीं पीढ़ी में धर्मरथ का पुत्र।

ब्रह्म० ६६।१०२
विष्णु० ४।१८।२

चित्ररथ (४)

परीक्षित के बाद सातवीं पीढ़ी में उष्ण का पुत्र। मत्स्य० के अनुसार चित्ररथ भूरिज्येष्ठ का पुत्र था। विष्णु० में वह शुचिरथ का पिता कहा गया है।

वायु० ६६।२७२
विष्णु० ४।२१।१२
मत्स्य० ५०।८

चित्ररथ (५)

यादव वंश का छठा राजा। क्रोष्टु के कुल में उत्पन्न रुषद्गु का पुत्र।

वायु० ६५।१७
विष्णु० ४।१२।१

चित्रसेन

ऐक्ष्वाकु वंश। नाभाग से विनिर्गत शाखा। नरिष्यन्त का पुत्र। दक्ष का पिता।

भाग० ६।२।१६ [वम्ब० सं० नि० सा०]

चित्राङ्गद

शान्तनु और सत्यवती का पुत्र। छोटी ही अवस्था में वह चित्राङ्गद नामक गन्धर्व से युद्ध करते करते मारा गया। अतः उसका कोई वंश नहीं चला।

विष्णु० ४।२०।१

चैत्ररथी

शशबिन्दु की पुत्री। मान्धाता की स्त्री। मान्धाता के चैत्ररथी से तीन पुत्र हुए—पुरुकुत्स, अम्बरीष तथा मुचुकुन्द।

वायु० ८८।७०-७२
ब्रह्माण्ड० ३।६३।७०

चेदि [चिदि] (१) कौशिक (कैशक, विष्णु०) का पुत्र। विदर्भ का पौत्र और ज्यामघ का प्रपौत्र। चेदि-वंश का प्रवर्तक। वायु० में पाठ चिदि है। चेदि (चिदि) के नाम से ही चैद्य नृप हुए—"कौशिकस्य चिदिपुत्रस्तस्माच्चैद्याः नृपा स्मृता'।"

विष्णु० ४।१२।१५
वायु० ६५।३८

चेदि (२) विष्णुधर्मोत्तरपुराण में चेदि नामक जनपद (राज्य) का उल्लेख है। प्राचीन चेदिराज्य आधुनिक बुन्देलखण्ड माना जाता है। इसकी पश्चिमी सीमा काली और सिन्धु तथा पूर्वी सीमा टौंस है। अधिकांश विद्वान् बुन्देलखण्ड को ही प्राचीन चेदि मानते हैं। फ्रूहरर के अनुसार डाहल-मण्डल ही चेदि था। कुछ लोगों के अनुसार चेदिराज्य बुन्देलखण्ड तथा जबलपुर के अन्तर्गत था और कालिञ्जर उसकी राजधानी थी। टाड के अनुसार शिशुपाल की राजधानी चन्देरी थी। चेदि-वंश के राजाओं का राज्य होने के कारण इस देश का नाम चेदि जनपद पड़ा। महाभारत में उपरिचरवसु के द्वारा चेदि-राज्य के जीतने का उल्लेख है। इसी से उसका नाम उपरिचरवसु चैद्य पड़ा। अद्रिका नाम की अप्सरा से उसके एक पुत्री हुई, जिसका नाम सत्यवती था जो व्यास द्वैपायन की माता और राजा शान्तनु की स्त्री हुई। उक्त अप्सरा से उत्पन्न पुत्र मत्स्य देश का राजा हुआ। उपरिचरवसु के और भी पुत्र थे—बृहद्रथ, प्रत्यग्रह और कुशाम्ब। इन लोगों ने पृथक् पृथक् राज्य स्थापित किया। चेदि का दूसरा प्रसिद्ध राजा शिशुपाल था। महाभारत के अनुसार वह दमघोष का पुत्र था। यद्यपि शिशुपाल की माता यादव वंश की थी तथापि वह यादवों का परम शत्रु था। उसने कंस तथा मगधराज जरासन्ध को यादवों के विरुद्ध सहायता दी। युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ के अवसर पर जब कृष्ण को नरेशों की सभा में विशिष्ट स्थान दिया गया तब शिशुपाल बहुत क्रुद्ध हुआ और कृष्ण तथा पाण्डवों को नष्ट करने की धमकी दी। कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का सिर काट लिया। शिशुपाल की मृत्यु के उपरान्त युधिष्ठिर ने उसके पुत्र धृष्टकेतु को चेदि-राज्य के सिंहासन पर बिठाया। धृष्टकेतु ने महाभारत के युद्ध में एक अक्षौहिणी सेना से

पाण्डवों की सहायता की थी। चेदि राज्य, मत्स्य तथा पञ्चाल के बीच घनिष्ट सम्पर्क था। चेदि-नरेश धृष्टकेतु चेदि तथा काशी की सेनाओं का सेनापति था। महाभारत के अन्य स्थलों पर मत्स्यों के साथ उसका उल्लेख है। ऐसा ज्ञात होता है कि पश्चिम की ओर उसके पड़ोसी मत्स्य तथा पूर्व की ओर काशी। चेदि-राज धृष्टकेतु की राजधानी शुक्तिमती थी। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह नगरी शुक्तिमती नदी के तट पर स्थित थी। इसकी पुष्टि महाभारत आदि पर्व से होती है, जिसमें कहा गया है कि शुक्तिमती नदी चेदि-नरेश उपरिचरवसु की राजधानी के निकट से होकर बहती है।

विष्णुध० १।६।३
महा० ६।५४।८।३
महा० आदि० अ० ६३

चैद्योपरिचर

चन्द्र (पौरव) वंश। मत्स्य० के अनुसार कृमि का पुत्र चैद्योपरिचर है। विष्णु में उपरिचरोवसु कृतक का पुत्र माना गया है। वायु० के अनुसार कृत का का पुत्र चैद्योपरिचर है, जो अत्यन्त पराक्रमी और इन्द्र के समान विख्यात हुआ। गिरिका से उसके सात पुत्र हुए जिनमें बृहद्रथ मगध का सम्राट् हुआ।

मत्स्य० ५०।२६-२७
वायु० ९९।२१९-२२०
विष्णु० ४।१९।१९

च्यवन (१)

चन्द्र (पौरव) वंश। पाञ्चाल शाखा। भाग० के अनुसार दिवोदास का पुत्र मित्रेयु, और मित्रेयु का पुत्र च्यवन[1] था। विष्णु०के अनुसार भी मित्रेयु का पुत्र च्यवन है।[2] वायु० में दिवोदास का उत्तराधिकारी मित्रयु है,और उसके पुत्र मैत्रेय के बाद च्यवन राजा का नाम आता है। किन्तु मैत्रेय और च्यवन का क्या सम्बन्ध था, यह वहाँ स्पष्ट नहीं है।[3] ब्रह्म पुराण तथा हरिवंश० में पञ्जवन

का स्थान मित्रेयु के बाद है। इन दोनों पुराणों के अनुसार पञ्चजन सृञ्जय का पुत्र था[४]। यह सृञ्जय सम्भवतः भद्राश्व के उन पाँच पुत्रों में से था, जिनके नाम से पन्चाल देश का नाम पड़ा।

१—भाग० ६।२२।१
२—विष्णु० ४।१६।१८
३—वायु० ६६।२०७
४—मत्स्य० अ० ११, हरिवंश० अ० ३२

च्यवन (२) चंद्र (पौरव) वंश। सुदास का पुत्र।

वायु० ६६। २१६
विष्णु० ४।१६।१६
मत्स्य० ५०।२४

जन्तु चंद्र (पौरव) वंश। उत्तर पान्चाल शाखा। सोमक का पुत्र।

वायु० ६६।२०८
विष्णु० ४।१६।१८ [बम्ब० सं० गो० ना०]

जनमेजय (१) चंद्र (पौरव) वंश। दक्षिण पान्चाल शाखा। उक्त वंश की २० वीं पीढ़ी में भल्लाट का पुत्र। यवीनर का पिता। मत्स्य० के अनुसार इस वंश के जनमेजय ने द्विमीढ कुलोत्पन्न उग्रायुध की सेवा की। सेवा के फलस्वरूप उसने जनमेजय को नीपों का राजा बनाने की प्रतिज्ञा की। किन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि नीपों ने जनमेजय को राजा स्वीकार नहीं किया और सम्भवतः इसी कारण उग्रायुध ने नीपों को युद्ध में पराजित कर उन्हें जनमेजय को राजा मानने लिए बाध्य किया। अथवा अन्य कोई कारण रहा हो। यह तो निश्चय है कि उसने नीपों का संहार करना चाहा। यही नहीं उसने उन्हें शाप भी दिया कि तुम सबको यम ले जावें। अन्त में यमलोक जाते हुए नीपों को देखकर उग्रायुध

दयार्द्र हो गया और उसने जनमेजय से कहा कि तुम यम से लड़कर इन सब की रक्षा करो। जनमेजय ने यम से युद्ध कर नीपों को बचाया। इसपर यम ने प्रसन्न होकर उसे मुक्ति-ज्ञान दिया।

मत्स्य० ४९।५९–६८
वायु० ९९।१८१–१८२

जनमेजय (२) सूर्य (मानव) वंश। नाभागनेदिष्ट शाखा। पीढ़ी क्रम संख्या ३२। राजर्षि सोमदत्त का पुत्र। भाग० के अनुसार सोमदत्त से सुमति और सुमति से जनमेजय का जन्म हुआ। किन्तु वायु० में जनमेजय सोमदत्त का पुत्र माना गया है।

वायु० ८६।२१
भाग० ९।२।३१

जनमेजय (३) चंद्र (पौरव) वंश। आनव शाखा। अनु की ९वीं पीढ़ी में पुरंजय का पुत्र।

विष्णु० ४।१८।१
वायु० ९९।१५ तथा २११
मत्स्य० ४८।१२–१३, ५०।३६

जनमेजय (४) परीक्षित और इरावती के चार पुत्रों में से एक। प्रसिद्ध विजेता। नागयज्ञ का कर्ता।

विष्णु० ४।२०।१
वही ४।२१।१
भाग० १।१६।२

जनमेजय (५) पौरव वंश का छठा राजा। पुरु का पुत्र।

विष्णु० ४।१९।१
वायु० ९९।२०

जह्नु

चंद्र (पौरव) वंश। कान्यकुब्ज शाखा। अमावसु की ५वीं पीढ़ी में सुहोत्र का पुत्र। एक समय जह्नु 'सर्वमेध' नाम का महान् यज्ञ कर रहे थे, उस समय गंगा ने उनकी यज्ञभूमि को जल से प्लावित कर दिया। जह्नु ने क्रुद्ध होकर गंगा को पी डाला। बाद में देवताओं के प्रार्थना करने पर जह्नु ने गंगा को उदीर्ण कर दिया। इसीलिए गंगा जाह्नवी कहलाती है।

विष्णु० ४।७।२
वायु० ६१।५३।५७
हरि० वं० २७।४।८

जय

निमिवंश। पीढ़ी क्रम संख्या ४६। सुश्रुत का पुत्र। भाग० के अनुसार श्रुत का पुत्र।

विष्णु० ४।५।१२
भाग० ६।१४।२४

जयसेन

पौरव वंश का ३७ वां राजा। सार्वभौम का पुत्र।

विष्णु० ४।२०।३

जयद्रथ (१)

चंद्र (पौरव) वंश। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित पूर्वी आनव शाखा। राजेन्द्र बृहन्मना का पुत्र। मत्स्य० के अनुसार बृहद्भानु का पुत्र।

विष्णु० ४।१८।५
वायु० ६६।१११
मत्स्य० ४८।१०१

जयद्रथ (२)

बृहत्काय का पुत्र। विशद का पिता।

भाग० ६।२१।२२—२३ [बम्ब० संस्क० नि० सा०]

जयद्रथ (३)

सिन्धु-सौवीर का राजा। जरासन्ध का मित्र। कौरव और पाण्डवों के युद्ध में कौरवों की ओर से उसने युद्ध में भाग लिया था।

भाग० १०।५२।११ (६),
विष्णु० ५।३८।१६

जयद्रथ (४)

बृहदिषु का पुत्र।

मत्स्य० ४६।४६

जयध्वज

हैहयवंश। पीढ़ी क्रम संख्या ११। कार्तवीर्य अर्जुन का पुत्र। कार्तवीर्य अर्जुन न केवल पराक्रमी राजा था, अपितु यज्ञ, दान, तप, योग-शास्त्र आदि के ज्ञान में भी वह अद्वितीय था। जयध्वज के पुत्र का नाम तालजङ्घ था।

विष्णु० ४।११।३-५ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
भाग० ६।२३।२४-२८ [बम्ब० नि० ना० सा०]
मत्स्य० ४३।४६

जरासन्ध

चन्द्र (पौरव) वंश। बृहद्रथ से प्रवर्तित मगध-शाखा। विष्णु० तथा भाग० के अनुसार जरासन्ध, बृहद्रथ की दूसरी स्त्री से उत्पन्न पुत्र था। भाग० के अनुसार उपरिचर का पुत्र बृहद्रथ था। हरिवंश० के अनुसार जरासन्ध सम्भव का पुत्र था। वायु० में जरासन्ध नभस का पुत्र माना गया है। जरासन्ध के जन्म की कथा बड़ा रोचक है। बृहद्रथ की दूसरी स्त्री के गर्भ से दो शकल उत्पन्न हुए, जिनको उनकी माता (बृहद्रथ की स्त्री) ने बाहर फेंक दिया। किन्तु जरा नाम की एक यक्षी ने उन दोनों शकलों को "जिओ, जिओ" कहते हुए जोड़ दिया। अतः उसका नाम जरासन्ध पड़ा। जरासन्ध बहुत बलवान् राजा था। उसने तत्कालीन सभी प्रमुख क्षत्रिय राजाओं को हराया और एकच्छत्रराज्य स्थापित करने का विचार किया। वह मगध का सम्राट् था। उसके पुत्र का नाम सहदेव था। उसकी दो पुत्रियाँ "अस्ति" और "प्राप्ति" कंस (को) ब्याही गयीं। कृष्ण द्वारा कंस की मृत्यु का समाचार सुन जरासन्ध ने समस्त यादवों के संहार

करने का निश्चय किया और २३ अक्षौहिणी सेना के साथ मथुरा पर आक्रमण किया, किन्तु वह श्रीकृष्ण द्वारा पराजित हुआ। तीसरी बार बाण की सहायता से फिर उसने मथुरा पर आक्रमण किया, किन्तु वह फिर पराजित हुआ। इस प्रकार सत्रह बार उसने मथुरा पर आक्रमण किया और सत्रहों बार उसकी पराजय हुई। जरासन्ध अविजित था और हजारों को जीतकर उसने कैद कर रखा था। कृष्ण, भीम और अर्जुन ब्राह्मण के वेष में उसके पास गये और उन्होंने भोजन के लिए उससे प्रार्थना की। जरासन्ध ने उनको क्षत्रिय समझा और अपना सिर देने के लिए उद्यत हो गया। इस पर तीनों ने अपना वास्तविक रूप प्रकट कर दिया और उसे युद्ध के लिए ललकारा। वह कृष्ण और अर्जुन के साथ लड़ने को को तैयार नहीं हुआ, किन्तु भीम के साथ लड़ने के लिए वह राजी हो गया। २७ दिन तक द्वन्द्व-युद्ध होता रहा और जब भीम कुछ निराश सा होने लगा तो श्रीकृष्ण ने एक वृक्ष-शाखा के दो टुकड़े करते हुए उसकी ओर संकेत किया। भीम भगवान् का अभिप्राय समझ गये और उसका एक पैर अपने पैर के नीचे दबाया और दूसरे पैर को पकड़ कर उसे चीर डाला।

विष्णु० ५।१६।१६ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
भाग० ६।२२।७—८
वही १०।५० अ०
वही १०।७२ १५–४९
हरिवंश० ९२।६६–६७
वायु० ६६।२२५–२२६

जीमूत

ज्यामघ की ६वीं पीढ़ी में व्योमन् का पुत्र।

विष्णु० ५।१२।१६
वायु० ६४।४०
हरिवंश० ९६।२४

ज्यामघ

चन्द्र-वंश। क्रोष्टु से विनिर्गत यदुवंश की एक शाखा। वायु० के अनुसार रुक्म-कवच का तीसरा पुत्र। विष्णु० के अनुसार परावृत् का पुत्र। ज्यामघ का भाई रुक्मेषु राज्य गद्दी पर बैठा। संभवतः ज्यामघ से अपने भाइयों में

नहीं बनी। क्योंकि वायु० और हरिवंश० से ज्ञात होता है कि ज्यामघ को उन्होंने वनवास दे दिया। वह आश्रम बनाकर शान्त-भाव से वन में जीवन व्यतीत करने लगा। बाद में ब्राह्मणों द्वारा उत्साहित होकर वह रथ पर सवार होकर ध्वजा फहराते हुए मध्य देश की ओर गया। तदनन्तर वह नर्मदा के किनारे-किनारे अनूप में विचरण करता हुआ मृत्तिकावती नगरी और ऋक्षवान् पर्वत को जीत कर शुक्तिमती में रहने लगा। उसकी स्त्री का नाम शैब्या (चैत्रा, वायु०, चैब्या, विष्णु०) था। सन्तान के न होने पर भी ज्यामघ ने दूसरा विवाह नहीं किया। ज्यामघ को एक युद्ध में विजय प्राप्त होने के अनन्तर एक कन्या मिली, जिसे उसने 'स्नुषा' कहकर स्वीकार किया। इसके उपरान्त अधिक वय होने पर शैब्या से पुत्र हुआ। पिता ने उसका नाम विदर्भ रखा और उसका विवाह उस कन्या से किया जिसे उसने शैब्या के डर से स्नुषा कहकर ग्रहण किया था। स्नुषा और विदर्भ के ३ पुत्र हुए—क्रथ, कौशिक और लोमपाद।

विष्णु० ४।१२।२ [अन्य० संस्क० गी० प्रा०]
वायु० ९५।२८-३६
हरिवंश० १३६।१३-१८

तंसु

चन्द्र-वंश। पौरव शाखा। रन्तिनार (विष्णु०) का पुत्र। भाग० में पाठ रन्तिभार है किन्तु उसके पुत्रों में तंसु अथवा ग्रंसु का नाम नहीं है। वायु० के अनुसार रन्तिनार शब्द है जो अशुद्ध प्रतीत होता है।

वायु० ९९।१२९
भाग० ९।२०।६
विष्णु० ४।१९।२
महा० आदि पर्व, अ० ९४।११

तक्ष

ऐक्ष्वाकु वंश। भरत का पुत्र। गन्धार देश में उस ने तक्षशिला नगरी बसाई।

विष्णु० ४।४।८७
वायु० ८८।१८९
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१९०
भाग० ९।११।१२

तालजंघ

हैहय वंश। पीढ़ी क्रम संख्या १२। जयध्वज का पुत्र। उसके (तालजङ्घ के) एक सौ पुत्र थे, जो तालजङ्घ कहलाये। विष्णु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार उनमें ज्येष्ठ वीतिहोत्र था। उनके पाँच मुख्य गण थे.—वीतिहोत्र (वीरहोत्र, वायु०) भोज, आवन्त्य, (आवर्तेय, वायु०, आवन्तय, ब्रह्माण्ड०) तुण्डिकेर (शुण्डिकेर, मत्स्य०) और तालजङ्घ[1]। तालजङ्घ ने परशुराम के भय से वीतिहोत्र तथा अन्य हैहय राजाओं के साथ हिमालय के वन की शरण ली। क्रोध शान्त होने पर परशुराम तप करने लगे और उन्होंने सब प्राणियों को अभय दान दे दिया। तदनन्तर तालजङ्घ पुन लौट आया और राज्य करने लगा[2]। हैहयों और तालजङ्घों की ऐक्ष्वाकु राजाओं से पुरानी शत्रुता थी। अवसर पाकर तालजङ्घ ने फल्गुतन्त्र की राजधानी अयोध्या पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में बाहु पराजित हुआ और प्राणरक्षा के लिए स्त्रीसहित उसने वन में प्रवेश किया। और्व के आश्रम में बाहु की मृत्यु हो गयी। कुछ समय उपरान्त उसकी पत्नी यादवी से सगर का जन्म हुआ। सगर बड़ा हुआ और उसने अयोध्या पर पुनः अधिकार कर लिया। पूर्व वैर का बदला लेने की इच्छा से उसने हैहयों पर आक्रमण किया। इस युद्ध में हैहय पराजित हुए और सगर ने हैहयों की नगरी को जला डाला[3]।

१—विष्णु० ४।११।५ [बम्ब० ई०क० गो० ना०]
वायु० ६४।५०।५२
मात्स्य० ४३।४७-४६
ब्रह्माण्ड० ३।६६।५१-५३
भाग० ६।२३।२८
ब्रह्म० १२।१०२-४
२—ब्रह्माण्ड० ३।४७ ७२
३—वही ३।४८।१३-१५
विष्णु० ४।३।१८
वायु० ८८।१३५
भाग० ६।८।५

तिग्म

पुरु-वंश। कुरु-शाखा। परीक्षित की २० वीं पीढ़ी में शुचि का पुत्र।
विष्णु० ४।२१।२

तितिक्षु

चंद्र (पौरव) वंश। आनव शाखा। अनु की ६वीं पीढ़ी में महामना का पुत्र। उशद्रथ का पिता। तितिक्षु ने अपना राज्य पूर्व में स्थापित किया।

विष्णु० ४।१८।१
वायु० ६६।१८
ब्रह्माण्ड० ३ ७४।१७ तथा २४
भाग० ६।२३।२
मत्स्य० ४८।१५।२२

तुम्बुरुसखा

यादव वंश। अन्धक-शाखा। विलोमन (रेवत, वायु०) का पुत्र। उसका चन्दनोदक-दुन्दुभि दूसरा नाम था।

विष्णु० ४।१४।४
वायु० ६६।११६–११७
ब्रह्माण्ड० ३।७१।११८

तुर्वसु

ंश। ययाति और देवयानी का पुत्र[1]। देवयानी के पिता शुक्र के शाप से जब ययाति अकाल में ही वृद्ध हो गया तो उसने अपने पुत्रों से इस प्रकार कहा—"तुम मेरी जरा ग्रहण करो और अपनी आयु मुझे दो।" यदु आदि अन्य पुत्रों तथा तुर्वसु ने इसे स्वीकार नहीं किया। इसपर ययाति ने उन्हें शाप दिया कि तुम्हारी प्रजा का नाश हो और तुम म्लेच्छों के राजा बनो। पुरु ने उसे अपना यौवन देना स्वीकार किया[2]। ययाति ने यौवन के समस्त वाञ्छित सुखों को भोग कर पुरु को उसकी आयु लौटा दी। अन्त में ययाति ने पुरु को राजपद पर अभिषिक्त किया। अन्य पुत्रों को भी उसने उत्तर, पश्चिम तथा दक्षिण का राजा बनाया। तुर्वसु को उसने पश्चिम का राजा बनाया। वायु० तथा विष्णु० के अनुसार उसे दक्षिण-पूर्व का राजा बनाया[3]। म्लेच्छ और यवन तुर्वसु की संतति माने जाते हैं। तुर्वसु के पुत्र का नाम वह्नि था। मरुत्त के समय यह वंश पौरव वंश में मिल गया। मरुत्त के कोई सन्तति नहीं थी। अतः उसने पौरव वंश के राजा दुष्मन्त (दुष्यन्त, वायु० दुष्मन्त, विष्णु०) को अपना पुत्र बनाया[4]।

१—विष्णु० ४।१०।२
वायु० ९३।१६
मत्स्य० २४।८३
भाग० ९।१८।३३

२—वायु० ९३।४२-४४
विष्णु० ४।१०।६
मत्स्य० २४।६३
वही ३३।१२-१४
भाग० ९।१८।४१
मत्स्य० ३३।२९-३०

३—वायु० ९३।८९
विष्णु० ४।२०।१७
मत्स्य० ३४।३०
भाग० ९।२२।१६
विष्णु० ४।१९।२

४—वायु० ९९।२
विष्णु० ४।१९।२
भाग० ९।२३।१७-१८

तुषार [तुरुष्क] आन्ध्रों के पश्चात् आने वाले आभीर, गर्दभिल, शक, यवन आदि राजाओं तथा तुषारवंश के राजाओं के १४ साथ इनका उल्लेख है। इनकी राज्यावधि ५०० वर्ष मानी गयी है। मत्स्य० में सात हजार वर्ष अवधि है। भाग० में पाठ तुरुष्क है।

वायु० ९९।३६०।६२
मत्स्य० २७३।१९ तथा २१
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१७२-१७६
भाग० १२।१।३०

तृणबिन्दु सूर्य (मानव) वंश। नाभागनेदिष्ट कुल। क्रम संख्या २३। बुध (वायु, भाग०) का पुत्र। भाग० के अनुसार अलम्बुषा नामक अप्सरा से तृणबिन्दु के कई पुत्र तथा एक इडविडा नाम की कन्या हुई, जिसके गर्भ से विश्रवा का

पुन घनद हुआ। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० में अलम्बुषा का नाम नहीं है। वायु० तथा विष्णु० में कन्या का नाम क्रमशः द्रविडा तथा इलविला है। ब्रह्माण्ड० और वायु० में तृणविन्दु की उक्त कन्या विश्रवस् (विश्रवा) की माता कही गयी है। विष्णु० के अनुसार तृणविन्दु का अलम्बुषा से एक विशाल नामक पुत्र हुआ, जिसने वैशाली पुरी का निर्माण किया।

विष्णु० ४।१।२० [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
वायु० ८६।१५-१६ भाग० ९।२।३०-३२
ब्रह्माण्ड० ३।८।३१०

तेजस [तैजस] स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में सुमति का पुत्र और भरत का पौत्र। वायु० में पाठ तैजस है।

विष्णु० २।१।३६
वायु० ३३।५४

त्रय्यारुण वैवस्वत मनु वंश। निघ्नन् का पुत्र। सत्यव्रत (त्रिशंकु) का पिता।

विष्णु० ४।३।१३ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
वायु० ८८।७७
मत्स्य० १२।३७
ब्रह्माण्ड० ३।६३।७६
ब्रह्म० ५।६७

त्रसदश्व [पृषदश्व] ऐक्ष्वाकु वंश। पीढ़ी क्रमसंख्या २४। अनरण्य का पुत्र। हर्यश्व का पिता। विष्णु० में पाठ पृषदश्व है।

विष्णु० ४।३।१३ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
वायु० ८८।७६

त्रसदस्यु ऐक्ष्वाकु वंश। पीढ़ी क्रम संख्या २४। पुरुकुत्स का नर्मदा से उत्पन्न पुत्र।

वायु० ८८।७४
विष्णु ४।३।१२
भाग० ९।७।४

त्रिककुत्

चन्द्र-वंश। अनेनस का प्रपौत्र। शुचि का पुत्र। त्रिककुत् के पुत्र का नाम शान्तरय था।

भाग० ९।१७।११-१२

त्रिधन्वन्

ऐक्ष्वाकु वंश। पीढ़ी क्रम संख्या २७। वसुमत का पुत्र। विष्णु० में वह वसुमना का पुत्र माना गया है।

वायु० ८८।७७

विष्णु० ४।३।१३ [बम्ब० सर० गो० ना०]

ब्रह्माण्ड० ३।६३।७६

त्रिदेव

चन्द्र-वंश। पौरव शाखा। नर का पौत्र। दौष्यन्ति भरत की पांचवीं पीढ़ी में सङ्कृति (सांकृति, वायु०) के पुत्रों में से एक।

वायु० ९९।१६०

भाग० ९।२१।२

विष्णु० ४।१९।८

त्रिनेत्र

चन्द्र (पौरव) वंश। बार्हद्रथ शाखा। मत्स्य० में निर्वृति के बाद त्रिनेत्र का उल्लेख है किन्तु त्रिनेत्र किसका पुत्र था, स्पष्ट नहीं है। राज्यावधि २८ वर्ष। वायु० में नृपति के बाद सुव्रत आता है।

मत्स्य० २७१।२७

वायु० ९९।२०४

त्रिशङ्कु

ऐक्ष्वाकु वंश। त्र्य्यारुण का पुत्र। उसका मुख्य नाम सत्यव्रत था। उसने विदर्भ-राज की स्त्री का बलात् अपहरण किया। उसके इस अधार्मिक कृत्य के कारण पिता ने सत्यव्रत को "अपध्वंस" कहकर त्याग दिया और वन में चाण्डालों (श्वपाकों) के साथ रहने का आदेश दिया। कुल-गुरु वशिष्ठ ने भी उसको ग्रहण नहीं किया। सत्यव्रत के अधर्म के कारण उस राज्य में बारह वर्ष तक

अनावृष्टि और और अकाल रहा। विश्वामित्र अपने परिवार को वन में छोड़कर सागरानूप में तप करने लगे। सत्यव्रत ने इस अकाल में विश्वामित्र के परिवार का भरण-पोषण किया। विश्वामित्र की स्त्री ने शेष पुत्रों को पालने के लिए अपने मझले पुत्र को १०० गायों के बदले बेच दिया किन्तु सत्यव्रत ने उसे छुड़ा लिया। वन्य पशुओं को मार कर सत्यव्रत विश्वामित्र के परिवार का पालन-पोषण विनय और भक्ति के साथ करता रहा। वशिष्ठ ने सत्यव्रत को पुनः राज्य में ग्रहण करने के लिए कोई भी प्रयत्न नहीं किया। इससे सत्यव्रत वशिष्ठ के प्रति क्रुद्ध हो गया। संयोगवश एक दिन मांस के अभाव में सत्यव्रत ने वशिष्ठ की कामधेनु को मार डाला और उसका मांस स्वयं खाया तथा विश्वामित्र के पुत्रों को खिलाया। गुरु वशिष्ठ ने क्रुद्ध होकर उसे शाप दिया कि तीन पाप करने के कारण तुम्हारे तीन शङ्कु होंगे। वे तीन पाप इस प्रकार हैं—(१) अपने व्यवहार से पिता को असंतुष्ट करना, (२) गुरु की गाय का वध तथा (३) बिना प्रोक्षण किये हुए मांस का भक्षण। वशिष्ठ के शाप के कारण उसके तीन शङ्कु हुए। इसीलिए उसका नाम त्रिशङ्कु पड़ा। विश्वामित्र जब तप पूर्ण कर लौटे तब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि त्रिशङ्कु ने हमारी स्त्री और पुत्रों का इस आपत्ति में भरण-पोषण किया है। इससे त्रिशङ्कु पर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए। बारह वर्ष के उपरान्त त्रिशङ्कु राज्यपद पर अभिषिक्त हुआ और विश्वामित्र ने उसका गुरु होना स्वीकार किया। उन्होंने त्रिशङ्कु के लिए विन्ध्य के समीप नदी के किनारे यज्ञ किया। यज्ञ के उपरान्त त्रिशङ्कु ने उस नदी में अवभृथ-स्नान किया और वशिष्ठ के देखते देखते सशरीर वह स्वर्ग पहुँच गया। देवताओं ने उसे वशिष्ठ के कहने से उलटे शिर नीचे गिरा दिया, किन्तु विश्वामित्र ने अपने तपोबल से उसे स्वर्ग से नीचे गिरने से रोक लिया। वह आकाश में लटकता रहा। त्रिशङ्कु का कैकयवंशज सत्यरता नामक भार्या से हरिश्चन्द्र नामक पुत्र पैदा हुआ जो त्रैशङ्कु नाम से विख्यात हुआ।

वायु० ८८।७८–११४
विष्णु० ४।३।१३–१४
ब्रह्माण्ड० ३।६३।७७–११४
ब्रह्म० १४।२७—१०६

भाग० ६।७।५—७
वायु० ८८।११७—११८
ब्रह्माण्ड० ३।६३।११५
ब्रह्म० ६।२४
विष्णु० ४।२।१५
भाग० ६।७।७

त्वष्टा

स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में यौवन का पुत्र। विष्णु० के अनुसार मनस्यु का पुत्र और विरज का पिता। वायु० के अनुसार अरिज का पिता।

वायु० ३३।५५
विष्णु० २।१।४० [बम्ब० संस्क० गो० ना०]

दक्षिणापथ

दक्षिण भारत का नाम। विन्ध्य के दूसरी ओर का एक भूभाग, जिसमें नर्मदा का देश भी सम्मिलित है। इस भूभाग में इक्ष्वाकु के ४८ पुत्रों ने राज्य किया[1]। वायु० के अनुसार २० पुत्रों ने तथा भाग० के अनुसार सुद्युम्न के तीन पुत्रों ने दक्षिणापथ में राज्य किया[2]।

१—वायु० ८८।११
विष्णु० ४।२।३
२—भाग० ६।१।४१

दण्ड

कूटनीति के अन्तर्गत इस उपाय का चौथा स्थान है। जब शत्रु तथा अन्य मण्डलान्तर्गत राजा साम, भेद, और दान से वश में न आवें तब दण्ड-नीति का प्रयोग करना चाहिए। यह दण्ड दो प्रकार का कहा गया है—प्रकाश और अप्रकाश। प्रकाश दण्ड के अन्तर्गत गांवों को लूटना तथा नष्ट करना, शत्रु के राज्य की फसल को जला डालना, विष देकर अथवा अग्नि में जला कर शत्रुओं का वध करना, स्वच्छ जल वाले कुओं को दूषित करना आदि बातें आती हैं। पुराणों के अनुसार राजा को चाहिए कि वह अपने अथवा शत्रु के देश के ऐसे व्यक्तियों को जो धर्मज्ञ हैं, वान-प्रस्थी हैं, और निरीह हैं—अर्थात् जिनका संसार से किसी प्रकार का संसर्ग नहीं है, कोई कष्ट न पहुँचने दे। जो दण्ड देने योग्य नहीं है, उन्हें दण्ड देने

से राजा पाप का भागी होता है। इसका फल इस लोक में राजा को भोगना पड़ता है और मृत्यु के बाद उसे नरक प्राप्त होता है। अतः राजा को चाहिए कि वह धर्मशास्त्र के अनुसार दण्ड दे। दण्ड का स्वरूप कृष्ण वर्ण और लाल आंखों वाला माना गया है। जहाँ शासक निर्भय रूप से दण्ड न्यायपूर्वक करता है, वहाँ प्रजा कर्तव्यच्युत नहीं होती। (प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति) यदि दण्ड का संचालन उचितरूप से न किया गया तो बालक, वृद्ध, ब्राह्मण, स्त्री विधवा आदि प्राणी, पीड़ित रहते हैं। यदि दण्ड की व्यवस्था न होती तो देवता, दैत्य, उरग, शत्रु, पक्षी अपनी मर्यादा का उल्लंघन कर बैठते। यह दण्ड, सब प्रकार के प्रहारों पराक्रम, कोप और व्यवसायों में उपस्थित रहता है। देवता भी उन्हीं को पूजते हैं जो दण्ड देते हैं। सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा, पूषा और अर्यमा की कोई भी पूजा नहीं करता। रुद्र, अग्नि, इन्द्र, सूर्य और चन्द्रमा आदि देवता दण्ड देने वाले हैं, इसलिए उनकी सब पूजा करते हैं। दण्ड-प्रणयन से ही प्रजा का शासन व्यवस्थित और रक्षित रहता है—"दण्डःसुप्तेषु जागर्ति दण्ड धर्मं विदुः बुधाः"। दण्ड प्राणियों के सो जाने पर भी जागता रहता है। विद्वान् लोग दण्ड को ही धर्म कहते हैं। राजदण्ड के भय से मनुष्य पाप नहीं करते। कुछ लोग यम-दण्ड के तथा दूसरे के भय से पाप का आचरण नहीं करते। इस प्रकार इस संसार में सब कुछ दण्ड पर ही आश्रित है—"एवं सांसिद्धिके लोके सर्वं दण्डे प्रतिष्ठितम्"। मनुष्य अनर्थ के अन्धकार में डूब जायँ यदि दण्ड न हो। दण्ड दुर्मद लोगों का दमन करता है—उन्हें दण्ड देता है, इसी लिए उसे दण्ड कहा जाता है—"दमनात् दण्डनाच्चैव तस्माद्दण्डं विदुर्बुधाः"। दण्ड के भय से ही देवताओं ने यज्ञ में शिव का भाग रखा और कुमार को सेनापति बनाया। ब्रह्मा ने दंड-संचालन के लिए ही सब देवताओं का अंश लेकर राजा को उत्पन्न किया जिससे सब प्राणियों की रक्षा हो सके।

"दण्डप्रणयनार्थं राजा सृष्टः स्वयंभुवा।
देवभागानुपादाय सर्वभूताभिगुप्तये" ॥

ब्रह्माण्ड० २।७।१६१

मत्स्य० १२२।४४

वही० १४५।६६ तथा ७१

दण्डश्रीः शातकर्णि [दण्डश्रीः शातकर्णि] शिमुक द्वारा प्रवर्तित आन्ध्रवंश। यज्ञश्री. शातकर्णी का पुत्र। राज्यावधि ३ वर्ष[1]। ब्रह्माण्ड० में पाठ दण्डश्रीः शातकर्णी है[2]।

१—वायु० ६६।३५६
२—ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६६

दधिवाहन चन्द्र (पौरव) वंश। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित पूर्वी आनव शाखा। अनु की १५ वीं पीढ़ी तथा तितिक्षु की ७वीं पीढ़ी में। अङ्ग का पुत्र। विष्णु० के अनुसार अंग के पुत्र का नाम पार था।

वायु० ६६।१००
मत्स्य० ४८।८८

दन्तवक्र [दन्तवक्त्र] वृद्धशर्मन् और श्रुतदेवा से उत्पन्न पुत्र। दन्तवक्र और शिशुपाल पूर्व जन्म में विष्णु के पार्षद थे, किन्तु शापवश उन्हें अनेक असुर योनियों में जन्म लेना पड़ा[1]। विभिन्न अवतारों के रूप में विष्णु के द्वारा उनकी मृत्यु हुई। हिरण्यकश्यपु और हिरण्याक्ष की नरसिंह के हाथों, रावण और कुम्भकर्ण की राम के हाथों और दन्तवक्र तथा शिशुपाल की कृष्ण के हाथों मृत्यु हुई। दन्तवक्र यादवों का, विशेष रूप से श्रीकृष्ण का शत्रु था। मथुरा के घेरे में उसने जरासन्ध की ओर से भाग लिया था और वह नगर के पूर्वी द्वार पर नियुक्त था[2]। शिशुपाल के मित्र शाल्व ने यादवों के संहार के लिए कुण्डिन नगर में श्रीकृष्ण के विरोधी राजाओं की एक सभा बुलायी। उन विरोधी राजाओं में दन्तवक्र भी था[3]। द्वारका के घेरे में वह शाल्व की ओर से लड़ा था[4]। अपने मित्रों की मृत्यु के पश्चात् दन्तवक्र ने कृष्ण पर अचानक आक्रमण किया और उनके सिर पर गदा से प्रहार किया। श्रीकृष्ण ने भी अपनी कौमोदकी गदा से दन्तवक्र पर प्रहार किया। गदा के प्रहार होते ही दन्तवक्र के मुख से रक्त का वमन होने लगा और वह धरती पर गिर पड़ा। थोड़े ही देर में उसके प्राण छूट गये। इस प्रकार श्रीकृष्ण के हाथों उसकी मृत्यु हुई[5]।

१—विष्णु ४ । १४ । ११
भाग० ६।२४।३७
ब्रह्माण्ड० ३ । ७१ । १५६
वायु० ९६ । १५५
२—भाग० ७।१।३२-४६
वही० ६।१०।३८
वही० ६ । २४।३७
ब्रह्माण्ड० ४।२६।१२२
वही० ३।७१।१५६
३—भाग० १०।५०।११
वही० १०।५२।११
विष्णु० ५ । २६ । ७
४—भाग० १० । ७६ । २१
५—भाग० १०।७।३७
वही० १०।७८।१-१३

दमघोष

चेदिवंश का राजा। वृष्णि-वंश के राजा शूर की पुत्री श्रुतश्रवा से उसका शिशुपाल नामक पुत्र उत्पन्न हुआ[१]। अपने पुत्र शिशुपाल के विवाह के लिए वह कुण्डिनपुर गया। वहाँ विदर्भ-राज ने उसका उचित सत्कार किया[२]। वह यादवों का सम्बन्धी होते हुए भी जरासन्ध की ओर से यादवों के विरुद्ध लड़ा था[३]। सम्भवतः वह मगधराज के आश्रित था।

१—विष्णु० ४।१४।११
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५८
भाग० ९। २४। ३८
२—भाग० १०।५३।१४-१६
३—भाग० १०।५२।११-१८

दमन

वृष्णि-वंश। वसुदेव और रोहिणी का पुत्र।
मत्स्य० ४६ । १२
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१६५

दम्भ

चन्द्र-वंश। पुरु-शाखा। आयु का पुत्र। विष्णु०, वायु० तथा भाग० में पाठ रम्भ है। देखिए रम्भा।

मत्स्य० २४।३४-३५

दरिद्योत

यादव वंश। अन्धकशाखा। दुन्दुभि का पुत्र। पुनर्वसु का पिता।

भाग० ६।२४।२०

दरिद्रान्तक

यादव वंश। वृष्णि-शाखा। बलराम का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१६७

दर्शक [दर्भक, वंशक]

शिशुनाग-वंश। पीढी क्रमसंख्या ७। वायु० में अजातशत्रु के बाद निन्दिसार (बिम्बिसार) और उसके बाद दर्शक का नाम आता है। ब्रह्माण्ड में अजातशत्रु के बाद दर्भक का नाम है। इसी प्रकार मत्स्य० में अजातशत्रु के बाद वंशक का नाम आता है। राज्यावधि ३५ वर्ष। मत्स्य० में पाठ वंशक है। किन्तु दर्शक पाठ ही अधिक संगत जान पड़ता है।

वायु० ९९।३१८
विष्णु० ४।२४।३
मत्स्य० २७२।९
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१३१
भाग० १२।१।६

दल

ऐक्ष्वाकु वंश का राजा। पारिपात्र (पारियात्र, ब्रह्माण्ड०) का पुत्र।

वायु० ८८।२०४
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२०४

दशरथ

ऐक्ष्वाकु वंश। अज और इन्दुमती का पुत्र। दशरथ के चार पुत्र थे—राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न। ये चारों विष्णु के अंश माने जाते हैं[1]। दशरथ पूर्वीय आनव वंश के राजा रोमपाद के समकालीन माने जाते हैं। उन्होंने अपनी पुत्री शान्ता अपने मित्र रोमपाद को पुत्री के रूप में दी थी[2]।

१—विष्णु० ४।४।४०
वायु० ८८।१८३–१८४
भाग० ६।१०।१–२
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१०४
मत्स्य० १२।४६
ब्रह्माण्ड० ३।८७
२—विष्णु० ४।१८
भाग० ६।२३।७
मत्स्य० ४८।८४–८५
ब्रह्म० १३।४०

दशरथ (२)

ज्यामघ की १२ वीं पीढी में नवरथ का पुत्र।
विष्णु० ४।१२।१६
हरिवंश० ३६।२६।
वायु० ६५।४२

दशरथ (३)

मौर्य वंश। पीढी क्रमसंख्या ५। सुयश का पुत्र तथा अशोक का पौत्र।
विष्णु० ४।२४।८

दशग्रामाधिपति

ग्राम के बाद दूसरा शासन विभाग दशग्राम का होता था। कौटिल्य ने इसे संग्रहण के नाम से कहा है। यह एक मुख्य राजकर्मचारी के हाथ में रहता था, जिसे पुराणों में दशग्रामाधिपति कहा गया है। इन दशग्रामों का शासन दशपाल के हाथ में था।[1] यदि कोई ऐसी परिस्थिति आ जाय जिसमें

दशपात शान्ति-व्यवस्था करने में असमर्थ हो तो उसके लिए आदेश था कि वह शतग्रामाधिपति को सूचित करे, तथा शासन और शान्ति की उचित व्यवस्था करे[२]।

१—अग्नि० २२३।१
२—वही० २२३।४

दशार्ण

एक जाति तथा एक जनपद का नाम। ब्रह्माण्ड० तथा वायु० में किष्किन्धकों के साथ दशार्णों का उल्लेख है। वायु० में इन्हें 'विन्ध्यवासिनः' कहा गया है[१]। श्रीकृष्ण के साथ युद्ध के समय दशार्णों की सेना जरासन्ध के साथ थी[२]। दशार्ण के राजा हिरण्यवर्मन् का उल्लेख उद्योगपर्व में है[३]। विल्सन् महोदय का मत है कि दशार्ण नामक जनपद आधुनिक छत्तीस गढ़ का एक भाग था[४]। किन्तु यह ठीक नहीं जान पड़ता।

१—ब्रह्माण्ड० २।१६।६४
वायु० ४५।१३२
२—भाग० १०।५०।३
३—महा० ५।१६०।७४१८
१९३।७४९३।७८०६
तथा० ७५१८
४—विल्सन विष्णु० भाग २ पृ० १६० ३

दशार्णा

एक नदी का नाम[१]।

१—ब्रह्माण्ड० २।१६।३०

दशार्ह

यादव दशार्ह। ज्यामघ की ७ वीं पीढ़ी में निर्वृति का पुत्र। मत्स्य० में निर्वृति

का पुत्र विदूरथ और विदूरथ का पुत्र दशार्ह है। वह व्योमन् (व्योम, मत्स्य०) का पिता माना गया है। ब्रह्माण्ड० के अनुसार दशार्ह अत्यन्त बलवान् राजा था।

विष्णु० ४।१२।१६
भाग० ६।२४।३
वही० १०।२६।३३
मत्स्य० ४४।४०
ब्रह्माण्ड० ३।७०।४१
वायु० ६५।४०

दान

कूटनीति के अन्तर्गत तीसरा उपाय दान है। प्रायः साम के साथ साथ दान नीति का प्रयोग भी होता रहता है। मत्स्यपुराण के अनुसार दान सब उपायों में श्रेष्ठ है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो दान से वश में न की जा सके। दान का प्रयोग करने वाला राजा शीघ्र ही शत्रुओं को जीत लेता है। दान की नीति से शत्रुओं में फूट भी डाली जा सकती है। गम्भीर प्रकृति वाले व्यक्ति यद्यपि कुछ भी ग्रहण नहीं करते तथापि वे भी दान की नीति से पक्षपाती हो जाते हैं। दान की नीति से अपनी जाति और बन्धुओं का विद्रोह भी शान्त किया जा सकता है। अतः राजा को इस उपाय का सर्वदा प्रयोग करना चाहिए।

मत्स्य० २२२।८
वही० २२४।१।८

दिलीप (१)

ऐक्ष्वाकु वंश। अंशुमान् का पुत्र और भगीरथ का पिता।

वायु० ८८।१६६
विष्णु० ४।४।१७
मत्स्य० १२।४४
भाग ६।६।२

दिलीप (२) [खट्वाङ्ग दिलीप, खट्वाङ्गद]

ऐक्ष्वाकु वंश। विष्णु० तथा भाग० के अनुसार विश्वसह का पुत्र। विष्णु० में पाठ खट्वाङ्ग दिलीप है। भाग० में केवल खट्वाङ्ग का उल्लेख है। वायु० के अनुसार विश्वमहत् का पुत्र। वायु० में उसका दूसरा नाम खट्वाङ्गद भी दिया गया है। उसने देवासुर-संग्राम में देवताओं की सहायता की और युद्ध में असुरों का संहार किया। उसे देवताओं से ज्ञात हुआ कि मेरी आयु मुहूर्तमात्र है। मुहूर्तमात्र के लिए पृथ्वी में आकर वह योग द्वारा भगवान् में लीन हो गया। उसके विषय में विष्णु० में यह कहा गया है— 'खट्वाङ्गेन समो नान्यः कश्चिदुर्व्यां भविष्यति। येन स्वर्गादिहागत्य मुहूर्तं प्राप्यजीवितम् ॥ त्रयोऽभिसंहिता लोका बुद्ध्या दानेन चैव हि' ॥ विष्णु०, वायु० तथा भाग० में दिलीप (द्वितीय) की वंश-परम्परा इस प्रकार है:— दिलीप से दीर्घबाहु, उनसे रघु, रघु से अज और फिर अज से दशरथ हुए किन्तु मत्स्य० में वंश-क्रम भिन्न है। यहाँ रघु से दिलीप और उनसे अजक, अजक से दीर्घबाहु, उनसे अजपाल और अजपाल से दशरथ हुए। यहाँ दशरथ को अज का पुत्र न मानकर अजपाल का पुत्र माना गया है।

विष्णु० ४।४।३८ ३९
वायु० ८८।१८१।१८२
भाग० ९।९।४१
मत्स्य० १२।४८-४९

दिव्य

यादव वंश। सत्वत का पुत्र।

भाग० ९।२४।६
विष्णु० ४।१३।१
ब्रह्माण्ड० ३।११।१

दिविरथ

चन्द्र (पौरव) वंश। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित पूर्वी आनव शाखा। अनु की १६ वीं पीढ़ी तथा तितिक्षु की ८ वीं पीढ़ी में दधिवाहन का पुत्र। विष्णु के अनुसार पार का पुत्र।

वायु० ९९।१०१
विष्णु० ४।१८।३
भाग० ९।२३।६-७

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१०३
मत्स्य० ४८।६२

दिवोदास (१) चन्द्र-वंश। काशि-शाखा। विष्णु० के अनुसार धन्वन्तरि की ४ थी पीढ़ी में भीमरथ का पुत्र। वायु० के अनुसार भीमरथ का ही दूसरा नाम दिवोदास था। वायु० में केतुमान् (केतुमत्) का वह पुत्र माना गया है। वायु० के अनुसार वाराणसी में क्षेमक (निकुम्भ) गणेश का मंदिर था। वहाँ लोग पूजा करते थे जिससे उन्हें वरदान प्राप्त होता था। एक समय दिवोदास की पत्नी सुयशा ने पुत्र प्राप्ति के लिए प्रार्थना की, किन्तु बारम्बार प्रार्थना करने पर भी गणपति ने कुछ ध्यान नहीं दिया। उस बात को सुयशा ने राजा से कहा। राजा ने क्रोध में आकर गणपति का स्थान नष्ट कर दिया। गणपति ने उसे शाप दिया कि बिना किसी अपराध के तुमने मेरा स्थान नष्ट किया है अतः अकस्मात् तुम्हारी यह नगरी निर्जन हो जाय। उसके शापवश वाराणसी जन-शून्य हो गयी। कुछ समय पश्चात् हैहय वंश के राजा भद्रश्रेण्य ने वाराणसी को जीत कर उसे फिर बसाया। किन्तु दिवोदास ने कुछ समय पश्चात् भद्रश्रेण्य के १०० पुत्रों को मार कर वाराणसी पर अधिकार कर लिया। उन पुत्रों में से केवल दुर्दम को बालक समझ कर जीवित रहने दिया। दृषद्वती से उसका (दिवोदास का) प्रतर्दन नामक पुत्र हुआ। भद्रश्रेण्य के वंशजों के विनाश के कारण उसे शत्रुजित् भी कहते थे। प्रेम से वह अपने पुत्र को "वत्स" "वत्स" कहता था, अतः उसका दूसरा नाम वत्स भी पड़ गया था। सत्यव्रत होने के कारण वह ऋतध्वज भी कहलाया। उसे कुवलयाश्व नामक अश्वप्राप्त हुआ था, अतः उसे लोग कुवलयाश्व भी कहते थे।

विष्णु० ४।८।५-७
वायु० ९२।२३-६४
भाग० ९।१७।६

दिवोदास (२) चन्द्र (पौरव) वंश। उत्तर-पाञ्चाल शाखा। पार्जी क्रम संख्या ६। वध्र्यश्व का पुत्र।

विष्णु० ४।१९।१९
वायु० ९९।१७५
मत्स्य० ५०।७

दिवोदास (३)

पाञ्चालवंश । मुद्गल का पुत्र ।

भाग० ९।२१।२४

दीर्घतमस् [दीर्घतपस्]

चन्द्र-वंश । काशि-शाखा । काशिराज का पुत्र । वायु० के अनुसार दीर्घतपस् है, किन्तु वह किसका पुत्र है, यह स्पष्ट नहीं है । यह धन्वन्तरि का पिता कहा गया है । दीर्घतमस् ने द्वापर में पुत्र की इच्छा से तप किया और धन्वन्तरि को पुत्र के रूप में वर माँगा । इसके फलस्वरूप धन्वन्तरि उसका पुत्र हुआ ।

विष्णु० ४।८।२
वायु० ९२।६-७
ब्रह्माण्ड० ३।६७।७
भाग० ९।१७।४
वायु० ९२।१८-२०

दीर्घबाहु

ऐक्ष्वाकु वंश । दिलीप, खट्वाङ्ग दिलीप अथवा खट्वाङ्गद का पुत्र और रघु का पिता । मत्स्य० के अनुसार दीर्घबाहु अज का पुत्र था । देखिए, शीर्षक दिलीप (खट्वाङ्ग) ।

विष्णु० ४।४।४०
वायु० ८८।१८२-१८३
भाग० ९।१०।१
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१८२
मत्स्य० १२।४६

दीप्तिमान्

यादव वंश । वृष्णि-शाखा । श्रीकृष्ण और रोहिणी का पुत्र । मत्स्य० के अनुसार सत्यभामा का पुत्र ।

भाग० १०।६१।१८
वही १०।९०।३३

विष्णु० ४।२२।२
मत्स्य० ४७।२७

दुर्ग

प्राचीनकाल में राज्य की रक्षा के लिए कुछ ऐसे नगरों का निर्माण किया जाता था, जिन्हें दुर्ग कहा जाता था। जैसा कि शब्द से ही स्पष्ट है, वह प्राकृतिक एवं कृत्रिम उपकरणों से इस प्रकार सुरक्षित रखा जाता था कि शत्रु उसमें आसानी से न जा सके। पुराणों में ६ प्रकार दुर्ग के बताए गए हैं—धनुदुर्ग, महीदुर्ग, नरदुर्ग, वार्क्षदुर्ग, अम्बुदुर्ग तथा गिरिदुर्ग। इनमें सबसे उत्तम गिरिदुर्ग माना जाता है। इस दुर्ग के अन्दर ऐसे नगर का निर्माण किया जाता था जो चारों ओर बड़े-बड़े प्राकारों तथा परिखाओं से घिरा हो। दुर्ग के प्राकार के एक भाग में गोपुर होता था, जिससे राजा अपनी पताका सहित दुर्ग के अन्दर नगर में प्रवेश कर सके। दुर्ग के अन्दर जो नगर बनता था, उसमें वीथियाँ तथा विभिन्न दिशाओं में विभिन्न वर्ग के लिए भवन होते थे। इन सब का निर्माण वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुसार होता था। नगर के अन्दर सेना-निवेश तथा सभी प्रकार के शिल्पियों के लिए नियत दिशा में आवास बनते थे। नगर दैनिक जीवन तथा युद्ध की सभी सामग्रियों से पूर्ण रहता था। देवायतनों तथा आमोद प्रमोद के साधनों की भी समुचित व्यवस्था रहती थी।

मत्स्य० १०।३२
वायु० ८।६८,१०८-११२
ब्रह्माण्ड० २।७।१२,१०२—१०५

दुर्दम [दुर्मनस्] (१) चन्द्र (पौरव) वंश। द्रुह्यु-शाखा। पीढ़ी क्रम ७। वायु० के अनुसार धृत का पुत्र और प्रचेतस् का पिता। भाग० में पाठ दुर्मनस् है।

भाग० ९।२३।१५ [बम्ब० संस्क० नि० सा०]
वायु० ९९।११
विष्णु० ४।१७।१ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
ब्रह्माण्ड० ३।७४।११

दुर्दम (२) वृष्णि-वंश। आनकदुन्दुभि और रोहिणी का पुत्र।

वायु० ६६।१६३

दुर्योधन चन्द्र (पौरव) वंश। कुरुप्रवर्तित शाखा। धृतराष्ट्र और गान्धारी के १०० पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र। बलराम जब श्रीकृष्ण से रुष्ट होकर विदेहपुरी में जनक के यहाँ वास कर रहे थे, उस समय दुर्योधन ने गदा चलाने की शिक्षा ग्रहण की थी। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर मय द्वारा निर्मित सभा में प्रवेश करने पर दुर्योधन को दृष्टि विभ्रम हो गया था। स्थल को जल समझ कर उसने अपने वस्त्रों के छोर ऊपर कर लिये और दूसरे स्थान पर जल को स्थल समझ कर वह उसमें गिर पड़ा। इसपर भीम तथा वहाँ उपस्थित अन्य स्त्रियाँ हँस पड़ीं। दुर्योधन इस अपमान से और भी जल भुन गया और पाण्डवों के प्रति उसका द्वेष और भी बढ़ गया। उसने पाण्डवों को द्यूत क्रीडा में पराजित किया और उन्हें राज्य से वंचित कर वनवास दे दिया। कृष्ण से दुर्योधन द्वेष रखता था। अवन्ति के राजकुमार विन्द और अनुविन्द दुर्योधन के वश में थे। उनकी बहिन मित्रविन्दा राजाधिदेवी की पुत्री कृष्ण को पतिरूप में चाहती था, किन्तु वे दुर्योधन के वश में आकर श्रीकृष्ण के साथ अपनी बहिन का विवाह नहीं करना चाहते थे। अत श्रीकृष्ण ने अनेक राजाओं की उपस्थिति में मित्रविन्दा का अपहरण कर लिया। दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा के स्वयम्वर में श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब ने लक्ष्मणा को बलपूर्वक हर लिया। यह देखकर कर्ण और दुर्योधन ने साम्ब को घेर लिया और वे उसे बाँधने की चेष्टा करने लगे। साम्ब ने कौरवों से युद्ध किया किन्तु उसके अकेला होने के कारण कौरवों ने उसके रथ को नष्ट कर दिया और उसे बाँधकर वे लक्ष्मणा को वापस ले आये। यह सुनकर उग्रसेन बहुत क्रुद्ध हुए और कौरवों से लड़ने के लिए उन्होंने यादवों को आदेश दिया। बलराम नहीं चाहते थे कि वृष्णियों और कौरवों में द्वेष हो अतः वे स्वयं हस्तिनापुर गये। प्रथम उन्होंने शान्तिपूर्वक कौरवों से साम्ब को मुक्त करने के लिए कहा, किन्तु जब वे न माने और वृष्णियों को अनादरपूर्ण वचन कहने लगे तब बलराम बहुत क्रुद्ध हुए। कौरव बलराम के बल व तेज से भयभीत हुए

श्रौर उन्होंने न केवल साम्ब को मुक्त कर दिया अपितु लक्ष्मणा का विवाह साम्ब के साथ करना स्वीकार किया। दुर्योधन ने असख्य हाथी, घोड़े, रथ, वस्त्र श्रौर सुवर्ण विवाह में दहेज के रूपमें दिए। विदुर ने दुर्योधन को उचित परामर्श दिया कि तुम पाण्डवों का राज्य लौटा दो श्रौर कृष्ण द्वारा रक्षित पाण्डवों से व्यर्थ का वैर न लो किन्तु दुर्योधन ने विदुर को दासी का पुत्र कहकर उसका अनादर किया श्रौर उन्हें राज्य से निर्वासित कर दिया। द्यूत में पराजित होने के कारण निर्दिष्ट काल तक पाण्डवों ने वनवास किया। उसके उपरान्त जब पाण्डवों ने अपना राज्य वापस मागा तो दुर्योधन ने उसे देना अस्वीकार कर दिया। फलस्वरूप कौरवों श्रौर पाण्डवों में युद्ध हुआ। दुर्योधन के ९९ भाइयों के संहार के उपरान्त युद्ध में भीम के गदा-प्रहार से उसकी मृत्यु हुई।

भाग० ६।२२।२६
भाग० १०।५८।२७-३१
भाग० १०।६८ सम्पूर्ण

दुष्यन्त

पौरव वंश। रैभ्य (मलिन, वायु) का पुत्र। विष्णु० के अनुसार अनिल का पुत्र। दुष्यन्त चक्रवर्ती राजा थे। एक समय आखेट के लिए वे वन गये श्रौर वहाँ मृगों का पीछा करते करते कण्व के आश्रम में पहुँचे। उन्होंने वहाँ, विश्वामित्र की अतिरूपवती पुत्री शकुन्तला के साथ गान्धर्व विधि से विवाह कर लिया। शकुन्तला से दुष्यन्त का एक पुत्र हुआ, जिसका नाम भरत रखा गया। कण्व के आश्रम में ही उसका लालन पालन हुआ। कुछ समय के उपरान्त शकुन्तला अपने पुत्र भरत सहित दुष्यन्त के पास पहुँची, किन्तु दुष्यन्त ने उसे ग्रहण करना स्वीकार नहीं किया। तदनन्तर आकाश-वाणी हुई—"दुष्यन्त,भरत तुम्हारा पुत्र है,शकुन्तला का कहना सत्य है। शकुन्तला का अपमान न करो। शकुन्तला श्रौर भरत दोनों को ग्रहण करो।"

यदा न वव्रहे राजा भार्यापुत्रावनिन्दितौ।
शृण्वता सर्वभूतानां खे वागाहाशरीरणी ॥२०॥
माता भस्त्रा पितुः पुत्रो येन जात. स एव स.।

भरस्व पुत्रं दुष्यन्त माऽवमंस्थाः शकुन्तलाम् ॥२१॥
रेतोधाः पुत्रो नयति नरदेव यमक्षयात् ।
त्वं चास्य धाता गर्भस्य सत्यमाह शकुन्तला ॥ २२ ॥

तदुपरान्त उन्होंने शकुन्तला तथा भरत दोनों को ग्रहण किया और भरत को युवराज पद पर नियुक्त किया। भरत अपने पिता के समान ही प्रतापशाली चक्रवर्ती राजा हुए।

विष्णु० ४।१९।२-३
वायु० ९९।१३३-१३६
भाग० ९।२०।१७-२२
मत्स्य० ४९।११-१२
विष्णु० ४।१९।२
वायु० ९९।३४२
मत्स्य० ५०।४८
विष्णु० ४।१३।४७
भाग० १०।५७।२९
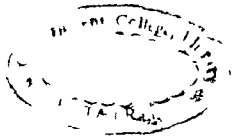
दूत

राजा का सन्देश-वाहक। किन्तु दूत शब्द इससे भी अधिक व्यापक अर्थ में व्यवहृत था। उसे कई एक महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जाते थे। राजा की वैदेशिक नीति में दूत का एक महत्वपूर्ण स्थान था। उसका कर्तव्य था कि वह परदेश (शत्रु अथवा मित्र के राज्य में) जाकर सब बातों की जानकारी रखे। राजा का संदेश पहुँचाना और उसे देश की राजनीति तथा प्रजा के विषय में सब समाचार देते रहना, उसके मुख्य कार्य थे। दूत के मुख्य गुण पुराणों के अनुसार इस प्रकार हैं—दूत को यथार्थवादी होना चाहिए, अर्थात् स्वामी ने जिस प्रकार का संदेश दूसरे राजा के लिए भेजा हो ठीक उसी प्रकार बिना घटाये बढ़ाये वह संदेश पहुँचा दे। उसे अनेक भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए। वह मधुर भाषी हो तथा अवसरपर खूब वाचाल (शाब्द) भी हो। अपने कार्य में अभ्यस्त, प्रगल्भ तथा अच्छी स्मरणशक्ति वाला हो। शस्त्र और शास्त्र में वह निपुण हो। शाब्दज्ञ होने से वह नीति के तर्कों से अपने मत की पुष्टि कर सकता है। परदेश में उसे समय

समय पर संकटापन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, अतः अपनी रक्षा के लिए उसे शस्त्र-निपुण होना भी आवश्यक है। उसे देश और काल का भी ज्ञान रखना चाहिए। किस समय क्या कहना तथा करना उपयुक्त है, राजा का हित किस बात में है आदि बातों का उसे सदैव ध्यान रखना चाहिए। दूतों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है—निसृष्टार्थ, मितार्थ और शासन-हारक। निसृष्टार्थ का पद इन तीनों में ऊँचा था। उसके अधिकार अधिक होते थे। अपने स्वामी का हित सोचकर देश और काल का ध्यान रखते हुए, वह सब कुछ करने का अधिकार रखता था। मितार्थ दूसरी श्रेणी का दूत था, वह राजा द्वारा निर्धारित कार्यों के अलावा और कुछ नहीं कर सकता था। शासन-हारक तो केवल राजा का संदेश-वाहक है। इन तीनों श्रेणियों के दूतों के अधिकार उनके पद के अनुसार अधिक या न्यून थे। परदेश में कार्य-सम्पादन के लिए दूत के लिए कुछ आदेश दिये गये हैं। जैसे उसे बिना सूचना दिए न तो शत्रु के नगर में प्रवेश करना चाहिए और न उसकी सभा में अपने कार्य के लिए उसे समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। उसे शत्रु के दोषों को जानना चाहिए और उसके कोष, मित्र और बल-शक्ति का पता लगाना चाहिए। दृष्टि और शरीर की चेष्टाओं से प्रजा की राजा के प्रति भक्ति और उदासीनता के भावों को जानना चाहिए। उसके साथ विभिन्न वेषधारी गुप्तचर भी होने चाहिए। जो शत्रु की विपत्तियों का पता लगा कर उसे बता सकें। दूत जब अपने स्वामी का कार्य शान्तिपूर्वक न हल कर सके तब वह विपत्तिग्रस्त शत्रु पर आक्रमण करने के लिए अपने स्वामी को परामर्श दे।

मत्स्य० २१५।१२-१३
विष्णुध० २।२४।१३—१४

दृढनेमि

चन्द्र (पौरव) वंश की द्विमीढ शाखा। पीढ़ीक्रम ५। सत्यधृति का पुत्र। पार्श्व का पिता।

विष्णु० ४।१९।१३

वायु० ६६।१८४
भाग० ६।२१।२७
मत्स्य० ४६।७०

दृढरथ (१) — यादव वंश । ज्यामघ की १२ वीं पीढ़ी में नवरथ का पुत्र और शकुनि का पिता ।

मत्स्य० ४४।४१ [कलकत्ता, गुरु० मं०]

दृढरथ (२) — चन्द्र-वंश । तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित । पूर्वी आनव शाखा । अनु की १६ वीं पीढ़ी तथा तितिक्षु की २१ वीं पीढ़ी में । जयद्रथ का पुत्र ।

विष्णु० ४।१८।५
वायु० ६६।१११

दृढरथ [दृढधनु, दृढहनु] (३) — चन्द्र (पौरव) वंश । भरत से प्रवर्तित कुल । सेनजित् के चार पुत्रों में से एक । वायु० में पाठ दृढधनु तथा भाग० में दृढहनु है ।

१—मत्स्य० ४६।५०
२—भाग० ६।२१।२३
वायु० ६६।१७३

दृढाश्व — ऐक्ष्वाकु वंश का राजा । कुवलयाश्व (धुन्धुमार) का पुत्र ।

विष्णु० ४।२।२२
वायु० ८८।६१ तथा ६३
भाग० ६।६।२३
ब्रह्माण्ड० ३।६३।६२
मत्स्य० १२।३२

देवक

आहुक का दूसरा पुत्र। उग्रसेन का छोटा भाई। उसकी पुत्री देवकी थी जिसका विवाह वृष्णि-वंश के वसुदेव जी से हुआ।

विष्णु० ४।१४।५

देवक्षत्र

क्रोष्टु द्वारा प्रवर्तित शाखा। ज्यामघ की १६ वीं पीढ़ी में। देवरात का पुत्र।

विष्णु० ४।१२।१६
वायु० ६५।४४
हरिवंश० १३६।२७

देवन

वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार देवक्षत्र का पुत्र था, किन्तु विष्णु० और हरिवंश में यह नाम नहीं आता।

वायु० ६५।४४
ब्रह्माण्ड० ३।७०।४५

देवभूमि [देवभूति]

शुङ्गवंश का अन्तिम राजा। पीढ़ी-क्रम संख्या १०। ब्रह्माण्ड० के अनुसार भागवत० का पुत्र। राज्यावधि १० वर्ष। देवभूमि बाल्यकाल से ही व्यसनी था। कण्व-वंशज वसुदेव देवभूमि का मंत्री था। देवभूमि के चरित्र की दुर्बलता से उसके मंत्री ने लाभ उठाया। किसी दासी के साथ संभोग करते हुए, देवभूमि को वसुदेव कण्व ने षड्यन्त्र रचकर मार दिया और कण्व-वंश का राज्य स्थापित किया। विष्णु० में पाठ देवभूति है।

विष्णु० ४।२४।१२
वायु० ६६।३४४
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५५
भाग० १२।१।१८-२०
मत्स्य० २७२।३१

देवमीढ [कृति]

निमिवंश। पीढ़ीक्रम संख्या १५। कीर्तिरथ का पुत्र। विष्णु० के अनुसार धृतरथ का पुत्र। विबुध का पिता। विष्णु० में देवमीढ के स्थान में कृति है।

वायु० ८६।१२
विष्णु० ४।५।१२
ब्रह्माण्ड० ३।६४।१२

देवमीढुष

यादव वंश। सात्वत शाखा। हृदीक का पुत्र। शूर का पिता। भाग० तथा ब्रह्माण्ड०के अनुसार शूर और देवमीढ एक ही हैं। मारिषा नाम की पत्नी से उसके वसुदेव आदि दस पुत्र और पृथा, श्रुतकीर्ति, श्रुतश्रवा आदि पुत्रियाँ हुईं। कुन्ति भोज देवमीढुष का मित्र था। वह अपुत्र था इसलिए शूर ने अपनी कन्या कुन्ति-भोज को पुत्री के रूप में दे दी, इसीलिए पृथा कुन्ती कहलाई।

विष्णु० ४।१४।६-७
भाग० ६।२४।२६-२७ तथा २६-३०
मत्स्य० १२।२ तथा १४
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१४५
मत्स्य० ४४।२
वायु० ६६।१४३

देवरात (१)

निमि वंश का छठा राजा। सुकेतु का पुत्र।

वायु० ८८।८
विष्णु० ४।५।१२
भाग० ६।१३।१४-१५
ब्रह्माण्ड० ३।६४।८

देवरात (२)

यादववंश। ज्यामघ की १५वीं पीढ़ी में। करम्भि (विष्णु०) करम्भक (वायु०) का पुत्र।

विष्णु० ४।१२।१६
वायु० ६५।४४
भाग० ६।२४।५
मत्स्य० ४४।४२-४३
ब्रह्माण्ड० ३।७०।४४

देवातिथि पौरव वंश। ४१ वीं पीढ़ी में अक्रोधन का पुत्र।

विष्णु० ४।२०।३
वायु० ६६।२३२
भाग० ६।२२।११
मत्स्य० ५०।३७

देवानीक ऐक्ष्वाकु वंश। क्षेमधन्वा का पुत्र। अहीन (अहीनगु, वायु०, अहीनक, ब्रह्माण्ड०) का पिता।

वायु० ८८।२०३
मत्स्य० १२।५३
भाग० ६।१२।२
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२०३

देवापि पौरव वंश। प्रतिप (प्रतीर, मत्स्य०, प्रतीप, विष्णु०) का पुत्र और शन्तनु (शान्तनु, विष्णु०) का ज्येष्ठ भाई। देवापि ने धर्मार्जन करने की इच्छा से वनवास किया और देवताओं का भी उपाध्याय हो गया। देवापि के वनवास ग्रहण करने के कारण शन्तनु राजा हुआ, किन्तु उसके राज्य में १२ वर्ष तक अनावृष्टि रही। राष्ट्र को इस प्रकार विपद्ग्रस्त देखकर शन्तनु ने ब्राह्मणों से उसका कारण पूछा। उन्होंने कहा कि तुम अपने ज्येष्ठ भाई के अधिकार का अतिक्रमण कर राज्य कर रहे हो, अतः तुम परिवेत्ता हो और जब तक देवापि वेदनिन्दादि दोषों से पतित नहीं होता तब तक वही राज्य का अधिकारी है। तुम उसे राज्य दे दो। शन्तनु के मन्त्रियों ने

यह सुनकर ऐसे ब्राह्मण नियुक्त किए जो देवापि को वेदविरोधी उपदेश देकर उसकी बुद्धि ऐसी दूषित करें जिससे वह वेद निंदक बन जाय। उन ब्राह्मणों ने अपना कर्तव्य पालन किया। उन्होंने देवापि की बुद्धि वेद-विरोधिनी बना दी। इधर शन्तनु ब्राह्मणों के कथनानुसार उन्हीं को लेकर राज्य देने के लिए अपने भाई के पास गया। ब्राह्मणों ने देवापि के समीप जाकर उससे वेदसम्मत वचन कहे और उससे अनुरोध किया कि अग्रज को ही राज्य करना चाहिए। किन्तु देवापि ने वेद विरोधी अनेक दूषित वचन कहे। यह सुनकर ब्राह्मणों ने शन्तनु से कहा कि हे राजन् अब अधिक आग्रह न करो, देवापि ने वेद-दूषक वचन कहे हैं इसलिए अग्रज के पतित होने पर अब तुम परिवेत्ता नहीं हो। ब्राह्मणों के कथनानुसार शन्तनु अपने नगर को वापस लौटा और राज्य करने लगा। उसके राज्य में वृष्टि हुई, जिससे सभी-प्रकार के अन्न पैदा होने लगे। देवापि कलाप ग्राम में योगस्थ होकर रहने लगा। भाग० में कहा गया है कि कलियुग के अन्त में अर्थात् कृतयुग के आरम्भ में वह पुनः चन्द्र-वंश की स्थापना करेगा। मत्स्य० के अनुसार देवापि कुष्ठ रोग से ग्रस्त था इसलिए प्रजा ने उसे राजा स्वीकार नहीं किया।

विष्णु० ४।२०।४–६
भाग० ६।२२।१२–१८
वही १२।२।३७
वायु० ६६।२३४–३
मत्स्य० ५०।३६–४१

देशरक्षित

देश-पाल। उसे आज कल का प्रान्तपति अथवा राज्यपाल कहा जा सकता है। राजकर्मचारियों के कार्यों का निरीक्षण करना, आय और व्यय तथा देश की पैदावार और जनता के विषय में जानकारी रखना आदि उसके कर्तव्य थे। देश, भुक्ति तथा विषय से बड़ा किन्तु राज्य से छोटा राज्य का विभाग था।

१—मत्स्य० २१५।१७

दौवारिक

न्यायालय के द्वार पर रहनेवाले कर्मचारी।

इन्हें दौवारिक कहने का कारण यह था कि ये न्यायालय के द्वार पर खड़े रहते थे। वादी तथा प्रतिवादी को जब बुलाने की आवश्यकता होती तब वे उन्हें आवाज देकर बुलाते और न्यायालय में उपस्थित करते थे।

१—मत्स्य० २१५।२६
विष्णु० ६०२।२४।२६
अग्नि० २२०।५

द्युमत्सेन (१) [दृढसेन] चन्द्र (पौरव) वंश। त्रिनेत्र का पुत्र। राज्यावधि ४८वर्ष। वायु० तथा विष्णु० में पाठ दृढसेन है। भाग० के अनुसार द्युमत्सेन के पुत्र का नाम सुमति है।

मत्स्य० २७१।१६
विष्णु० ४।२३।३
वायु० ६६।३०१
भाग० ६।२२।४८

द्युमत्सेन (२) सत्यवान् का पिता। अन्धा होने के कारण वह राज्य से वंचित हुआ और वन में रहने लगा। सावित्री के पातिव्रत धर्म के प्रभाव तथा यम की कृपा से उसे पुनः दृष्टिलाभ हुआ।

मत्स्य० २१७।२७

द्रुपद पौरव वंश। उत्तरी पाञ्चाल शाखा। पृषत् का पुत्र। द्रुपद और कौरवों के बीच वैर था। पाण्डव जब द्रोण के शिष्य थे तब उन्होंने द्रुपद को पराजित कर बाँध लिया था। अन्त में वह उन्हें अपना आधा राज्य देने के लिए राजी हो गया, इसपर पाण्डवों ने उसे मुक्त कर दिया। यादवों के साथ भी उसका वैर था। सम्भवतः जरासन्ध के अधीन होने के कारण ऐसा हुआ हो। मथुरा के घेरे में जरासन्ध ने उसे उत्तरी द्वार पर तथा गोमन्त पर्वत के घेरे में दक्षिण द्वार पर नियुक्त किया था। द्रुपद ने अपनी पुत्री द्रौपदी के लिए स्वयम्वर रचा। उसमें यह शर्त रखी कि जो पेड़ में लटकती मत्स्य को तेल में

उसका प्रतिबिम्ब देखकर बेध सकेगा वही द्रौपदी को प्राप्त कर सकेगा। अर्जुन मत्स्य-वेध में सफल हुए और द्रौपदी उन्हें प्राप्त हुई। विवाह के कारण दोनों कुलों में मैत्री स्थापित हो गयी। द्रुपद ने पाण्डवों की ओर से युद्ध में भाग लिया था।

विष्णु० ४।२६।२८
वायु० ९९।२०
भाग० ९।२२।२, १०।८६।२
वही १०।५०।११ तथा १०।८२।११
वही १०।७८।१०

द्रुम

किन्नर और किम्पुरुषों का एक राजा। शाल्व ने कुण्डिन में श्रीकृष्ण के विरुद्ध जो सभा की थी उसमें द्रुम भी उपस्थित था।

वायु० ४१।३१

द्रुह्यु

चन्द्र-वंश। मत्स्य० के अनुसार ययाति और शर्मिष्ठा का पुत्र। द्रुह्यु ने अन्य भाइयों की भाँति अपने पिता ययाति का बुढ़ापा लेना अस्वीकार किया तो ययाति ने द्रुह्यु को शाप दिया कि तुम्हारा कोई स्थिर राज्य न रहेगा। युवावस्था का उपभोग करने के पश्चात् जब ययाति वन को चला गया तो उसने द्रुह्यु, अनु और तुर्वसु को पृथक-पृथक देशों का राजा बनाया। द्रुह्यु को पश्चिम का राज्य दिया। विष्णु० के अनुसार उसे दक्षिणपूर्व का राज्य दिया। देखिए, तुर्वसु।

विष्णु० ४।१७।१
वायु० ९९।७, ९।१८।१२
मत्स्य० २४।५२–५४, ३२।१०
विष्णु० ४।१०।१९
वायु० ९३।५०
मत्स्य० ३३।१९–२०
भाग० ९।१८।४०

मत्स्य० २४।२०१
वा० ८।०

द्रौपदी

पाञ्चाल राजा द्रुपद की पुत्री। अर्जुन ने उसे स्वयंवर में मत्स्य-वेध में विजयी होकर प्राप्त किया था। माता कुन्ती के आदेश से वह पाँचों पाण्डवों की पत्नी हुई। पाँचों भाइयों से उसके पाँच पुत्र हुए। युधिष्ठिर से प्रतिविन्ध्य, भीम से श्रुतसेन, अर्जुन से श्रुतकीर्ति, नकुल से श्रुतानीक और सहदेव से श्रुतकर्मा[1]। राजसूय के अवसर पर द्रौपदी परिवेषण के लिए नियुक्त थी। उसने युधिष्ठिर के साथ अवभृथस्नान किया।[2] पाण्डवों के वनवास के अवसर पर कृष्ण और सत्यभामा ने दुखित द्रौपदी को अनेक प्रकार से सान्त्वना दी[3]। अश्वत्थामा ने अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए द्रौपदी के पाँचों सोते हुए पुत्रों को मार डाला। अर्जुन अश्वत्थामा को बन्दी बनाकर द्रौपदी के सम्मुख ले आया, किन्तु द्रौपदी ने उसे ब्राह्मण पुत्र समझकर छोड़ देने के लिए कहा और उसके सिर का केवल चूड़ामणि लेना ही उसने उचित समझा[4]। ईश्वर की परमभक्ता होने के कारण द्रौपदी अन्त में उनके पाद-पद्म को प्राप्त हुई[5]।

१—भाग० ९।२२।२९।२८
ब्रह्म० ३।१४।१३
मत्स्य० ५०।५१
वायु० ६६।२४६
विष्णु० ४।२०।११
२—भाग० १०।७२।४५,४६,७८
३—वही १०।८४।१०
४—भाग० १।७।१८ अ० तथा ८।१
५—भाग० १।१५।५०

द्वारका

आनर्त की प्राचीन राजधानी। कुशस्थली द्वापर के अन्त में द्वारका में परिणत हो गयी। कालयवन ने मथुरा पर ३ करोड़ म्लेच्छ सेना सहित आक्रमण किया। उधर मगधराज १७ युद्धों में पराजित होकर १८ वें

आक्रमण के लिए तैयारी कर रहा था। दोनों ओर से यादवों पर आक्रमण होने से यादवों की बड़ी संख्या में मारे जाने की सम्भावना थी। अतः इनसे यादवों को बचाने के लिए श्रीकृष्ण ने एक नये दुर्ग का किसी ऐसे निरापद स्थान में निर्माण करने का निश्चय किया जो दुर्गम हो और जहाँ से न केवल वृष्णिवीर अपितु स्त्रियाँ भी युद्ध कर सकें और जहाँ कृष्ण की अनुपस्थिति में भी यादवों को कोई पराजित न कर सके। श्रीकृष्ण ने समुद्र से द्वादश योजन भूमि माँगी और समुद्र के बीच अद्भुत नगरी का निर्माण कराया। विष्णु० तथा भाग० में इस नगरी के वैभव का विशद वर्णन है। यहाँ श्रीकृष्ण ने मथुरा से यादवों को लाकर बसाया। यादवों को सुरक्षित स्थान में रखकर स्वयं कृष्ण ने कालयवन का वध किया और उसके हाथी, अश्व, रथ आदि पर उन्होंने अपना पूर्ण अधिकार कर लिया और द्वारका लाकर उन्हें उग्रसेन को सौंप दिया। समुद्र के मध्य में निर्मित होने पर भी द्वारका पर पौण्ड्रक और शाल्व ने पृथक् पृथक् आक्रमण किये, किन्तु कृष्ण ने दोनों को युद्ध में पराजित कर दोनों का वध किया। द्वारका में श्रीकृष्ण ने अश्वमेध यज्ञ किया। मुसल युद्ध में यादवों के संहार के उपरान्त तथा श्रीकृष्ण और बलराम के स्वर्ग जाने के अनन्तर द्वारका को समुद्र ने बहा दिया। श्रीकृष्ण ने द्वारका छोड़ने की सूचना दारुक द्वारा यादवों को दे दी थी। अर्जुन के साथ सब यादव द्वारका छोड़ कर चले गए। कहते हैं कि समुद्र ने श्रीकृष्ण के भवन को नहीं बहाया था—

"प्लावयामास तां शून्यां द्वारकाञ्च महोदधिः।
यदोरेव गृहं त्वेकं नाप्लावयत् सागरः॥"

भाग० १०।५२।५
विष्णु० ५।२४।६-७
भाग० १०।६६।१-१२
वही १०।७१।८-१४ १०।८०।२३, २६०।१
विष्णु० ५।३७ तथा ३८वाँ अध्याय
भाग० १०।१२।२१।

धनक

हैहय वंश। दुर्दम का पुत्र। भाग० के अनुसार भद्रसेन का पुत्र। धनक के

४ पुत्र थे —कृतवीर्य, कृताग्नि, कृतवर्मन् तथा कृतौजस्।

विष्णु० ४।११।१
भाग० ६।२३।२३

धनञ्जय

पुरु-वंश। अर्जुन का दूसरा नाम। इन्द्र और पृथा का पुत्र। वह बल और पराक्रम में इन्द्र-तुल्य था।

वायु० ६६।१५२
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५४
भाग० ३।७।५०
मत्स्य० ४६।६

धनवर्मा

विदिशा के नाग-वंश के एक राजा का नाम। नखवान् के पश्चात् क्रम संख्या ३ है।

वायु० ६६।३६८
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१८१

धनाध्यक्ष

राज्य-कोष का लेखा रखना धनाध्यक्ष का मुख्य कर्तव्य था। उसके कार्य आजकल के अर्थ-सचिव से मिलते जुलते हैं। लोहा, वस्त्र, चर्म तथा रत्नों के विषय में उसे अच्छा ज्ञान होना चाहिए :—

"लौहवस्त्राजिनादीनां रत्नानाञ्च विधानवित्।
विज्ञाता फल्गुसाराणामनाहार्यः शुचिः सदा" ॥

मत्स्य० २१५।३०-३१
विष्णु० ३।२४।३०-३१

धनायु — चन्द्र-वंश। पुरूरवा और उर्वशी का पुत्र।

मत्स्य० २४।३३

धनुर्दुर्ग — छः प्रकार के दुर्गों में से एक प्रकार का दुर्ग।

मत्स्य० २१७।६

अग्नि० २२२।४

धनुर्वेद — धनुर्विद्या। प्राचीन काल में यह विद्या राजाओं की शिक्षा में प्रमुख थी। विश्वामित्र, परशुराम, द्रोणाचार्य आदि धनुर्वेद के विशेषज्ञ माने गये थे। अर्जुन ने द्रोण से धनुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की थी। कृष्ण तथा बलराम ने अपने गुरु सान्दीपनि से धनुर्वेद सरहस्य सीखा था।

वायु० ६१।६, ६१।६१

विष्णु० ३।६।२६

भाग० १०।४५।३४

धनुष — कुरु-वंश। सत्यधृति का पुत्र।

मत्स्य० ५०।३०

धनुष्कोटि — धनुष की नोक। धनुष्कोटि द्वारा वैन्य ने पृथ्वी से पर्वतों को हटाकर उसे सम बनाया था।

वायु० ६२।१६६

ब्रह्माण्ड० २।३६।१६५

धनेश (१) — कुबेर का दूसरा नाम।

विष्णु० ४।१०।११

धनेश (२)

एक वानर-प्रमुख का नाम ।

ब्रह्माण्ड० ३।२।२४४

धन्व

दीर्घतपस् का पुत्र ।

ब्रह्माण्ड० ३।६७।७

धन्वन्तरि

चन्द्र (पौरव) वंश । काशिराज की तीसरी पीढ़ी में दीर्घतपस् का पुत्र । वायु० में धन्वन्तरि को धर्म का पुत्र माना गया है । "धर्मश्च दीर्घतपसो विद्वान्धन्वन्तरिस्ततः" । ब्रह्माण्ड में कहा गया है कि विष्णु भगवान् के वर-दान से धन्वन्तरि का जन्म दीर्घतपस् के पुत्ररूप में हुआ था । धन्वन्तरि आयुर्वेद के प्रवर्तक कहे गये हैं । उनके पुत्र का नाम केतुमान् था ।

ब्रह्माण्ड० ३ । ६७ । ८-२४
विष्णु० ४।८।२
वायु० ९२।७

धर्म

चंद्र वंश द्रुह्यु शाखा । पीढ़ीक्रम ५ । गान्धार का पुत्र । धृत का पिता ।

विष्णु० ४।१७।२
वायु० ९९।१०

धर्मकेतु

चंद्र (पौरव) वंश । काशि-शाखा । काशिराज की १३वीं पीढ़ी में सुकेतु का पुत्र ।

विष्णु० ४।८।६
वायु० ९२ । ७३
ब्रह्माण्ड० ३।६७।७४

धर्मनेत्र (१) चन्द्र (पौरव) वंश । बार्हद्रथ शाखा । ब्रह्माण्ड० में सुव्रत के बाद धर्मनेत्र का उल्लेख है। मत्स्य० में पाठ सुनेत्र है तथा राज्यावधि ३५ वर्ष है । वायु० के अनुसार राज्यावधि पाँच वर्ष है । ब्रह्माण्ड० में उपर्युक्त 'धर्मनेत्र' के अतिरिक्त भी 'सुनेत्र' का उल्लेख है, जिसका क्रम सुमति के बाद आता है।

मत्स्य० २७१।२६
वायु० ९९।३०२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।११७
वही० ३।७४।११९

धर्मनेत्र [धर्मतन्त्र] (२) हैहय वंश । कीर्ति का पुत्र और कुन्ति का पिता । वायु० के अनुसार उसका नाम धर्मतन्त्र था ।

ब्रह्माण्ड० ३।६९।४
मत्स्य० ४३।९
विष्णु० ४ । ११ । ३
वायु० ९४।४–५

धर्मध्वज (जनक निमि-वंश । कुशध्वज का पुत्र और कृतध्वज तथा मितध्वज का पिता ।

भाग० ९।१३।१९
विष्णु० ३।६।७–८

धर्मरथ (१) चंद्र (पौरव) वंश । तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित आनव शाखा । अनु की १७वीं पीढ़ी में तथा तितिक्षु की ६वीं पीढ़ी में[१] । दिविरथ का पुत्र । वह परम धार्मिक राजा था। वायु० में कहा गया है कि उसने विष्णुपद पर्वत पर इन्द्र के साथ यज्ञ में सोमपान किया[२] था ।

१—वायु० ९९।१०१

विष्णु० ४।१८।३
मत्स्य० ४८।६२-६३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१०२
२—वायु० ६६।१०२

धर्मराज [धर्मरत] (१) वैवस्वत मनु-वंश। सगर के पुत्रों में से एक। वायु० में पाठ धर्मरत है।

वायु० ८८।१४६
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१७४

धर्मराज (२) युधिष्ठिर का दूसरा नाम।

भाग० १।१२।४
विष्णु० ५।३८।६०

धर्मराज (३) यम का दूसरा नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।२६।१५
वायु० १०८।५

धर्मवर्मन् (१) अक्रूर का पुत्र। वंश के लिए देखिए अक्रूर।

मत्स्य० ४५।३०

धर्मविजयी ब्रह्माण्ड में यह विशेषण पद सगर के लिए प्रयुक्त हुआ है जिसने समस्त पृथ्वी को जीत लिया था। वह राजा जो भूमि-लोभ से नहीं, अपितु आधिपत्य और साम्राज्य के लिए दिग्विजय करता था।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।१४२

धर्मवृद्ध

चन्द्र-वंश । अक्रूर का पुत्र[1] । ब्रह्माण्ड के अनुसार गान्दिनी और श्वफल्क का पुत्र[2] । वायु० में धर्मवृद्ध स्वर्भानु का पुत्र माना गया है ।

भाग० ६।२४।१६
ब्रह्माण्ड० ३।११।११२
वायु० ६३।२

धर्मसेन

सूर्य-वंश । मान्धाता के पुत्र का नाम ।

मत्स्य० १२।३५

धर्माधिकरण

धर्म सम्बन्धी कार्यों का सञ्चालक एवं निरीक्षक । वह कुलीन ब्राह्मणों में से नियुक्त किया जाता था । इसके अतिरिक्त उसे धर्मशास्त्रज्ञ एवं निष्पक्ष होना भी अनिवार्य था —

"समः शत्रौ च मित्रे च धर्म-शास्त्र विशारद विप्रमुख्य कुलीनश्च धर्माधिकरणो भवेत् ।"

विष्णुध० २ । २४ । २४—२५

धर्मेयु [धनेयु]

पौरव वंश । रौद्राश्व तथा घृताची का पुत्र । विष्णु० में पाठ धनेयु है ।

भाग० ६।२०।४
वायु० ६६।१२४
विष्णु० ४।१६।१
मत्स्य० ४६।६

धीमान्

स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में महावीर्य का पुत्र ।

वायु० ३३।५८
ब्रह्माण्ड० २।१।६८
विष्णु० ४।१।१७

धुन्धुमार — कुवलयाश्व (कुवलाश्व, वायु०) का दूसरा नाम। देखिए, शीर्षक कुवलयाश्व।

वायु० ८८।२८

भाग० ९।६।२३

धृत — पौरव वंश। द्रुह्यु-शाखा। द्रुह्यु की ६वीं पीढ़ी में। धर्म का पुत्र।

विष्णु ४। १७।२

वायु० ९९। १०

भाग० ९।२३।१५

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१०

मत्स्य० ४८।८

धृतक [धृक] — ऐक्ष्वाकु वंश। रुरुक का पुत्र और बाहु का पिता। विष्णु० में पाठ वृक है।

विष्णु० ४।३।१५

वायु० ८८।१२१

ब्रह्माण्ड० ३।६३।११९

धृतराष्ट्र — पौरव-वंश। विचित्रवीर्य की पत्नी अम्बा में व्यास द्वारा नियोगजन्य पुत्र। धृतराष्ट्र जन्म से ही अंधे थे। धृतराष्ट्र के गान्धारी से सौ पुत्र हुए जिनमें दुर्योधन ज्येष्ठ था।

वायु० ९९।२४३

धृति (१) — निमि-वंश। विजय का पुत्र और कीर्तिरात का पिता।

ब्रह्माण्ड० ३।६४।१२

वायु० ८९।१२

धृति (२) यादव वंश। अन्धक-शाखा। आहुक का पुत्र। ब्रह्माण्ड० के अनुसार आद्र्क का पुत्र।

वायु० ९६।१२३-७
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१२४

धृति (३) यदु-वंश। क्रोष्टु-प्रवर्तित शाखा। ज्यामघ की ५वीं पीढ़ी में। बभ्रु का पुत्र।

विष्णु० ४।१२।१५

धृति (४) ऐक्ष्वाकु वंश की ५२वीं पीढ़ी में वीतहव्य का पुत्र। बहुलाश्व का पिता।

विष्णु० ४।५।१२ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]

धृतिमान् (१) निमि-वंश। महावीर्य का पुत्र और सुधृति का पिता। विष्णु० में सत्यधृति का पिता।

वायु० ८९।६
विष्णु० ४।५।१२
ब्रह्माण्ड० ३।६४।६

धृतिमान् (२) चन्द्र-वंश। पुरूरवा और उर्वशी के आठ पुत्रों में से एक।

मत्स्य० २४।३३

धृतिमान् (३) [कृतिमान्] चन्द्र (पौरव) वंश। द्विमीढ का पौत्र। यवीनर का पुत्र। द्विमीढकुल का तीसरा शासक। भाग० में पाठ कृतिमान् है।

विष्णु० ४।१९।११
वायु० ९९।१८४
भाग० ९।२१।२७

घृतेयु — पुरु-वंश। रौद्राश्व और घृताची का पुत्र।

विष्णु० ४।१९।१
वायु० ९९।१२४
मत्स्य० ४९।५

धृष्ट (१) — वैवस्वत मनु का पुत्र। वायु० के अनुसार धार्ष्टक, क्षत्र और रणधृष्ट का पिता।

भाग० ८।१३।२, ९।१।१२
ब्रह्माण्ड० २।३८।३०, ३।६०।२, ३।६३।२
वायु० ६४।२९, ८८।४
विष्णु० ३।१।३३

धृष्ट (२) — यादव वंश। क्रोष्टु-प्रवर्तित शाखा। कुन्ति का पुत्र और निर्वृति का पिता। किन्तु विष्णु० के अनुसार कुन्ति का पुत्र वृष्णि और वृष्णि का पुत्र निर्वृति है।

वायु० ९५।२९
ब्रह्माण्ड० ३।७०।४०
मत्स्य० ४४।३९
विष्णु० ४।१२।१६

धृष्ट (३) — यादव वंश। अन्धक-शाखा। अन्धक की तीसरी पीढ़ी में। कुकुर का पुत्र।

विष्णु० ४।१४।८

धृष्टकेतु (१) — निमिवंश का १० वाँ राजा। विष्णु० के अनुसार सत्यधृति का पुत्र। किन्तु वायु० में सुधृति का पुत्र माना गया है।

विष्णु० ४।५।१२
वायु० ८९।६

धृष्टकेतु (२) चन्द्र (पौरव) वंश । काशिराज की १८ वीं पीढ़ी में । सुकुमार का पुत्र ।

विष्णु० ४।८।६

धृष्टकेतु (३) चन्द्र (पौरव) वंश । उत्तर-पाञ्चाल शाखा । धृष्टद्युम्न का पुत्र ।

वायु० ६६।२११
विष्णु० ४।१६।१८
भाग० ६।२२।२-३

धृष्टकेतु (४) कैकेय वंश का एक राजा । युधिष्ठिर के अधीन राजाओं में से एक । उसने श्रुत-कीर्ति से विवाह किया जिससे उसके पाँच पुत्र हुए ।

विष्णु० ६।२४।३८

धृष्टद्युम्न चन्द्र (पौरव) वंश का अन्तिम राजा । उत्तर-पाञ्चाल शाखा । द्रुपद का पुत्र और धृष्टकेतु का पिता । कुरुक्षेत्र के युद्ध में उसने पाण्डवों का साथ दिया था । वह पाण्डवों की सेना के एक भाग का सेनापति था । उसके हाथों द्रोण मारा गया ।

विष्णु० ४।१६।१८
वायु० ६६।२११
भाग० ६।२२।२-३

ध्युषिताश्व [व्युषिताश्व] ऐक्ष्वाकु वंश । विष्णु० के अनुसार शंखनाभ (शंखन, वायु०) का पुत्र वायु० में पाठ व्युषिताश्व है ।

विष्णु० ४।४।१०७
वायु० ८८।२०६

ध्रुव

स्वायंभुव मनु का पौत्र। उत्तानपाद का पुत्र। भाग० के अनुसार उत्तानपाद की दो पत्नियों का नाम सुनीति और सुरुचि था। ध्रुव सुनीति का पुत्र था। अपनी सौतेली माता सुरुचि के दुर्व्यवहार से वह तिरस्कृत होकर जंगल में तप करने चला गया। उस समय उसकी अवस्था केवल पाँच वर्ष की थी। मार्ग में उसे नारद से भेंट हुई। नारद ने उसे आशीर्वाद दिया और भगवदाराधना के लिए उसे "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" मंत्र सिखाया। यमुना के तट पर मधुवन जाकर भगवान् का नाम जपते हुए उसने दीर्घकाल तक कठोर तप किया। उसपर भगवान् ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिया और वरदान दिया कि तुम्हें ज्योतिर्लोक प्राप्त होगा। इसके उपरान्त ध्रुव घर लौट आया उसके घर लौटने पर उसकी माता, विमाता, पिता तथा नगरवासियों ने अतिहर्षित होकर ध्रुव का स्वागत किया। राजा उत्तानपाद इस समय तक वृद्ध हो चुके थे। अतः प्रजा की सम्मति से उन्होंने ध्रुव को राजसिंहासन पर बिठाया। ध्रुव का प्रथम विवाह प्रजापति शिशुमार की पुत्री भ्रमि से हुआ। उससे कल्प तथा वत्सर नाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए। ध्रुव की दूसरी पत्नी वायु की पुत्री इला थी जिससे उत्कल नामक पुत्र हुआ। यक्षों द्वारा अपने भाई उत्तम का वध सुन कर उसने यक्षों के नगर पर आक्रमण किया। युद्ध में अनेक यक्षों का संहार हुआ, जिनमें बहुत से निरपराध भी थे। इस प्रकार यक्षों का वध देखकर उसके पितामह मनु ऋषियों सहित स्वयं वहाँ उपस्थित हुए और ध्रुव को यक्षों के संहार करने से रोका। तदनन्तर ध्रुव कुबेर से मिले। कुबेर ने ध्रुव की वीरता, कर्तव्य तथा ज्ञान की प्रशंसा की और ध्रुव को अभीष्ट वरदान दिया कि तुम्हें ईश्वर के चरणों में भक्ति हो। ध्रुव ने ३६००० वर्ष तक राज्य किया। अन्त में ध्रुव अपने पुत्र को राज्य देकर बदरिकाश्रम तप करने चले गये।

भाग० ४८ अ० तथा ९ वाँ १०वाँ ११वाँ १२वाँ १३वाँ अ०

ध्रुवसन्धि

ऐक्ष्वाकु वंश। पुष्य का पुत्र।

वायु० ८८।२०६

विष्णु० ४।४।४७ [ध्रुव० संन्धि० मो० ना०]

२२

ध्रुवाश्व — सूर्य-वंश। सहदेव का पुत्र।

मत्स्य० २७।१६

धूम्राश्व (धूमाक्ष) — सूर्य (मानव) वंश। नाभागो दिष्ट शाखा। वैशाल कुल। पीढ़ीक्रम संख्या २७। सुचन्द्र का पुत्र। भाग० में पाठ धूमाक्ष है और वहां सृञ्जय का पिता कहा गया है। वहां उसे सुचन्द्र का पुत्र न मान कर हेमचन्द्र का ही पुत्र माना गया है। ब्रह्माण्ड० में हेमचन्द्र का पुत्र सुचन्द्र है।

भाग० ९।२।३४
ब्रह्माण्ड० ३।६१।१४

नक्त — स्वायम्भुव मनु के वंश में पृथु का पुत्र। गय का पिता।

वायु० ३३।४७
ब्रह्माण्ड० २।१४।६८
विष्णु० २।१।३८-३९

नन्द (महापद्म) — शिशुनाग-वंशज महानन्दी का उसकी शूद्रा पत्नी से उत्पन्न पुत्र। उसका दूसरा नाम 'महापद्म' भी था। यही राजा नन्द वंश का प्रवर्तक हुआ। वह पृथ्वी के महान् शासकों में था। उसके सुमाल्य आदि आठ पुत्र हुए, जिन्होंने १०० वर्ष तक राज्य किया। नन्द-वंश का विनाशक कौटिल्य था। उस वंश के पश्चात् मौर्य वंश का प्रारम्भ हुआ, जिसका प्रथम राजा चन्द्रगुप्त हुआ। देखिए—चन्द्रगुप्त (१)

भाग० १२।१।८-१२

नन्दिवर्धन (१) — निमि-वंश का चौथा राजा। उदावसु का पुत्र और सुकेतु का पिता।

वायु० ८९।७

भाग० ६।१३।१४
ब्रह्माण्ड० ३।६४।७

नन्दिवर्धन [वर्तिवर्धन] (२) अजक का पुत्र। भाग० के अनुसार राजक का पुत्र। राज्यावधि २० वर्ष। वायु० में पाठ वर्तिवर्धन है।

भाग० १२।१।४
वायु० ९९।२१३

नन्दिवर्धन (३) शिशुनाग-वंश। पीढ़ीक्रम संख्या ६। वायु० के अनुसार उदायी का पुत्र। विष्णु० के अनुसार उदयन का पुत्र और महानन्दि का पिता। भाग० के अनुसार अजय का पुत्र। राज्यकाल ४२ वर्ष। भाग० के अनुसार राज्यावधि ४० वर्ष है।

वायु० ९९।३२०
विष्णु० ४।२४।२
मत्स्य० २७२।१०-११
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१३२
भाग० १२।१।७

नभ ऐक्ष्वाकु वंश। कुश से प्रवर्तित शाखा। नल का पुत्र। पुण्डरीक का पिता

वायु० ८८।२०२
विष्णु० ४।४।४-८
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२०२
मत्स्य० १२।५२

नभस चन्द्र (पौरव) वंश। बृहद्रथ द्वारा प्रवर्तित मगध शाखा। ऊर्व का पुत्र। बराकव का पिता।

वायु० ९९।२२५-२६

नमस्यु

पुरु-वंश। पीढ़ीक्रम ५। प्रवीर का पुत्र। चारुपद का पिता।

भाग० ६।२०।२

नर (१)

पुरु-वंश। दौष्यन्ति भरत की चौथी पीढ़ी में। भाग० के अनुसार मन्यु का पुत्र। वायु० में यह भुवमन्यु का पुत्र माना गया है। सांकृति (वायु०) संकृति (भाग०) का पिता।

विष्णु० ४।१६।६
भाग० ६।२१।१
वायु० ६६।१५६
मत्स्य० ४६।३६

नर (२)

स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में गय* का पुत्र। विराट् का पिता।

*वायु० ३३।५८ (राठानर, नत्र)
ब्रह्माण्ड० २।१४।६८
विष्णु० २।१।३६

नर (३)

सूर्य्य (मानव) वंश। नाभाग नेदिष्ट का कुल। पीढ़ीक्रम संख्या १८। सुधृति का पुत्र।

वायु० ८६।१३
ब्रह्माण्ड० ३।८।८५
भाग० ६।२।२६

नरिष्यन्त

सूर्य्य (मानव) वंश। नाभाग नेदिष्ट कुल। पीढ़ीक्रम संख्या १४। चक्रवर्ती मरुत्त का पुत्र। वायु० के अनुसार मनुत्त का पुत्र। भाग० के अनुसार मरुत्त का पुत्र दम और दम का पुत्र राज्यवर्धन था।

वायु० ८६।१२
विष्णु० ४।१।३०[ब्रह्म० मत्स्य० गो० ना०]
भाग० ६।२।२६
ब्रह्माण्ड० ३।६१।७

नल ऐक्ष्वाकु वंश। कुश से प्रवर्तित शाखा। निषध का पुत्र और नभस का पिता। निषध का पुत्र होने के कारण उसे नैषध भी कहा गया है।

ब्रह्माण्ड० ३।६३—१७३ तथा २०२
वायु० ८८। २६२
मत्स्य० १२।५७

नव चन्द्र-वंश। पश्चिमी आनव शाखा। नवा और उशीनर का पुत्र। उसके नाम से एक राष्ट्र का नवराष्ट्र नाम पड़ा।

वायु० ६६।२०—२२
मत्स्य० ४८।१८ तथा २१
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६ तथा २१

नवरथ यदु-वंश। क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा। ज्यामघ की ११ वीं पीढ़ी में। भीमरथ का पुत्र। ब्रह्माण्ड के अनुसार भीमरथ का पौत्र और रथवर का पुत्र।

विष्णु० ४।१२।३६
मत्स्य० ४४।४१-४२
ब्रह्माण्ड० ३।७०।४४
भाग० ६।२४।४

नवराष्ट्र उशीनर और नवा के पुत्र नव द्वारा स्थापित राष्ट्र का नाम। देखिए, नव।

वायु० ६०।२०—२२
मत्स्य० ४८।२१
ब्रह्माण्ड० ३।७४।२१

नहुष (१) चन्द्र (पौरव) वंश। पीढ़ीक्रम संख्या ३।भाग० के अनुसार आयु का पुत्र। वायु० के अनुसार नहुष की माता का नाम प्रभा था। पितरों की कन्या

विरजा से नहुष के ६ पुत्र हुए—यति, ययाति, सयाति, आयति (आयाति, वायु०), वियति तथा कृति। इनमें ययाति ही राज्य का उत्तराधिकारी हुआ।

विष्णु० ४।१०।११
भाग० ६।१७।१
वही ६।१८।१-२
वायु० ६३।२
वही० ६३।१२।१३

नहुष (७)

मनु के नव पुत्रों में से एक।

वायु० ८५।४

नागवंश

आन्ध्रों के पश्चात् आने वाले राजाओं में नागों का राज्य बहुत महत्वपूर्ण था। इनके दो राज्य थे—मथुरा और चम्पावती। नव नागों ने चम्पावती में राज्य किया तथा सात नागों ने मथुरा में राज्य किया। वायु० में नव नागों के स्थान पर (नवनाका:) पाठ है।

वायु० ९९।३८२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१९४-५,१९७
वायु० ९८।४५३

नाभाग

ऐक्ष्वाकु वंश। श्रुत का पुत्र और भगीरथ का पौत्र। मत्स्य० के अनुसार भगीरथ का पुत्र। अम्बरीष का पिता।

वायु०८८।१७१
विष्णु० ४।४।१८
मत्स्य० १२।४५
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१७०

नाभागो नेदिष्ट, [नाभागोऽरिष्ट,नाभागोदिष्ट] सूर्य-वंश। मनु के नव पुत्रों में से एक। नाभाग नेदिष्ट का पुत्र भलन्दन हुआ। वायु० और ब्रह्माण्ड० में क्रमशः नाभागोऽरिष्ट तथा नाभागोदिष्ट पाठ है।

वायु० ८५।४
वही ८६।२
विष्णु० ४। १। १६
ब्रह्माण्ड० ३।६१।३
भाग० ६।२।२३

नाभि मानव वंश। प्रियव्रत का पौत्र। आग्नीध्र का पूर्वचित्ति नामक अप्सरा से उत्पन्न पुत्र। नाभि का पुत्र ऋषभ हुआ। आग्नीध्र ने नाभि को हिमाह्व नामक दक्षिण वर्ष का राज्य दिया।

विष्णु २। १। १६ तथा १८, २७
वायु० ३३। ३८, ४१ तथा ५०
ब्रह्माण्ड० २।१४।४५, ४८ तथा ५६, ६०
भाग० ५।३ अ०, ४।१—५

नारायण कण्व-वंश। पीढ़ीक्रमसंख्या ३। (भूमिमित्र, भूतिमित्र, वायु०) का पुत्र राज्यावधि १२ वर्ष।

वायु० ६६।३४५
विष्णु० ४।२४।११
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५८
मत्स्य० २७२।३३
भाग० १२।१।२०

निकुम्भ ऐक्ष्वाकु वंश। हर्यश्व का पुत्र।

विष्णु० ४।२।१३
वायु० ८८।६२

भाग० ६।६।२४-२५
मत्स्य० १२।३३

निघ्न (१) ऐक्ष्वाकु वंश। अनरण्य का पुत्र। अनमित्र और रघु का पिता।

मत्स्य० १२।४७

निघ्न (२) यादव वंश। वृष्णि-शाखा। अनमित्र का पुत्र। वृष्णि का पौत्र। निघ्न के दो पुत्र थे—प्रसेन और शत्रजित्। मत्स्य० के अनुसार निघ्न के दूसरे पुत्र का नाम शक्तिसेन था।

विष्णु० ४।१३।८
वायु० ९६। १९
मत्स्य० ४५।३ [कलकत्ता गु० प्र०]
ब्रह्माण्ड० ३।७१।२०

निचक्नु [निकर] पौरववंश। परीक्षित के बाद पाचवीं पीढ़ी में अधिसीम कृष्ण (अधिसोमकृष्ण, मत्स्य०) का पुत्र। वायु० के अनुसार अधिसीमकृष्ण का पुत्र निर्वक्त्र है। मत्स्य० में पाठ निरक्षु और भाग० में नेमिचक्र है। निचक्नु के समय की विशेष घटना के लिए देखिए—कौशाम्बी।

वा० ९९। २७१
विष्णु० ४।२१।३
भाग० ९।२२।३९
मत्स्य० ५०।७९

निमि वैवस्वत मनु वंश। इक्ष्वाकु का पुत्र और विकुक्षि का भाई। यही राजा निमि-वंश का प्रवर्तक हुआ। एक समय निमि ने सत्र आरम्भ कर वशिष्ठ को ऋत्विक् के रूप में वरण किया। किन्तु वशिष्ठ ने कहा कि मैं पहिले यज्ञ के लिए

इन्द्र द्वारा निमन्त्रित हूँ अत मैं पहले उनके यज्ञ में जाऊँगा। तत्पश्चात् मैं तुम्हारा ऋत्विक् बनूँगा। राजा ने उसका कोई उत्तर न दिया। वशिष्ठ यह सोचकर कि राजा ने यह बात स्वीकार कर ली है, इन्द्र के यहाँ यज्ञ के लिए गये। इसी बीच निमि ने यज्ञ के लिए गौतम को अपना पुरोहित बना लिया। वशिष्ठ जब इन्द्र के यज्ञ से लौटकर आये तो गौतम को यज्ञ सञ्चालन करते हुए देखकर बहुत क्रुद्ध हुए और उन्होंने राजा को शाप दिया कि तुम्हारा शरीरपात हो जाय। अध्यात्मविद्या में निपुण निमि ने अपना शरीर त्याग दिया। यज्ञसमाप्ति तक निमि के मृत शरीर को सुगन्धित वस्तुओं में रखा गया जिससे उसमें कोई विकार न आने पावे। सत्रयाग की समाप्ति होने पर मुनिजनों ने देवताओं से प्रार्थना की कि निमि का शरीर पुन. सजीव हो उठे किन्तु निमि ने देहबन्धन स्वीकार नहा किया।

विष्णु० ४।५।१-११
भाग० ६।६।५, ६।१३।१-१३
मत्स्य० ६१।१२-३१

निम्लोचि यादव वंश। सात्वत कुल। भजमान का पुत्र।

भाग० ६।२४।७

निरमित्र (१) पौरव वंश। पाण्डव कुल। नकुल और करेणुमती (कमेरती, वायु०) का पुत्र।

विष्णु० ४।२२।१२
भाग० ६।२२।३२
वायु० ६६।२४७
मत्स्य० ५० ५५

निरमित्र [निरामित्र] (२) पौरव वंश। परान्तित के कुल में दण्डपाणि। (खण्डपाणि, विष्णु०) का पुत्र। वायु० में पाठ निरामित्र है।

विष्णु० ४।२१।१८
मत्स्य० ५०।५७
वायु० ६६।२७७

निरामित्र [निरमित्र] (३) चन्द्र (पौरव) वंश । बार्हद्रथ शाखा । अयुतायु का पुत्र । उसने १०० वर्ष तक राज्य किया । मत्स्य० के अनुसार केवल ४० वर्ष तक राज्य किया । विष्णु० में पाठ निरमित्र है ।

वायु० ९९।२९८
मत्स्य० २७१।२१
भाग० ९।२२।४६
विष्णु० ४।२३।३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।११२

निर्वक्त्र देखिए—निवक्तु ।

निर्वृति (१) यादव वंश । क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा । धृष्टि का पुत्र । विष्णु० के अनुसार वृष्णि का पुत्र ।

वायु० ९५।३९
विष्णु० ४।१२।१६
ब्रह्माण्ड० ३।७०।४०
भाग० ९।२४।३
मत्स्य० ४४।३९-४०

निर्वृति [नृपति] (२) चन्द्र (पौरव) वंश । बार्हद्रथ शाखा । धर्मनेत्र (सुनेत्र, मत्स्य०) के बाद निर्वृति का उल्लेख है । वायु० में पाठ नृपति है । राज्यावधि ५८ वर्ष ।

वायु० ९९।३०४
मत्स्य० २७१।२६

निवात यादव वंश । वृष्णि-शाखा । शूर का पुत्र ।

वायु० ९६।१३९
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१३८

निशठ [निशत]

यादव वंश। वृष्णि-शाखा। बलराम और रेवती का पुत्र। वायु० में पाठ निशत है। वह वहाँ बलराम का पौत्र कहा गया है।

विष्णु० ५।२५।१६
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१६६
वायु० ६६।१६४

निषध (१)

मणिधान्यों का एक जनपद।

वायु० ६६।३८४

निषध (२)

ऐक्ष्वाकु वंश। अतिथि का पुत्र और नल का पिता। वायु० तथा भाग० के अनुसार नभ का पिता।

वायु० ८८।२०१
भाग० ६।१२।१
मत्स्य० १२।५२
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२०१-२

निषध (३)

आन्ध्र, कोसल और विदूरपतियों के समकालीन राजगण।

भाग० १२।१।५२

निषाद (१)

जंगल में रहने वाली एक जाति। इस जाति की उत्पत्ति का भाग० एवं विष्णु० में अत्यन्त मनोरंजक वर्णन है। मृत राजा वेन की जंघा से ऋषियों द्वारा मंथन से एक बौना काला पुरुष उत्पन्न हुआ, जिसके नेत्र लाल तथा केश ताम्रवर्ण के थे। उसके यह कहने पर कि मैं क्या करूँ, ऋषियों ने कहा "निषीद" (बैठो) इसीलिए वह निषाद कहलाया और

उनके वंशज नैषाद (निषादा, विष्णु०) हुए, जो लूटपाट आदि क्रूर कर्मों में रत होकर पर्वतों एवं वनों में रहने लगे। विष्णु० में तो उन्हें स्पष्टरूप से विन्ध्यपर्वत के निवासी (विन्ध्यशैलनिवासिनः) कहा गया है।

भाग० ४।१४।४२-४६ [बम्ब० संस्क० नि० सा०]
विष्णु० १।१३।३५। ३६ [बम्ब० संस्क० गी० ना०]

निषाद (२) यादव वंश। वृष्णि-शाखा। वसुदेव का पुत्र। वह प्रथम धनुर्धर कहा गया है। ब्रह्माण्ड० में उसका दूसरा नाम जरा है।

वायु० ६६।१८४
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१८७

राजा नाम निषादोऽसौ प्रथम स धनुर्धरः। वायु०
जरा नाम निषादोऽसौ प्रथम स धनुर्धरः। ब्रह्माण्ड०

नीति देवासुर संग्राम में जब देवताओं ने अनेक उपायों से असुरों का क्षय किया तो दैत्यों के गुरु शुक्र ने उनसे कहा—"इन द्वादश संग्रामों में देवताओं ने नीति निर्दिष्ट उपायों द्वारा अनेक दैत्यों का संहार किया है, अतः हमें भी नीति का अवलम्बन लेना चाहिए। मैं महेश्वर की आराधना द्वारा उन्हें प्रसन्न करूँगा और उनसे नीति-मंत्र प्राप्त करूँगा[1]। नीति के सम्बन्ध में उपदेश देते हुए बृहस्पति ने इन्द्र को बतलाया कि नीति साम से प्रारम्भ होती है और उसके अन्य अंग हैं—भेद, दान, और दण्ड। किन्तु इनका प्रयोग देश, काल और रिपु की योग्यता के अनुसार होता है। असुरों के लिए साम, भेद, और दान उपयुक्त नहीं है। दण्ड ही एकमात्र उपाय है, जिसका प्रयोग उनके प्रति किया जाना चाहिए[2]।

१—मत्स्य० ४७।८२
वायु० ६७।१००-१२१
२—मत्स्य० १४८।६५-७१

नीप

चंद्र (पौरव) वंश । दक्षिण पाञ्चाल-शाखा । पीढ़ीक्रम संख्या १० । पार का पुत्र । नीप के १०० पुत्र थे । वे सब नीप ही कहलाए ।

वायु० ९९।१७४
विष्णु० ४।१९।११
मत्स्य० ४९।५२
भाग० ९।२१।२४-२५
वायु० ९९।१७५
मत्स्य० ४९।५९

नील (१)

यदु-वंश । यदु के पाँच पुत्रों में से एक ।

ब्रह्माण्ड० ३।६९।२
मत्स्य० ४३।७
वायु० ९४।२

नील (२)

चंद्र (पौरव) वंश । अजमीढ और नीलिनी का पुत्र । वायु० के अनुसार सुशान्ति का पिता । भाग० के अनुसार शान्ति का पिता ।

वायु० ९९।१९४
विष्णु० ४।१९।१५
मत्स्य० ५०।१
भाग० ९।२१।३०
मत्स्य० ४९।७८
वायु० ९९।१९२

नृग (१)

ऐक्ष्वाकु वंश । वैवस्वत मनु के ९ पुत्रों में से एक । भाग० में वह इक्ष्वाकु का तनय कहा गया है । वायु० में पाठ नहुष है ।

ब्रह्माण्ड० ३ । ३८ । ३०
वायु० ८५।४
भाग० १०।६४। १०-३

वही १० ३७।१७
वही १२।३।१०

नृग (२)

चन्द्र-वंश । पश्चिमी आनव शाखा । उशीनर और नृगा का पुत्र। वायु० के अनुसार उशीनर का मृगा से मृग नामक पुत्र उत्पन्न हुआ ।

वायु० ६६।२०
ब्रह्माण्ड० ३।७४ १६
मत्स्य० ४८।१८।२०

नृचक्षु

पौरव वंश । परीक्षित के पश्चात् १३ वीं पीढ़ी में ऋच का पुत्र । मत्स्य० के अनुसार सुनीथ का पुत्र और सुखीबल (सुखबाल, विष्णु०) का पिता ।

विष्णु० ४।२१।३
मत्स्य० ५०।८२

नृपञ्जय (१)

चन्द्र (पौरव) वंश । द्विमीढ शाखा । सुवीर का पुत्र और बहुरथ का पिता । मत्स्य० के अनुसार वह सुनीथ का पुत्र और विरथ का पिता है ।

विष्णु० ४।१६।१५
वायु० ६६।१८३
मत्स्य० ४६।७६ [कलकत्ता, पु० प्र०]

नृपञ्जय (२)

पौरव (वंश)। परीक्षित के बाद १८ वाँ राजा । मेधावी का पुत्र । मृदु का पिता । भाग० के अनुसार वह दुर्व का पिता था ।

विष्णु० ४।२१।३
भाग० ६।२२।४२

नेमिकृष्ण — आन्ध्र-वंश। आपादबद्ध के बाद आने वाले एक राजा का नाम। राज्यावधि २५ वर्ष।

वायु० ९९।३५२

नेमिचक्र — पौरव वंश। परीक्षित के पश्चात् आनेवाले राजाओं में असीमकृष्ण का पुत्र।

भाग० ९।२२।३९-४०

नैषध (१) — एक जनपद का नाम।

ब्रह्माण्ड० १।४।५३

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१९६

नैषध (२) — नल-वंशप्रसूत राजगण। इस वंश के ९ राजा हुए "नैषधाः पार्थिवाः"।

वायु० ९९।३७६

विष्णु० ४।२४।१७ [वम्ब० संस्क गो० ना०]

नैषादि — एकलव्य का दूसरा नाम। वृष्णि-वंश। ब्रह्माण्ड० के अनुसार अनाधृष्टि का अश्मकी से उत्पन्न पुत्र। एकलव्य निषादों के द्वारा पाला गया इसीलिए वह नैषादि कहलाया।

वायु० ९६।१८७

ब्रह्माण्ड० ७१।१९०

न्यग्रोध — यादव वंश। अन्धकों की कुकुर-उपशाखा। उग्रसेन का पुत्र। कंस का भाई।

भाग० ९।२४।२४

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१३३

मत्स्य० ४४।७४

वायु० ९६।१३१-१३२

विष्णु० ४।१४।५

पञ्चमुकुट एक वानर-प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३६

पञ्चक एक जाति। इस जाति के लोगों को निरम्भाणि ने राजा बनाया।

वायु० ९९।२७८

पञ्चाल (१) [पञ्चाला:] शिशुनागों के समकालीन २५ राजा।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१३६

पञ्चाल (२) एक देश का नाम। कंस राजा जिस समय अपने सहायक प्रलम्बासुर आदि दैत्य राजाओं के साथ यदुवंशियों का संहार करने लगा, उस समय ये लोग भयभीत होकर जिन कुरु, केकय आदि देशों में बसे, उनमें पञ्चाल देश भी था[1]। उग्रायुध ने पृषत के पितामह नील नामक पञ्चाल के राजा का संहार किया[2]।

१—भाग० १०।२।५३
२—वायु० ९९।१९२

पञ्चाल (३) अर्कीमत्र भर्म्यश्व के पांच पुत्र मुद्गल, यवीनर, बृहदिषु, काम्पिल्य और सृञ्जय नाम के थे। ये पांच पुत्र ५ राज्यों (विषयों) के शासन में समर्थ थे इसलिए उनकी साम्प्रदायिक[1] संज्ञा पञ्चाल हुई—(पञ्चालसंज्ञिताः)। वायु० में ये नील के पुत्र माने गये हैं और वहां सृञ्जय के स्थान में सृञ्जय तथा यवीनर के स्थान में भिन्न नाम हैं[2]।

१—भाग० ९।२१।३२-३३
२—वायु० ९९।१९५-९८

पटुश्रव चेदि-वंश। दमघोष का पुत्र।

वायु० ९६।१५९

पटुमान् आंध्र वंश। मेघस्वाति का पुत्र। राज्यावधि १८ वर्ष। ब्रह्माण्ड० के अनुसार राज्यावधि २४ वर्ष है।

विष्णु० ४।२४।१२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६४

पतंग (१) प्लक्षद्वीप के निवासियों की एक जाति।

भाग० ५।२०।४

पतंग (२) देवकी का पुत्र जो कंस द्वारा मारा गया।

वायु० १०'८५।५१-५६

पद्गम (पद्गमाः) विंध्यक्षेत्र में रहनेवाली एक जाति (जनपद ?)।

मत्स्य० ११४।५३

पद्मावती नाग-वंशज विश्वस्फूर्जि (पुरंजय) नामक राजा की राजधानी।

भाग० १२।१।३५-३७

पयःकीर्ति एक वानर प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२४०

परमेक्ष [परपक्ष] पौरव वश। ययाति का पौन्त्र। अनु का तीसरा पुत्र। वायु० में पाठ परपन्न है।

विष्णु० ४।१८।१
वायु० ९९।१३

परमेष्ठिन् स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वश में इन्द्रद्युम्न का पुत्र। भाग० के अनुसार देवद्युम्न का धेनुमती से उत्पन्न पुत्र।

भाग० ५।१५।३
विष्णु० २।१।२८
वायु० ३३।४५
ब्रह्माण्ड० २।१४।६५

परक्षर नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश में रहनेवाली एक जाति तथा जनपद।

वायु० ४५।१२६

पराक्ष (परोक्ष) अनु के तीन धार्मिक पुत्रों में से एक। भाग० में पाठ परोक्ष है।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६
भाग० ९।२३।२

परशु यादव वंश। वृष्णि-शाखा। कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र।

मत्स्य० ४७।१९

परञ्जय [पुरञ्जय] ऐक्ष्वाकु वंश। पीढ़ीक्रम ३। शशाद का पुत्र विष्णु०। वायु० में

शशाद का पुत्र ककुत्स्थ है। देखिए-शीर्षक ककुत्स्थ।

विष्णुपु० ४।२।६ १२
भाग० ६।६।१२
वायु० ८८।२४—२५

परावृत्

यादव वंश। क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा। पीढ़ीक्रम ६। रुक्मकवच का पुत्र। परावृत् के पाँच बड़े वीर पुत्र थे जिनमें ज्येष्ठ पुत्र रुक्मेषु गद्दी पर बैठा। मत्स्य० तथा भाग० में परावृत् का नाम नहीं आता।

वायु० ९५।२७—२८
ब्रह्माण्ड० ३।७०।२८
मत्स्य० ४४।२७
भाग० २३।३४
विष्णु० ४।१२।२

परिप्लव

सुखावल का पुत्र। सुनय का पिता।

विष्णु० ४।२१।३ [बम्ब० संस्क० गो० मा०]

परिघ [पालित]

यादव वंश। क्रोष्टु द्वारा प्रवर्तित शाखा। मत्स्य० तथा वायु० के अनुसार रुक्मकवच का पुत्र परिघ है। उसके पिता ने परिघ और उसके भाई हरि को विदेह में स्थापित किया—(विदेहेऽस्थापयत् पिता)। सम्भवतः उसने वहां उन्हें शासक नियुक्त किया। विष्णु० में पाठ पालित है।

ब्रह्माण्ड० ३।७०।२६
मत्स्य० ४४।२८-२९
विष्णु० ४।१२।२
वायु० ९५।२८

परीक्षित (१)

अभिमन्यु और उत्तरा का पुत्र। परीक्षित जब गर्भस्थ थे तभी अश्वत्थामा ने उनपर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया, किन्तु श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उनकी रक्षा की। युधिष्ठिर ने हस्तिनापुर में परीक्षित का राज्याभिषेक किया। पाण्डवों के स्वर्गारोहण के पश्चात् परीक्षित धर्मानुसार पृथ्वी का शासन करने लगे। उन्होंने उत्तर की पुत्री इरावती से विवाह किया, जिससे उनके जनमेजय आदि चार पुत्र हुए। जिस समय राजा परीक्षित कुरुजांगल में थे उस समय उन्होंने सुना कि मेरे राज्य में कलियुग का प्रवेश हो रहा है। यह जानकर परीक्षित ने धनुषबाण लेकर सुसज्जित रथ पर सवार होकर अपनी विपुल सेना के साथ दिग्विजय के लिए प्रस्थान किया। उन्होंने भद्राश्व, केतुमाल, भारत, उत्तरकुरु, तथा किम्पुरुष आदि वर्षों के राजाओं को जीता। अन्त में उन्होंने कलियुग की याचना पर उसके निवास के लिए असत्य, मद, काम, वैर तथा रजोगुण, ये पाँच स्थान दिए।

भाग० १।१२।१,७
वही १।१२।१२
वही १।१५।३८, १।१६।१-२, १।१६।१०
वही० १।१७।२८-३०

परीक्षित (२)

पौरव वंश का ३२ वा राजा। कुरु का पुत्र।

विष्णु० ४।१६।१६
वायु० ६६।२१८
भाग० ६।२२।४ तथा ८६
मत्स्य० ५०।२३

पल्लव

दक्षिण भारत की एक जाति।

मत्स्य० ११४।४०
ब्रह्माण्ड० २।१६।४७

पवन (पवनाः)

एक जाति (म्लेच्छजातियों में से एक)।

ब्रह्माण्ड० ३।७३।१०८

पह्लव

एक जाति। वायु० में उन्हें पारदों के साथ क्षत्रिय कहा गया है। सगर ने अपनी दिग्विजय में उन्हें पराजित किया था। तदनन्तर शक, यवन, काम्बोज, पारद, पह्लव आदि जातियों ने सगर के हाथों वध के भय से उनके कुलगुरु वशिष्ठ की शरण ली। वशिष्ठ के कहने पर सगर ने उन्हें छोड़ दिया और गुरु के आदेशानुसार उसने उन्हें धर्महीन कर दिया तथा उनके पृथक् पृथक् वेष भी नियत कर दिये। पह्लवों को श्मश्रुधारी बना दिया—'पह्लवाः श्मश्रुधारिणः।'

वायु० ८८।१२२ १२८, १३८ १४२
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१७०

पाक

एक असुर जो देवासुरसंग्राम में इन्द्र और मातलि से भिड़ा और मारा गया।

भाग० ७।२।४, ८।११।१६, २२, २८

पाकशासन

इन्द्र का नाम। वर्षा का स्वामी। वायु० में कहा गया है कि असुरों के राजा प्रह्लाद के बाद त्रैलोक्य का साम्राज्य इन्द्र के हाथ में रहा।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।६६
मत्स्य० ७।५१
वायु० ८८।८५
वही ६७।८७-९२

पाण्डव

पाण्डु के पुत्र पाण्डव कहलाये। देखिए—पाण्डु।

पाण्डु

पौरव वंश। विचित्रवीर्य की स्त्री अम्बालिका से द्वैपायन व्यास द्वारा नियोगजन्य पुत्र। पाण्डु ने मृगया करते हुए मृगरूप धारी मैथुन-प्रवृत्त एक ऋषि को बाण से मारा था। उस ऋषि ने शाप दिया कि तुम्हारी भी इसी

प्रकार मृत्यु होगी। शापवश वह स्त्री के संभोग से डरता था। उसके कोई सन्तान नहीं थी। अतः उसने अनपत्य दोष को मिटाने के लिए कुन्ती से पुत्रोत्पादन करने के लिए कहा। उसकी आज्ञानुसार कुन्ती ने धर्म से युधिष्ठिर, मरुत से भीमसेन और इन्द्र से अर्जुन को जन्म दिया। अश्विनी-कुमारों द्वारा दो पुत्र उसकी दूसरी स्त्री माद्री से भी हुए। उन दोनों के नाम नकुल और सहदेव थे। ये पाँच पुत्र पाण्डु की सन्तान होने के कारण (पाण्डोरपत्यं पुमान्) पाण्डव कहलाये।

विष्णु० ४।१४।१०-११
वही ४।२०।११
महा० आ० अ० ६०
वायु० ६६।२५०
वही ६६।२४२-२४३
मत्स्य० ४६।८, ४७-५०
भाग० १।४।७, ६।२२।२५, तथा २७।२४।३६

पाण्ड्य (१)

आक्रीड (वायु० के अनुसार जनापीड) के चार पुत्रों में से एक। पाण्ड्य के नाम से पाण्ड्य जनपद का नाम पड़ा।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।६
मत्स्य० ४८।५

पाण्ड्य (२)

एक जनपद तथा वहाँ के निवासियों का नाम। कालिदास ने रघुवंश० में पाण्ड्य देश के राजाओं के अर्थ में 'पाण्ड्य' शब्द का प्रयोग किया है—
"तस्यामेव रघो पाण्ड्याः प्रतापं न विषेहिरे।"*
जनपद के नामकरण के लिए। देखिए—पाण्ड्य (१)

*रघुवंश० ४।४६

पाञ्चजन्य

श्रीकृष्ण के शंख का नाम[१]। युद्ध के आरम्भ में युद्ध-क्षेत्र में यह शंख बजाया जाता था[२]।

१—विष्णु० ५।२१।२६
भाग० ८।४।१६
२—गीता ७।१५

पाञ्चालाधिपति पञ्चालदेश का राजा। मत्स्य० के अनुसार उसने शुक की पुत्री कृत्वी के साथ विवाह किया, किन्तु यहाँ उस राजा का कोई नाम नहीं दिया गया है[१]। वायु० में उल्लेख है कि पञ्चाल का एक नील नामक राजा कृत द्वारा मारा गया[२]। किन्तु यह ठीक नहीं कहा जा सकता कि मत्स्य० में विहित राजा नील ही था।

१—मत्स्य० १५।६
२—वायु० ९९।१८९-१९२

पारद (१) [पारदाः] उत्तर की एक जाति। इनका नाम विष्णुयशस् द्वारा अनेक अधार्मिक म्लेच्छ जातियों के संहार के वृत्तान्त के अन्तर्गत आता है। सगरने जब शक, यवन, काम्बोज, पह्लव, पारद आदि जातियों का संहार करने का निश्चय किया तो वे राजा सगर के कुलगुरु वशिष्ठ के पास गये और उनसे प्राणभिक्षा-मांगी। सगरने पारदों को केशरहित (मुक्तकेशाः) बना दिया तथा उन्हें धर्म से भी वञ्चित कर दिया। वायु० में उन्हें उस स्थान पर क्षत्रिय कहा गया है[१]। "मनुस्मृति में भी पारद क्षत्रिय माने गये हैं, किन्तु धार्मिक कृत्यों के छोड़ने से वे क्षत्रिय जाति से च्युत हो गये। महाभारत में एक स्थान पर उन्हें आभीरों के साथ सम्बन्धित किया गया है। पार्जिटर के अनुसार पारद जाति उत्तर-पश्चिम में रहने वाली थी"[२]।

१—विष्णु० ४।३।१८-२१
वायु० ८८।१३१-१४३
मत्स्य० १२१।४५
२—देखिए, द० र० पाटिल-क० हि० पृ० ३३

पारद (२) एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।४९

पार्थ

पुरु-वंश। कुरु-शाखा। अर्जुन का दूसरा नाम। पाण्डु की स्त्री पृथा (कुन्ती) से इन्द्र द्वारा उत्पन्न। पृथा का पुत्र होने के कारण वह पार्थ कहलाया। सुभद्रा से उसका अभिमन्यु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। देखिए-शीर्षक 'अर्जुन'।

विष्णु० ५।१२।१६
वायु० ६६।१७६, ६८।२४६
मत्स्य० ५०।४६, २४६।६२ [कलकत्ता, गु० प्र०]
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७८

पार्थसारथि

कृष्ण का दूसरा नाम। महाभारत युद्ध में सारथि का कार्य करने के कारण उनका यह नाम पड़ा।

ब्रह्माण्ड० ३।३६।३८

पार्थश्रवा (पार्थश्रवस्)

यादव वंश। वंशक्रम संख्या ६। पृथुश्रवा का पुत्र। हरिवंश तथा वायु० में पार्थश्रवस् नाम मिलता है जो सम्भवतः पृथुश्रवा के पुत्र होने के कारण है। विष्णु० में पृथुश्रवा के पुत्र का वास्तविक नाम तम है।

हरि०वं० १।३६।५
वायु० ६५।२१-२२
विष्णु० ४।१२।२

पार (१) [पौर]

चन्द्र (पौरव) वंश। द० पाञ्चाल शाखा। पीढ़ीक्रम संख्या ६। पृथुसेन (पृथुषेण, वायु०) का पुत्र। नीप का पिता। भाग० में पार को रुचिराश्व का पुत्र और पृथुसेन का पिता माना गया है। मत्स्य० में पाठ पौर है।

वायु० ६६।१७४
विष्णु० ४।१६।११
मत्स्य० ४६।५२ [कलकत्ता, गु० प्र०]
भाग० ६।२१।२४-२५

पार (२) चंद्र (पौरव) वंश । पीढ़ीक्रम संख्या १२ । पाञ्चाल शाखा । समर का पुत्र ।

वायु० ९९।१७७

विष्णु० ४।१९।१२

मत्स्य० ४९।५४

पारशव (पारशवाः) पारशव जाति के राजा ।

मत्स्य० ५०।७५

पार्ष्णिग्राह पार्ष्णिग्राह का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ "पार्ष्णिं गृह्णाति" (= पैर की एड़ी को पकड़ने वाला) होता है, जिसका लाक्षणिक अर्थ हुआ पीछे चलने वाला अर्थात् सहायक । भाग०, मत्स्य० तथा ब्रह्माण्ड० में इस शब्द का प्रयोग सामान्यतः सहायक अर्थ में ही हुआ है । भाग० में इसका प्रयोग पौण्ड्रक के सहायक काशिराज के लिए हुआ है, जो पौण्ड्रक को कृष्ण के विरुद्ध युद्ध में सहायता देने के लिए सेनासहित उसके पीछे आया था "तस्य काशिपतिर्मित्रं पार्ष्णिग्राहोऽन्वयात्[1] । मत्स्य० में राजा की यात्रा (दिग्विजय) के प्रसग में उक्त शब्द का प्रयोग सहायक सैन्यबल के अर्थ में हुआ है[2] । ब्रह्माण्ड० में तो पार्ष्णिग्राह शब्द स्पष्टरूप से सहायक अर्थ में गृहीत है "उशनास्तस्यजग्राह पार्ष्णिं··· । अर्थात् उशना उसका (बृहस्पति का) सहायक हुआ[3] । उसके बाद ही दूसरी पंक्ति में "तेनस्नेहेन भगवान्रुद्रस्तस्यबृहस्पतेः । पार्ष्णिग्राहोऽभवद् वः प्रगृह्याजगवं धनुः" ॥ अर्थात् भगवान् रुद्र अजगव धनुष लेकर बृहस्पति के सहायक हुए[4] । सामान्यतः पार्ष्णिग्राह शब्द सहायक अर्थ में गृहीत होने पर भी कहीं कहीं स्थिति-विशेष से पीछे से आक्रमण करने वाला राजा या सैन्य-दल के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है । सम्भवतः इसी दूसरे अर्थ में अमरसिंह ने इस शब्द को ग्रहण किया है " पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः."[5] है । इसी द्वितीय अर्थ में पार्ष्णिग्राह शब्द का प्रयोग श्रीहर्ष ने अपने प्रसिद्ध दर्शन ग्रंथ "खण्डन-खण्डखाद्य" में द्वैतवादियों के खण्डन के प्रसंग में दृष्टान्तरूप में किया है—

सुदूरधावनश्रान्ता बाधबुद्धिपरम्परा । निवृत्तमद्वयाम्नाये पार्ष्णिग्राहैर्विनीयते[6] ॥ अर्थात् जिस प्रकार लोक में कोई जिगीषु, शत्रु का पीछा करते हुए दूर जाकर शत्रु सेना को जीत लेता है और फिर श्रान्त हो जाता है, इतने ही में पीछे से वह पार्ष्णिग्राहों द्वारा पुनः पराजित कर दिया जाता है, उसी प्रकार पार्ष्णिग्राहरूप अद्वैतपरक शास्त्र (श्रुति) द्वारा द्वैत का बाध (पराजय) हो जाता है ।

१—भाग० १०।६६।१२
२—मत्स्य० ३६।२-४ [कलकत्ता यु० प्र०]
३—ब्रह्माण्ड० ३।६५।२१
४—वही ६।१८।१-२
५—अमरकोष २।८ क्षत्रिय०।१०। पृ० १७४ [बनारस संस्क०]
६—खण्डनखण्डखाद्य १ प० ८, पृ० ६७ [बनारस संस्क०]

पारिपात्र [पारियात्र]

ऐक्ष्वाकु वंश । कुश के पश्चात् ११वाँ राजा । अहीनगु (अनीह, भाग०) का पुत्र । ब्रह्माण्ड० तथा भाग० में पाठ पारियात्र है ।

वायु० ८८।२०४
विष्णु० ४।४।४८
भाग० ९।१२।२
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२०४

पालक

प्रद्योत-वंश के बाद होने वाला अवन्ति का राजा । राज्यावधि २४ वर्ष ।

वायु० ९९।११२
विष्णु० ४।२४।२
भाग० १२।१।३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१२५

पाशुपतम्

एक अप्रतिहतगति वाला अस्त्र ।

मत्स्य० १११।२५
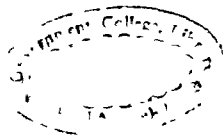
पार्श्वमर्दी बलराम का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१६६

पितल एक जनपद का नाम।

वायु० ४४।१५

पीडिक (पीडिकाः) एक उदीच्य जनपद।

वायु० ४५।११६

पुण्डरीक ऐक्ष्वाकु वंश। नभस् का पुत्र। क्षेमधन्वा का पिता।

वायु० ८८।२०२
मत्स्य० १२।५२
भाग० ६।१२।१

पुनर्वसु अंधक-वंश की ८ वीं पीढ़ी में अभिजित् (दरिद्योत, भाग० नल, मत्स्य०) का पुत्र। उसने पुत्रप्राप्ति के लिए अश्वमेध यज्ञ किया। यज्ञ के फलस्वरूप उसके एक पुत्र और एक पुत्री हुई। पुत्र का नाम आहुक और पुत्री का का नाम आहुकी था।

विष्णु० ४।१४।४
वायु० ९६।११८
ब्रह्माण्ड० ३।७१।११६
भाग० ६।२४।२०-२१
मत्स्य० ४४।६४-६६

पुण्ड्र (१)

एक वानर प्रमुख ।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३७

पुण्ड्र (२)

वसुदेव के सुगन्धी से उत्पन्न दो पुत्रों में से एक, जो राजा हुआ ।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१८६
वायु० ९६।१८२

पुण्ड्र (३)

बलि का क्षेत्रज पुत्र, जो बलि की स्त्री सुदेष्णा से दीर्घतमस् द्वारा उत्पन्न हुआ उसी के नाम से पुण्ड्र जनपद का नाम भी पड़ा ।

वायु० ९९।२८-३४

पुण्ड्र (४)

एक प्राच्य जनपद । देखिए, पुण्ड्र (३)

मत्स्य० ११४।४५
ब्रह्माण्ड० २।१६।५४

पुण्यवान्

कुरुवंश । वृषभ का पुत्र । पुण्य का पिता ।

मत्स्य० ५०।२९-३०

पुण्य

देखिए, पुण्यवान् ।

भाग० ५०।२९-३०

पुरञ्जय (१)

चंद्र (पौरव) वंश । आनव शाखा । पीढ़ीक्रम ५ । सृञ्जय का पुत्र । जनमेजय का पिता ।

विष्णु० ४।१८।२

वायु० ९९।१४

मत्स्य० ४४।१२

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१४-१५

पुरञ्जय (२) पौरव वंश। परीक्षित के पश्चात् आने वाले राजाओं में मेधावी का पुत्र।

मत्स्य० ५०।८५

पुरञ्जय (३) बार्हद्रथ वंश का अंतिम राजा। उसके मंत्री शुनक ने अपने स्वामी को मार कर अपने पुत्र को राज्यसिंहासन पर बैठाया और प्रद्योत वंश की नींव डाली।

भाग० १२।१।२-३ देखिए, प्रद्योत

पुरञ्जय (४) विन्ध्य-शक्ति का पुत्र और रामचन्द्र का पिता।

विष्णु० ४।२४।७

पुरञ्जय (५) विश्वस्फूर्जि का दूसरा नाम। आन्ध्रों के बाद आने वाले मगध के राजाओं में उसका उल्लेख है। उसने पुलिन्द आदि अन्य वर्णों (जातियों) को राजा बनाया। वह अत्यन्त बलवान् राजा था। क्षत्रियों का नाश कर उसने पद्मावती में राज्य किया—

मागधानां तु भविता विश्वस्फूर्जिः पुरञ्जयः।
करिष्यत्यपरोवर्णान् पुलिन्दयदुमद्रकान्॥
प्रजाश्चाब्रह्मभूयिष्ठाः स्थापयिष्यति दुर्मतिः॥
वीर्यवान् क्षत्रमुत्साद्य पद्मावत्यां स वै पुरि॥

भाग० १२।१।२६—२७
वायु० ९९।२७७—२८१
विष्णु० ४।२४।१८
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१९० —१९३

पुरु (१) पौरव वंश का प्रवर्तक। चाक्षुष मनु और नड्वला का पुत्र।

विष्णु० १।१३।५
भाग० ४।१३।१६
वही १।१।२, १।३।१७

पुरु (२) यादव वंश। वृष्णि-शाखा। वसुदेव और सहदेवा का पुत्र।

भाग० ९।२४।५२-५३

पुरु (३) चन्द्र-वंश। ययाति और शर्मिष्ठा का पुत्र। असुरराज वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा से ययाति द्वारा पुत्रोत्पत्ति का समाचार देवयानी ने अपने पिता शुक्र को सुनाया। शुक्र ने ययाति को शाप दिया। शुक्र के शाप से जराक्रान्त ययाति ने अपने पाँचों पुत्रों से अपनी आयु देने के लिए कहा। अन्य चार पुत्रों ने ययाति की वृद्धावस्था को अंगीकार नहीं किया। ययाति ने उन्हें शाप दिया। किन्तु पुरु ने अपने पिता का बुढ़ापा अपने ऊपर ले लिया और अपनी आयु पिता को दे दी। अच्छी तरह आयु का उपभोग करने के पश्चात् ययाति ने पुरु की आयु उसे लौटा दी और प्रसन्न होकर उसे अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। पुरु मध्य देश का राजा हुआ।

विष्णु ४। १०। २ तथा १६
वायु० ९३। ५५—६० तथा ७४—७९
भाग० ९।१८।३३—४५
वही ९।१९।२१

मत्स्य० २४।२८-३१
ब्रह्माण्ड० ३।६८।५५—६०
वही ३।६८।७४—७९

पुरुकुत्स

ऐक्ष्वाकु वंश। पीढ़ीक्रम २०। मान्धाता और बिन्दुमती का पुत्र। नर्मदा से उसके त्रसदस्यु नामक पुत्र हुआ। वह अपने तप के कारण क्षत्रिय से ब्राह्मण बना अतः उसे क्षत्रोपेतद्विजाति भी कहा गया है। विष्णु० में कहा गया है कि पुरुकुत्स ने भृगु से नर्मदा के किनारे विष्णुपुराण सुना था।

भाग० ९।६।३८ तथा ९।७।२—३
विष्णु० ४।३।७, ४।२।१६, १।२।६
वायु० ७८।७२।७४, २।२६—७५
मत्स्य० १२।३५, १४५।१०२
ब्रह्माण्ड० ३।६३।७२, ६६ तथा ८७

पुरुजानु [पुरुज]

चंद्र (पौरव) वंश। उत्तरपाञ्चाल शाखा। पीढ़ीक्रम संख्या ३। सुशान्ति का पुत्र और चक्षु का पिता। भाग० में पाठ पुरुज है और वह अर्क का पिता माना गया है।

विष्णु० ४।१९।१५
वायु० ९९।१९५
भाग० ९।२१।३१

पुरुजित् (१) [ऋतुजित्]

निमि-वंश। अज का पुत्र। अरिष्टनेमि का पिता। विष्णु० के अनुसार पाठ ऋतुजित् है, किन्तु वह वहां अञ्जन का पुत्र है।

भाग० ९।१३।२२-२३
विष्णु० ४।५।१२

पुरुजित् (२) यादव वंश। वृष्णि-शाखा। आनक (वसुदेव) तथा कङ्का का पुत्र।

विष्णु० ९।२४।४१

पुरुद्वान् ज्यामघ की २०वीं पीढ़ी में पुरुवश का पुत्र। विष्णु० में मधु के बाद अनवरथ और अनवरथ के बाद पुरुद्वम् आता है।

भाग० ९।२३।५
वायु० ९५।४६
मत्स्य० ४४।४४
ब्रह्माण्ड० ३।७०।४७

पुरुमीढ पुरुवंश। हस्तिन् के तीन पुत्रों में से एक।

वायु० ९९।११९
विष्णु० ४।१९।१०
भाग० ९।२१।२१
मत्स्य० ४९।४२

पुरुवश यादव वंश। क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा। मधु का पुत्र। पुरुद्वान् का पिता।

वायु० ९५।४६

पुरुहोत्र क्रोष्टु-विनिर्गत यदुवंश की शाखा। ज्यामघ की पीढ़ी में २१वां राजा। अनुरथ का पुत्र। आयु का पिता। भाग० के अनुसार पुरुहोत्र अनु का पुत्र था। विष्णु० के अनुसार वह अंश का पिता था।

विष्णु० ४।१२।२६
भाग० ९।२४।१९

पुरुद्वह [कुरुद्वह] यादव वंश। पुरुद्वान् का और भद्रवती का पुत्र। हरिवंश० में पाठ कुरुद्वह है।

हरिवंश० १।३६।२६
वायु० ६५।४०४
ब्रह्माण्ड० ३।७०।४७

पुरूरवा सोमवंश का द्वितीय पुरुष। बुध और इला का पुत्र। वह अत्यन्त सुन्दर, दानशील तथा अनेक यज्ञों का करने वाला था। उसने सौ अश्वमेध किये। वह सातों द्वीपों का स्वामी माना जाता है। इन्द्र ने भी उसे आधा आसन दिया। वह धर्म, अर्थ और काम का एक समान पालन करने वाला था। एक समय धर्म,अर्थ और काम पुरूरवा के चरित्र की परीक्षा के लिए आये। उन्होंने यह जानना चाहा कि हम तीनों को वह समानरूप से देखता है या नहीं। उसका विवाह स्वर्गलोक की अप्सरा उर्वशी से हुआ। मित्रा-वरुण के शापवश उर्वशी को मर्त्यलोक में वास करना था। पुरूरवा के रूप पर मुग्ध होकर उर्वशी ने उसे पति-रूप में वरण किया। उर्वशी से पुरूरवा के छः पुत्र हुए—आयु, धीमान्, अमावसु, विश्वावसु, शतायु और श्रुतायु। पुरूरवा का राज्य प्रतिष्ठान में था—"राज्यं कारयामास प्रयागे पृथ्वीपतिः। उत्तरे जाह्नवीतीरे प्रतिष्ठाने महायशाः।"

हरिवंश० १।२६।४६
विष्णु० ४।६ अ०
वायु० ६०।१

पुरीषमीरु [प्रविल्लसेन] [पुरीन्द्रसेन, पुरिकषेण] आंध्र वंश। पञ्चनल्लक (पञ्चमन्दुलक, मत्स्य०) के पश्चात् तथा शात-कर्णि के पूर्व होनेवाला राजा। ब्रह्माण्ड० के अनुसार वह महात्मी राजा हाल से परवर्ती राजा है। वायु० में पञ्चनल्लक के स्थान में (पञ्चसप्तकराजानो) पाठ है, जो सम्भवतः किसी व्यक्ति का वाचक न होकर संख्यावाचक प्रतीत होता है। अर्थात् ५ या ७ राजा। वायु० में पाठ पुरिकेषेण (पाठान्तर पुरिकषेण) है। विष्णु० में हाल का पुत्र पत्तलक और उसका पुत्र प्रविल्लसेन

है। मत्स्य० में पाठ पुरीन्द्रसेन है। यदि प्रविल्लसेन, पुरीन्द्रसेन, पुरिकषेण और पुरीषभीरु एकही मान लिए जायँ तो ब्रह्माण्ड० के अनुसार इनका राज्यकाल २१ वर्ष ठहरता है।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६६
वायु० ६६।३५३
विष्णु० ४।२४।१२
मत्स्य० २७२।१०

पुलिन्दक

शुङ्गवंश। पीढ़ीक्रम संख्या ६ भद्र (ब्रह्माण्ड०) आर्द्रक (विष्णु०) का पुत्र। राज्यावधि ३ वर्ष। वायु० में 'पुलिन्दका' बहुवचन पाठ है, जो अन्ध्रक के पुत्र थे।

वायु० ६६।३४०
विष्णु० ४।२४।१० [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५३
मत्स्य० २७२।२६
भाग० १२।१।१७

पुलिमान् [सुलोमा]

आन्ध्रवंश का २३ वाँ राजा। गौतमीपुत्र का पुत्र। महानन्द से पुलिमान् के समय तक राज्यावधि ८३६ वर्ष है। विष्णु० में वह शातकर्णी शिवश्री का पिता माना गया है। किन्तु मत्स्य० के अनुसार सुलोमा शिवश्री का पिता है।

विष्णु० ४।२४।१३
मत्स्य० २७३।१३

पुलिन्द (१)

एक जंगली जाति। साधारणत उसे दक्षिण की जातियों में गिना जाता है। मत्स्य० में उसका कारुष, आटव्य आदि दक्षिणापथ में रहने वाली जातियों में परिगणन किया गया है। मगध के राजा विश्वस्फाणि (विश्वस्फानि) (वायु०) विश्वस्फूर्जि (भाग०) ने अन्य क्षत्रिय राजाओं का उच्छेदन कर पुलिन्द, कैवर्त आदि जाति के लोगों को राजा बनाया।

वायु० ९९।३७४
ब्रह्माण्ड० २।१६।५८
मत्स्य० ५०।७८
विष्णु० ४।२४।१८
भाग० १२।१।२६

पुलिन्द (२) दक्षिणापथ का एक जनपद।

वायु० ४५।१२६

पुलेय (पुलेयाः) दक्षिण का एक जनपद तथा एक जाति।

वायु० ४५।१२६

पुलोवा [पुलोमारि] चण्डश्री। (चन्द्रश्री) के बाद वह राजा हुआ। वह इस वंश का २९वां राजा था। राज्यावधि ७ वर्ष[1]। ब्रह्माण्ड० में पुलोमारि पाठ है और वहां वह दण्डश्री शातकर्णी के बाद आता है।

वायु० ९९।३५७
मत्स्य० २७३।१६
विष्णु० ४।२४।१३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६९

पुष्कर (१) ऐक्ष्वाकु वंश। भरत के दो पुत्र पुष्कर और तक्ष थे। गान्धार देश में तक्ष की नगरी तक्षशिला और पुष्कर के नाम से पुष्करावती पुरी विख्यात हुई।

विष्णु० ४।४।४७
वायु० ८८।१८९
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१९०
भाग० ९।११।१२

पुष्कर (२) ऐक्ष्वाकु वंश। सुनक्षत्र का पुत्र और अन्तरिक्ष का पिता। विष्णु० के अनुसार सुनक्षत्र का पुत्र किन्नर है।

भाग० ९।१२।१२
विष्णु० ४।२२।२
वायु० ९९।२८५

पुष्करारुणि [पुष्करिण] पौरव वंश। उरुक्षय (दुरितक्षय, भाग०) का दूसरा पुत्र। त्रय्यारुण (त्र्यारुणि, भाग०) का भाई। विष्णु० में पाठ पुष्करिण है।

विष्णु० ४।१९।१०
भाग० ९।२१।२०

पुष्करावती भरत के पुत्र पुष्कर की राजधानी। देखिए, भरत (१)।

वायु० ८८।१९०
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१९१

पुष्टि यादव वंश। वृष्णि-शाखा। वसुदेव और मदिरा का पुत्र। वायु० के अनुसार सुदेव का पुत्र। वसुदेव नाम ही ठीक जान पड़ता है।

वायु० ९६। १७०
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७२

पुष्पवान् चंद्र (पौरव) वंश। मगध शाखा। बृहद्रथ की चौथी पीढ़ी में ऋषभ का पुत्र।

वायु० ९९।२२४
विष्णु० ४।१९।१९

पुष्पार्ण मानव वंश। उत्तानपाद के कुल में वत्सर तथा स्वर्वीथि का पुत्र। ध्रुव का पौत्र। पुष्पार्ण की प्रभा और दोषा नाम की दो पत्नियाँ थीं। प्रत्येक के

तीन तीन पुत्र हुए।

भाग० ४।१३।२
वही ४।१३।१४

पुष्पमित्र

वायु० तथा ब्रह्माण्ड० में छ पुष्पमित्रों का उल्लेख है—पुष्पमित्र, मविन्यार्क, पट्टमित्र आदि। इनके पूर्व शक्मान नामक राजा हुआ।

वायु० ६६।३७४
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१८७

पूर्णदर्व [पूर्णदर्वाः]

एक उदीच्य देश।

वायु० ४५।१२१

पूर्णमास

कृष्ण और कालिंदी का पुत्र।

भाग० १०।६१।१४

पूर्वसाहसम्

एक प्रकार का दण्ड। जो व्यक्ति कोई वस्तु उधार लेकर उसे ठीक समय पर नहीं लौटाता था उसे यह दण्ड दिया जाता था।

मत्स्य० २२६।४ [कल० गु० प्र०]

पुष्य [पुष्प]

ऐक्ष्वाकु वंश। हिरण्यनाभ का पुत्र और ध्रुवसन्धि का पिता। वायु० के अनुसार हिरण्यनाभ का पुत्र वशिष्ठ और वशिष्ठ का पुत्र पुष्य हुआ। विष्णु० में पाठ पुष्प है।

वायु० ८८।२०६
विष्णु० ४।४।४७ [बम्ब० मंस्कृ० गो० ना०]
भाग० ६।१२।५

पुष्यमित्र

शुङ्ग वंश का प्रथम राजा। मौर्य वंश के अन्तिम राजा बृहद्रथ को मार कर उसने राज्यशासन स्थापित किया। राज्यावधि ६० वर्ष। उसके पुत्र का नाम अग्निमित्र था। वायु० के अनुसार पुष्यमित्र के ८ पुत्र हुए।

विष्णु० ४।२४।६
वायु० ९९।३३७
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५०
मत्स्य० २७२।२७
भाग० १२।१।१८

पूर्णोत्संग

आन्ध्र वंश। आन्ध्र वंश का चौथा राजा। श्रीशातकर्णि का पुत्र[1]। राज्यावधि मत्स्य० के अनुसार १८ वर्ष। किन्तु वहां पूर्णोत्संग का नाम शातकर्णि के पूर्व आता है और उसे श्रीमल्लकर्णी का पुत्र माना गया है[2]।

१—विष्णु० ४।२४।१२
२—मत्स्य० २७३।३

पूरिका

नागवंशज शिशिक की राजधानी। वायु० के अनुसार शिशिक नन्दिवंश के कुल से सम्बन्धित था—(दौहित्र शिशिको नाम पूरिकायां नृपोऽभवत्)।

वायु० ९९। ३७० ब्रह्माण्ड० ३।७४।१८३

पृथु(१)

वृष्णि-वंश। चित्रक का पुत्र। जरासन्ध द्वारा मथुरा पर आक्रमण होने के समय श्री कृष्ण ने उसे उत्तरी द्वार पर नियुक्त किया था।

वायु० ९६।११२
ब्रह्माण्ड० ३।७१।११४
विष्णु० ४।१४।३–५।२२।४६
भाग० ९।२४।१७, १०।५०।२०

पृथु (२) पौरव वंश। अजमीढ से प्रवर्तित कुल। पुरुजानु का पुत्र।

मत्स्य० ५०।२

पृथु (३) स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में विभु का पुत्र।

वायु० ६३।८७
ब्रह्माण्ड० २।१४।६७
विष्णु० २।१।३८

पृथु (४) सूर्यवंश। ध्रुव कुल। वेण (वेन, विष्णु०) का पुत्र। अधार्मिक वेण पर जब ऋषियों ने मन्त्रपूत कुश से प्रहार किया तो राजा के अभाव में सारी प्रजा में अराजकता फैल गयी। ऋषियों ने परस्पर मंत्रणा कर वेण से पुत्र प्राप्ति के लिए उसके जाघ को मथा। फलस्वरूप उससे एक काला नाटा पुरुष निकला, जिसका नाम ऋषियों ने निषाद रखा। उसके बाद वेण की दोनों बाहुओं को मथा तो उससे एक स्त्री और एक पुरुष पैदा हुए। पुरुष का नाम उन्होंने पृथु रखा और स्त्री का नाम अर्चि। भाग० के अतिरिक्त अन्य किसी पुराण में पृथु और अर्चि दोनों के पैदा होने का वर्णन नहीं है, वहाँ केवल वेण की दक्षिण बाहु के मथने से पृथु के उत्पन्न होने की चर्चा है। जब पृथु पैदा हुआ तो उसके दाहिने हाथ में विष्णु० के चक्र का चिह्न तथा पैरों पर कमल का चिह्न देखकर लोगों ने उसे हरि का अवतार माना। परम्परागत धारणा है कि जिसके हाथ में चक्र होता है वह चक्रवर्ती राजा होता है और देवता भी उसके प्रभाव को नहीं रोक सकते। यह देखकर धर्मज्ञ ब्राह्मणों ने उसका राज्याभिषेक किया। इस अवसर पर देवताओं ने उसे नाना प्रकार के उपहार दिये,—कुबेर ने सोने का सिंहासन, वरुण ने श्वेत छत्र, वायु ने वालव्यजन, धर्म ने कीर्तिमयी माला, इन्द्र ने उत्कृष्ट किरीट, यम ने दमन करने के लिए दण्ड, ब्रह्मा ने ब्रह्मकवच, सरस्वती ने उत्तम हार, विष्णु ने सुदर्शन-चक्र, लक्ष्मी ने नष्ट न होने वाली श्री, भगवान् शंकर

ने दशचन्द्र चिह्न से युक्त असि, अम्बिका ने शतचन्द्र चिह्नवाली तलवार, सोम ने अमृतमय अश्व, त्वष्टा ने सुन्दर रथ, अग्नि ने अजगव नाम का धनुष, सूर्य ने रश्मि-मय बाण, पृथ्वी ने योगमय पादुकाएँ और आकाश (द्यौः) ने प्रतिदिन पुष्पमाला दी। ऋषियों ने आशीर्वाद तथा समुद्र ने शंख दिया। जिस दिन पृथु पैदा हुए उसी दिन ब्रह्मा के यज्ञ से सूत और मागध भी उत्पन्न हुए। ऋषियों ने उन्हें आदेश दिया कि तुम प्रतापशाली राजा पृथु की प्रशंसा करो। सूत और मागधों ने सब बात पृथु की प्रशंसा की और जिन जिन गुणों का उन्होंने वर्णन किया उनको राजा ने चरितार्थ किया। एक समय अकाल से पीड़ित प्रजा पृथु के पास गयी और कहने लगी—'हे राजन्! हम भूख से पीड़ित हैं अतः हमें क्षुधा-शमन करने के लिए अन्न दो जिससे हम जीवित रह सकें'। यह सुन कर राजा धनुष लेकर पृथ्वी पर प्रहार करने के लिए उद्यत हुए, किन्तु भयभीत पृथ्वी ने गौ-रूप धारण किया और इधर उधर दौड़ने लगी। पृथु धनुष बाण लेकर उसके पीछे दौड़ने लगे। त्रस्त होकर उसने कहा—"हे राजन्! स्त्री का वध करने से पाप होता है"। राजा ने उत्तर दिया यदि एक के वध करने से अनेक प्राणियों का हित होता हो तो अवश्य उसका वध करना चाहिए। तुम यज्ञ का भाग लेती हो किन्तु धन नहीं देती। जो गाय नित्य घास खाती है, किन्तु दूध नहीं देती उस पर अनुशासन करना आवश्यक है। मेरे अतिरिक्त प्रजा का आधार कौन है? तुझे मार कर मैं योगबल से प्रजा की रक्षा करूँगा। राजा के दृढ़ निश्चय को सुनकर पृथ्वी अन्न आदि उत्पन्न करने के लिए उद्यत हो गयी। पृथ्वी ने पृथु से यह भी कहा कि यदि दूध और ओज को पैदा करने वाला अन्न चाहते हो तो मुझे समतल बनाओ। (क्योंकि पर्वत और शत्रुओं के कारण पृथ्वी समतल नहीं थी) पृथु ने अपने धनुष से पर्वत शिलाओं को तोड़ा और उसे समतल बनाया। विष्णु० के अनुसार इससे पहिले ग्राम और नगर नहीं थे और न कृषि, वाणिज्य तथा गोपालन आदि कर्म ही होते थे। पृथु ने पृथ्वी को सम बनाकर नगर तथा ग्रामों की स्थापना की और तब से धरती में फल फूल होने लगे। मनु को बछड़ा बनाकर पृथु ने पृथ्वी को दुहा, जिससे प्रजा के पोषण के लिए अन्न की उत्पत्ति हुई। प्राण दान देने के कारण पृथु पृथ्वी के पिता हुए, इससे धरती का नाम पृथ्वी पड़ा। जन-रंजन प्रजा को सुख देने के कारण पृथु राजा कहलाये "प्रजाः

भूजनरञ्जनात्" ।

भाग० ४।१५।१-५
विष्णु० १।१३।३८
भाग० ४।१५।६
विष्णुध० १।१३।४४ ४५
वही १।१३।४५-४६
भाग० ४।१५।१४-२०
विष्णु० १।१३।५६-६२
भाग० ४।१८।२२
विष्णु० १।१३। ८८
विष्णु ,
भाग० ४।१८ सम्पूर्ण

पृथु (५) चंद्र (पौरव) वंश। द०पाञ्चाल शाखा। पीढ़ीक्रम संख्या १३। पार द्वितीय का पुत्र। भाग० में द० पाञ्चाल वंशावली भिन्न है। वहाँ पार का पुत्र पृथुसेन है।

भाग० ६।२१।२०-२६

पृथु (६) ऐक्ष्वाकु वंश। पीढ़ीक्रम संख्या ५। अनेनस का पुत्र। मत्स्य० के अनुसार पृथु विश्वग का पिता था। भाग० तथा विष्णु० के अनुसार पृथु के पुत्र का नाम विश्वरन्धि तथा वायु० के अनुसार वृषदश्व है।

वायु० ८८।२४
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२६
भाग० ६।६।२०
मत्स्य० १२।२६

पृथुञ्जय यादव वंश। क्रोष्टुवर्तित शाखा। शशबिन्दु के प्रधान ६ पुत्रों में से एक।

विष्णु० ४।१२।२
वायु० ९५।२२
ब्रह्माण्ड० ३।७०।२२
मत्स्य० ४४।२१

पृथुधर्मा [पृथुकर्मा] यादव वंश। क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा। शशबिन्दु के ६ प्रधान पुत्रों में से एक। ब्रह्माण्ड० में पाठ पृथुकर्मा है।

ब्रह्माण्ड० ३।७०।२२
वायु० ९५।२१

पृथुकीर्ति यादव वंश। क्रोष्टु-प्रवर्तित शाखा। शशबिन्दु के प्रधान ६ पुत्रों में से एक।

विष्णु० ४।१२।२
वायु० ९५।२२
ब्रह्माण्ड० ३।७०।२२
मत्स्य० ४४।२१

पृथुदाता [पृथुदान, पृथुमना] यादव वंश। क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा। शशबिन्दु के ६ प्रधान पुत्रों में से एक। ब्रह्माण्ड० में पृथु दान तथा मत्स्य० में पाठ पृथुमना है।

विष्णु० ४।१२।२
वायु० ९५।२२
ब्रह्माण्ड० ३।७०।२२
मत्स्य० ४४।२१

पृथुयशस् यादव वंश। क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा। शशबिन्दु के ६ प्रधान पुत्रों में से एक।

विष्णु० ४।१२।२
वायु० ९५।२२
ब्रह्माण्ड० ३।७०।२२
मत्स्य० ४४।२१

पृथुरुक्म

यादव वंश। क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा। रुक्मकवच का पुत्र। वह अपने भाई रुक्मेषु के आश्रित था। विष्णु० के अनुसार पृथुरुक्म का पुत्र परावृत् था।

ब्रह्माण्ड० ३।७०।२९
वायु० ९५।२८
मत्स्य० ४४।२८-२९
विष्णु० ४।१२।१२

पृथुलाक्ष [पृथुलाश्व]

चन्द्र (पौरव) वंश। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित पूर्वी आनव शाखा। पीढ़ीक्रम १३। विष्णु के अनुसार रोमपाद का पौत्र तथा चतुरङ्ग का पुत्र।

वायु० ९९।१०४
मत्स्य० ४८।९६
भाग० ९।२३।१०-११

पृथुश्रवा

यादव वंश। क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा। शशबिन्दु का पुत्र और उशना का पिता।

विष्णु० ४।१२।२
वायु० ९५।२१
भाग० ९।२३।३३
ब्रह्माण्ड० ३।७०।२२
मत्स्य० ४४।२२

पृथुसेन (१)

पौरव वंश। द० पाञ्चाल शाखा। पीढ़ीक्रम ८। विष्णु० के अनुसार रुचिराश्व का पुत्र तथा पार का पिता। भाग० के अनुसार पृथुसेन पार का पुत्र था। वहाँ क्रम इस प्रकार है—रुचिराश्व का पुत्र पार और उसका पुत्र पृथुसेन।

विष्णु० ४।१६।१२
भाग० ९।२२।२४
मत्स्य० ४८।५१

पृथुसेन (२)

अङ्ग का राजा। मत्स्य० के अनुसार वृषसेन का पुत्र तथा कर्ण का पौत्र। वायु० के अनुसार कर्ण का पुत्र सुरसेन और उसका पुत्र द्विज था, किन्तु वहाँ इस स्थल पर पृथुसेन का नाम नहीं है।

मत्स्य० ४८।१०३
वायु० ९९।११२

पृषत

चंद्र (पौरव) वंश। उत्तर पाञ्चाल शाखा। जन्तु का पुत्र। जन्तु के १०० पुत्र थे, जिनमें सबसे छोटा पृषत था।

वायु० ९९।२१०
विष्णु० ४।१९।१८

पृषध्र

वैवस्वत मनु के नौ पुत्रों में से एक। एक समय अपने गुरु वशिष्ठ की गाय को मारने से वह शूद्रत्व को प्राप्त हुआ।

विष्णु० ४।१।७ [बम्ब० संस्क० गी० ना०]
वायु० ८८।१
मत्स्य० ११।४१ तथा १२।२५
ब्रह्माण्ड० ३।६।३, ३।६१।१
भाग० ९।१।१२, ९।२।३-१४
ब्रह्माण्ड० ५।४३

पैतामह

एक अस्त्र विशेष।

मत्स्य० १६१।२० [वज्रास्त्र, गु० प्र०]

पैशाच एक अस्त्र विशेष।

मत्स्य० १६१।२८ [कलकत्ता, गु० प्र०]

पौण्ड्रक [पुण्ड्र] यादव वंश। वृष्णि-शाखा। काशिराज की पुत्री सुतनु तथा वसुदेव का पुत्र। वह यदुओं से द्वेष रखता था। वयस्क होने पर उसने द्वारका पर एकबार आक्रमण किया, किंतु बलभद्र और सात्यकि द्वारा पराजित होने पर वह वाराणसी लौट आया और वहाँ से एक दूत द्वारा उसने श्रीकृष्ण को सन्देश भेजा कि यथार्थ में मैं ही वासुदेव हूँ। अत. तुम इस नाम को त्याग दो या मेरे साथ युद्ध करो। इसके उपरान्त श्रीकृष्ण ने काशी पर चढ़ाई कर दी। यह जान कर महारथी पौण्ड्रक दो अक्षौहिणी सेना लेकर नगर से बाहर निकला। उसका मित्र काशिराज भी पौण्ड्रक की सहायता के लिए सेना सहित आया। श्रीकृष्ण ने गदा, असि, चक्र और बाणों से पौण्ड्रक तथा काशिराज के हाथी, रथ, घोड़े तथा पैदल सेना का तहस नहस कर दिया। तदनन्तर उन्होंने पौण्ड्रक का शिर चक्र से काट दिया। काशिराज का शिर भी श्री कृष्ण ने बाण से उच्छेदन कर काशीपुरी में फेंक दिया।[१] वायु० में पाठ पुण्ड्र है, जो वसुदेव और सुगन्धी का पुत्र था। पुण्ड्र का भाई कपिल था, किन्तु पुण्ड्र ही राजा हुआ[२]।

१—विष्णु० ५।३४।४ २८
भाग० १०।६६।१ २३
२—वायु० ९६।१८३

पौरवी (१) युधिष्ठिर की रानी का नाम। देवक की माता।

भाग० ९।२२।३०

पौरवी (२) वसुदेव की पत्नियों में से एक।

भाग० ९।२४।२८
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१६१,१६१

पौर (पौराः) शिवि के पुत्र पृथुदर्भ के राज्य (जनपद) का नाम।

मत्स्य० ४८।२०

पौरिक (पौरिकाः) एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।५२

पौलस्त्य (१) रावण का नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।१६६

वायु० ८८।१६६

पौलस्त्य(२)[पौलस्त्याः] राक्षसों का एक वर्ग।

वायु० ६६।१६५

प्रकृति (१) राजा की प्रजा।

भाग० ४।१७।२

ब्रह्माण्ड० १।४३।१७

रघुवंश० ८।१८ "नृपतिं प्रकृतेरवेक्षितुम्"

प्रकृति (२) राज्य के सात अङ्ग[1] अमरकोष में इन सात अङ्गों का नाम इस प्रकार है— "स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि" अर्थात् (१) राजा (२) अमात्य (३) सुहृत्, (४) कोश, (५) राष्ट्र, (६) दुर्ग, तथा (७) बल[1]। कौटिल्य ने 'राष्ट्र' तथा 'बल' न देकर 'जनपद' और 'दण्ड' का नाम दिया है[2]।

१—भाग० ६।१४।१७-१८ ('प्रकृतीनां' उपलक्षण 'प्रकृति')

२—अमरकोश, २, क्षत्रिय०।१७

३—अर्थशास्त्र ७।१ (साम्यन्तदमनदलदुर्योधनादर्शदण्डिनोऽपि प्रजयः)

प्रघोष — यादव वंश। वृष्णि-शाखा। कृष्ण और माद्री का पुत्र।

भाग० १०।६१।१५

प्रचिन्वान् [प्रचिन्वत्] — पौरव वंश की ७वीं पीढ़ी में जनमेजय का पुत्र। प्रवीर का पिता।

विष्णु० ४।१९।१

प्रचेतस् (१) — चंद्र (पौरव) वंश। द्रुह्यु-शाखा। पीढ़ीक्रम ८। दुर्दम (दुर्गम) का पुत्र। मत्स्य० के अनुसार विदुष का पुत्र। वायु० और विष्णु० के अनुसार प्रचेतस् के सौ पुत्र थे, जो म्लेच्छ राष्ट्रों के अधिपति हुए। (म्लेच्छराष्ट्राधिपाः सर्वे उदीचीं दिशमाश्रिताः)

विष्णु० ४।१७।२
वायु० ९९।११
भाग० ९।२३।१५–१६
ब्रह्माण्ड० ३।७४।११–१२
मत्स्य० ४८।९

प्रचेतस् (२) — प्राचीनबर्हि के सामुद्री से उत्पन्न दस पुत्रों का नाम। ये सभी धनुर्वेद में पारंगत थे। इन्होंने अपने पिता की आज्ञा से प्रजावृद्धि के लिए दस हजार वर्ष तक तप किया। इतने दीर्घकाल तक पृथ्वी का कोई रक्षक न होने के कारण वह वृक्षों से आच्छादित हो गयी। वायु का चलना भी बन्द हो गया। फलस्वरूप १० हजार वर्ष तक प्रजा चेष्टारहित हो गयी। (दशवर्ष

सहस्राणि न शेकुश्चेष्टितुम् प्रजाः।" यह देखकर सभी प्रचेताओं ने अतिक्रुद्ध होकर अपने मुखों से एक साथ ही वायु और अग्नि को प्रवृत्त किया। वायु ने उन सभी वृक्षों को उखाड़ फेंका और सुखा दिया। तदनन्तर अग्नि ने उन वृक्षों को जला दिया। इस प्रकार वृक्षों का विनाश होते देखकर सोम उनके पास गया और प्रार्थना की—"हे राजन्! अपने क्रोध को रोकिए और मेरी बात सुनिए। यह मारिषा नाम की कन्या वृक्षों की पुत्री है। हमने इसका रश्मियों से पोषण किया है। तुम्हारे अर्ध तेज से तथा हमारे आधे तेज से इससे दक्ष नामक प्रजापति उत्पन्न होंगे जो समस्त प्रजा का पालन पोषण करेंगे। उन्होंने सोम का कहना मान लिया। मारिषा में उन्होंने मानसिक गर्भाधान किया जिससे दक्ष की उत्पत्ति हुई। "मारिषायां ततस्तेन मनसा गर्भमादधु"।

विष्णु० १।१५।७०
भाग० ४।२४। अ० सम्पूर्ण
वही ४।२४।१—२
वही ६।४।४-१७
विष्णु० १।१५।१—१०
वायु० ६३।२५—३८
ब्रह्माण्ड० २।३७।२६—४१

प्रजानि [प्रमति]

सूर्य (मानव) वंश। नाभाग नेदिष्ट शाखा। पीढ़ीक्रम ५। प्रांशु का पुत्र। खनित्र का पिता। भाग० में पाठ प्रमति है।

विष्णु० ४।१।१६
भाग० ६।२।२४
वायु० ८६।४

प्रजेश्वर (१)
(प्रजेश्वराः)

प्रजाओं के स्वामी (प्रजापति)। कर्दम, कश्यप, शेष, विक्रान्त, सुश्रवा, बहुपुत्र, कुमार, विवस्वान्, सुचिश्रवा, प्रचेतस्, अरिष्टनेमि और बहुल, ये सब प्रजापति कहे गये हैं।

वायु० ६५।५३-५४

प्रजेश्वर (२) भीमरथ का पुत्र, जो दिवोदास के नाम से विख्यात और वाराणसी का राजा हुआ। देखिए, दिवोदास (१)

ब्रह्माण्ड० ३।६७।२६
वही ३।६७।२७—६७

प्रतर्दन चंद्र (पौरव) वंश। काशि शाखा। पीढ़ीक्रम दिवोदास का पुत्र। उसने भद्रश्रेण्य के वंश को नष्ट कर अपने सब शत्रुओं को नष्ट कर दिया, इसलिए वह शत्रुजित् भी कहलाया। उसके अन्य नाम ऋतध्वज और द्युमान् हैं। उसके पास कुवलयाश्व नाम का एक अश्व था, अतः उसे कुवलयाश्व भी कहते हैं। देखिए, दिवोदास (१)

विष्णु० ४।८।५—७
वायु० ९२।६४—६५
ब्रह्माण्ड० ३।६७।६७—६९
भाग० ९।१७।८

प्रति कुश का पुत्र।

भाग० ९।१७।१६

प्रतिक्षत्र (१) [प्रतिपक्ष] चंद्र-वंश। क्षत्रवृद्ध (क्षत्रधर्म, वायु०, ब्रह्माण्ड०) का पुत्र संजय (सन्नय, वायु०) का पिता। ब्रह्माण्ड० तथा वायु० में पाठ प्रतिपक्ष है।

विष्णु० ४।९।८
वायु० ९३।७
ब्रह्माण्ड० ३।६८।७

प्रतिक्षत्र (२) [प्रतिक्षिप्त] यादव वंश। शमी का पुत्र और स्वयंभोज का पिता। वायु० में पाठ प्रतिक्षिप्त है।

विष्णु ४।१४।६
वायु० ८६।१२७—१३८
मत्स्य० ४४।८०
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१२६

प्रतिबन्धक
[प्रतित्वक, प्रतीपक]

निमि वंश। पीढ़ीक्रम १३। मरु का पुत्र और कीर्तिरथ (कृतरथ, विष्णु० कृतिरथ, भाग०) का पिता। वायु० में पाठ प्रतित्वक और भाग० में प्रतीपक है।

वायु० ८६।११
विष्णु० ४।५।१२
भाग० ६।१३।१६
ब्रह्माण्ड० ३।६४।११

प्रतिबाहु (१)

यादव वंश। वृष्णि-शाखा। श्वफल्क और गान्दिनी का पुत्र।

वायु० ६६।१११
ब्रह्माण्ड० ३।७१।११२
विष्णु० ४।१४।२
भाग० ६।२४।१७

प्रतिबाहु (२)

यादव-वंश। वृष्णि-शाखा। वज्र का पुत्र और सुबाहु का पिता।

विष्णु० ४।१५।२०
वायु० ६६।२५१
भाग० १०।६०।१८

प्रतिभानु

यादव वंश। वृष्णि-शाखा। कृष्ण और सत्यभामा का पुत्र।

भाग० १०।६१।११

प्रतिभाव्य

दूसरे पुरुष को विश्वास दिलाने के लिए प्रतिभू द्वारा जो वादा (समय) किया जाता है, उसे प्रतिभाव्य कहते हैं। आधुनिक भाषा में इसे जमानत कहा जाता है। अग्नि० में तीन प्रकार के प्रतिभाव्य का उल्लेख है—१. दर्शन, २ प्रत्यय तथा ३ दान[1]। दर्शन प्रतिभाव्य उस स्थिति में होता है जब जमानत देने वाला व्यक्ति (प्रतिभू) न्यायालय में इस बात का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेता है कि अमुक अभियुक्त भगेगा नहीं और आवश्यकतानुसार न्यायालय में उपस्थित किया जायगा। प्रत्यय प्रतिभाव्य में प्रतिभू किसी व्यक्तिविशेष को यह विश्वास दिलाता है कि अमुक व्यक्ति विश्वसनीय है और उसके साथ लेनदेन किया जा सकता है। इस प्रतिभाव्य के अनुसार प्रतिभू ऋणदाता को इस बात का विश्वास दिलाता है कि यदि ऋणी ऋणदाता को ऋण न चुका सकेगा तो मैं उसके चुकाने के लिए उत्तरदायी रहूँगा[2]। दर्शन तथा प्रत्यय प्रतिभाव्य में प्रतिभू (जमानत देने वाला व्यक्ति) यदि मर जाय तो उसके पुत्र जमानत के विषय में उत्तरदायी नहीं हो सकते। यदि अनेक व्यक्ति जमानत लिये हों तो उन्हें अपने अपने हिस्से का ऋण ऋणदाता को चुका देना चाहिए अथवा वह (ऋणदाता) इनमें से किसी एक से जमानत हुए ऋण को वसूल कर ले[3]। सुरक्षार्थ नकद धन जमा करने को 'दान' कहा जाता था।

१—अग्नि० २५६।१३
२—पी० वी० काणे, हिस्ट्री० आफ धर्मशास्त्र, भाग ३ पृ० ४२६
३—अग्नि० २५३।१६

प्रतिविन्ध्य (१)

एक राजवंश। इस वंश के सौ राजाओं ने राज्य किया।

वायु० ९९।४२५
ब्रह्माण्ड० ३।७४।२६७
मत्स्य० २७२।३१

प्रतिविन्ध्य (२)

पुरुवंश। कुरु-शाखा। युधिष्ठिर और द्रौपदी का पुत्र जो अश्वत्थामा द्वारा मारा गया।

वायु० ६६।२४६
विष्णु० ४।२०।११
मत्स्य० ५०।५१
भाग० ६।२२।२६

प्रतिव्योम

ऐक्ष्वाकु वंश। महाभारत युद्ध के पश्चात् बृहद्बल से प्रारम्भ होनेवाली शाखा। भाग० के अनुसार वत्सवृद्ध का पुत्र तथा दिवाकर का पिता। विष्णु० और मत्स्य० में क्रमश वह वत्सव्यूह तथा वत्सद्रोह का पुत्र माना गया है।
विष्णु० ४।२२।२
वायु० ६६।२८२
मत्स्य० २७१।५
भाग० ६।१२।१०

प्रतिश्रुत

यादव वंश। वृष्णि-शाखा। वसुदेव और शान्तिदेवा का पुत्र।
भाग० ६।२४।५०

प्रतिष्ठान

चन्द्र-वंश के प्रवर्तक पुरूरवा की राजधानी। इस नगर को वैवस्वत मनु ने अपने पुत्र सुद्युम्न को दिया था, किन्तु सुद्युम्न ने उसे पुरूरवा को दे दिया। यह नगर आधुनिक प्रयाग के पास झूसी नामक स्थान पर बसा हुआ था।
विष्णु० ४।१।१४
भाग० ६।१।४२
वायु० ८५।२२

प्रतिहर्ता

स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के कुल में प्रतीहार का पुत्र।
भाग० ५।१५।५
विष्णु० २।१।३७
वायु० ३३।५५
ब्रह्माण्ड० २।१४।६६

प्रतीप [प्रतिप]

पौरव वंश। पीढीक्रम ४५। दिलीप का पुत्र। प्रतीप के तीन पुत्र हुए— देवापि, शन्तनु (शान्तनु, विष्णु०), बाह्लीक (वाह्लीक, वायु०)। वायु० में पाठ प्रतिप है।

वायु० ९९।२३४
विष्णु० ४।२०।८

प्रतीकाश्व

ऐक्ष्वाकु वंश। भानुमत् का पुत्र और सुप्रतीक का पिता।

भाग० ९।१२।११

प्रतीच्य

पश्चिमी भारत में रहने वाली एक जाति अथवा वहाँ के निवासी।

वायु० ४५।१२१

प्रतीहार (१)

द्वारपाल। राजा के मुख्य भवन का एक कर्मचारी*। उसका कर्तव्य बाहर से आये हुए अतिथियों की सूचना राजा तक पहुँचाना तथा राजा की आज्ञा मिलने पर राजभवन में उनका प्रवेश कराना था। उसे मधुरभाषी, नम्र, स्वरूपवान् तथा दूसरों के मन के भाव को शीघ्र ही समझने वाला होना चाहिए (चित्तग्राहश्च सर्वेषां प्रतीहारो विधीयते)।

मत्स्य० २१५।११
अग्नि० २१५।१

* इसी अर्थ में प्रतिहारी शब्द पुरुष तथा स्त्री दोनों के लिए प्रायः संस्कृत नाटकों में व्यवहृत होता है। बाण की कादम्बरी में तो प्रतिहारी शब्द स्त्री के लिए ही प्रयुक्त हुआ है।

प्रतीहार (२)

स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में परमेष्ठी का पुत्र।

विष्णु० २।१।३९
ब्रह्माण्ड० २।१४।६५
भाग० ५।१५।३
वायु० ३३।५५

प्रत्यग्र

पुरु-वंश। कुरु-शाखा। उपरिचरवसु का पुत्र। वायु० के अनुसार वियोपरिचर के गिरिका से उत्पन्न सात पुत्रों में से एक। मत्स्य० में पाठ प्रत्यश्रवा है, चैद्योपरिचर का पुत्र माना गया है।

विष्णु० ४।१६।१६
वायु० ६६।२२२
ब्रह्माण्ड० ६।२२।६
मत्स्य० ५०।२७

प्रद्युम्न

यादव वंश। वृष्णि-शाखा। श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र। उसे कामदेव का अवतार माना जाता है। जन्म के दस दिन के अन्दर ही शम्बर ने उसे चुरा लिया और समुद्र में फेंक दिया। वहाँ उस नवजात शिशु को मछली ने निगल लिया। भाग्यवश जिस मछुवा ने उस मछली को पकड़ा था उसने उसे शम्बर के पास भेज दिया। शम्बर के भोजनालय की एक मायावती नाम की कर्मचारिणी ने जब मछली को फाड़ा तो उसमें एक शिशु मिला उसी समय वहाँ नारद आ पहुँचे। उन्होंने मायावती से कहा कि यह तुम्हारा पति कामदेव का अवतार है। मायावती ने अपना पति समझ कर प्रद्युम्न का लालन-पालन किया। उसके रूप और लावण्य पर मुग्ध होकर मायावती उसपर आसक्त हो गयी। उसने प्रद्युम्न को अपनी सम्पूर्ण माया की विद्या सिखायी। कालान्तर में जब मायावती से प्रद्युम्न को ज्ञात हुआ कि शम्बर उसे सूतिकागृह से छठे ही दिन उठा लाया और पुत्रविरह में रुक्मिणी दुःखित हुई, तब उसने शम्बर से युद्ध किया और माया के बल से शम्बर को हराया। शम्बर तथा उसके पुत्र से सैनिक युद्ध में मारे गये। तदुपरान्त मायावती के साथ उड़कर वह पिता के घर आया। उस शिशु को देखकर रुक्मिणी को अपने पुत्र प्रद्युम्न की याद आ गयी। इसी समय नारद वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने सारा वृत्तान्त सुनाया। यह सुनकर समस्त द्वारकावासी प्रसन्न हुए।

मत्स्य० ४७।१६
विष्णु० ४।१५ अ०, ५।२६।१२

वही० ५।२७ अ०, ५।३३।१२
भाग० ३।१०।२६।५५
वही० १०।६१।२८, २६, १०।६३।१३
ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४५
वायु० ६६।२३७

प्रद्युम्न (२) [शतद्युम्न] निमिवंश का २४ वाँ राजा। भानुमत् का पुत्र। विष्णु० और भाग० में पाठ शतद्युम्न है। विष्णु० में शतद्युम्न के पुत्र का नाम शुचि है।

वायु० ८६।१६
ब्रह्माण्ड० ३।६४।१६
भाग० ६।१३।२१

प्रद्योत [प्रद्योति] पौरव-वंश। बार्हद्रथ शाखा। बार्हद्रथ कुल का अन्तिम राजा। रिपुञ्जय का मुनिक (वायु०) शुनक, (विष्णु०) नाम का मन्त्री था। उसने रिपुञ्जय को को मारकर अपने पुत्र प्रद्योत को गद्दी पर बैठाया। प्रद्योत से लेकर आगे कई पीढ़ियों तक राज्य मगध में रहा। प्रद्योत का राज्यकाल २३ वर्ष है। मत्स्य० के अनुसार रिपुञ्जय के मन्त्री का नाम पुलक था, किन्तु वहां पुलक के पुत्र का नाम नहीं दिया गया है। ब्रह्माण्ड० में पाठ प्रद्योति है।

विष्णु० ४।२४।१
मत्स्य० २७२।१ [कलकत्ता गु० अ०]
भाग० १२।१। ३—४
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१२३
वायु० ६६।३०६

प्रद्योतन (प्रद्योतना:) प्रद्योत से लेकर नन्दिवर्धन तक पाच राजाओं की सामुदायिक संज्ञा। प्रद्योत का पुत्र पालक, उसका विशाखयूप, विशाखयूप का राजक और राजक का पुत्र नन्दिवर्धन था। ये पाँचों प्रद्योतन (प्रद्योतना.) कहे गये हैं, जिन्होंने १३८ वर्ष तक राज्य किया।

भाग० १२।१४

प्रबल

श्रीकृष्ण और माद्री का पुत्र।

भाग० १०।६१।१५ [बम्ब० संस्क० नि० सा०]

प्रबुद्ध

स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में ऋषभ के पुत्रों में से एक। वह भागवतधर्म का अनुयायी था।

भाग० ५।४।११, ११।२।२१, ११।५।२३

प्रभञ्जन

नर प्रमुख का नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३१

प्रभा (१)

पुष्पार्ण राजा की रानी का नाम।

भाग० ४।१३।१२ [बम्ब० सं० नि० सा०]

प्रभा (२)

कश्यपवंशीय प्रजा की परम्परा में स्वर्भानु की कन्या। नहुष की माता।

ब्रह्माण्ड० ३।६।२३-२४

मत्स्य० ६।२१

प्रभा (३)

सगर की दो पत्नियों में से एक। उसका दूसरा नाम यादवी भी था। ६०००० पुत्रों की माता।

मत्स्य० १२।३६,४२

प्रभाकर

ज्योतिष्मान् के पुत्रों में से एक, जिसके नाम से एक वर्ष (देश) का भी नाम पड़ा।

ब्रह्माण्ड० २।१४।२७-२६

वायु० ३३।२४

विष्णु० २।४।११

प्रभानु

कृष्ण और सत्यभामा का पुत्र।

भाग० १०।६१।१०

प्रभुशक्ति

प्रभावज शक्ति। प्रभाव अथवा प्रताप से उत्पन्न होने वाली शक्ति अर्थात् राजा का कोश तथा दण्ड (सेना) से बढ़ने वाला बल[1]। अमरसिंह ने तीन शक्तियों का उल्लेख किया है, जिनमें इसका भी अन्तर्भाव है—(शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः[2]) उन्होंने प्रभाव अथवा प्रताप शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है—(स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम्) अर्थात् राजा के कोश तथा दण्ड से उत्पन्न तेज का नाम प्रभाव अथवा प्रताप (प्रभु) है[3]। कौटिल्य ने भी प्रभु शक्ति को 'कोशदण्डबल' माना है[4]। माघ कवि ने अपने शिशुपालवध नामक काव्य में प्रभुशक्ति शब्द का उपर्युक्त अर्थ ही में प्रयोग किया है[5]।

१—ब्रह्माण्ड० २।२९।८२

वायु० ५७।७५

२—अमरकोश, २ का० क्षत्रिय०।१६ [बनारस संस्क०]

३—वही २ का० क्षत्रिय०।२०

४—अर्थशास्त्र, ६।२

५—शिशु० २।८६ [नि० सा०]

प्रमति (१)

चंद्र-वंश। विष्णु का अवतार। कलि के अन्त में (संध्यांशभागे) अवतीर्ण होकर प्रमति म्लेच्छ, अधार्मिक आदि राजाओं का संहार करेगा और वह अदृश्य होकर पृथ्वी में विचरण करेगा।

ब्रह्माण्ड० २।३१।७६-९०, २।७३।१११

मत्स्य० १४४।५१-६३

वायु० ५८।७६, ९८।८६।११०

प्रमति (२)

नाभाग नेदिष्ट वंश। प्रांशु का पुत्र। खनित्र का पिता।

भाग० ९।२।२४

प्रमति (३) सूर्य (मानव) वंश। नाभागनेदिष्ट कुल। जनमेजय का पुत्र।
वायु० ८६।२१
भाग० ९।२।२६
ब्रह्माण्ड० ३।६१।१७

प्रमर्दन एक वानर प्रमुख।
ब्रह्माण्ड० ३।७।२२९

प्रमथनम् एक अस्त्र का नाम।
मत्स्य० १६१।२७

प्रमन्यु प्रियव्रत वंश। वीरव्रत का भोजा से उत्पन्न पुत्र।
भाग० ५।१५।१५

प्रमोद सूर्यवंश। दृढाश्व का पुत्र। हर्यश्व का पिता।
मत्स्य० १२।३३

प्रयाग चन्द्रवंशज ऐल राजा की राजधानी[1]। गुप्त राजाओं का जनपद[2]।
१—ब्रह्माण्ड० ३।६६।२१-२२
२—वायु० ९९।३८३

प्रलम्ब एक दानव, जो गोपवेश में कृष्ण के यहाँ आया और मारा गया।
भाग० २।७।३४
वायु० ९८।१५
विष्णु० ५।९।१ से अन्त तक

प्रविजय एक प्राच्य जनपद का नाम।
मत्स्य० ११४।४४ [कल्प० पृ० ८०]
वायु० ४५।१२३

प्रवीरक — किलिकिला नामक नगरी का शासक।
भाग० १२।१।३३

प्रवीर (१) — विन्ध्यशक्ति का पुत्र। उसकी राजधानी काञ्चनका (पुरी) थी। उसने वाजपेय आदि अनेक यज्ञ किये। राज्यावधि ६० वर्ष। उसके ४ पुत्र थे।
वायु० ९९।३७१-३७२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१८४-८६

प्रवीर (२) — पौरव वंश की ८ वीं पीढ़ी में, प्रचिन्वान् का पुत्र।
विष्णु० ४।१९।१

प्रस्तावि [प्रस्तार] — स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में उद्गीथ का पुत्र। विभु (पृथु, विष्णु०) का पिता। वायु० में विभु का पुत्र पृथु है। विष्णु० में पाठ प्रस्तार है।
वायु० ३३।५६
विष्णु० २।१।३८
ब्रह्माण्ड० २।१४।६७

प्रसुश्रुत — ऐक्ष्वाकु वंश। मरु (वायु०) का पुत्र। सुसन्धि का पिता। विष्णु० में पिता का नाम नहीं है।
वायु० ८८।२११
विष्णु० ४।४।४८
भाग० ९।१२।५

प्रसेनजित् (१) — वैवस्वत मनु-वंश। पीढ़ीक्रम १७। कृशाश्व का पुत्र। युवनाश्व का पिता।
वायु० ८८।६४
विष्णु० ४।२।१३
ब्रह्माण्ड० ३।६३।६६

प्रसेनजित् (२)

ऐक्ष्वाकु वंश। कुश से प्रवर्तित शाखा। विश्वसाह्व का पुत्र और तक्षक का पिता।

भाग० ९।१२।७-८

प्रसेनजित् (३)

ऐक्ष्वाकु वंश। बृहद्बल से प्रारम्भ होने वाले राजाओं में से एक। विष्णु० के अनुसार रातुल का पुत्र और क्षुद्रक का पिता। भाग० के अनुसार लाङ्गल का पुत्र तथा क्षुद्रक का पिता। मत्स्य० के अनुसार वह सिद्धार्थ का पुत्र था।

विष्णु० ४।२२।३
भाग० ९।१२।१४
मत्स्य० २७१।११

प्रसेन

यादव वंश। सात्वतों की वृष्णि-शाखा। पोर्जीटर्स ३। निम्न के दो पुत्रों में से एक। उसके भाई का नाम शत्रुजित् (वायु०) (सत्राजित, विष्णु०) था। विष्णु० तथा वायु० के अनुसार शत्रुजित् को उसके मित्र सूर्य द्वारा स्यमन्तकमणि प्राप्त हुई थी। शत्रुजित् ने प्रेमवश उसे अपने भाई प्रसेन को दे दिया। उस मणि को पवित्र पुरुष ही धारण कर सकता था अपवित्र नहीं। यदि वह किसी साधारण पुरुष के हाथों में रहती तो उसी का वध कर देती। प्रसेन एक समय उस मणि को लेकर वन में मृगयार्थ गया वहाँ सिंह ने उसे मार दिया।

विष्णु० ४।१३।८-१८
वायु० ९६।२०-२५
मत्स्य० ४५।१-७
भाग० ९।२४।१३।१०।८०।२०।१०।५६।११-१४
ब्रह्माण्ड० ३।७१।२१-४२

प्रस्थल (प्रस्थलाः)

एक जाति तथा एक उदीच्य देश का नाम।

वायु० ४५।११६-१२१
ब्रह्माण्ड० २।१६।५०

प्रस्वापनम् क अस्त्र-विशेष।
मत्स्य० १६१।२४

प्रहस्त पुष्पोत्कटा का पुत्र। वह पौलस्त्य राक्षस रावण के अनुचरों में से एक था, जो लंका के युद्ध में उपस्थित था।
ब्रह्माण्ड० ३।८।५५
भाग० ६।१०।१८

प्रहरण यादव वंश। वृष्णि-शाखा। कृष्ण और भद्रा का पुत्र।
भाग० १०।६१।१७

प्रहासक एक राक्षस का नाम। खशा का पुत्र।
ब्रह्माण्ड० ३।७।१३४
वायु० ६६।१६६

प्रहेति एक दैत्य, जिसने देवासुर संग्राम में वृत्रासुर की ओर से इन्द्र के विरुद्ध भाग लिया था।
भाग० ६।१०।१६-२०

प्रह्लाद हिरण्यकशिपु का, उसकी पत्नी कयाधु दानवी से उत्पन्न पुत्र। दैत्य और दानवों का स्वामी।

वायु० ७० । ६
भाग० ६।१८।१७
वही ७।१।४१
मत्स्य० ८।५
वही ४७ म०

प्रांशु

सूर्य (मानव) वंश । नाभाग नेदिष्ट शाखा । वत्सप्रि (वत्सप्रीति, भाग०) का पुत्र । वायु० के अनुसार प्रांशु, भलन्दन का पुत्र तथा प्रजानि का पिता था वहाँ वत्सप्रि का नाम नहीं दिया गया ।

भाग० ६।२।२८
विष्णु० ४।१।१७ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
वायु० ८६।४

प्राग्ज्योतिष

एक प्राच्य जनपद[१] । प्राग्ज्योतिष बहुत प्राचीन जनपद था । महाभारत में कुछ स्थलों पर प्राग्ज्योतिष को म्लेच्छ देश कहा गया है और इस देश के राजा भगदत्त की बड़ी प्रशंसा की गयी है[२] । किन्तु महाभारत के अन्य स्थानों पर प्राग्ज्योतिष दानवराज नरकासुर का देश कहा गया है[३] । भाग० के अनुसार भौम (नरकासुर) भगदत्त का पिता था, किन्तु वहाँ प्राग्ज्यो-तिषपुर पाठ है जो एक नगर का नाम प्रतीत होता है[४]

१—वायु० ४५।१२२
मार्कण्डेय० ५७।४४
मत्स्य० ११४।४५
ब्रह्माण्ड० २।१६।५८
२—महा० सभा प० २५।१०००-१,
वही उद्योग प० १६।५८०४,
कर्णपर्व ५।१०४-५
३—महा० वनपर्व १२।४८८,
वही उद्योग ४७।१८८७—९२
हरिवंश० ५।१२२।६७६१-६, १२२।६८७१
४—भाग० १०।५९।२, तथा ११

प्राचीनबर्हि

मानव वंश। ध्रुव के कुल में पृथु का प्रपौत्र। हविर्धान तथा अग्निवंश की धिषणा का पुत्र। भाग० में हविर्धान की स्त्री का नाम हविर्धानी था। प्राचीनबर्हि को महान् प्रजापति तथा समस्त पृथ्वी का एकमात्र राजा कहा गया है। उनका नाम प्राचीनबर्हि इसलिए पड़ा कि उनके कुशों के अग्रभाग पूर्व की ओर थे (प्राचीनाग्राः कुशास्तस्य तस्मात् प्राचीनबर्हिषी) भाग० में यह बात अधिक स्पष्ट हो गयी है। वहां कहा गया है कि निरन्तर यज्ञ करने के कारण उनके कुशों के अग्रभाग पूर्व की ओर रहते थे। उन्होंने समुद्र की पुत्री सामुद्री शतद्रुति से विवाह किया। उससे उनके दश पुत्र हुए, जो सब प्रचेतस् कहलाये। भाग० में दूसरा नाम बर्हिषद् भी है। देखिए—प्रचेतस् तथा बर्हिषद्

वायु० ६३।२६
ब्रह्माण्ड० २।३७।२७
विष्णु० १।१४।६
भाग० ४।२४।८-१३

प्राच्य

पूर्व में रहने वाली एक जाति तथा वहाँ के निवासी।

वायु० ५८।८१

प्राणिन् (प्राणिनः)

प्रस्तुत प्रसंग में यह शब्द चक्रवर्ती राजाओं के जीवधारी रत्नों का वाचक है। चक्रवर्ती राजाओं के १४ रत्नों में (जिनमें ७ प्राणहीन रत्न भी हैं) प्राणधारी रत्न इस प्रकार हैं—स्त्री, पुरोहित, सेनानी, रथकृत्, मन्त्री, अश्व तथा गजनायक।

"भार्या पुरोहितश्चैव सेनानी रथकृच्च यः।
मन्त्र्यश्वः कलभश्चैव प्राणिनः सप्तकीर्तिताः" ॥

ब्रह्माण्ड० २।२९।७६
वायु० ५७,७०

प्रात

पुष्पार्ण और प्रभा का पुत्र।

भाग० ४।१३।१३

प्रामि

कृष्ण की रानी का नाम।

भाग० १०।५०।१

प्राशृपेय (प्राशृपेयाः) एक प्राच्य जनपद।

महाभा० २।१६।१४

प्रासाद राजभवन। राजभवन को देखकर मन प्रसन्न होता है इसलिए यह प्रासाद कहलाता है:—

"प्रसीदति मनस्तासु मन प्रसादयन्ति ता."।

वायु० ८।११७, ३५।४, ४६।२६

प्रियव्रत स्वायम्भुव मनु के पुत्र, जो वासुदेव के अंशभूत माने गये हैं। प्रियव्रत के दो पत्नियाँ थीं। उनकी प्रथम पत्नी प्रजापति विश्वकर्मा (कर्दम, विष्णु०) की पुत्री बर्हिष्मती नाम की थी, उससे उनके भाग० के अनुसार १० पुत्र तथा एक ऊर्जस्वती नामक कन्या उत्पन्न हुई। पुत्रों के नाम आग्नीध्र, इध्म-जिह्व, यज्ञबाहु, महावीर, हिरण्यरेतस्, घृतपृष्ठ, सवन, मेधातिथि, वीति-होत्र, और कवि थे। विष्णु० में इनके पुत्रों के कुछ नाम भिन्न हैं। उनके दूसरी पत्नी से उत्तम, तामस और रैवत तीन पुत्र हुए, जो अपने अपने नाम के मन्वन्तरों के अधिप हुए। प्रियव्रत ने रात्रि को भी दिन में परिणत करने के उद्देश्य से एक ज्योतिर्मय रथ में बैठ कर द्वितीय सूर्य की भांति सूर्य के पीछे पीछे पृथ्वी की सात परिक्रमाएँ कीं। उस समय उनके रथ के पहियों से जो लीकें बनीं, वे ही बाद में सात समुद्र हुए, और उनसे फिर पृथ्वी में सात द्वीप हुए, जिनके नाम जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर हैं। इन सातों द्वीपों में प्रियव्रत के दस पुत्रों में सात पुत्र (क्योंकि उनके तीन पुत्र नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहे) क्रमशः एक एक द्वीप के एक एक राजा हुए। प्रियव्रत ने एकादश अर्बुद वर्षों तक राज्य किया।

भाग० ५।१ अ०

विष्णु० २।१।१-२४

प्लवङ्ग एक प्राच्य जनपद का नाम।

महाभा० २।२९।५०-५४

फल्गुतन्त्र ऐक्ष्वाकुवंश। अयोध्या का एक राजा। तालजङ्घों ने इसे हराया था। वह राज्य छोड़ और्व के आश्रम में चला गया। वहीं उसकी गर्भवती स्त्री भी उसके साथ थी। फल्गुतन्त्र की मृत्यु के बाद उसका पुत्र सगर पैदा हुआ। देखिए, सगर।

ब्रह्माण्ड० ३।४७।७६

फाल्गुन अर्जुन का दूसरा नाम।

विष्णु० ५।३७।२
वही ५।३८।३५

बन्धनरक्षित बन्दीगृह (कारागार) का संरक्षक (कारागाराध्यक्ष)।

वायु० १०१।१५४

बन्धु वेगवान् का पुत्र और तृणबिन्दु का पिता।

भाग० ९।२।३०

बन्धुमान् केवल का पुत्र और वेगवान् का पिता।

भाग० ९।२।३०
ब्रह्माण्ड० ३।८।३२
वायु० ८६।१४

बन्धुपालित मौर्य वंश। कुणाल का पुत्र। राज्यकाल ८ वर्ष। विष्णु०, भाग० और मत्स्य० में अशोक के पुत्र कुणाल तथा पौत्र बन्धुपालित का कोई उल्लेख नहीं है।

वायु० ९९।३३२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१४५

बभ्रु (१)

यादव वंश। सात्वत-शाखा। सात्वत के ज्येष्ठ पुत्र भजमान का कुल। देवावृध और आपगा का पुत्र। वह गुणवान् और सत्यवादी राजा था। गुण और पराक्रम में वह अपने पिता के ही सदृश था। वह अनेक यज्ञों का करने वाला, दानशील और ब्रह्मवादी था। उसे ब्रह्माण्ड० में महारथ तथा महाभोज कहा गया है:—

"यथैव शृणुमो दूरात् सम्पश्यामस्तथान्तिकात्।
बभ्रुः श्रेष्ठो मनुष्याणां देवैर्देवावृधः समः॥
यज्वादानपतिर्वीरो ब्रह्मण्यः सत्यवाग् बुधः।
कीर्तिमांश्च महाभोजः सात्वतानां महारथः॥"

वायु० ९६।१५ तथा १७
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५ तथा १७
विष्णु० ४।१३।३–६
भाग० ९।२४।९–११
मत्स्य० ४४।५७ तथा ५९–६०

बभ्रु (२)

क्रोष्टु प्रवर्तित यादव वंश। रोमपाद (लोमपाद) का पुत्र। ज्यामघ का प्रपौत्र। मत्स्य० के अनुसार लोमपाद के पुत्र का नाम मनु और वायु० के अनुसार वस्तु है।

विष्णु० ४।१२।१५
वायु० ९५।३७
ब्रह्माण्ड० ३।७०।३८
भाग० ९।२४।२
मत्स्य० ४४।३७

बभ्रु (३)

चंद्र-वंश। द्रुह्यु-शाखा। द्रुह्यु का पुत्र। सेतु का पिता।

विष्णु० ४।१७।१
वायु० ९९।७
भाग० ९।२३।१४
ब्रह्माण्ड० ३।७४।७

बभ्रुवाहन

पौरव वंश। कुरु-शाखा। अर्जुन का मणिपुर के राजा की पुत्री से उत्पन्न पुत्र।

भाग० ९।२२।३२

बरद

एक म्लेच्छ जाति। कल्कि (विष्णुयशस्) ने जिन अधार्मिक एवं म्लेच्छ जातियों का संहार किया था, उनमें बरद जाति के लोगों का भी नाम है।

ब्रह्माण्ड० ३।७३।१०८

बर्बर (बर्बराः)

एक जंगली जाति। सगर ने शक आदि जिन जातियों को पराजित किया था, उनमें बर्बर जाति के लोग भी थे[1]। ब्रह्माण्ड०, मत्स्य० तथा वायु० में बर्बरों को उदीच्य देशों के अन्तर्गत एक म्लेच्छ देश (जनपद) माना गया है[2]। बर्बरों को उत्तर देश में रहने वाली एक म्लेच्छ जाति मानना ही अधिक संगत जान पड़ता है।

१—भाग० ९।८।५
२—ब्रह्माण्ड० २।१ ४ ,६५
वायु० ४५।११८
मत्स्य० १२०।४३ [कलकत्ता, गु० प्र०]

बर्हणाश्व

इक्ष्वाकु वंश। निकुम्भ का पुत्र तथा कृशाश्व का पिता।

भाग० ९।६।२५

बर्हि

इक्ष्वाकु वंश। कलियुग के राजाओं में बृहद्बल से प्रवर्तित कुल। भाग० के अनुसार बृहद्राज का पुत्र और कृतञ्जय का पिता। विष्णु० तथा वायु० में बृहद्भाज का पुत्र धर्मी है और धर्मी का पुत्र कृतञ्जय है।

विष्णु० ४।२२।२
भाग० ९।१२।१२
वायु० ९९।२८३

बर्हिकेतु ऐक्ष्वाकु वंश। सगर का पुत्र।

महाभा० ३।६३।१४४

वायु० ८८।१६५

बर्हिषद् [प्राचीनबर्हि] स्वायंभुव मनु के वंशज पृथु के कुल में हविर्धान का उनकी पत्नी हविर्धानी से उत्पन्न पुत्र। ये कर्मकाण्ड में निष्णात थे। उनके निरन्तर यज्ञ करने से समस्त धरातल पूर्व की ओर किये हुए कुशाग्रों से व्याप्त हो गया था, इसलिए ये प्राचीनबर्हि भी कहलाते हैं। देखिए, प्राचीनबर्हि।

भाग० ४।२४।८–१३

बर्हिष्मती (१) एक पुरी का नाम। स्वायंभुव मनु की राजधानी।

भाग० ३।२२।२६

बर्हिष्मती (२) प्रजापति विश्वकर्मा की पुत्री, तथा राजा प्रियव्रत की रानी।

भाग० ५।१।२४

बल (१) बलराम का दूसरा नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७६

बल (२) कृष्ण और माद्री का पुत्र।

भाग० १०।६१।१५

बल (३) हरिपर्ण का पुत्र।

मत्स्य० ४।४५

बल (४)
[छल, बलस्थल]

ऐक्ष्वाकु वंश। कुश की १२ वीं पीढ़ी में। दल (परियात्र, ब्रह्माण्ड०) का पुत्र। वायु० के अनुसार परियात्र का पुत्र दल और उसका पुत्र बल है, किन्तु विष्णु० में दल का पुत्र छल है। भाग० में परियात्र का पुत्र बलस्थल है। ब्रह्माण्ड० में बल और स्थल पृथक् पृथक् नाम हैं—बल परियात्र का पुत्र और स्थल बल का पुत्र है।

१—वायु० ८८।२०४
२—विष्णु० ४।४।८७ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
३—भाग० ६।१२।२
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२४

बलदेव [बलराम, बलभद्र]

यादव वंश। वृष्णि-शाखा। वसुदेव और रोहिणी का पुत्र। उनके अन्य नाम बलराम, सीरायुध, संकर्षण आदि हैं। बलराम के जन्म की कथा इस प्रकार है—देवकी के ६ पुत्रों को कंस ने पैदा होते ही मार दिया था। कंस के भय से इस गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु ने योगमाया को आदेश दिया कि देवकी के उदर में मेरा जो शेषाख्यधाम गर्भ में है, उसे वहाँ से निकाल कर रोहिणी के उदर में रख दो। इसीलिए उनका नाम संकर्षण भी हुआ। उनके सौंदर्य में मनुष्यों का मन रम जाने के कारण उन्हें राम कहा गया। बलवानों में श्रेष्ठ होने के कारण वे बलभद्र कहलाये। वृष्णियों के कुल पुरोहित गार्ग्य ने उनके नामकरण के अवसर पर उनके विभिन्न नामों का यही महत्त्व बताया[१]। बलराम ने धेनुक नामक असुर तथा प्रलम्बासुर का वध किया[२]। कृष्ण के साथ उन्होंने शंखचूड़ के वध में सहायता दी और गोपियों की रक्षा की[३]। कंस को जब नारद से सूचना मिली कि वसुदेव और देवकी के पुत्र बलराम और कृष्ण नन्द के यहाँ हैं तो उसने उनके वध की कुछ योजनाएँ बनायीं। उन्हें हाथियों के द्वारा कुचलवाने का उसने निश्चय किया और इससे भी बचने पर चाणूर, मुष्टिक, योद्धाओं द्वारा मल्लयुद्ध में मरवा डालने का षड्यन्त्र रचा। इसी उद्देश्य से उसने एक धनुर्याग का आयोजन किया और कृष्ण तथा बलराम को मथुरा लाने के लिए अक्रूर को भेजा। अक्रूर के आनेपर श्रीकृष्ण और बलराम ने उसका भलीभाँति स्वागत किया। बलराम और श्रीकृष्ण अक्रूर के साथ मथुरा गये। धनुर्भंग के पश्चात् जब कंस

के अनुचरों ने उन्हें पकड़ना चाहा तो उन्होंने धनुष के टुकड़ों से ही उन्हें मार डाला और कंस की भेजी हुई सेना का भी संहार कर डाला। श्रीकृष्ण द्वारा कुवलयापीड नामक हाथी के वध के उपरान्त बलराम ने श्री कृष्ण के साथ हाथीदांतों को लेकर मल्लयुद्ध की भूमि में प्रवेश किया। चाणूर ने जब कृष्ण और बलराम को ललकारा तो कृष्ण चाणूर के साथ और बलराम मुष्टिक के साथ लड़े। उन्होंने मल्लयुद्ध में उन दोनों को हराकर मार डाला। तदनन्तर कूट नामक पहलवान को भी मार गिराया[३]। कृष्ण द्वारा कंस के वध के उपरान्त जब कंस के भाई कङ्क, न्यग्रोध आदि अपने भाई के वध का बदला लेने के लिए इन दोनों भाइयों की ओर झपटे तो बलराम ने उन्हें मार डाला[४]। तदनन्तर वसुदेव और देवकी को श्रीकृष्ण ने कारागार से मुक्त कर दिया। पिता ने बलराम और श्रीकृष्ण का यज्ञोपवीत संस्कार किया। श्रीकृष्ण के साथ बलराम ने भी सान्दीपनि के यहाँ शिक्षा पायी और गुरु-दक्षिणा के रूप में गुरु के पुत्र को, जो प्रभासक्षेत्र में समुद्र में डूबकर मर गया था, जीवित कर दिया[५]। बलराम का विवाह आनर्तराज रैवत कुकुद्मिन् की पुत्री रेवती से हुआ था जिससे दो पुत्र निशित और उल्मुक हुए[६]। रुक्मी को पराजित करने के पश्चात् श्रीकृष्ण ने उसे विरूप कर दिया। बलराम जब विदर्भ नरेश की सेना का तहस नहस कर यदुवंशी वीरों के साथ लौटे तो उन्होंने रुक्मी को अधमरी अवस्था में पड़ा हुआ देखा। उन्हें दया आयी और उन्होंने रुक्मी के बन्धन खोल दिये। उन्होंने श्रीकृष्ण को समझाया कि तुम्हें स्वजन के प्रति ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए था[७]। लाक्षाभवन में पाण्डवों के जल जाने का समाचार पाकर बलदेव भी श्रीकृष्ण के साथ हस्तिनापुर गये। इसी बीच अक्रूर और कृतवर्मा के बहकाने पर शतधन्वा ने सोये हुए सत्राजित् को मार कर स्यमन्तकमणि उससे ले ली और वहाँ से वह चम्पत हो गया। सत्यभामा ने हस्तिनापुर जाकर अपने पिता की मृत्यु का समाचार श्रीकृष्ण को सुनाया। श्रीकृष्ण और बलराम सत्यभामा के साथ द्वारका वापस लौटे। उनके लौटने का समाचार पाकर शतधन्वा ने स्यमन्तकमणि को अक्रूर के पास रख दी और द्वारका से भाग गया। श्रीकृष्ण और बलराम दोनों भाइयों ने रथ पर सवार होकर शतधन्वा का पीछा किया। मिथिला के समीप शतधन्वा का अश्व

गिर पड़ा तब वह पैदल ही भागा। भगवान् ने भी पैदल ही चलकर उसका पीछा किया और तीक्ष्ण धारवाले चक्र से शतधन्वा का सिर काट डाला। परन्तु उन्हें स्यमन्तकमणि नहीं मिली, क्योंकि उसने अक्रूर के पास उसे रख दिया था। श्रीकृष्ण ने जब यह समाचार बलदेव को सुनाया तो उन्हें यह विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने श्रीकृष्ण को अर्थलिप्सु कहकर उनकी भर्त्सना की। कृष्ण के मनाने पर भी उनका क्रोध शान्त नहीं हुआ और वे रुष्ट होकर विदेहराज के पास गये। वहाँ राजा जनक ने उनका उचित सत्कार किया। इसी समय दुर्योधन ने बलराम से गदा की शिक्षा पाया[१०]। रुक्मी की पौत्री रोचना का विवाह अनिरुद्ध के साथ निश्चित हुआ। इस अवसर पर श्रीकृष्ण, बलराम, प्रद्युम्न, साम्ब आदि भोजकट में पधारे। अक्षक्रीडा में प्रथम तो बलराम हारे किन्तु बलराम ने लक्ष और अर्बुद मुद्राओं के दो दाँव क्रमशः लगाये। इनमें बलराम की जीत हुई। किन्तु रुक्मी धूर्तता से यह कहता गया कि मेरी जीत हुई और बलदेवजी का उपहास उड़ाने लगा कि वन में गौएँ चरानेवाले ग्वाले अक्षक्रीडा क्या जानें। यह खेल तो राजा लोग ही जानते हैं। यह सुनकर बलराम भी अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने एक ही प्रहार से रुक्मी को मार डाला और कलिङ्गराज के भी, जो उनके उपहास में रुक्मी का सहयोग दे रहा था, दाँत तोड़ डाले[११]। अनिरुद्ध को मुक्त करने के लिए श्रीकृष्ण और बाणासुर में जो युद्ध हुआ उसमें बलराम ने भी भाग लिया था। कुम्भाण्ड, कूपकर्ण आदि योद्धाओं को युद्ध में गिरा कर उन्होंने बाण की सेना को तितिर बितिर कर दिया[१२]। एक समय बलराम रैवतक पर्वत पर सुन्दर स्त्रियों के बीच मधुपान करते हुए गा रहे थे। इसी बीच भौमासुर के मित्र द्विविद ने आकर उनके इस आनन्दोत्सव में अनेक प्रकार के उपद्रव करने लगा। प्रारम्भ में तो बलराम चुप रहे किन्तु जब द्विविद की चेष्टाएँ अशान्ति पैदा करने लगीं तो बलराम ने द्विविद पर मुष्टि प्रहार किया। उन दोनों के बीच बड़ी देर तक लड़ाई होती रही। अंत में बलराम ने द्विविद पर हाथों से प्रहार किया। इस प्रहार से वह धरती पर गिर पड़ा। इस तरह बलराम के हाथ से द्विविद का वध हुआ[१३]। दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा को बलपूर्वक हर ले जाने के अपराध में जब कौरव श्रीकृष्ण और जाम्बवती के पुत्र साम्ब को बन्दी बना कर हस्तिनापुर ले गये तो वृष्णि इस व्यवहार से बहुत क्रुद्ध हुए। किन्तु

बलराम वृष्णि और कौरवों के मध्य किसी प्रकार कलह नहीं चाहते थे। वे शान्तिपूर्वक दोनों दलों में निपटारा चाहते थे। इसलिए वे रथ पर आरूढ़ होकर स्वयं हस्तिनापुर गये। वहाँ धृतराष्ट्र प्रमुख कौरवों से कहा कि यदुओं के राजा उग्रसेन का आदेश है कि साम्ब को वे शीघ्र ही बन्धन से मुक्त कर दें। किन्तु कौरवों के दुर्वचनों तथा दुर्व्यवहार से बलराम अत्यन्त क्रुद्ध हुए और सोचने लगे कि दुष्ट लोग मदोन्मत्त होकर शान्ति नहीं चाहते। उनके लिए दण्ड ही शान्ति का उपाय है। आज ही मैं पृथ्वी को कौरवों से रहित करता हूँ। यह कह कर उन्होंने हल उठाया और हल के अग्रभाग से हस्तिनापुर को चीरते हुए उसे गंगा में खींच ले गये। नगर गंगा में डूब गया। कौरव नगर को गंगा द्वारा नष्ट होने देख कर संभ्रमित हुए और प्राण बचाने की इच्छा से बलराम की शरण में जाकर अपने अपराध के लिए क्षमा माँगी। इस प्रकार प्रार्थना किये जाने पर बलदेव ने उन्हें अभय का आश्वासन दिया। दुर्योधन ने साम्ब को अपनी पुत्री दी और साथ ही असंख्य हाथी, घोड़े, रथ, दास, दासी और सुवर्ण आदि अतुल धनराशि दहेज के रूप में दी। बलराम साम्ब और लक्ष्मणा सहित इस अतुल धनराशि को लेकर द्वारका लौटे।[14] नैमिषारण्य में ऋषियों की प्रार्थना से बलराम ने बल्वल नामक दानव का वध किया। कौरव और पाण्डवों में जब युद्ध छिड़ गया, तब बलराम उसे रोकने के लिए कुरुक्षेत्र पहुँचे। उन्होंने भीमसेन, दुर्योधन दोनों को समझाया कि दोनों बल पौरुष में समान हैं। किसी एक की जय या और पराजय नहीं दिखाई देती, अतः दोनों युद्ध बन्द कर दें। किन्तु उन दोनों का पुराना वैर इतना दृढ़ था कि उन्होंने बलराम जी की एक भी बात न मानी।[15] प्रभास मुसलयुद्ध में यादवों के संहार के उपरान्त, बलराम ने समुद्र तट पर बैठकर एकाग्रचित्त होकर अपने मानव कलेवर को छोड़ा—

> रामः समुद्रवेलायां योगमास्थाय पौरुषं।
> तत्याज लोकं मानुष्यं संयोज्यात्मानमात्मनि[16] ॥

१४—भाग० ६।३।२३-३०, १०।१।८, १०।२।८, गदा १२
विष्णु० ५।३३।२०, ३।१५।१६, ५।८।१२, ५।६।१४, ५।२७।२, ५।१८।
११ गदा २६

२—वही० १०।१५।२८-३८

३—भाग० १०।३४।२४-३२

४—वही० १०।३६-४२ अ०

५—वही० १०।४३। १३-१६, ३१-४० तथा १०।४४।२०-३०

६—वही० १०।४४।४०-१

७—वही० १०।४५।२४।४६, १०।५२।१५

८—वही० ६।३।२६, विष्णु० ४।१।२४, ५।२५ अ०

९—वही० १०।५६।१-३७

१०—वही० १०।५७ अ०

११—वही० १०।६१।२५-३८

१२—वही० १०।६३।३ तथा १३

१३—वही० १०।६७।६-२१

१४—वही० १०।६८।१-१२,

१५—वही० १०।७८। २६

वही० १०।७९।२६

१६—वही० ११।३०।२३, २६

बलसागर एक वानर-प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३९

बलाकाश्व चन्द्र (पौरव) वंश। कान्यकुब्ज-शाखा। अमावसु की ८ वीं पीढ़ी में। अजक का पुत्र। कुश का पिता।

विष्णु० ४।७।३

वायु० ९१।६१

ब्रह्माण्ड० ३।६६।३१

बलि (१) कर या राजस्व, जिसे राजा राज्यसंचालन (प्रजारक्षण) के लिए प्रजा से लेता था।

भाग० १।१३।४०—४१
ब्रह्माण्ड० २।३१।४८
वायु० ५८।४८

बलि (२)

विरोचन का पुत्र। प्रह्लाद का पौत्र। वामन को उनकी प्रार्थनानुसार बलि ने तीन विक्रम (पग) भूमि देने का वचन दिया, किन्तु वामन के तीन पगों ने स्वर्ग, आकाश, तथा समस्त पृथ्वी को घेर लिया। बलि के १०० पुत्र थे, जो सब राजा हुए। उनमें ४ तो बहुत ही प्रतापी थे, जिनमें बाण एक था। ब्रह्माण्ड० के अनुसार बलि के ये १०० पुत्र तथा पौत्र मिलकर सहस्रों की संख्या में पहुँच गये और जो सब बालेय के नाम से (बालेयाः) लोक में विख्यात हुए।

भाग० ५।२४।१८
वायु० ६७।८२-८५
मत्स्य० ६।१०, ४७।३६
ब्रह्माण्ड० ३।५।४०-४४
वायु० ६८।७८—८८

बलि (३)

चंद्र (पौरव) वंश। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित पूर्वी आनव शाखा। पार्जीटर ३३। सुतपा का पुत्र। वह धर्मात्मा तथा महान् योगी था। उसकी स्त्री का नाम सुदेष्णा था, जिसे दीर्घतमस् ऋषि द्वारा पाँच पुत्र हुए—अंग, वंग, कलिङ्ग, सुह्म तथा पुण्ड्र। भाग० में उसके ६ पुत्र कहे गये हैं, जिनमें एक अन्ध्र भी है।

विष्णु० ४।१८।१
मत्स्य० ४८।२२
हरि० ४८।१५ तथा ७१-७८
वायु० ९९।२७-१४
भाग० ९,२३।४-५

बलिबाहु — श्रुतनाम का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७।३०२

बली — काण्व वंश के अंतिम राजा सुशर्मा का भृत्य, जिसने अपने स्वामी को मार कर स्वयं गद्दी पर बैठा। बली को वृषल और आंध्रजातीय कहा गया है—

हत्वा काण्वं सुशर्माणं तद्भृत्यो वृषलो बली।
गां भोक्ष्यत्यन्ध्रजातीयः कंचित्कालमसत्तमः॥

भाग० १२।१।२२

बल्वल — कंस के पक्ष के एक योद्धा का नाम।

भाग० २।७।३४

बहिर्गिरि — एक प्राच्य जनपद का नाम।

मत्स्य० ११४।४४ [कलकत्ता पु० सं०]

बहुगव — पौरव वंश का १७ वाँ राजा। सुद्यु का पुत्र। संयाति का पिता।

भाग० ९।२०।३

बहुगुण — एक दानव-प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।६।४४

बहुरथ [वीररथ] — चंद्र (पौरव) वंश। द्विमीढ-शाखा। दृढसेन का पुत्र। पाण्डवों का समकालीन तथा महाभारत युद्ध से पहले आने वाले इस वंश के राजाओं में अंतिम राजा। वायु० में पाठ वीररथ है।

विष्णु० ४।१८।१५
वायु० ९९।१९३
भाग० ९।२१।३०

बहुलाश्व

निमिवंश। पीढ़ीक्रम ५३। धृति का पुत्र। कृति का पिता। वायु० में उसे मैथिलों के अन्तर्गत रखा गया है। संभवतः वह मिथिला के राजाओं में से था।

वायु० ८९।२३
ब्रह्माण्ड० ३।६४।२३
भाग० ९।१३।२६, १०।८२।१९
वायु० ८९।२३

बहूदन

एक देश का नाम जिसे पुरञ्जन ने जीता था।

भाग० ४।२५।४९

वध्र्यश्व [वद्ध्र्यश्व विन्ध्याश्व]

पौरव वंश। पाञ्चाल शाखा। वध्र्यश्व (वायु०), वद्ध्र्यश्व (विष्णु०), विन्ध्याश्व (मत्स्य०) किसका पुत्र था स्पष्ट नहीं है। विष्णु० के अनुसार वह मुद्गल का पुत्र था, किन्तु मुद्गल की स्त्री का नाम वहाँ नहीं है। मत्स्य० में मुद्गल का पुत्र ब्रह्मिष्ठ, उसका पुत्र इन्द्रसेन और इन्द्रसेन का पुत्र विन्ध्याश्व है। वायु० में इन्द्रसेना एक स्त्री का नाम है और उसका पुत्र वध्र्यश्व है, किन्तु इन्द्रसेना मुद्गल की स्त्री थी या ब्रह्मिष्ठ की, स्पष्ट नहीं है—

मुद्गलस्य सुतो ज्येष्ठो ब्रह्मिष्ठः सुमहायशाः।
इन्द्रसेना यतो गर्भं वध्र्यश्वं प्रत्यपद्यत ॥
वध्र्यश्वान्मिथुनं जज्ञे मेनकायामिति न श्रुतिः।
दिवोदासश्च राजर्षिरहल्या च यशस्विनी ॥

यदि यहाँ 'मद्रिाष्ठ' पद व्यक्तिवाचक मान लिया जाय तो इन्द्रसेना उसी की स्त्री ठहरती है। उसके गर्भ से वध्यश्व उत्पन्न हुआ। वध्यश्व के मेनका के गर्भ से दिवोदास नामक पुत्र और एक अहल्या नामक पुत्री हुई। भाग० के अनुसार देवदास मुद्गल और मार्मी का पुत्र था।

वायु० ६६।२००–१
विष्णु० ४।१६।१६ [बम्बई संस्क० गो० ना०]
मत्स्य० ५०.६
भाग० ६।२१।३४

बाण बलि के अशना से सौ पुत्र हुए, जिनमें बाण ज्येष्ठ था।[1] बाण की स्त्री का नाम लोहिनी था, जिससे उसका इन्द्रधन्वा नामक पुत्र हुआ।[2] देवासुर संग्राम में उसने (बाण ने) बलि की ओर से देवताओं के विरुद्ध भाग लिया।[3] अन्त में वह कृष्ण द्वारा मारा गया।[4]

१—भाग० ६।१।१६–१७
२—ब्रह्माण्ड० ३।५।४५
३—भाग० ८।१०।१६
४—वायु० ६८।१०२

बार्हद्रथ (बार्हद्रथाः) [बृहद्रथ] मगध देश के बृहद्रथ के वंश में होने वाले राजाओं का सामूहिक नाम। इन राजाओं की वंश-परम्परा भाग० के अनुसार इस प्रकार है:—जरासन्ध—सहदेव मार्जारि (सोमापि, विष्णु०) श्रुतश्रवा (श्रुतवान्, विष्णु०) अयुतायु निरमित्र–सुनक्षत्र (सुक्षत्र, विष्णु०) बृहत्सेन (बृहत्कर्मा, विष्णु०) कर्मजित् (सेनजित्, विष्णु०) सुतञ्जय (श्रुतञ्जय, विष्णु०) विप्र शुचि क्षेम (क्षेम्य, विष्णु०) सुव्रत, धर्मसूत्र (धर्म, विष्णु०) शम (सुश्रम, विष्णु०) द्युमत्सेन (दृढ़सेन, विष्णु०) सुमति, सुबल, सुनीथ (सुनीत, विष्णु०) सत्यजित्, विश्वजित्, तथा रिपुञ्जय—इन उपर्युक्त २३ राजाओं (बार्हद्रथों) ने सहस्र वर्ष तक राज्य किया। मत्स्य० में पाठ 'बृहद्रथाः' है।

भाग० ६।२२।४५–४६
विष्णु० ४।२३ अ० [सम्० संस्क० गो० ना०]
मत्स्य० २७०।१७—१९ [कलकत्ता गु० प्र०]

बालक मगध के बृहद्रथ वंश के राजाओं के बाद पुलक ने अपने स्वामी को मार कर अपने पुत्र बालक को राजगद्दी पर बैठाया। बालक नाम ठीक नहीं जान पड़ता, संभवतः पालक होगा।

मत्स्य० २७०।१०
वही २७१।२ [कलकत्ता, गु० प्र०]

बालेय देखिए, बलि (२)।

ब्रह्माण्ड० ३।५।४०—४४

बाह्लिक [बाह्लिकाः] किलिकिला (नगरी) में भूतनन्द, वंगिरि, शिशुनन्दि, यशोनन्दि और प्रवीरक नामक राजाओं ने १०६ वर्ष तक राज्य किया। इन्हीं राजाओं के १३ पुत्र हुए, जो बाह्लिक कहलाये—

किलिकिलायां नृपतयो भूतनन्दोऽथ वङ्गिरिः।
शिशुनन्दिश्च तद्भ्राता यशोनन्दिः प्रवीरकः॥
इत्येते वै वर्षशतं भविष्यन्त्यधिकानि षट्।
तेषां त्रयोदश सुता भवितारश्च बाह्लिकाः॥

भाग० १२।१।३२—३४

बाष्कल [बाष्कल] प्रह्लाद का पुत्र। मत्स्य० में पाठ वाष्कल है।

विष्णु० १।२१।१
मत्स्य० ६।९

बाहु

ऐक्ष्वाकु-वंश। वृक (विष्णु०), धृतक (वायु०) का पुत्र। वायु० के अनुसार वह व्यसनी राजा था। हैहय, तालजङ्घ, शक, यवन, काम्बोज, पारद तथा पह्लवों ने उस पर आक्रमण किया। उनसे वह पराजित होकर अपनी स्त्री सहित वन चला गया। एक समय, जब वह जल लेने जा रहा था, अति वृद्ध होने के कारण रास्ते में ही मर गया। उसकी स्त्री गर्भवती थी। अतः और्व भार्गव ने उसे पति के साथ अग्निप्रवेश करने से रोका। और्व के आश्रम में उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम सगर रखा गया। विशेष विवरण के लिए देखिए, 'सगर'।

विष्णु० ४।३।१५
वायु० ८८।१२१—१३२
भाग० ६।८।२—४
मत्स्य० १२।३८
ब्रह्माण्ड० २।६३।११६—१३२

बाह्यक

यादव वंश। सात्वत शाखा। वायु० के अनुसार भजमान और सृञ्जयी का पुत्र। उसने सृञ्जय (सृञ्ज, ब्रह्माण्ड०) की दो पुत्रियों से विवाह किया, जो वस्तुत: उसकी ये दोनों भगिनी थीं। उनसे उसके कई पुत्र हुए, जिनके नाम निमि (निम्लोचि, ब्रह्माण्ड०) वृष्णि (घृष्टि, ब्रह्माण्ड०) तथा परपुरञ्जय थे। ब्रह्माण्ड० में बाह्यक की भगिनी, जो बाह्यका कहा गया है—
बाह्यकाया भगिन्या ते भजमानाद्विजज्ञिरे।

वायु० ९६।२—४
ब्रह्माण्ड० ३।७१।४—६

बाह्लीक [वाह्लीक]

पौरव वंश। कुरु-शाखा। प्रतीप (प्रतिप, वायु०) के तीन पुत्रों में से एक। सोमदत्त का पिता। वायु० में बाह्लीक को (सप्तबाह्लीश्वरो नृप:) अर्थात् सात बड़े देशों का राजा कहा गया है[1]। किन्तु मत्स्य० में

अनुसार वाह्लीक के सात पुत्र वाह्लीश्वर थे (वाह्लीकस्य तु दायादा सप्त-वाह्लीश्वरा) यहाँ सोमदत्त का नाम नहीं है[२] । वायु० में पाठ वाह्लीक है ।

१—वायु० ९९।२३४—२३५
विष्णु० ४।२०।४ तथा १० [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
भाग० ९।२२।१२

२—मत्स्य० ५०।३९

वाह्लीक (२) एक जनपद । ब्रह्माण्ड० तथा मत्स्य० में वाह्लीक का उल्लेख उदीच्य देशों के अन्तर्गत आया है । सम्भवतः वाह तथा वाह्लीक एक ही होंगे और उनका नाम वाह्लीक राजा के नाम से ही पड़ा होगा । हो सकता है उन जनपदों में रहनेवाली इस नाम की कोई जाति भी हो ।

ब्रह्माण्ड० २।१६।४९
मत्स्य० ११३।४०

बिन्दुकार एक वानर प्रमुख ।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३९

बिन्दुकेतु एक वानर प्रमुख ।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२४०

बिन्दुमती (१) देखिए, बिन्दुमान् ।

बिन्दुमती (२) शशबिन्दु की पुत्री । मांधाता की रानी । उससे तीन पुत्र हुए—पुरुकुत्स, अम्बरीष और मुचुकुन्द ।

वायु० ८८।७०—७२
भाग० ९।६।२८

विन्दुमान् (विन्दुमत्) प्रियव्रत-वंश। मरीचि का बिन्दुमती से उत्पन्न पुत्र। बिन्दुमान् की स्त्री का नाम सरघा था, जिससे उसके मधु नामक पुत्र हुआ।

भाग० ५।१५।१५

विन्दुसार [भद्रसार] मौर्य वंश। चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र। अशोकवर्धन का पिता। राज्यावधि २५ वर्ष। वायु० में पाठ भद्रसार है।

विष्णु० ४।२४।८
वायु० ९९।३३१

बिम्ब वसुदेव का भद्रा से उत्पन्न पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७३
वायु० ९६।१७१

बिम्बिसार [विंविसार, विधिसार, विंदुसार, विम्बिसार] शिशुनाग (शिशुनाक) वंश। विष्णु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार क्षत्रौजा (क्षेमज, भाग०) का पुत्र। मत्स्य० में शिशु नागवंशीय राजाओं में बिम्बिसार का नाम नहीं है। किंतु यहाँ क्षेमवित्त के बाद विन्ध्यसेन राजा का नाम पठित है। ब्रह्माण्ड० तथा भाग० में पाठ विधिसार और विष्णु० में विंदुसार है। वायु० में पाठ विंविसार है जो सम्भवत: बिम्बिसार का पाठान्तर है, किन्तु यहाँ विंवसार का नाम अजातशत्रु और क्षत्रौजा के बाद आता है। ब्रह्माण्ड० भाग०, विष्णु० में वह अजातशत्रु का पिता माना गया है। उसकी राज्यावधि वायु० तथा ब्रह्माण्ड० में क्रमशः २८ तथा ३८ वर्ष है[१]। "लंका से प्राप्त परम्परा के अनुसार बिम्बिसार ने ५२ वर्ष तक राज्य किया"।[२] बिम्बिसार गौतम बुद्ध के समय में मगध के राजा थे। उनकी पटरानियों में एक महाकौशल की पुत्री कोशलदेवी तथा दूसरी लिच्छविवंश की राजकुमारी

छलना थी। पालि ग्रन्थों में बिम्बसार के पुत्र को वेदेहि-पुत्तो कहा गया है[३]।

१—ब्रह्माण्ड० ३।७४।१२९—१३१

भाग० १२।१।५—६ [बम्ब० संस्क० नि०]

वायु० ९९।३१९—३१८

मत्स्य० २७२।५। तथा ७। [आनन्दा०, पृ० ५०]

विष्णु० ४।२४।२ [बम्ब० संस्क० गी० ता०]

२—हे० च० रा०, पो० हि० ए० इ०, पंचम संस्करण पृ० २२५

३—कै० हि० इ० प्र० भाग० पृ० १८३

*पार्जिटर द्वारा सम्पादित 'दि० पु० टेक्स्ट० क० ए०' में पाठ 'बिम्बिसार' है। पार्जिटर ने "बिम्बिसार" की टिप्पणी में उस शब्द के कई एक पाठान्तर दिए हैं—

बिम्बिसार, विम्बिसार, विधुसार, बिन्दुसेन, बिन्दुसार, आदि। देखिए पृ० २१.

बुध

मानव वंश। नाभाग नेदिष्ट शाखा। वेगवान् का पुत्र। तृणबिन्दु का पिता।

वायु० ४।१।१८

वायु० ६८।२५

ब्रह्माण्ड० ३।८।४६, ३।६१।१०

बृहत्कर्मा (१)

चन्द्र वंश। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित पूर्वी आनव शाखा। अनु की २५ वीं तथा तितिक्षु की १७ वीं पीढ़ी में। विष्णु० तथा मत्स्य० के अनुसार बृहद्भानु का पिता। वायु० के अनुसार बृहद्रथ का पिता। वायु० तथा विष्णु० में वह भद्ररथ का पिता माना गया है।

वायु० ९९।१०८

विष्णु० ४।१८।८

भाग० ९।२३।१२

मत्स्य० ४८।१००

बृहत्कर्मा (२)

चन्द्र (पौरव) वंश। दक्षिण पाञ्चाल शाखा। पीढ़ी क्रम ३। बृहद्धनु (बृहदिषु, वायु०) का पुत्र।

विष्णु० ४।१९।१२

वायु० ९९।१७३

बृहत्काय

बृहद्धनु का पुत्र। जयद्रथ का पिता।

भाग० ९।२१।२२

बृहत्क्षत्र (१)

वृष्णि-वंश के राजा शूर की पुत्री श्रुतकीर्ति तथा सतर्दन का पुत्र। बृहत्क्षत्र के भाई का नाम चेकितान था। इस चेकितान का उल्लेख गीता के प्रथम अध्याय में भी आया है। वह (चेकितान) पाण्डवों के सहायकों में से था।

वायु० ९६।१४६

बृहत्क्षत्र (२)

पौरव वंश की २५ वीं पीढ़ी में भुवमन्यु का पुत्र। वह जरासन्ध के सहायकों में से था। मथुरा के घेरे में जरासन्ध द्वारा पश्चिम द्वार पर वह नियुक्त किया गया था।

विष्णु० ४।१९।१९

मत्स्य० ४९।३६ तथा ४२

वायु० ९९।१४९ तथा १६५

भाग० ९।२१।१ तथा २०

बृहत्सेन (१)

कृष्ण और भद्रा का पुत्र।

भाग० १०।६१।१७

बृहत्सेन (२)

पौरव वंश। मगध-शाखा। सुनक्षत्र का पुत्र। महाभारत के युद्ध के पश्चात् आने वाले राजाओं में इसका स्थान छठा है।

भाग० ९।२२।४७

बृहदश्व (१)

ऐक्ष्वाकु वंश। श्रावस्त का पुत्र। कुवलयाश्व का पिता। अपने पुत्र को राज्याभिषिक्त कर बृहदश्व ने वनवास ग्रहण किया। उत्तंग ऋषि ने उन्हें वनवास से रोका और कहा कि धुन्धु नाम का राक्षस पृथ्वी के अन्दर बालू

में छिप कर महान् तप कर रहा है। वह संवत्सर के पूर्ण होने पर निश्वास छोड़ेगा, जिससे पृथ्वी काँपने लगेगी और सूर्य भी ढक जायगा। अतः तुम उसे रोकने में समर्थ हो। ऋषि के इस प्रकार कहने पर बृहदश्व ने अपने पुत्र कुवलयाश्व को धुन्धु के वध करने की आज्ञा दे दी। देखिए, कुवलयाश्व।

वायु० ८८।२७-२८ तथा ३३-४७
मत्स्य० १२।३१
भाग० ९।६।२१
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२८—२९

बृहदिषु

पुरु-वंश। अजमीढ-शाखा। हर्य्यश्व के पांच पुत्रों में से एक। भाग० के अनुसार भेद का पुत्र।

विष्णु० ४।१९।१५
भाग० ९।२१।३१-३२
वायु० ९९।१९९-९८
मत्स्य० ५०।१

बृहद्रथ [बृहदुक्थ]

निमि-वंश। पीढ़ी क्रम ७। देवरात का पुत्र। महावीर्य का पिता। ब्रह्माण्ड० में पाठ बृहदुक्थ है।

वायु० ८९।८
विष्णु० ४।५।१२
ब्रह्माण्ड० ३।६४।८—९

बृहद्धनु

बृहदिषु का पुत्र। देखिए, बृहत्काय।

भाग० ९।२१।२२

बृहद्रण देखिए, बृहद्वल।

भाग० ६।१२।८
वायु० ८८।२१२

बृहद्रथ (१) चंद्र (पौरव) वंश। पूर्वी तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित आनव शाखा। अनु की २६ वीं तथा तितिक्षु की १८ वीं पीढी में। वायु० के अनुसार वह बृहत्कर्मा का पुत्र और बृहन्मना पिता है। किन्तु विष्णु के अनुसार भद्ररथ का पुत्र बृहद्रथ तथा बृहत्कर्मा का पुत्र बृहन्मना है।

वायु० ९९।११०
विष्णु० ४।१८।५

बृहद्रथ (२) चंद्र (पौरव) वंश। चैद्यवसु (उपरिचरवसु, विष्णु० विद्योपरिचर, वायु०) का पुत्र। वायु० में बृहद्रथ को मगधराट् कहा गया है। मगध कब इस वंश के राजाओं के हाथ में आया निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता[1]। बृहद्रथ के वंश में ३२ राजा हुए, जिन्होंने सहस्र वर्ष तक राज्य किया[2]।

१—वायु० ९९।२२१
विष्णु० ४।१९।१६
मत्स्य० ५०।२२७
भाग० ९।२२।५०
२—मत्स्य० २७१।२९–३०
वायु० ९९।३०–६
विष्णु० ४।२३।१२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१२१–१२२

बृहद्रथ (३) मौर्य वंश का अन्तिम शासक। पीढीक्रम संख्या ९। विष्णु० के अनुसार १० वां राजा। भाग० के अनुसार शतधन्वा का पुत्र। ब्रह्माण्ड० में वह शतधनु का पुत्र है। राज्यावधि ७ वर्ष। संभवत. पुष्यमित्र, (ब्रह्माण्ड० तथा वायु०

के अनुसार पुष्यमित्र) बृहद्रथ का मुख्य सेनापति था। बृहद्रथ को मार कर वह स्वयं राजा बना। मत्स्य० में उल्लेख है कि कौटिल्य महापद्म के पुत्रों को मारकर मौर्यों को राज्य देगा, किन्तु वहाँ चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार और अशोक के नाम नहीं हैं। मत्स्य० में दशरथ को बृहद्रथ का पौत्र माना गया है।

मत्स्य० २७२।२३—२४
वायु० ९९।३३७
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१४८
विष्णु० ४।२४।८
भाग० १२।१।१५

बृहद्बल

ऐक्ष्वाकु वंश। कुश से प्रवर्तित शाखा। विश्रुतवान् का पुत्र। महाभारत के पूर्व के ऐक्ष्वाकु वंश के राजाओं में अंतिम। वह महाभारत की लड़ाई में अभिमन्यु द्वारा मारा गया। विष्णु० के अनुसार उसके पुत्र का नाम बृहत्क्षण था। भाग० के अनुसार बृहद्बल तक्षक का पुत्र तथा बृहद्रण का पिता था।

वायु० ८८।२१२
भाग० ९।१२।८
विष्णु० ४।४।४८ तथा ४।२२।१

बृहद्वसु [बृहदिषु]

चंद्र (पौरव) वंश। अजमीढ और धूमिनी का पुत्र। बृहद्विष्णु का पिता। भाग० तथा विष्णु० में पाठ बृहदिषु है। बृहदिषु के समय से दक्षिण पाञ्चाल की शाखा प्रारम्भ होती है। इनका राज्य काम्पिल्य में था।

विष्णु० ४।१९।१७ [बम्ब० संस्क० लै० ना०]
वायु० ९९।१७०—७१
भाग० ९।२१।२१

बृहद्विष्णु

चन्द्र (पौरव) वंश। दक्षिण पाञ्चाल शाखा। वायु० के अनुसार बृहद्वसु का पुत्र।

वायु० ९९। १७१
मत्स्य० ४९। ४८
भाग० ९।२१।२२

बृहन्मना चंद्र (पौरव) वंश। पूर्वी आनव शाखा। विष्णु० के अनुसार अनु की २७ वीं तथा तितिक्षु की १९ वीं पीढ़ी में। बृहद्भानु का पुत्र और जयद्रथ का पिता। किन्तु वायु० में बृहद्भानु नामक राजा का उल्लेख नहीं है। वायु० के अनुसार बृहन्मना बृहद्रथ का पुत्र था।

विष्णु० ४।१८।५
वायु० ९९।११०

ब्रह्मदत्त (१) चन्द्र (पौरव) वंश। दक्षिण पाञ्चाल शाखा। पीढ़ीक्रम संख्या १७। (अणुह, वायु०), (अनुह, विष्णु०) तथा कृत्वी का पुत्र। विश्वक्सेन का पिता। भाग० के अनुसार नीप तथा शुककन्या कृत्वी का पुत्र। ब्रह्माण्ड० में ब्रह्मदत्त अणुह और कीर्तिमती का पुत्र माना गया है।

विष्णु० ४।१९।१३
मत्स्य० ४९।५७
वायु० ९९।१८०
भाग० ९।२१।२५
ब्रह्माण्ड० ३।८।९४

ब्रह्मदत्त (२) वायु० तथा मत्स्य० में १०० ब्रह्मदत्तों का उल्लेख है। सम्भवतः ये ब्रह्मदत्त राजा के बाद उसी वंश में होने वाले राजा होंगे।

वायु० ९९।४५४
मत्स्य० २७३।७२

ब्रह्मावर्त

एक प्रदेश का नाम, जहाँ पर धर्म और सत्य निवास करते थे और यज्ञ किये जाते थे। सम्राट् परीक्षित ने कलि को ब्रह्मावर्त में ठहरने से रोका था[1]। इसी क्षेत्र में सरस्वती नदी बहती थी और राजा पृथु ने यहीं पर १०० अश्वमेध यज्ञों की दीक्षा ली थी[2]। भाग० में एक स्थान पर कहा गया है कि प्रजापतिसुत सम्राट् मनु ने ७ समुद्रों से युक्त पृथ्वी का शासन ब्रह्मावर्त में रहते हुए किया[3]। मनु ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है—

सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते। मनु० २।१७

१—भाग० १।१७।३४
वही ३।१७।३३
२—भाग० ४।१९।१
३—वही ३।२१।२५

ब्रह्मास्त्र

एक उच्च श्रेणी का अस्त्र। परशुराम को शिव ने जो नागपाश, पाशुपत आदि अस्त्र दिये थे, उनमें एक ब्रह्मास्त्र भी था। अश्वत्थामा ने गर्भस्थ परीक्षित के प्रति ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया था।

१—ब्रह्माण्ड० ३।३२।४७
२—भाग० १।१२।१

ब्रह्मिष्ठ (१)

चन्द्र (पौरव) वंश। उत्तर पाञ्चाल शाखा। पीढ़ीक्रम-संख्या ७। मुद्गल का पुत्र। विष्णु० के अनुसार मुद्गल का पुत्र वृद्धश्व था।

वायु० ९९।१९९
विष्णु० ४।१९।१९
मत्स्य० ५०।३

ब्रह्मिष्ठ (२)

अमित का एकपर्णा से उत्पन्न पुत्र।

वायु० ७०।२७

भ्रक्षेपु क्रोष्टु-कुल में उत्पन्न एक राजा, जिसके आश्रित पृथुरुक्म था। यदि भ्रक्षेपु, रुक्मेषु का ही दूसरा नाम मान लिया जाय तो यह राजा रुक्मकवच के पाँच पुत्रों में से एक है।

वायु० ९५।२७-२८

भ्रक्षोत्तर [भ्रक्षोत्तराः] एक प्राच्य जनपद। इसका उल्लेख प्राग्ज्योतिष, विदेह, ताम्रलिप्तक आदि प्राच्य जनपदों के साथ हुआ है।

मत्स्य० १२१।५०

वायु० ४५।१२३, ४७।४६

भक्ष्यक [भक्ष्यकान्] एक जनपद का नाम।

वायु० ९९।१८७

भगदत्त प्राग्ज्योतिषपुर का एक राजा। भौमासुर (नरकासुर) का पुत्र। भौमासुर का वध करने के पश्चात् श्रीकृष्ण उसके यहाँ से प्रचुर धनराशि, अश्व और हाथी ले गये।

भाग० १०।५९।३१-३२

भगीरथ ऐक्ष्वाकु वंश। अंशुमान् का पौत्र। दिलीप का पुत्र और श्रुत का पिता। राजा सगर के साठ हजार पुत्र कपिल मुनि के शाप से भस्म हो गये थे। उनके उद्धार के लिए राजा भगीरथ ने घोर तप किया, जिससे वे गंगा को पृथ्वी पर लाने में समर्थ हुए। तभी से उनके नाम से गंगा भागीरथी कहलायीं। भागीरथी के पावन जल से पवित्र होकर सगर के भस्मीभूत पुत्र स्वर्गलोक को प्राप्त हुए।

भाग० ९।९।२-१३

वायु० ४७।३३-४०

ब्रह्माण्ड० २।१८।३३-४२

वायु० ८८।१६७-१७०

भङ्गकार

यादव वंश। वृष्णि शाखा। कैकयराज की दस पुत्रियाँ सत्राजित् को ब्याही गया। उनसे सत्राजित् के सौ पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ पुत्र भङ्गकार था। व्रतवती (मत्स्य०), व्रतवती (ब्रह्माण्ड०) और द्वारवती (वायु०) नामक भार्या से भङ्गकार के तीन पुत्रियाँ हुईं—सत्यभामा, व्रतिनी तथा पद्मावती (तपस्विनी, ब्रह्माण्ड० तथा वायु०)। ये सब श्रीकृष्ण को ब्याही गयीं।

वायु० ९६।५२—५५
ब्रह्माण्ड० ३।७१।५८
मत्स्य० ४५।१६—२१

भजमान (१)

यादव वंश। क्रोष्टु प्रवर्तित शाखा। ज्यामघ के कुल में सात्वत और कौशल्या का दूसरा पुत्र। भजमान के सृञ्जयी (सृञ्जरी वायु०) से दो पुत्र हुए, जिनके नाम बाह्य और बाह्यक थे। ब्रह्माण्ड० में यद्यपि भजमान के पुत्र का नाम है किन्तु उसकी स्त्री का उल्लेख नहीं है।

वायु० ९६।१
विष्णु० ४।१३।१
मत्स्य० ४४।४७
भाग० ९।२४।६
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१
वायु० ९६।४-५
विष्णु० ४।१३।१
मत्स्य० ४४।४७

भजमान (२)

यादव वंश। अन्धक शाखा। अन्धक का पुत्र[1]। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार सत्वत तथा काशिराज की दुहिता का पुत्र[2]। मत्स्य० के अनुसार वह कङ्क की दुहिता का पुत्र था, किन्तु वहाँ पिता का नाम नहीं है[3]।

१—विष्णु० ४।१४।२
भाग० ९।२४।१६
२—वायु० ९६।११५
ब्रह्माण्ड० ३।७१।११६
३—मत्स्य० ४४।६१

भजमान (३)
यादव वंश। शूर का पुत्र और शिनि का पिता।

अग्नि० ६।२४।२६

भजिन [भजि]
यादव वंश। क्रोष्टु-प्रवर्तित शाखा। ज्यामघ के कुल में, सात्वत और कौशल्या का ज्येष्ठ पुत्र। भाग० तथा ब्रह्माण्ड० में पाठ भजि है।

वायु० ६६।१
विष्णु० ४।१३।१
मत्स्य० ४४।४७
भाग० ६।२४।२६
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१

भद्र (१)
यदु-वंश। वृष्णि-शाखा। पौरवी और वसुदेव का पुत्र।

भाग० ६।२४।४७

भद्र (२)
यदु-वंश। वृष्णि-शाखा। वसुदेव और देवकी का पुत्र।

भाग० ६।२४।५४

भद्र (३)
यादव वंश। वृष्णि-शाखा। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार जाम्बवती और कृष्ण का पुत्र। भाग० के अनुसार कालिन्दी और कृष्ण का पुत्र। मत्स्य० के अनुसार रुक्मिणी और कृष्ण का पुत्र।

वायु० ६६।२४१
ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४६
भाग० १०।६१।१४
मत्स्य० ४७।१६

भद्रक (१) [आर्द्रक, अन्धक]
शुङ्ग-वंश। वसुमित्र का पुत्र और पुलिन्दक का पिता। ब्रह्माण्ड० के अनुसार वसुमित्र का पुत्र भद्र और भद्र का पिता पुलिन्दक है। विष्णु० में पाठ

आर्द्रक तथा वायु० में अन्ध्रक है। राज्यावधि दो वर्ष।

भाग० १२।१।१७
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५२
विष्णु० ४।२४।१०
वायु० ९९।३३९-४०

भद्रक (२)

चंद्र-वंश। पश्चिमी आनव शाखा। शिवि का कनिष्ठ पुत्र। उसी के नाम से मद्रक जनपद की नींव पड़ी।

मत्स्य० ४८।१९-२०

भद्रकार (भद्रकाराः)

मध्यदेश में स्थित एक जनपद का नाम।

ब्रह्माण्ड० २।१६।४१
वायु० ४५।११०-१११

भद्रगुप्त

जाम्बवती और श्रीकृष्ण का पुत्र।

वायु० ९६।२४१
ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४६

भद्रचारु

रुक्मिणी और श्रीकृष्ण का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४१
भाग० १०।६१।८
वायु० ९६।२३७

भद्रचित्र

जाम्बवती और कृष्ण का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४९

भद्रदेव [भद्रविदेह] देवकी और वसुदेव का छठा पुत्र, जो कंस द्वारा मारा गया। मत्स्य० में पाठ भद्रविदेह है।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७८
मत्स्य० ४६।१२

भद्रबाहु जाम्बवती और कृष्ण का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।२५०

भद्ररथ चंद्र (पौरव) वंश। तितिक्षु द्वारा स्थापित पूर्वी आनव शाखा। अनु की २४ वां तथा तितिक्षु की १६ वीं पीढ़ी में। हर्यङ्ग (हयङ्ग) का पुत्र। बृहत्कर्मा का पिता।

वायु० ९९।१०६
विष्णु० ४।१८।५

भद्रवती जाम्बवती और कृष्ण की पुत्री।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।२५०

भद्रवाह वसुदेव और पौरवी का पुत्र।

भाग० ९।२४।४७

भद्रविन्द कृष्ण और नागजिति का पुत्र।

विष्णु० ५।३२।३

भद्रविन्द्र जाम्बवती और कृष्ण का पुत्र।

वायु० ९६।२४१

भद्रवशाग्वी

वसुदेव की पत्नियों में से एक।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१६१

भद्रश्रेण्य [भद्रसेन, रुद्रश्रेण]

यादव वंश। हैहय शाखा। महिष्मान का पुत्र[1]। ब्रह्माण्ड० तथा भाग में पाठ भद्रसेन और मत्स्य० में रुद्रश्रेण्य है। भद्रश्रेण्य को वाराणसी का राजा कहा गया है[2]। ऐसा प्रतीत होता है कि हैहयों ने काशी के राजा दिवोदास को अथवा उसके पूर्वजों को पराजित किया, और वाराणसी पर अपना अधिकार स्थापित किया। किन्तु दिवोदास ने पुनः भद्रश्रेण्य को युद्ध में पराजित किया और अपना राज्य वापस ले लिया। वायु० के अनुसार युद्ध में भद्रश्रेण्य के निन्यानवे पुत्र मारे गये। केवल एक पुत्र, जिसका नाम दुर्दम था, शेष रहा। दिवोदास ने उसे बालक समझ कर छोड़ दिया[3]। दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन द्वारा भद्रश्रेण्य के कुल का अन्त हुआ[4]।

१—विष्णु० ४।११।३
वायु० ९४।७–८
ब्रह्माण्ड० ३।६९।६
मत्स्य० ४३।११
भाग० ९।२३।२२–२३
२—वायु० ९२।६८
वही ९४।६
३—वही ९२।६२–६३
४—विष्णु० ४।८।५

भद्रसार

चन्द्रगुप्त मौर्य का परवर्ती राजा, जिसने २५ वर्ष तक राज्य किया

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१४४

वायु० ९९।३३२

भद्रसेन

देवकी और वसुदेव का पुत्र, जो कंस द्वारा मारा गया

ब्रह्माण्ड० ३।७१,१७५
वायु० ४६।१३

भद्रसेनी — पुरुद्वान् की स्त्री। उसके पुत्र का नाम जन्तु था।

मत्स्य० ४४।४५

भद्रा (१) — भद्राश्व और घृताची की पुत्री। उसका विवाह प्रभाकर से हुआ। उसके पुत्र का नाम सोम था।

वायु० ७०।६८–७०
ब्रह्माण्ड० ३।८।७४

भद्रा (२) — मेरु की पुत्रियों में से एक।

भाग० ५।२।२३

भद्रा (३) — वसुदेव की पत्नियों में से एक।

भाग० ६।२४।४५
वायु० ९६।१६०

भद्रा (४) — श्रुतिकीर्ति की पुत्री, जो कृष्ण को ब्याही गयी।

१—भाग० १०।५८।५६

भद्राश्व (१) — स्वायंभुव मनु वंश। प्रियव्रत के कुल में आग्नीध्र के नव पुत्रों में से एक। आग्नीध्र जम्बूद्वीप का स्वामी था। उसने अपने राज्य को नव पुत्रों में विभक्त कर दिया। वायु० और ब्रह्माण्ड० के अनुसार माल्यवान् (माल्य-

वर्त्त,) तथा विष्णु० के अनुसार मेरु के पूर्व का देश भद्राश्व को मिला और उसी के नाम से भद्राश्व वर्ष का नाम पड़ा।

भाग० ५।२।१९

ब्रह्माण्ड० २।१४।४७-५१

वही २।१५।५०

वायु० ३३।४४, ४९

विष्णु० २।१।१७ तथा २२

भद्राश्व (२)[चन्द्राश्व] ऐक्ष्वाकु वंश। कुवलयाश्व (धुन्धुमार) का पुत्र। धुन्धु नाम के राक्षस ने कुवलयाश्व के सब पुत्रों को अपने मुख की अग्नि से भस्म कर दिया था। उसके केवल तीन पुत्र जीवित रह पाये जिनमें भद्राश्व एक था। विष्णु० के अनुसार उसका नाम चन्द्राश्व था। मत्स्य० में भद्राश्व की स्त्री का नाम घृता है।

भाग० ९।६।२३-२४

ब्रह्माण्ड० ३।६३।६३

वायु० ८८।६१

विष्णु ४। २। ११

मत्स्य० ४६।५

भद्राश्व (३) [हर्यश्व, भर्म्याश्व] चन्द्र (पौरव) वंश। उत्तर पाञ्चाल शाखा। पीढ़ीक्रम ५। बाह्य (विष्णु०,) अर्क (भाग०) पृथु (मत्स्य०,) का पुत्र। भद्राश्व के पाँच पुत्र थे। वायु० में भद्राश्व का नाम नहीं है। किन्तु वहाँ ये पाँच पुत्र मेद के माने गये हैं। भाग० में पाठ भर्म्याश्व है। देखिए, पञ्चाल (१)

वायु० ९९।१९५

विष्णु० ४।१९।१५

मत्स्य० ५०।३

वायु० ९९।१९७-१९८

भाग० ९।२१।३१—३३

भय

एक यवनराज। उसने कालकन्या को बहिन के रूप में स्वीकार किया। उसके (यवनराज के) भाई का नाम प्रज्वार था। उसने कालकन्या तथा प्रज्वार की सहायता से पुरञ्जय की नगरी पर आक्रमण किया।

भाग० ४।२७।२३—३०

वही ४।२८।२२—२३

भरत (१)

स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में ऋषभदेव और जयन्ती का ज्येष्ठ पुत्र। वे भगवान् विष्णु के भक्त थे। इसलिए उन्हें महाभागवत कहा गया है। विश्वरूप की पुत्री पञ्चजनी से उनका विवाह हुआ, जिससे उनके पाँच पुत्र हुए—सुमति, राष्ट्रभृत, सुदर्शन, आवरण, और धूम्रकेतु। भरत नित्य प्रजा-पालन में तत्पर रहते थे। उन्होंने विधिवत् कई यज्ञ किये। उन्होंने अयुत सहस्र वर्ष तक राज्य किया। उन्हीं के नाम से "भारतवर्ष" का नाम पड़ा। देखिए, भारतवर्ष।

भाग० ५।४।६

वही ५।७।३

वही ११।२।१७

वही ५।५।२८

वही ५।७ अ० सम्पूर्ण

विष्णु० २।१।३२—३३

वायु० ३३।५१—५३

भरत (२)

ऐक्ष्वाकु वंश। दशरथ का पुत्र। राम की दिग्विजय में भरत ने करोड़ों गन्धर्वों का संहार किया और वहाँ अपना राज्य स्थापित किया। भरत के दो पुत्र थे—तक्ष और पुष्कर, जिन्होंने गान्धर्व देश (विषय) में अपना अपना पृथक् राज्य स्थापित किया। उन्हीं के नाम से गान्धार देश में दो मुख्य नगरियाँ—तक्षशिला और पुष्करावती कहलायीं।

विष्णु० ४।४।४० तथा ४६—४७

वायु० ८८। १८४— १९०

भाग० ९।२०।३
भाग० ९।२१।१९–२२
भाग० ९।२०।२४—४० तथा ४२

भरत (३)

पौरव वंश। दुष्यन्त और शकुन्तला का पुत्र। पिता की मृत्यु के उपरान्त भरत राजसिंहासन पर बैठे और अपने पिता की तरह चक्रवर्ती राजा हुए। उन्हें हरि का अंश माना गया है तथा उन्हें सम्राट् और अधिराट् कहा गया है। भरत के सदृश धर्मिष्ठ और प्रतापी राजा न उसके पूर्व हुए, न उसके पश्चात् होंगे। उन्होंने अपनी दिग्विजय के अन्तर्गत किरात, हूण, यवन, आन्ध्र, कङ्क, खश, शक, आदि को जीता—

किरातहूणान् यवनानन्ध्रान् कङ्कान् खशाञ्छकान्।
अब्रह्मण्यान्नृपांश्चाहन् म्लेच्छान्दिग्विजयेऽखिलान्॥

उन्होंने असुरों पर भी विजय प्राप्त की और उनके (असुरों) द्वारा अपहृत स्त्रियों का उद्धार किया। मामतेय दीर्घतमा की अध्यक्षता में भरत ने गंगा के किनारे ५५ अश्वमेध यज्ञ किए और यमुना के तट पर ७८ अश्वमेध। उनमें ब्राह्मणों को उन्होंने प्रभूत दक्षिणा दी। उनके राज्य में प्रजा अत्यन्त सुखी थी। भरत की तीन स्त्रियाँ विदर्भ की राजकुमारियाँ थीं। उनके उनसे नव पुत्र हुए किन्तु उनमें से कोई भी भरत के अनुरूप नहीं था। इसलिए उनकी माताओं ने क्रुद्ध होकर उन्हें मार डाला। इस प्रकार वंश के विफल हो जाने पर पुत्रप्राप्ति के लिए उन्होंने मरुत्स्तोम यज्ञ किया जिससे उन्हें पुत्र प्राप्त हुआ। भरत ने पृथ्वी पर २७००० वर्ष राज्य किया। भरत के जन्म के सम्बन्ध में देखिए, दुष्यन्त।

विष्णु० ४।१९।२—८
वायु० ९९।१३४—१५८
मत्स्य० ४९।११।२१
भाग० ९।२०।२१—३२

भरत (४)

यादव वंश। हैहय शाखा। पौर्णिक्रम संख्या १६। तालजङ्घ के १०० पुत्रों में से ७८। वृष और सुजात का पिता।

विष्णु० ४।११।५

भरद्वाज (भरद्वाजाः) एक उदीच्य देश तथा वहाँ रहने वाली एक जाति। इसका नाम काम्बोज, दरद, आदि देशों के साथ आया है।

ब्रह्माण्ड० २।१६।५०

मत्स्य० ११३।४३ [कलकत्ता यु० प्र०]

भर्ग वह्नि का पुत्र। भानुमान् का पिता।

भाग० ६।२३।१६

भर्म्याश्व पुरु-वंश। अजमीढ द्वारा प्रवर्तित। अर्क का पुत्र। उसके पाँच पुत्र थे। देखिए, भद्राश्व (२)।

भाग० ६।२१।३१-३३

भलन्दन सूर्य (मानव) वंश। वायु० के अनुसार नाभागोऽरिष्ट का पुत्र और प्रांशु का पिता। "नाभागोऽरिष्टपुत्रस्तु विद्वानासीद्भलन्दनः। भलन्दनस्य पुत्रोऽभूत्प्रांशुर्नाम महाबल."[1]। ब्रह्म०, विष्णु० तथा भाग० में यह स्पष्ट नहीं है कि भलनन्दन किसका पुत्र था। ब्रह्म० के अनुसार नाभागधृष्ट के बहुत से पुत्र हुए, जो क्षत्रिय से वैश्य बन गये। किन्तु वहाँ पुत्रों का नाम नहीं है। विष्णु० के पाठ के अनुसार नाभागोनेदिष्ट का पुत्र वैश्य बन गया जिसका पुत्र भलंदन हुआ। इस प्रकार यहाँ भलन्दन, नाभागनेदिष्ट का पौत्र ठहरता है। विष्णु० में भलन्दन का पुत्र वत्सप्रि और पौत्र प्रांशु माना गया है[3]। भाग० में भी प्रांशु भलन्दन का पौत्र तथा वत्सप्रीति (वत्सप्रि) पुत्र कहा गया है, और वहाँ भलन्दन नाभागोदिष्ट का पौत्र प्रतीत होता है[४]।

१—वायु० ८६।२—४
२—ब्रह्म० ५।२६ (नाभागस्य सुतास्तत्र क्षत्रिया वैश्यतां गताः)
३—विष्णु० ४।१।१६—१७ (नाभागो नेदिष्टपुत्रस्तु वैश्यतामगमत्। तस्माद्भ-लंदनः पुत्रोऽभवत्।)
४—भाग० ९।२।२३—२४ (नाभागो दिष्टपुत्रोऽन्यः कर्मणा वैश्यतां गतः। भलन्दनः सुतस्तस्य…)

भल्लाट [भल्लाद]

पुरुवंश। अजमीढ का कुल। उदक्सेन का पुत्र और जनमेजय का पिता।

वायु० ९९।१८१—२
मत्स्य० ४९।५९

भागवत

शुङ्ग-वंश। पीढ़ीक्रम ६। वज्रमित्र का पुत्र। शुङ्ग-वंश के अंतिम राजा देव-भूत का पिता। वायु० में भागवत के पिता का नाम विक्रमित्र है और पुत्र का नाम क्षेमभूमि। मत्स्य० में भागवत का नाम समाभाग और पुत्र का नाम देवभूमि है। उसने ३२ वर्ष तक राज्य किया।

विष्णु० ४।२४।३३
वायु० ९९।३४१
भाग० १२।१।१८
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५४
मत्स्य० २७२।२९—३०

भानु (१)

ऐक्ष्वाकु वंश। कुश से प्रवर्तित शाखा। प्रतिव्योम का पुत्र। दिवाक का पिता।

भाग० ९।१२।१०

भानु (२)

कृष्ण और सत्यभामा का पुत्र।

भाग० १०।६१।१०
ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४७
वायु० ६६।२३८

भानुमती (१) सगर की रानी। असमञ्जसी की माता।
मत्स्य० १२।३६ तथा ४२

भानुमती (२) बृहत्कल के राजा धर्ममूर्ति की दस हजार रानियों में प्रधान अर्थात् पटरानी।
मत्स्य० ६१।१६-२० [कलकत्ता गु० प्र०]

भानुमान् (१) [भानुरथ] ऐक्ष्वाकु वंश। (बृहद्रथ) बृहद्बल से प्रवर्तित शाखा। महाभारत युद्ध के पश्चात् आने वाले राजाओं में भानुमान् (भानुरथ) का स्थान दसवाँ है। बृहदश्व का पुत्र। भाग० के अनुसार प्रतीकाश्व, (सुप्रतीक, विष्णु०, प्रतीताश्व, वायु०) का पिता। विष्णु० तथा वायु० में पाठ भानुरथ है।
भाग० ९।१२।११
विष्णु० ४।२२।३ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
वायु० ९९।२८४

भानुमान् (२) निमिवंश। सीरध्वज का पुत्र तथा प्रद्युम्न का पिता। भाग० के अनुसार भानुमान् केशिध्वज का पुत्र और प्रद्युम्न का पिता था। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार भानुमान् मैथिल था, तथा उसके भाई का नाम कुशध्वज था।
वायु० ८९।१८
भाग० ९।१३।२१
ब्रह्माण्ड० ३।६४।१८

भानुविन्द जिस समय शाल्व ने द्वारका पर आक्रमण किया, उस समय उसकी रक्षा के लिए प्रद्युम्न, सात्यकि, चारुदेष्ण आदि के साथ भानुविन्द भी था।
भाग० १०।७६।१४

भारत (१) भारत-युद्ध। (संग्रामे भारते तस्मिन् सहदेवो निपातितः) भरत नामक युद्ध में सहदेव मारा गया किन्तु मत्स्य० के अनुसार सूर्यवंशी राजा भानुनन्द का पुत्र श्रुतायु मारा गया था।

महाभा० १।७४।१०६–११०
वायु० ९९।२९९
मत्स्य० १२।५५

भारत (२) (भारताः) पुरुवंश से सम्बन्धित भरत के कुल में होने वाले राजा दुष्यन्त और शकुन्तला से उत्पन्न भरत के परवर्ती राजाओं की सामुदायिक संज्ञा।

मत्स्य० २४।७१।
वही० ४९।११

भारतवर्ष भाग० के अनुसार ऐक्ष्वाकु वंशी ऋषभ के सबसे ज्येष्ठ पुत्र भरत महायोगी तथा श्रेष्ठ गुण वाले थे, उन्हीं के नाम से यह देश भारत कहलाता है। इसी पुराण में पुनः मिलता है कि नाभि के पुत्र ऋषभ ने अपने पुत्र भरत को हिमाद्रि दक्षिण वर्ष (देश) का राज्य सौंप दिया, उस समय से उसका नाम भारत वर्ष पड़ गया—हिमाह्वं दक्षिणं वर्षं भरताय न्यवेदयत्। तस्मात्तु भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः। महाभारत के अनुसार दौष्यन्ति भरत (पौरववंशी) अत्यन्त प्रतापी सार्वभौम, चक्रवर्ती सम्राट् थे, उन्हीं के नाम से यह देश भारत और यहाँ की संस्कृति भारती कहलायी। भाग० के अनुसार भारतवर्ष के पहले इसका नाम अजनाभ वर्ष था—"अजनाभं नामैतद्वर्षं भारतमिति"। पुराणों के अनुसार समस्त पृथ्वी सात द्वीपों में विभक्त है। उन सात द्वीपों में से जम्बुद्वीप एक है और जम्बुद्वीप पुनः नव वर्षों में विभक्त है, जिनमें भारत एक है। भारत महासागर के उत्तर और हिमवान् (हिमालय) के दक्षिण सम्पूर्ण भूमि इसमें सम्मिलित मानी गयी है। मत्स्य० तथा वायु० में तो दक्षिण में कन्याकुमारी से लेकर उत्तर में गंगा के उद्गम तक की भूमि को भारत वर्ष कहा गया है।

वायु० ३३।५१-५२; ८१।४५।७५
विष्णु० २।१।२१।४२ ; २।३,१
ब्रह्माण्ड० २।१४।६१-६२ तथा ७२
वायु० ३४ वाँ अध्याय
भाग० ५।४।९; ५।४।७
मत्स्य० ११४।१०
महा० आदि० ६९।४७,४९

भारुकच्छ [भानुकच्छ] दक्षिणापथ का एक जनपद। वायु० में पाठ भानुकच्छ है।
वायु० ४५।१३०।
मत्स्य० ११४।५० [कल० गु० प्र०]

भार्ग [भर्ग] चन्द्र (पौरव) वंश की शाखा। काशिराज की २०वीं पीढ़ी में वैनहोत्र (वीतिहोत्र, भाग०) का पुत्र। भाग० में पाठ भर्ग है और वह भार्गभूमि का पिता कहा गया है।
विष्णु० ४।८।९
भाग० ९।११।९

भार्गभूमि देखिए, भार्ग।
विष्णु० ४।८।९
भाग० ९।११।९

भार्गव (१) परशुराम का दूसरा नाम। देखिए, राम (१)
ब्रह्माण्ड० ३।४६।१,२४

भार्गव (२) [भार्गवाः] एक प्राच्य जनपद का नाम। इसका उल्लेख प्रावृषेय, प्राग्ज्योतिष आदि प्राच्य जनपदों के साथ हुआ है।
ब्रह्माण्ड० २।१६।५४

भाविमन्द्र (भाविमन्द्राः) एक जनपद का नाम।

वायु० ४३।२२

भास एक वानर-प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२४२

भीम (१) चंद्र-वंश। विजय का पुत्र। पुरूरवा का पौत्र। काञ्चन, (काञ्चनप्रभ, ब्रह्माण्ड०) का पिता। विष्णु०, वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार भीम अमावसु का पुत्र और पुरूरवा का पौत्र था। यज्ञभूमि को अपने जल से प्लावित करने वाली गंगा का इसी भीम के प्रपौत्र जह्नु ने पान किया था। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० में भीम को विश्वजित् कहा गया है।

भाग० ६।१५।१
विष्णु० ४।७।२
वायु० ६१।५२
ब्रह्माण्ड० ३।६६।२१

भीम (२) एक वानर प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३५

भीमरथ (१) चंद्र (पौरव) वंश। काशिराज की पाँचवीं पीढ़ी तथा धन्वन्तरि की तीसरी पीढ़ी में। केतुमान् का पुत्र और दिवोदास का पिता।

विष्णु० ४।८।१
भाग० ६।१७।१-६
ब्रह्माण्ड० ३।६७।२१
ब्रह्म० ११।११

भीमरथ (२) यदुवंश। क्रोष्टु-प्रवर्तित शाखा। ज्यामघ की ११वीं पीढ़ी में। विकृति का पुत्र और नवरथ (दशरथ, ब्रह्माण्ड० तथा वायु०) का पिता। मत्स्य० के अनुसार विमल का पुत्र।

विष्णु० ४।१२।१६
वायु० ९५।४१
भाग० ९।२४।४
ब्रह्माण्ड० ३।७०।४२
मत्स्य० ४४।४१

भीमसेन (१) पुरुवंश। कुरु-शाखा। मत्स्य० के अनुसार पाण्डु का कुन्ती से वायु द्वारा उत्पन्न पुत्र। भीमसेन के तीन पुत्र हुए—द्रौपदी से सुतसोम (श्रुतसेन, भाग०) जो अश्वत्थामा द्वारा मारा गया, हिडिम्बा से घटोत्कच जो महाभारत युद्ध में मारा गया तथा काश्या से उसका सर्ववृक नामक पुत्र हुआ। मत्स्य० तथा भाग० के अनुसार काली से सर्वगत नामक पुत्र हुआ। विष्णु० के अनुसार भीमसेन का तीसरा पुत्र सर्वगत था, किन्तु वहाँ माता का नाम नहीं है। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर पश्चिम की दिग्विजय के लिए भीम को नियुक्त किया गया था। मत्स्य, केकय और मद्र राज्य इस दिग्विजय में उसके सहायक थे। दिग्विजय में युधिष्ठिर के चारों भाइयों ने सभी राजाओं को जीत लिया था। केवल जरासन्ध ही पराजित नहीं हुआ था। उद्धव श्रीकृष्ण को इस सम्बन्ध में परामर्श दे चुके थे कि भीमसेन के द्वारा जरासन्ध का वध हो सकता है। श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीम तीनों ब्राह्मणभिक्षु का वेश धारण किये हुए जरासन्ध के पास पहुँचे और वहां जरासन्ध से द्वन्द्वयुद्ध की भिक्षा मांगी। अन्त में भीमसेन द्वारा जरासन्ध मारा गया। देखिए, जरासन्ध।

विष्णु० ४।१४।१०
वायु० ९९।२४४
भाग० ९।२२।२९ – ३१
मत्स्य० ५०।४९
वायु० ९९।२७४

विष्णु० ४।२०।११
भाग० ९। २२।११
मत्स्य० ५०।४१ तथा ५१-५४
भाग० १०।७२।१३

भीमसेन (२)

परीक्षित के पुत्रों में से एक।
भाग० ९।२२।३५

भीमसेन (३)

चन्द्र-वंश। पुरु-शाखा। ऋक्ष का पुत्र और दिलीप का पिता।
वायु० ९९।२३३
विष्णु० ४।२०।४

भीष्म

पुरु-वंश। कुरु-शाखा। शान्तनु, (शन्तनु, भाग० तथा वायु०) और गंगा का पुत्र। ये अनेक शास्त्रों के ज्ञाता, विद्वान, (कवि) आत्मवान् तथा धर्मज्ञों में श्रेष्ठ थे। ये भगवान् विष्णु के परम भक्त (महाभागवत) और कुशल सेनापति थे। उन्हें वीरयूथाग्रणी कहा गया है। भीष्म का दूसरा नाम देवव्रत था। ये युद्ध में कुशल थे और अपने युद्ध कौशल से अपने गुरु परशुराम को सन्तुष्ट किया था। (वीरयूथाग्रणीर्येन रामोऽपि युधि तोषितः) युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भीष्म भी उपस्थित थे। महाभारत युद्ध में ये कौरवों की सेना के प्रथम सेनापति होकर पाण्डवों के विरुद्ध लड़े थे। युद्ध के दसवें दिन ये आहत हुए थे।
भाग० ९।२२।१९-२०
वायु० ९९।२४०
विष्णु० ४।२०।१०
भाग० १०।७४।६

भीष्मक

विदर्भ देश (बिरार) का एक बलवान् राजा। उसकी राजधानी कुण्डिन (नगरी) थी। उसके पुत्र का नाम रुक्मी तथा पुत्री का नाम रुक्मिणी था। उसने रुक्मिणी का विवाह रुक्मी की प्रेरणा से चेदिराज शिशुपाल

के साथ करना निश्चित किया, किन्तु उसके पूर्व ही कृष्ण ने रुक्मिणी का अपहरण कर लिया, क्योंकि रुक्मिणी स्वयं कृष्ण को पति के रूप में वरण करना चाहती थी।

भाग० १।३।२
विष्णु० ५।२६।१–६

भुर्भरी एक आयुध विशेष।

वायु० ३०।२३७

भुव स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में, उन्नेता (प्रतिहर्ता विष्णु०) का पुत्र। उद्गीथ का पिता।

वायु० ३३।५६
विष्णु० २।१।२८

भुवत एक राजा, जिसका नाम क्षेम के बाद आता है। हो सकता है वह क्षेम का पुत्र हो। उसने ६४ वर्ष तक राज्य किया।

वायु० ६६।३०२

भुवमन्यु पुरुवंश। वितथ का पुत्र। उसके चार पुत्र हुए—बृहत्क्षेत्र, (बृहत्क्षत्र, वायु०) महावीर्य नर और गर्ग।

मत्स्य० ४९।३५–३६
वायु० ९९।१५८–१५९

भुशुण्डी युद्ध में प्रयुक्त होने वाला एक आयुध।

मत्स्य० १४९।७१ [कलकत्ता, गु० प्र०]

भूत

पौरवी और वसुदेव का पुत्र।

भाग० ९।२४।४७

भूतनन्द

किलकिला नगरी के राजाओं में से एक। अन्य राजाओं का नाम वङ्गिरि, शिशुनन्दि, यशोनन्दि, और प्रवीरक है। इन सबों ने १०६ वर्ष तक राज्य किया।

भाग० १२।१।३२

भूतसन्ताप

एक असुर, जिसने देवासुर संग्राम में देवताओं के विरुद्ध भाग लिया था।

भाग० ८।१०।२०

भूतसन्तापन

हिरण्याक्ष नामक असुर का पुत्र।

भाग० ७।२।१८

ब्रह्माण्ड० ३।५।३१

वायु० ६७।६८

विष्णु० १।२१।२

भूतिमित्र

देखिए भूमिमित्र (२)।

वायु० ९९।३४५
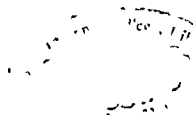
भूमिमित्र (१)

विन्ध्यसेन का पुत्र। उसने १४ वर्ष तक राज्य किया।

मत्स्य० २७१।८ [कलकत्ता, प्र० सं०]

भूमिमित्र (२)
[भूतिमित्र]

कण्व-वंश। पीढ़ीक्रम २। कण्ववंश नरपति देवभूति (देवभूमि) के अमात्य वसुदेव का पुत्र। नारायण का पिता। राज्यावधि २४ वर्ष। वायु० में भूमिमित्र के स्थान पर 'भूतिमित्र' है, किन्तु यह किसका पुत्र था,

पाठभ्रष्ट होने के कारण स्पष्ट नहीं है।

वायु० ६६। ३४५
विष्णु० ४।२४।११
ब्रह्माण्ड० ३। ७४। १५८
भाग० १२।१।३०

भूरि (१) सोमवंश। सोमदत्त का प्रथम पुत्र। जब दुर्योधन की दुहिता लक्ष्मणा को स्वयम्बर से जाम्बवती के पुत्र साम्ब ने अपहरण कर लिया, तब साम्ब के पकड़ने का शल, कर्ण, सुयोधन आदि के साथ भूरि ने भी प्रयत्न किया।

भाग० ६।२२।१८
वही० १०।६८।५
वायु० ६६।२३५

भूरि (२) विवक्षु का ज्येष्ठ पुत्र। चित्ररथ का पिता।

मत्स्य० ५०। ८०

भूरिश्रवा सोमवंशज सोमदत्त का दूसरा पुत्र।

भाग० ६।२२।१८
वायु० ६६।२३५

भृशा उशीनर राजा की रानियों में से एक। नृग की माता।

मत्स्य० ४८।१६-१७

भेद (१) राजनीति में जिन उपायों का प्रयोग किया जाता है, उनमें दूसरा स्थान भेद का है। नीतिज्ञों ने भेद की अत्यन्त प्रशंसा की है। भेद की नीति से विरोधिनी सम्मिलित शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। इस नीति का प्रयोग शत्रुओं के प्रति उस समय करना चाहिए, जब वे एक दूसरे के प्रति दुष्ट व्यवहार रखते

हों, एक दूसरे के प्रति क्रुद्ध हों, एक दूसरे से डरते हों तथा एक दूसरे के द्वारा तिरस्कृत हों। जिस दोष के कारण वे एक दूसरे के प्रति अपराधी ठहरते हों, उसी दोष से उनके मध्य में फूट डालनी चाहिए। इस प्रकार उनमें भेद डाल कर उन्हें अपने वश में करे। राजाओं में दो प्रकार के विद्रोहों का भय रहता है—आन्तरिक और बाह्य। राजमहिषी, युवराज, सेनापति, अमात्य और मंत्रियों द्वारा उत्पन्न विद्रोह अन्त कोप है। सामन्तों का विद्रोह बाह्यकोप है। बाह्यकोप से कहीं अधिक भयानक अन्त कोप होता है क्योंकि यदि राज्य के आन्तरिक अंग विक्षुब्ध नहीं हैं तो राजा बाह्य कोप का सरलता के साथ दमन कर सकता है। अतः राजा को चाहिए कि वह अपने राज्य के अन्त कोप से अपनी रक्षा करे। इसके विपरीत शत्रु के राज्य में आभ्यन्तरिक विद्रोह पैदा करे। इसी प्रकार शत्रु के सम्बन्धियों में भी भेद डालना चाहिए। राजा को चाहिए कि जो शत्रु के आन्तरिक अंगों तथा उसके बन्धुओं में भेद डालने वाले हैं, उनकी रक्षा करे तथा उनको सब प्रकार की सहायता दे। वैदेशिक नीति में इस उपाय का दूसरा स्थान है। भेद का प्रयोग उन्हीं राजाओं के प्रति करना चाहिए जो दुष्प्रकृति हों, क्रुद्ध स्वभाव के हों, और भीत तथा तिरस्कृत हों।

मत्स्य० २२१।२,२२२।१,४,१५ [कलकत्ता, गु० मं०]

भेद (२)

भृग्यश्व का पुत्र। उसके मुद्गल आदि पाँच पुत्र थे, जो मत्स्य०, विष्णु० भाग०, में क्रमश: भद्राश्व, हर्यश्व और भर्म्याश्व के पुत्र माने गये हैं। देखिए, भद्राश्व (३)।

वायु० ९९।१९५

भोगवर्धन (भोगवर्धनाः) एक दाक्षिणात्य देश का नाम।

वायु० ४५।१२७

ब्रह्माण्ड० २।१६।५८

भोगवती

नागों की पाताल में स्थित राजधानी का नाम।

महा० १।११।११

भाग० ४।२४।१५
मत्स्य० १६२।७६ [कलकत्ता, गु० म०]

भोज (१) यादव वंशज एक राजा का नाम। प्रभास में भोज और अक्रूर का परस्पर युद्ध हुआ था।

भाग० १०।३६।३३
ब्रह्माण्ड० ३।६१।२३

भोज (२) एक राजा का नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१२६-१२७

भोज (३) बलि के १०० पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० ३।५।४३

भोज (४) प्रतिक्षेत्र का पुत्र और हृदीक का पिता।

मत्स्य० ४४।८०

भोज (५) विन्ध्यपृष्ठ में स्थित एक जनपद का नाम[१]। तालजङ्घ के शत पुत्रों के वीतिहोत्र आदि पाँच गणों में से एक[२]। भोजों का एक वंश, जिसमें २०० राजा हुए[३]। (भोजानां विस्तरो द्विगुणः स्मृतः) भाग० में भोजों के वंशजों में कंस भी माना गया है।

१—ब्रह्माण्ड० २।१६।६४
वायु० ४५।१३२
२—ब्रह्माण्ड० ३।६९।५२
३—वायु० ६६।४५२
वही ९२।४८
ब्रह्माण्ड० ३।७२।२२१

भोज (६) ऋक्षराज (वानर) के पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२०२

भोजकट — एक विशाल नगर, जिसे रुक्मी ने अपने निवास के लिए बसाया था। उसने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक मैं कृष्ण को न मार डालूँगा, तब तक मैं अपने मुख्य नगर कुण्डिन (राजधानी) नहीं जाऊँगा।

भाग० १०।५४।५२

भोजत्व (भोजत्वम्) — राजा की एक सामान्य पदवी। राजा शमीक ने इस पद को त्याग कर राजर्षि पद प्राप्त किया था।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१६४
वायु० ६६।१६०
मत्स्य० ४६।२८

भोजा — दशार्ह वीरव्रत की रानी का नाम। मन्थु और प्रमन्थु की माता।

भाग० ५।१५।१५

भौम — पृथ्वी का पुत्र। नरकासुर का दूसरा नाम। वह दैत्यों का राजा था। उसकी राजधानी प्राग्ज्योतिषपुर थी। श्रीकृष्ण के साथ उसका भयंकर युद्ध हुआ। अन्त में वह कृष्ण के हाथों मारा गया। उसके पुत्र का नाम भगदत्त था।

ब्रह्माण्ड० ३।६।२०
भाग० १०।५९।२
भाग० १०।५९।१४ २१

भौवन (१) — मधु और सुमना का पुत्र। उसकी स्त्री का नाम दूषणा था, जिससे त्वष्टा नामक पुत्र हुआ।

भाग० ५।१५।१५

भौवन (२) [मनस्यु] — स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के कुल में महान् का पुत्र। त्वष्टा का पिता। विष्णु० के अनुसार महान् (महान्त) का पुत्र मनस्यु है।

वायु० ३३।५६
विष्णु० २।१।४०

भ्रमि प्रजापति शिशुमार की पुत्री। ध्रुव की पत्नी। कल्प और वत्सर की माता।
भाग० ४।१०।१

मंगल (१) एक राजा, (मगले नृपतिश्रेष्ठे) जो परशुराम द्वारा मारा गया।
ब्रह्माण्ड० ३।३८।४६,५१

मंगल (२) देखिए, मत्स्यराज।

मगध [मागध] एक प्राच्य जनपद। वायु० के अनुसार मध्यदेश का जनपद। ब्रह्माण्ड० में भी दूसरे स्थान में मगध मध्यदेश का जनपद कहा गया है, किन्तु उस स्थल पर पाठ मागध है। विष्णु में जनपद का नाममात्र है[1]। मगध के उत्तर में गंगा, पश्चिम में बनारस जिला, पूर्व में हिरण्यपर्वत और दक्षिण में सिंहभूमि सीमा थी। कनिंघम का अनुमान है कि प्राचीन काल में पश्चिम की ओर मगध का विस्तार कर्मनाशा नदी तक तथा दक्षिण में दामोदर नदी तक था। प्रजेश्वर पृथु ने सूत और मागध के द्वारा गान की की गयी स्तुति से प्रसन्न होकर सूत को अनूपदेश तथा मागध को मगधदेश दिया था[2]। पार्जिटर ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि मगध के राजवंश का प्रवर्तक कुरु के पुत्र सुधन्वन् की चौथी पीढ़ी में वसु (चैद्योपरिचर) है, जिसने अपने विजित चेदि राज्य में मगध को भी सम्मिलित कर लिया था। वसु के पांच पुत्र थे, जो पृथक् पृथक् राज्यों के राजा हुए और वे सब 'वासव' राजा कहलाये। उन पांचों में ज्येष्ठ पुत्र बृहद्रथ को मगध राज्य मिला, जिसने मगध के प्रसिद्ध बार्हद्रथ राजवंश की नींव डाली[3]। मगध का साम्राज्य बृहद्रथ वंश के अनेक राजाओं के हाथ में सहस्रवर्ष तक रहा[4]। इसी वंश के अत्यन्त पराक्रमशाली मगध के राजा जरासन्ध का नाम उल्लेखनीय है। कृष्ण ने जरासन्ध को मारकर उसके पुत्र (सहदेव) को मगध का राजा बनाया। मत्स्य० तथा० वायु० में बृहद्रथ को मगधराट् कहा गया है[5]। इसके अतिरिक्त प्राचीन काल में मगध, शैशुनाग, नन्द, मौर्य,

शुङ्ग, काण्व, आन्ध्र, गुप्त आदि अनेक राजवंशों के अधीन रहा है। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० में कहा गया है कि गुप्तवंशज प्रयाग, साकेत और मगध जनपद का शासन करेंगे[१]। मगध के एक महान पराक्रमी राजा विश्वस्फाणि का भी पुराणों में उल्लेख मिलता है[२]। कालिदास के रघुवंश के अनुसार राजा दिलीप की रानी सुदक्षिणा मगधराज की पुत्री थी[८]। भास के स्वप्नवासव-दत्तम् नाटक में मगध के राजा दर्शक की बहिन पद्मावती वत्सराज उदयन की दूसरी रानी मानी गयी है[९]।

१—ब्रह्माण्ड० ३।१८।५१
वही० ३।६९।५५
वही ३।७४।१६५
वही ३।१६।४२
वायु० ४५।१११
मत्स्य० ११३।४५ [कलकत्ता, गु० प्र०]
विष्णु० २।३।१६
१अ—वि० च० ला० ट्रा० एन्शि० इण्डि० पृ० ११८
२—ब्रह्माण्ड० ३।३६।१०२
३—पार्जिटर एन्श० इण्डि० हि० ट्रे० पृ० १२८
४—भाग० ९।२२।४५—४६ [बम्ब० संस्क० नि०]
४अ—भाग० १०।१२।२६,४६
५—मत्स्य० ५०।५७ [कलकत्ता, गु० प्र०]
वायु० ९९।२२१
६—वायु० ९९।३८३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१९५
७—ब्रह्माण्ड० ३।७४।१९०
वायु० ९९।३७७
८—रघुवंश० १।३१
९—स्वप्नवासवदत्तम् प्रथम अंक, पृ० २५ [पूना संस्क०]

मगधराट्

मगध के सम्राट् बृहद्रथ के लिए प्रयुक्त विशेषण पद। बृहद्रथ को महारथ भी कहा गया है।

वायु० ६६।२२१
मत्स्य० ५०।२७

मगधाधिपति — मगध का राजा, जो कार्तवीर्य अर्जुन और परशुराम के युद्ध में कार्तवीर्यार्जुन का साथ दिया और परशुराम के चरणों के आघात से मारा गया। (मागध च चरणाघातैः)

ब्रह्माण्ड० ३।३६।१२,८

मगधगोविन्द [मगधगोविन्दाः] — एक प्राच्य जनपद का नाम। इसका नाम वायु० में प्राग्ज्योतिष, मुण्ड, विदेह, ताम्रलिप्तक, माला आदि प्राच्य जनपदों के साथ आया है।

वायु० ४५।१२३

मग [मगाः] — शाकद्वीप में रहने वाले चार वर्णों के अन्तर्गत ब्राह्मण वर्ण। इन्हें विष्णु० में (ब्राह्मणभूयिष्ठाः) अर्थात् ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कहा गया है।

विष्णु०, २।४।६६ (बम्ब० संस्क० गो० ना०)

मघवन् — इन्द्र का दूसरा नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।१३।३६
ब्रह्म० २।१३।२०

मणि — चक्रवर्ती राजाओं के चक्र, रथ, आदि सात प्राणहीन रत्नों में से एक। देखिए, रत्न

ब्रह्माण्ड० २।२६।७५
वायु० ५७।६८,७०।५१

मणिधान्यज (मणिधान्यजाः) — एक राजवंश, जिसने निषध, यदुक, शैशीतक तथा कालतोयक नामक जनपदों में शासन किया।

वायु० ६६।३७४
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६१

मणिपर्वत

एक रत्न, जिसे भगवान् कृष्ण नरक (नरकासुर) के यहाँ से ले आये थे।

विष्णु० ५।२६।२४, ५।३०।२

मणिपुर

एक नगर, जिसके नरपति की कन्या के गर्भ से अर्जुन का पुत्र बभ्रुवाहन का जन्म हुआ।

भाग० ९।२२।१२

मणिभद्र

एक यक्ष। रजतनाभ का अनुह्राद दैत्य की भद्रा नामक पुत्री से उत्पन्न पुत्र। मणिभद्र की स्त्री का नाम पुण्यजनी था, जिससे उसके कई एक पुत्र हुए। वह यक्षों का सेनापति कहा गया है।

१—ब्रह्माण्ड० ३।३८।७-८
वायु० ६९।१५१-१५४
२—ब्रह्माण्ड० ३।७८।७-८
वायु० ४७।७

मणिवर्त

एक स्थान (नगर?) जिसके तीन करोड़ निवासियों का अर्जुन ने वध किया।

वायु० ४१।२५

मणिवर

एक यक्षराज।

वायु० ४१।२५

मणिवाहन

वसु उपरिचर का गिरिका से उत्पन्न बृहद्रथ, मावेल्ल, ललित्थ, मत्स्यकाल आदि सात पुत्रों में से एक।

वायु० ९९।२२१-२२३

मणीवक — स्वायम्भुव मनुवंश में हव्य के पुत्रों में से एक। उसी के नाम से मणीवक वर्ष का नाम पड़ा।

ब्रह्माण्ड० २।१४।१६

मण्डल (मण्डलाः) — एक पर्वताश्रयी जनपद। सम्भवतः यह शब्द यहाँ जातिबोधक भी है।

ब्रह्माण्ड० २।१६।६८

मण्डलेश्वर (मण्डलेश्वराः) — मण्डलों का राजा। माण्डलिक राजा। प्राचीन काल में मण्डल राज्य का एक विशेष भाग था, जो लगभग आधुनिक "जिला" या "कमिश्नरी" के रूप में होता था। अमरकोष के अनुसार जो बारह मण्डलेश्वरों पर शासन करता था, उसे सम्राट् कहते थे।

ब्रह्माण्ड० ३।३८।२०
अमरकोष २ क्षत्रिय०। २

मचकासिक (मचकासिकाः, मचवासिकाः) — केतुमाल (वर्ष) का एक जनपद।

वायु० ४३।१५

मत्स्य (१) — एक प्राचीन जाति[1]। मत्स्य एक प्रमुख क्षत्रिय जाति थी। ऋग्वेद (७।१८।६) में उल्लेख है कि एक प्रसिद्ध तुर्वशु राजा ने मत्स्यों पर उनसे यज्ञार्थ धन लेने के लिए आक्रमण किया था। इससे सिद्ध होता है कि मत्स्य जाति के लोग बहुत धनी थे[2]। कौषीतकि उपनिषद् में (४।१) मत्स्यों का उल्लेख उशीनर, कुरु पाञ्चाल आदि के साथ आया है। गोपथ ब्राह्मण (१।२।९) में शाल्वों के साथ मत्स्यों का सम्पर्क स्थापित किया गया है[3]।

१—महाभारत ७।१८।७
२—बि० च० ला० ट्रा० एन्सि० इण्डि० पृ० १४७
३—वही पृ० १४८

मत्स्य (२) एक राजा का नाम। विष्णु० के अनुसार वसु के सात पुत्रों में से एक[1]। वायु० में विशोपरिचर (वसु) का गिरिका से उत्पन्न सात पुत्रों में से एक। किन्तु यहाँ "मत्स्यकाल" नाम पठित है, जिसमें क्रमशः मत्स्य तथा काल दो भिन्न भिन्न नाम संयुक्त हैं[2]। महाभारत० में यह वसु का एक मछली के गर्भ से उत्पन्न पुत्र माना गया है[3]।

१—विष्णु० ४।१६।१६
२—वायु० ६६।२२१
३—महाभा० १।६३।२३७१-६८

मत्स्य (३) [मात्स्य] उत्तर भारत का एक जनपद[1]। बौद्ध साहित्य में मत्स्य की भारतवर्ष के महान् जनपदों में गणना की गयी है[2]। मनुस्मृति में मत्स्य का उल्लेख कुरुक्षेत्र, पञ्चाल तथा शूरसेनक के साथ हुआ है और उन सबों को ब्रह्मर्षिदेश के अन्तर्गत माना गया है[3]। कनिंघम के अनुसार मत्स्य देश में आधुनिक सम्पूर्ण अलवर तथा जयपुर और भरतपुर के कुछ भाग सम्मिलित थे[4]। महाभारत के अनुसार मत्स्य की राजधानी विराट् नगर थी[5]। कहीं कहीं राजधानी का नाम मत्स्यनगर भी मिलता है[6]। डा० वि० च० ला० का अनुमान है कि परवर्ती काल में मत्स्य देश विराट अथवा वैराट भी कहा जाने लगा था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने उसे वैराट कहा है, जिसके आधार पर कनिंघम ने माना है कि वैराट (मत्स्यदेश) का साम्राज्य सातवीं शताब्दी में ५०० वर्गमील क्षेत्रफल में था[7]।

१—वायु० ४७।४८-४६
२—अंगुत्तर निकाय पृ० २१३ तथा २१४
वही पृ० २५२।२५६
३—मनुस्मृति २।१६
४—कनिंघम, रि० आर० स० इण्ड० भाग २०, पृ० २।

५—महाभारत विराटपर्व ४।६।२८

वही ४।११।१

६—वही ४।१३।१

७—वि० च० ला०, ट्रा० वन्सि० इण्डि० पृ० ११०

मत्स्यकाल देखिए, मत्स्य (२)

वायु० ६६।२२२

मत्स्यराज मत्स्यदेश का राजा मंगल, जिसने कार्तवीर्य अर्जुन और परशुराम के युद्ध में कार्तवीर्य अर्जुन की ओर परशुराम के विरुद्ध भाग लिया था। अन्त में वह परशुराम द्वारा मारा गया।

ब्रह्माण्ड० ३।३८।४१-८१

मथन तारकासुर की सेना के नायकों में से एक।

मत्स्य० १४७।४४

मथुरा [मधुरा, मधुपुरी] इक्ष्वाकुवंशज राजा दशरथ के चौथे पुत्र शत्रुघ्न ने मधुवन में मधु नामक दैत्य के पुत्र लवण को मारकर वहाँ मथुरापुरी बसायी।[1] इस सम्बन्ध में हमें विष्णु० की रचना भाग०, ब्रह्माण्ड० तथा वायु० की अपेक्षा प्राचीनतर प्रतीत होती है। वहाँ कहा गया है कि यमुनातट पर स्थित 'मधु' नामक महान् पवित्र स्थान था, जहाँ इसी नाम का अर्थात् मधु नामक दैत्य निवास करता था। इसी कारण कालान्तर में वह स्थान (मधुसंज्ञक यमुना तट) लोक में मधुवन नाम से विख्यात हुआ और वहाँ मधुपुत्र के मारे जाने के उपरान्त मधुवन का नामकरण मथुरा हुआ— "मधुसंज्ञं महापुण्यं जगाम यमुनातटम्। पुनश्च मधुसंज्ञेन दैत्येनाधिष्ठितं यतः। ततो मधुवनं नाम्ना ख्यातमत्र महीतले। हत्वा च लवणं रक्षो मधुपुत्रं महाबलम्। शत्रुघ्नो मथुरां नाम पुरीं यत्र चकार वै।" यहाँ पर यह कहना अत्यन्त कठिन है कि यमुनातट पर स्थित मधुसंज्ञक स्थान और मधु नामक दैत्य में कौन

का नाम प्राचीनतर है। यह तो उचित जान पड़ता है कि इन दोनों में से एक का नाम अवश्य ही दूसरे के नाम के आधार पर पड़ा होगा। सम्भवतः मधुसत्रक स्थान ही अधिक प्राचीन होगा और बाद में उसी स्थान में रहने के कारण उस दैत्य का नाम पड़ा होगा। कुछ भी हो, किन्तु विष्णु० से यह तो स्पष्ट है कि मधुसत्रक यमुनातट कालान्तर में "मधुवन" नाम में परिणत हो गया। इस मधुवन से मथुरा होने का समर्थन तो उपर्युक्त सभी पुराण करते हैं, किन्तु सम्भवतः पहले मधुवन से मधुरा नाम पड़ा होगा। इसकी पुष्टि भी पुराणों से हो होती है। ब्रह्माण्ड० में दूसरे स्थान पर मधुरा का स्पष्ट उल्लेख है।[३] भाग० में एक स्थान पर मथुरा के लिए "मधुपुरी" नाम मिलता है[४]। पालि-ग्रन्थों में भी कहीं कहीं "मधुरा" नाम मिलता है, जिसे डेविड्स महोदय ने आधुनिक मथुरा ही माना है।[५] हो सकता है मधुरा का नाम मथुरा में रूपान्तरित हो जाने पर बहुत समय तक मथुरा के साथ साथ मधुरा, मधुपुरी आदि का समानान्तर रूप में व्यवहार होता रहा हो। मथुरापुरी प्राचीन काल से राज्यशासन का केन्द्र रही है। मथुरापुरी के जन्मदाता इक्ष्वाकुकुलभूषण दशरथनन्दन शत्रुघ्न के सुबाहु और शूरसेन (श्रुतसेन, भाग०) नामक दो पुत्रों ने पर्याप्त समय तक मथुरापुरी में शासन किया[६]। भाग० में कहा गया है कि यदुपति शूरसेन ने मथुरापुरी में रहते हुए "माथुर" तथा "शूरसेन" विषयों (प्रदेशों) का शासन किया और उसी समय से मथुरा भावी सभी यदुवंशी राजाओं की राजधानी बनी—"शूरसेनो॰ यदुपतिर्मथुरामावसन् पुरीम्। माथुराञ्छूरसेनांश्च विषयान् बुभुजे पुरा। राजधानी ततः साऽभूत् सर्वयादवभूभुजाम्"[७]। यहाँ पर मथुरापुरी, माथुर तथा शूरसेन दोनों विषयों (प्रदेशों) की राजधानी कही गयी है, किन्तु शूरसेन विषय के अतिरिक्त माथुर विषय का कौन सा क्षेत्र था, ठीक नहीं कहा जा सकता। हो सकता है यहाँ "माथुर" शब्द मथुरापुरी के निवासियों का ही बोधक हो। युधिष्ठिर ने मथुरा में अनिरुद्ध के पुत्र वज्र को शूरसेन प्रदेश का राजा बनाया।[८] ब्रह्माण्ड० तथा वायु० में मथुरापुरी में सात नागवंशज राजाओं के हाथ में शासन रहने का भी उल्लेख है।[९] मगध के राजा जरासन्ध ने २३ अक्षौहिणी सेना लेकर मथुरा पर आक्रमण किया।[१०] मथुरा पर अन्य राक्षसों के भी आक्रमण हुए। राक्षसों के आक्रमणों के डर से वृष्णि, अन्धक आदि यदु-

वंशियों ने मथुरा को छोड़कर अपनी राजधानी "द्वारावती" (द्वारका) बनायी[१०अ] पुराणों के अतिरिक्त मथुरापुरी की राजनीतिक एवं ऐतिहासिक महत्ता प्राचीन साहित्य, अभिलेखों तथा मुद्राओं से भी प्रकट होती है। ई० पू० शताब्दियों में ललितविस्तर के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मथुरा की गणना भारतवर्ष के प्रमुख नगरियों में थी।[११] ललित विस्तर के अनुसार शूरसेनों का राजा सुबाहु था, जिसकी राजधानी मथुरा थी। लंका के प्राचीन लेखों से विदित होता है कि राजा साधिन के पुत्र तथा पौत्र मथुरा के शासक थे।[१२] घटजातक में कहा गया है कि उत्तरी मथुरा में महासागर नामक राजा ने शासन किया, जिसके दो पुत्र थे—सागर और उपसागर।[१३] ग्रीक पुरातत्त्ववेत्ताओं ने भी मथुरा को शूरसेनों की राजधानी कहा है[१४]। बुद्धगया से प्राप्त कुछ अभिलेखों के अनुसार ब्रह्ममित्र मथुरा का राजा था, जो संभवतः अहिच्छत्र के राजा इंद्रमित्र का समकालीन था।[१५]।

१—भाग० ९।११।१४
   ब्रह्माण्ड० ३।६३।१८६
   वायु० ८८।१८५-१८६
२—विष्णु० १।१२। २-४
३—ब्रह्माण्ड० ३।४६।६
४—भाग० १०।१।१०
५—वि० च० ला० ट्राइ० एन्सि० इंडि० पृ० ४०
६—भाग० ९।११।१३
   ब्रह्माण्ड० ३।६३।१८७
   वायु० ८८।१८९
७—भाग० १०।१। २७-२८ [कम्प० मस्क० नि०]
८—भाग० १।१५।३९
९—ब्रह्माण्ड० ३।७४।१९४
   वायु० ९९।३८३
१०—हरिवंश। १६५।३
१० अ—हरिवंश, अ० ९७
११—वि० च० ला० ट्राइ० एन्सि० इंडि० पृ० ४०
१२—वही पृ० ४३

१३—वही पृ० ४१

१४—कनिंघम एन्शि० ज्यो० पृ० ४२६

१५—कै० हि० इण्डि० प्रथम भा० पृ० ५२१

* यहाँ यदुपति शूरसेन को उपर्युक्त शत्रुघ्नात्मज शूरसेन से भिन्न समझना चाहिए। यदुपति शूरसेन यदुवंशी थे और संभवतः ये वसुदेव के पिता "शूर" (भाग० ६।२४।२७-२८, १०।१।२९) ही थे। कनिंघम ने भी शूरसेन को कृष्ण का पितामह माना है (एन्शि० ज्याग्र० पृ० ३७४)।

मथुरानाथ

कृष्ण का दूसरा नाम।

महाभा० १।१९।११

मदयन्ती

राजा सौदास की रानी। उससे वसिष्ठ द्वारा एक पुत्र हुआ, जो अश्मक कहलाया।

भाग० ९।९।१८, ३८ ४०

मदिरा

वसुदेव की पत्नियों में से एक।

भाग० ९।२४।४५

महाभा० १।७१।९१

मद्र

एक देश (जनपद)। मद्रदेश के राजा अश्वपति का उल्लेख मत्स्य० में है जिसकी रानी का नाम मालती था और पुत्री का नाम सावित्री। पतिव्रता सावित्री की कथा सर्गाध्याय में प्रचलित है[१]। पुरूरवा अपने पूर्व जन्म में मद्रदेश का शासक था "अतीते जन्मनि पुरा योऽयं राजा पुरूरवा। पुरूरवा इति ख्यातो मद्रदेशाधिपो हि सः[२]।" मद्रदेश की राजधानी शाकल को आजकल भी मद्रदेश कहते हैं[३]।

१—मत्स्य० २०७।१

२—वही ११४।७
३—बि च० ला० ट्रा० एन्शि० इण्डि० पृ० ५५

मद्रक (१) अनुवंशज राजा शिबि के चार पुत्रों में से एक, जिसके नाम से मद्रक (माद्रक, वायु०) का नाम पड़ा।

भाग० ९।२३।३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।२३
वायु० ९९।२३–२४

मद्रक (२) एक उदीच्य जनपद, अथवा उत्तर देश में रहने वाली एक जाति। मद्रकों का नाम मत्स्य० तथा मार्कण्डेय० में गान्धार, यवन, सिन्धु-सौवीर आदि के साथ आया है।

मत्स्य० ११३।४१ [कलकत्ता, गु० प्रे०]
मार्कण्डेय० ५७।३६–३७ [पञ्चानन, तर्क० द्वारा सम्पादित, कलकत्ता]

मद्रक (३) विश्वस्फाणि नामक एक पराक्रमी राजा ने, क्षत्रियों का उच्छेदन कर, जिन पुलिंद, कैवर्त आदि जातियों को (राजा) बनाया, उनमें मद्रक भी थे।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१९०–१९१

मद्रदेशाधिपति राजा पुरूरवा के लिए प्रयुक्त विशेषण पद। देखिए, मद्र।

मद्रा (१) भद्राश्व और घृताची की पुत्री।

वायु० ७०।६८

मद्रा (२)

पुरु के पुत्र राजा जनमेजय के वंशज रौद्राश्व की घृताची अप्सरा से उत्पन्न दस पुत्रियों में से एक।

वायु० ९९।१२०-१२४

मद्रेश

मद्रदेश का एक राजा जिसे मद्रेश्वर भी कहा गया है। देखिए, मद्रेश्वर।

मत्स्य० ११४।१७ [कल्पतरु, पृ० ५०]

मद्रेश्वर

मद्रदेश का एक राजा। देखिए मद्रेश।

मत्स्य० ११४।१५

मधु (१)

मनु (औत्तमि) के पुत्रों में से एक।

मत्स्य० ९।१२ [कल्प० पृ० ५०]

मधु (२)

यादव वंशान्तर्गत हैहय शाखा की १८ वीं पीढ़ी में वृष का पुत्र। उसके एक सौ पुत्र थे, जिनमें वृष्णि मुख्य था।

विष्णु० ४।११।५

मधु (३)

यादव वंश की शाखाओं में से एक। भाग० में मधुओं का उल्लेख यादव वंश की सात्वत, वृष्णि आदि अन्य शाखाओं के साथ हुआ है। मधु, भोज, दशार्ह आदि सभी यादवों के सम्बन्धी थे—

कच्चिदानर्तपुर्यां नः स्वजनाः सुखमासते।
मधुभोजदशार्हार्हसात्वतान्धकवृष्णयः॥

भाग० १।१४।२५ [स्व० संस्क० नि०]

वही० १।८।४२
वही २।११।११
वही ११।१०।१८

मधु (४) इक्ष्वाकु की १७ वीं पीढ़ी में देवद्युम्न का पुत्र। अनरण्य का पिता। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार देवद्युम्न और मधु के बीच देवन नाम का राजा आता है। अर्थात् वहाँ मधु देवद्युम्न का पौत्र है,

विष्णु० ४।१२।१६
वायु० ६५।४४-४५
ब्रह्माण्ड० ३।७०।४६

मधु (५) यदुवंश। वीतिहोत्र का पुत्र।

भाग० ६।२३।२८

मधु (६) बिन्दुमान् और सरघा का पुत्र। मधु का सुमना से उत्पन्न पुत्र वीरव्रत था।

भाग० ५।१५।१५

मधु (७) एक राक्षस। लवण का पिता। देखिए, मथुरा, मधुवन।

भाग० ६। ११।१४

मधु (८) मधु नामक यमुनातट पर स्थित एक वास-स्थान। देखिए, मधुवन।

विष्णु० १।१२।२-४

मधुनन्दि — शुङ्गों के राजा नन्दन के बाद होने वाला एक राजा।

वायु० ९९।३९९

मधुपुरी — मथुरा का दूसरा नाम। देखिए, मथुरा।

भाग० १०।१।२०

मधुरा — मथुरा का दूसरा नाम। देखिए, मथुरा।

ब्रह्माण्ड० ३।४६।९

मधुवन — मथुरा का प्राचीन नाम। देखिए, मथुरा।

विष्णु० १।१२।२-४ [मन्म० सेलक नो० ना०]

मधौरेय (मधौरेयाः) — केतुमाल वर्ष (देश) का एक जनपद।

वायु० ४४।१४

मध्यदेश — भारतवर्ष के उत्तर भाग में स्थित प्रदेश, जो उदीच्य, पर्वतीय, प्राच्य तथा प्रतीच्य प्रदेशों के मध्य में स्थित था। मात्स्य० में राजा इक्ष्वाकु को मध्यदेश का राजा कहा गया है[१]। मनु० में हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य, और विनशन (सरस्वती) नदी के पूर्व तथा प्रयाग से पश्चिम में स्थित, प्रदेश को "मध्यदेश" कहा गया है.—

"हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेश प्रकीर्तित:"[२]

१—ब्रह्माण्ड० ३।७३।१०७
वायु० ५८।८१, ६८।१०६
विष्णु० २। १५ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
२—मत्स्य० १२।१६ [कलकत्ता गु० प्र०]
३—मनुस्मृति० २।२१

मध्यदेश्य मध्यदेश के निवासी।

महाभारत० २।१११।८१

मनस्यु (१) पौरववंश की ६वीं पीढ़ी में, प्रवीर का पुत्र।

विष्णु० ४।१६।१

मनस्यु (२) महान्त का पुत्र।

विष्णु० २।१।४०

मनु [स्वायंभुव] (१) प्रथम मनु। ब्रह्मा के प्रथम पुत्र तथा पृथिवी के प्रथम सम्राट्। मनु की पत्नी शतरूपा थी, जिससे उनके प्रियव्रत और उत्तानपाद नाम के दो पुत्र तथा आकूति, देवहूति और प्रसूति नाम की तीन कन्याएँ हुई[1]। उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र प्रियव्रत को समस्त पृथिवीमण्डल का शासन सौंप दिया[2]। इसके उपरान्त प्रियव्रत के दश पुत्रों अर्थात् स्वायंभुव मनु के पौत्रों ने सप्तद्वीपा वसुन्धरा का शासन किया[3]।

१—भाग० ११।१४।४
वही ३।१२।५२-५६
२—वही ५।१।२२
३—महाभारत० २।१४।४

मनु [स्वारोचिष] (२) द्वितीय मनु। अग्नि के पुत्र तथा द्युमान, सुषेण, रोचिष्मान् आदि के पिता।

भाग० ८।१।१९

मनु [औतम, उत्तम] (३) तृतीय मनु। प्रियव्रत के पुत्र। उनके पुत्र पवन, सृंजय, यज्ञहोत्र आदि हुए। वायु० में पाठ औत्तम है।

भाग० ८।१।२३

वायु० ६२।२१

मनु [तामस] (४) चतुर्थ मनु। उत्तम मनु के भ्राता। उनके पृथु, ख्याति, नर, केतु, आदि दस पुत्र हुए।

भाग० ८।१।२७

मनु [रैवत] (५) पाँचवें मनु। चतुर्थ मनु तामस के भ्राता। उनके अर्जुन, बलि, विन्ध्य आदि पुत्र थे।

भाग० ८।५।२

मनु [चाक्षुष] (६) छठे मनु। चक्षु के पुत्र। उनके पुरु, पुरुष, सुद्युम्न आदि कई पुत्र थे।

भाग० ८।५।७

मनु [वैवस्वत] (७) विवस्वान् के पुत्र। श्राद्धदेव ही वैवस्वत मनु कहे गये हैं। उनके दस पुत्र हुए—इक्ष्वाकु, नभग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, नाभाग, दिष्ट, करूष, पृषध्र तथा वसुमान्। प्रथम मनु स्वायम्भुव से लेकर छठे मनु (चाक्षुष) तक अतीत मन्वन्तरों के मनु कहे गये हैं। सातवें मनु वैवस्वत वर्तमान मनु हैं[१]। मनुस्मृति में भी उपर्युक्त सात मनु वर्णित हैं[२]।

१—भाग० ८।१३।१-३, वायु० ६२ अ०

२—मनुस्मृति १।६१-६२

मनु [सावर्णि] (८) भावी आठवें मन्वन्तर में होने वाले मनु।

भाग० ८।१३.११

मनु [दक्षसावर्णि] (९) भावी नवें मनु। वरुण के पुत्र।

भाग० ८।१३ १८

मनु [ब्रह्मसावर्णि] (१०) भावी दसवें मनु उपश्लोक के पुत्र, जो सर्वगुण सम्पन्न होंगे तथा भूरिषेण आदि उनके पुत्र होंगे।

मनु [धर्मसावर्णि] (११) भावी ग्यारहवें मनु। उनमें सत्य, धर्म, आदि दस पुत्र होंगे।

भाग० ८।१३।२४

मनु [रुद्रसावर्णि] (१२) भावी बारहवें मनु। उनके देववान्, उपदेव, देवश्रेष्ठ आदि पुत्र होंगे।

भाग० ८।१३ २७

मनु [देवसावर्णि] (१३) भावी तेरहवें मनु। उनके चित्रसेन, विचित्र आदि पुत्र होंगे।

भाग० ८।१३।३०

मनु [इन्द्रसावर्णि] (१४) भावी चौदहवें मनु। उनके उरु, गम्भीरबुद्धि आदि पुत्र होंगे।

भाग० ८।१३।३३

मनु (१५) ज्यामघ-कुल में उत्पन्न मधु के पुत्रों में से एक।

वायु० ६५।४५

मनु (१६) कृशाश्व और धिषणा का पुत्र।

मत्स्य० ४।६।२० [बम्ब० मत्स्य० नि०]

मनुग (१) [मनोनुग] स्वायंभुव मनु वंश में क्रौञ्चद्वीपेश्वर द्युतिमान् का पुत्र, जिसके नाम से जनपद का भी नाम पड़ा। ब्रह्माण्ड० में पाठ मनोनुग है तथा वहाँ देश का नाम मानोनुग है।

वायु० ३३।२१-२२
ब्रह्माण्ड० २।१४।२२-२४

मनुग (२) [मानोनुग] एक जनपद। देखिए, मनुग (१)

मनुच देखिए, मरुच। (२)

मन्त्र मन्त्रणा अथवा परामर्श। राजा को चाहिए कि वह राज्यसम्बन्धी परामर्श मन्त्रियों के साथ गुप्तरूप से करे।

मत्स्य० २१६ अ०
अग्नि० २२५।१८

मन्त्रविद् सत्यभामा और कृष्ण का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४७

मन्त्री (मन्त्रिन्) (१) अमात्य[1]। मन्त्री का मुख्य कार्य राजा को राज्यसम्बन्धी परामर्श देना था। राजा के बहुत से मन्त्री होते थे। अग्नि० तथा मत्स्य० में कहा गया है कि राजा न तो एक मन्त्री के साथ मन्त्रणा करे और न बहुत मन्त्रियों के साथ-"नैकेन सहितः कुर्यान्न कुर्याद्बहुभिः सह"[2]। जो राजा मन्त्रियों के वचन

में रत रहता है वह विभूति को प्राप्त करता है[३]। राजा की अनुपस्थिति में मन्त्री राज्य का देखभाल करता था। राजा सगर अपने मन्त्रियों को राज्य सौंपकर वन गये थे[४]।

१—ब्रह्माण्ड० २काण्ड०, क्षत्रिय० १४
मत्स्य० २१४।४७।
२—अग्नि० २३५।६–१०
३—अग्नि० २३५।१२
मत्स्य० २१६ अ०
४—ब्रह्माण्ड० ३।५०।२२
वायु० ८७।७०
मत्स्य० ११४।१७
वही २१६।१८
वही २२२।६

मन्त्री (२) एक वानर-प्रमुख।

१—ब्रह्माण्ड० ३।७।२३८

मन्दग (१) क्रौञ्चद्वीप के राजा द्युतिमान् के सात पुत्रों में से एक, जिसके नाम से क्रौञ्चद्वीपस्थ एक वर्ष (देश) का भी नामकरण हुआ।

विष्णु० २।४।४७–४८

मन्दग (२) एक देश, देखिए, मन्दग (१)

मन्दग (मन्दगाः) (३) शाक द्वीप में रहनेवाली एक जाति, जिसे शूद्र वर्ण के अन्तर्गत माना गया है।

विष्णु० २।४।६९ [मन्द० संस्क० गीता० ना०]

मन्दुलक [पत्तलक]

आन्ध्र-वंश । राजा दान का पुत्र । इस वंश के राजाओं में इसका क्रम १७ वाँ है । राज्यावधि पाँच वर्ष । विष्णु० में यह पत्तलक है और वह प्रविल्लसेन का पिता कहा गया है ।

विष्णु० ४।२४।१२
मत्स्य० २७३।१० [कलकत्ता, गु० प्र०]

मन्दोदरी

रावण की रानी[1] । मय तथा रम्भा की पुत्री[2] ।

१—भाग० ९।१०।२४ २८
२—ब्रह्माण्ड० ३।६।२६

मन्यु

प्रियव्रत-वंश । वीरव्रत और भोजा का पुत्र । मन्यु की स्त्री का नाम सत्या तथा पुत्र का नाम भौवन था ।

भाग० ५।१५।१५

मय

एक असुर, जो अत्यन्त मायावी था । उसने घोर तपस्या कर ब्रह्मा से त्रिपुर दुर्ग बनाने का वरदान प्राप्त किया[1] । तदुपरान्त उसने त्रिपुर का निर्माण किया[2] । देवासुर-संग्राम में मय ने पार्वती माया का प्रयोग किया, जिससे देवताओं पर पाषाण आदि की वृष्टि होने लगी । यह देखकर उस माया को शान्त करने के लिए भगवान् विष्णु ने अग्नि और वायु को प्रेरित किया[3] । उसकी स्त्री का नाम रम्भा था, जिससे उसके छः पुत्र हुए—मायावी, महिष आदि[4] ।

१—मत्स्य० १२९ अ०
२—वही १३० अ०
३—वही १७५।१९-२०
४—ब्रह्माण्ड० ३।६।२८-२९

मरीचि (१)

प्रियव्रत वंश । सम्राट् और उत्कला का पुत्र । बिन्दुमान् का पिता । मरीचि की स्त्री का नाम बिन्दुमती था ।

भाग० ५।१५।१४ [बम्ब० इण्ड० नि०]

मरीचि (२) प्रथम मन्वन्तर में मरीचि के ऊर्णा के गर्भ से छः पुत्र हुए, जो ब्रह्मा के शापवश असुरयोनि में हिरण्यकशिपु के पुत्ररूप में उत्पन्न हुए। योगमाया ने उन्हें देवकी के गर्भ में रख दिया। उनके उत्पन्न होने पर कंस ने उन्हें मार डाला।

भाग० १०।८५।४७।४८

मरीचिमान् एक वानर-प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२४४

मरु (१) निमिवंश का १२ वाँ राजा। हर्य्यश्व का पुत्र। प्रतिबन्धक का पिता। वायु० के अनुसार प्रतित्वक का पिता।

विष्णु० ४।५।११
वायु० ८६।११

मरु (२) [मनु] ऐक्ष्वाकु वंश का राजा। शीघ्र का पुत्र। प्रसुश्रुत का पिता। वायु० और विष्णु० के अनुसार वह योगस्थ होकर कलाप ग्राम में वास करता था। दूसरे युग में वह क्षत्रियवंश का प्रवर्तक हुआ। वायु० में पाठ मनु है।

विष्णु० ४।४।४७
वायु० ८८।२१०

मरुण्ड [गुरुण्ड, मुण्ड०] एक जाति। मरुण्डों का उल्लेख आन्ध्रों के पश्चात् गर्दभिल, यवन, शक, तुषार आदि जातीय राजवंशों के साथ हुआ है। मरुण्डों के १३ राजा हुए, जिनके नाम नहीं दिये गये हैं। संभवतः ये लोग म्लेच्छ जातीय थे[1]। कनिंघम का कहना है कि छोटा नागपुर की मुण्डा जाति में मरुण्ड शब्द अभी तक प्रचलित है[2]।

१—अग्नि० २७३।१७-२२ [कलकत्ता, पृ० ८०]
वायु० ९९।१९० तथा १९५
विष्णु० ४।२४।१४-१६
२—कनिंघम, एन्शि० ज्यो० पृ० ५८१-८२

मरुत्त (१)

यादव वंश । क्रम संख्या १२ । शिनेयु का पुत्र । विष्णु० में शिनेयु के बाद रुक्मकवच का नाम आता है ।

विष्णु० ४।१२।२

मरुत्त (२) [मनुत्त]

सूर्य (मानव) वंश । नाभागनेदिष्ट शाखा । पीढ़ी-क्रम १६ । अवीक्षित (अवीक्षि, भाग० अविक्षित, विष्णु०) का पुत्र । नरिष्यन्त (विष्णु०) दम (वायु०) का पिता । मरुत्त एक महान्, प्रभावशाली राजा माना गया है । वायु० में पाठ मनुत्त है ।

विष्णु० ४।१।१६-१७
भाग० ९।२।२६, २९
वायु० ८६।८-९

मलद (मलदाः)

एक प्राच्य जनपद[1] । एक पर्वताश्रयी जनपद[2] ।

१—ब्रह्माण्ड० २।१६।५४
२—वही २।१६।६७

मलदा

भद्राश्व तथा घृताची की पुत्री ।

वायु० ७०।६८

मलय

ऋषभ और जयन्ती के सौ पुत्रों में से एक । भरत का भ्राता ।

भाग० ५।४।८-१०

मलयद्वीप जम्बूद्वीप के छः प्रदेशों में से एक।

वायु० ४८।१३

मलयध्वज पाण्ड्यनरेश। उन्होंने समरभूमि में अनेक राजाओं को पराजित कर विदर्भराज राजसिंह की पुत्री (वैदर्भी) के साथ विवाह किया। उसके सात पुत्र हुए जो आगे चलकर सातों द्रविड देश के राजा हुए—(सप्तद्रविडभूभृतः)। मलयध्वज के वंशधरों ने मन्वन्तर के अन्त तक पृथ्वी में शासन किया।

भाग० ४।२८।२६-३१

मलवर्तिक (मलवर्तिकाः) एक प्राच्य जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।५३

मल्ल (१) (मल्लाः) एक प्राच्य जनपद[१] बौद्धग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में उल्लिखित १६ महाजनपदों में मल्ल का भी नाम है[२]। महाभारत में मल्लों का उल्लेख अंग, वंग तथा कलिङ्ग के निवासियों के साथ हुआ है[३]। महाभारत में सभापर्व में कहा गया है कि भीमसेन ने अपनी पूर्वी दिग्विजय के समय मल्लों के शासक को जीता था[४]। गौतम बुद्ध के समय में मल्लों के दो प्रधान निवासस्थान थे—पावा और कुशीनारा[५]। पावा तथा कुशीनारा के मल्लों के अपने अपने सन्थागार (सभाभवन) थे, जिनमें राजनीतिक एवं धार्मिक विषयों पर वाद-विवाद होता था[६]। महापरिनिब्बान सुत्तन्त में मल्लों के कुछ राजकर्मचारी "पुरिस" कहे गये हैं[६] अ। महापरिनिब्बान सुत्तन्त के अनुसार मल्ल क्षत्रिय ठहरते हैं। मनु ने मल्लों को "व्रात्य" कहा है। कौटिल्य के अनुसार मल्ल 'संघ' थे, जिनके सदस्य राजा कहलाते थे। मज्झिमनिकाय में लिच्छवि तथा मल्ल 'संघ' एवं 'गण' कहे गये हैं[७]।

१—ब्रह्माण्ड० २।१६।५३

२—अंगुत्तर निकाय चतुर्थ भाग पृ० २५२

३—महाभा० भीष्म० ६।४६

४—महाभा० सभा० २०।१
५—रि० च० ला० ट्रा० पञ्जा० इण्डि० पृ० २५७
६—रि० च० ला० ट्रा० पञ्जा० इण्डि० पृ० २५८
६अ—वही पृ० २५६
७—वही पृ० २५८

मल्ल (२) राजगृह का एक अधिप, जो कृष्ण द्वारा मारा गया।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१००
वायु० ६०।१०१

महत्पौरव [महापौरव] चन्द्र (पौरव) वंश। द्विमीढ-शाखा। महत्पौरव और सार्वभौम में कितनी पीढ़ियों का अन्तर है, यह स्पष्ट नहीं है। यहाँ यही उल्लेख है कि सार्वभौम के कुल में (तस्यान्वये महत्पौरवनन्दन) महत्पौरव हुआ, जिसका पुत्र राजा हुआ।

वायु० ९९।१८७
मत्स्य० ४९।७२

महाकेश एक जनपद।

वायु० ४५।२०

महागिरि दनुवंशज एक असुर।

वायु० ६८।६

महाङ्ग (महाङ्गाः) केतुमाल (वर्ष) का एक जनपद।

वायु० ४४।१४

महादीप्त　　एक वानर-प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३६

महाद्रुम　　स्वायम्भुव मनुवंश में शाल्मद्वीप के राजा हव्य के पुत्रों में से एक, जिसके नाम से (वर्ष) का नाम पड़ा। विष्णु० में हव्य के स्थान में राजा का नाम भव्य है।

ब्रह्माण्ड० २।१४।२६–२७, ३१
वायु० ४६।८७, ३३।३३
विष्णु० २।४। ५६–६० [धर्म० संस्क० गो० ना०]

महाद्रुम (२)　　एक जनपद देखिए, महाद्रुम (१)।

महाधृति (धृति)　　निमि-वंश का १७ वाँ राजा। विबुध का पुत्र। कृतिरात का पिता। वायु० के अनुसार कीर्तिराज का पिता।

वायु० ८६।१३
विष्णु० ४।५।१२

महानन्दी　　शिशुनाग वंश। नन्दिवर्धन का पुत्र। वंश-पीढ़ी-क्रम १०। राज्यावधि ४३ वर्ष। महापद्म नन्द का पिता।

वायु० ६६।३२०, ३२६
विष्णु० ४।२४।३
मत्स्य० २७२।११
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१३८, ३६

महानाभ　　हिरण्याक्ष के ५ पुत्रों में से एक।

विष्णु० १।२१।३
वायु० ६७। ६७–६८

महानास (महानासाः) केतुमाल (वर्ष) का एक जनपद।

वायु० ४४।१२

वही ८४।१३

महानेत्र (महानेत्राः) एक जनपद।

वायु० ४३।२१

महान् [महान्त] स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में धीमान् का पुत्र, मौवन (मनस्यु, विष्णु०) का पिता। (धीमतश्च महान्पुत्रो महतश्चापि भौवनः) विष्णु० में पाठ महान्त है।

वायु० ३३।५६

विष्णु० २।१।३६

ब्रह्माण्ड० २।१४।६६

महापद्म (नन्द) शिशुनाग वंश के अन्तिम राजा। महानन्दी का शूद्रा स्त्री से उत्पन्न पुत्र। परशुराम की तरह यह समस्त क्षत्रिय राजाओं का संहारक हुआ। क्षत्रिय राजाओं का अन्त कर उसने एकच्छत्र एवं निरंकुश शासन स्थापित किया। उसके आठ पुत्र थे। महापद्म नन्द ने ८८ वर्ष तक राज्य किया और १२ वर्ष तक उसके आठ पुत्रों का शासन मगध में रहा। कौटिल्य ने नन्दों का उच्छेदन कर तथा चन्द्रगुप्त को सम्राट् बनाकर मौर्यों का शासन स्थापित किया।

वायु० ९९।३२६-३३०

विष्णु० ४।२४।६—७

मत्स्य० २७२।१७-१८

महापांशु पुलस्त्य के पुत्रों में से एक। एक बली राक्षस। देखिए, महानादं।

वायु० ७०।४६

महापार्श्व [महापांशु] पौलस्त्य राक्षस। पुष्पोत्कटा के पुत्रों में से एक। वायु० में पाठ महापांशु है।

ब्रह्माण्ड० ३।८।५६
वायु० ७०।४६
मत्स्य० १६०।७८ [कलकत्ता, गु० प्र०]

महापुरुवश ज्यामघ कुल। मधु के पुत्रों में से एक।

वायु० ६५।४५

महाबल सोमवंश। हृदीक के १० पुत्रों में से एक।

मत्स्य० ४४।८२

महाबाहु हिरण्याक्ष का पुत्र।

विष्णु० १।२१।३ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
मत्स्य० १६०।७५ [कलकत्ता, गु० प्र०]

महाभोज (महाभोजाः) सात्वत और कौशल्या के गर्भ से उत्पन्न सात पुत्रों में से एक। उसे महात्म कहा गया है। महाभोज बड़ा धर्मात्मा था। उसके बाद से उसके भावी वंशज भोज के नाम से लोक में विख्यात हुए। (भोजा ये भुवि विश्रुताः)।

ब्रह्माण्ड० ३।११।२ तथा १७
वही ३।७१।१८
भाग० ६।२४।७ [बम्ब० सं० नि०]
वायु० ६६।२
विष्णु० ४।१३।६ [बम्ब० सं० गो० ना०]

महाभौम भद्राश्व द्वीप में स्थित एक जनपद का नाम।

वायु० ४३।२३

महामना

चन्द्र (पौरव) वंश। आनव शाखा। अनु की ८वीं पीढ़ी में। महाशाल (महामणि, विष्णु०) का पुत्र। महामना चक्रवर्ती राजा तथा सात द्वीपों का स्वामी था। उसके दो पुत्र थे जिनका नाम उशीनर तथा तितिक्षु था। इन दोनों के अलग अलग राज्य थे। इन दोनों ने नये राजवंशों को जन्म दिया। उशीनर के वंशज उत्तर पश्चिम में राज्य करते थे और तितिक्षु के वंशज पूर्व में।

विष्णु० ४।१८।१
वायु० ९९।१६—१८

महामालि

एक यक्ष राजा।

वायु० ४१।१५

महामात्र

प्रधान अमात्य अथवा प्रधानमन्त्री।

कथासरित्० ३।१८।२४

महारथ (१)

राजाओं की एक उपाधि। कार्तवीर्यार्जुन के शतपुत्रों में ५ पुत्र महारथ थे[1]। चन्द्रवंश धर्मकेतु के पुत्र सत्यकेतु को महारथ कहा गया है[2]। सात्वत के पुत्र महाभोज भी महारथ थे।[3] मगधराट् बृहद्रथ भी महारथ पद से विभूषित थे।[4]

१—ब्रह्माण्ड० ३।६९।४६
२—वायु० ९२।७०
३—मत्स्य० ४४।४७
४—वायु० ९९।२९७
मत्स्य० ५०।३७

महाराष्ट्र (महाराष्ट्राः)

दक्षिणापथ का एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।५७

महारोम कृतिरात (कीर्तिरात, वायु०) का पुत्र। ऐक्ष्वाकु-वंश का १६वाँ राजा। स्वर्णरोमा (सुवर्णरोमा, विष्णु०) का पिता।
वायु० ८६।१३
विष्णु० ४।५।१२

महावीत (१) पुष्करद्वीप का एक वर्ष (देश)।
ब्रह्माण्ड० २।१६।१२७
वायु० ३।१५, ४६।११३।१२१
ब्रह्माण्ड० २।१४।१४-१५

महावीत (२) स्वायम्भुव मनु-वंश। सवन का पुत्र। इसी के नाम से महावीत वर्ष (देश) का नाम पड़ा।
ब्रह्मा० २।१४।१४-१५

महावीत (३) एक वर्ष (देश) का नाम। देखिए, महावीत (२)।

महावीर प्रियव्रत का पुत्र। जो आजीवन ब्रह्मचारी रहा।
भाग० ५।१।२५-२६

महावीर्य (१) स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत वंश में। विराट् का पुत्र। धीमान् का पिता।
वायु० ३३।५८
ब्रह्माण्ड० २।१४।६६
विष्णु० २।१।३६

महावीर्य (२) निमिवंश की आठवीं पीढ़ी में। (बृहदुक्थ वायु०) का पुत्र। सत्यधृति का पिता। वायु० के अनुसार धृतिमान का पिता।

वायु० ९९।१६
विष्णु० ४।५।१२

महाशाल [महामणि] चन्द्र (पौरव) वंश। आनव शाखा। अनु की ७वीं पीढ़ी में। जनमेजय का पुत्र महामना का पिता। विष्णु० में पाठ महामणि है।

विष्णु० ४।१८।१
वायु० ९९।१५

महासन एक असुर, जो कंस का मित्र था।

भाग० १०।२।१ [अन्य० स्त्रो० नि०]

महाभुज एक वानर प्रमुख।

महाभार० ३।२८३।१

महास्थल (महास्थलाः) भद्राश्व (द्वीप) में स्थित एक जनपद।

वायु० ४३।२०

महिष (१) एक असुर। अनुह्राद और सूर्म्या का पुत्र था। उसने देवासुर संग्राम में विभावसु (अग्नि) के साथ युद्ध किया।

भाग० ६।१८।१६
वही ८।१०।३२

महिष (२) एक दल में रहने वाला एक राक्षस[१]। वह तारकासुर के अभिषेक के समय उपस्थित था।[२]

१—ब्रह्माण्ड० २।२०।३६
वायु० ५०।३८
२—मत्स्य० १४६।२८ [कलकत्ता० गु० प्र०]

महिष (३) मय असुर के तीन पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० ३।६।२६
वायु० ६८।२८

महिष (महिषाः) (४) एक जनपद, जिसका शासन गुह ने किया।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६८
वायु० ६६।३८६, ३८८

महिष (महिषाः) (५) केतुमाल वर्ष के एक जनपद का नाम।

वायु० ४४।१२

महिषिक (महिषिकाः) दक्षिणापथ का एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।५७

महिष्मत् (महिष्मान्) यदु-वंश। सोहञ्जि का पुत्र। भद्रसेन का पिता। ब्रह्माण्ड०, विष्णु० तथा वायु० में महिष्मान् के पिता का नाम संजेय है, किन्तु वायु० और विष्णु० में उसके पुत्र का नाम भद्रश्रेण्य है। मत्स्य० में महिष्मान् के पिता का नाम संहत है तथा महिष्मान् के पुत्र का नाम रुद्रश्रेण्य है।

भाग० ६।२३।२२
ब्रह्माण्ड० ३।६६।५-६
वायु० ६४।५
मत्स्य० ४३।१० [कलकत्ता, गु० प्र०]
विष्णु० ४।११।३

महिष्मती

कार्तवीर्य अर्जुन की राजधानी। देखिए, माहिष्मती।

वायु० ९४।२६

महीदुर्ग

छः प्रकार के दुर्गों में से एक। देखिए, दुर्ग।

मत्स्य० २१६।७ [कलकत्ता, गु० प्र०]

महीनेत्र

चन्द्र (पौरव) वंश। बार्हद्रथ शाखा। सुमत्सेन का पुत्र। राज्यावधि ३३ वर्ष।

मत्स्य० २७१।२४ [कलकत्ता, गु० प्र०]

महेन्द्रनिलय (महेन्द्रनिलयाः)

एक जनपद। इसका नाम कलिङ्ग तथा माहिष जनपदों के साथ आया है, जिनका शासन गुह ने किया।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१९५

वायु० ९९।३८२

महोदक

दनु के वंशजों में से एक दानव।

ब्रह्माण्ड० ३।६।१४

महोदर

एक पौलस्त्य राक्षस। पुष्पोत्कटा के पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० ३।८।५५

वायु० ७०।४९

महोद्र

दनुवंशज एक दानव। पुष्पोत्कटा के पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० ३।८।५५

वायु० ७०।४९

ब्रह्माण्ड० ३।६।१०

महौजस्

वसुदेव और भद्रा के चार पुत्रों में से एक।

वायु० ९६।१७१
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७३

मागध (१)

राजा के वंश का स्तावक। इस अर्थ में अमरकोष में मागध तथा मगध दोनों शब्द पठित हैं[१]। राजा पृथु के राज्याभिषेक के समय सूत और मागध ने उनकी स्तुति की।[२] देखिए, मगध।

१—अमरकोष द्वि० का० क्षत्रि० श्लो० ९७
२—भाग० १।१५।२० [वम्ब० संस्क० निर्णय०]

मागध (२)

जरासन्ध के प्रपौत्र तथा सोमाधि (सोमादि, मत्स्य०) के लिए यहाँ "मागध" विशेषणपद प्रयुक्त किया गया है, जिसका अर्थ यहाँ मगध का राजा ही ठीक जान पड़ता है। भाग० में एक स्थान पर जरासन्ध के लिए भी यही विशेषण प्रयुक्त हुआ है।[२]

१—वायु० ९९।२२८
मत्स्य० ५०।३४
२—भाग० ३।३।१०

मागध (३)

एक प्राचीन जाति। विष्णु० में मागधों को क्षत्रिय कहा गया है—"मागधाः क्षत्रियास्तु ते"। मनुस्मृति में उन्हें वाणिज्य द्वारा जीविकोपार्जन करने के लिए कहा गया है।[२] गौतमधर्मसूत्र में मागध वैश्य पुरुष तथा क्षत्रिया स्त्री से उत्पन्न वर्णसंकर जाति मानी गयी है। अथर्ववेदसंहिता में मागध को व्रात्य से सम्बन्धित किया गया है [३]।

१—विष्णु० २।४।६९
२—मनु० १०।४७
३—वि० च० ला०, ट्रा० एन्शि० इण्डि० पृ० ११५

मागधराजा (मागधराजानः)
मगधदेश के बृहद्रथ वंशज राजा, अर्थात् "बार्हद्रथभूपाल" जिन्होंने सहस्र वर्ष पर्यन्त राज्य किया।

भाग० ९।२२।४५

मागधसंश्रय (मागध संश्रयः)
भाग० में यह विशेषणपद कंस के लिए प्रयुक्त हुआ है। कंस ने मगधनरेश जरासन्ध की सहायता प्राप्त की थी।

भाग० १०।२।२

मातलि
इन्द्र का सारथि। देवासुर-संग्राम में जिस समय मातलि सहस्र अश्वों से जुते हुए रथ का सञ्चालन कर रहे थे, उस समय एक जम्भ नामक असुर ने उनके ऊपर एक त्रिशूल चलाया। इससे इन्द्र बहुत क्रोधित हुए और जम्भ का सिर काट लिया।

भाग० ८।११।१६–१८

माथुर (१)
भाग० में एक स्थान पर माथुरों का नाम यदुवंश की शाखाओं—वृष्णि, अन्धक आदि के साथ आया है जिससे माथुर भी यहाँ यदुवंश की एक शाखा प्रतीत होती है— 'दशार्हवृष्ण्यन्धकभोजसात्वता मध्वर्बुदा माथुरशूरसेना'[1]। दूसरे स्थान पर भाग० में माथुर विषय (प्रदेश) के लिए प्रयुक्त हुआ है[2]। माथुर का सामान्य अर्थ मथुरा के निवासी होता है।

१—भाग० ११।१०।१८
२—वही १०।१।२७-२८

माथुर (२)
एक प्रदेश तथा मथुरा के निवासी। देखिए, माथुर (१)।

माथैरय
देखिए, मणिवाहन।
वायु० ९९।२२१।२२२

माद्री (१) पाण्डु की दूसरी पत्नी तथा नकुल और सहदेव की माता।

भाग० ६।२२।२८
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५५
मत्स्य० ४६।१०
वायु० ६६।१५८
वही ६६।२४३
विष्णु० ४।१८।१०-११

माद्री (२) धृष्टि की दूसरी पत्नी। युधाजित् की माता, वायु० तथा मत्स्य० के अनुसार वह वृष्णि की दूसरी पत्नी थी।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१८
मत्स्य० ४५।१-२ [कलकत्ता, गु० प्र०]
वायु० ६६।१७

माद्री (३) कृष्ण की सोलह सहस्र रानियों में से एक।

मत्स्य० ४७।१४ [कल० गु० प्र०]
वायु० ६६।२३४
विष्णु० ५।३२।४

माद्री (४) सहदेव (पाण्डव) की स्त्री। सुहोत्र की माता।

मत्स्य० ५०।५५

माद्रेय-जाङ्गल (माद्रेय-जाङ्गलाः) मध्यदेश का एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।४०

माधव (१) कृष्ण का एक नाम।

भाग० १।१५।१८
ब्रह्माण्ड० २।३१।७७

माधव (२) मनु (औत्तमि) के पुत्रों में से एक।

मत्स्य० ६।११-१२

माधव (३) माधव नामक राक्षस जो शत्रुघ्न द्वारा मारा गया।

वायु० ८८।१८५

माधव (४) (माधवाः) एक वंश। वीतिहोत्र के पुत्र का नाम मधु था। मधु के सौ पुत्र थे, जिनमें वृष्णि ज्येष्ठ था। इन मधु, वृष्णि, और यदु के नाम से यह वंश क्रमशः माधव, वृष्णि तथा यादव के नाम से प्रसिद्ध हुआ। (माधवा वृष्णयो राजन् यादवाश्चेति संज्ञिताः)

भाग० ९।२३।२९-३०

मानस (१) वपुष्मान् के सात पुत्रों में से एक। मानस के नाम से मानस देश का भी नाम पड़ा, जिसका वह राजा हुआ।

ब्रह्माण्ड० २।१४।१२, ३३-३४

वायु० ३३।२८, ३०

मानस (२) मानस देश, देखिए मानस (१)

मानरसा भद्राश्व और घृताची अप्सरा की पुत्री।

वायु० ७०।६६

मानव (मानवाः) मनु के पुत्र—इक्ष्वाकु, नहुष, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, प्रांशु, नाभागारिष्ट, कारूष तथा पृषध्र।

वायु० ८५।४

मानोनुग [मनुग] क्रौञ्चद्वीप के एक देश का नाम। देखिए, मनुग।

मान्धाता ऐक्ष्वाकु वंश। वंश-पीढ़ी-क्रम संख्या १८। मान्धाता अपने पिता युवनाश्व की कुक्षि से पैदा हुआ था। उसके पुत्र पुरुकुत्स, अम्बरीष तथा मुचुकुन्द थे। मान्धता चक्रवर्ती राजा था और सात द्वीपों में उसका राज्य था। उसके विषय में कहा गया है—

"यावत् सूर्य्यं उदेतिस्म यावच्च प्रतितिष्ठति।
सर्वं तद् यौवनाश्वस्य मान्धातु क्षेत्रमुच्यते।"

विष्णु० ४।२।१६–२०
ब्रह्माण्ड० ३।६३।६७–७२
भाग० ९।६।२५–३३ तथा ३८

माया प्राचीन काल में युद्धक्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली एक विद्या, जिसके द्वारा शत्रु-सेना पर पाषाण, अग्नि आदि की वर्षा की जा सकती थी। देखिए, मय।

मायावी मय का पुत्र। देखिए, मय।

मारिषा (१) [वार्क्षी] वृक्षों की पुत्री, जो प्रचेतस् की स्त्री हुई। भाग० में पाठ[1] वार्क्षी है। देखिए, प्रचेतस्।

वायु० ६३।३३ तथा ३७
वही० ३०।६१,७४
भाग० ६।४।१५–१७ [बम्ब० संस्क० नि०]

मारिषा (२) [मारिषी] यदुवंश। देवमीढ के पुत्र शूर की स्त्री, जिसके गर्भ से दस पुत्र हुए, उनमें वसुदेव भी थे। ब्रह्माण्ड० में पाठ मारिषी है।

भाग० ९।२४।२७
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१४५
विष्णु० ४।१४।८ [बम्ब० संस्क० गी० प्रा०]

मारीच

सुन्द और ताडका का पुत्र।

भाग० ९।१०।१०

मारुतव्रत [मारुतं-व्रतम्]

मत्स्य० में राजा के गुप्तचरों का महत्त्व न केवल सर्वव्यापक वायु के दृष्टान्त द्वारा प्रकट किया गया है, किन्तु गुप्तचरों के प्रसार सम्बन्धी राजा के कर्तव्य को "मारुत-व्रत" मत ही माना गया है—प्रविश्य सर्वभूतानि, यथा चरति मारुत। तथा चारैः प्रवेष्टव्य मतमेतद्धिमारुतम्" अर्थात् जिस प्रकार वायु की गति सर्वत्र बेरोकटोक रहती है, उसी प्रकार राजा को चाहिए कि वह अपने राज्य में चारों ओर गुप्तचरों को नियुक्त करे। यही राजा का मारुत व्रत है।

मत्स्य० २२५।११ [कल्या० स्मा० पु० प०]

मार्जारि

मगध के बृहद्रथ वंशज राजा सहदेव का पुत्र।

भाग० ९।२२।४६

मार्तिकावत (मार्तिकावताः)

यदुवंश। सत्वत के पुत्र महाभोज के कुल में होने वाले राजा भोज (भोजाः) कहलाए और उन्हीं की, मृत्तिकावत नामक नगर में रहने के कारण मार्तिकावत सामुदायिक संज्ञा हुई।

विष्णु० ४।१३।१-२ [बम्ब० प्रस० गी० मा०]

माल (मालाः)

एक प्राच्य जनपद।

वायु० ४५।१२१

मालक

बृहद्रथ वंशज अन्तिम राजा रिपुञ्जय के अमात्य सुनक का पौत्र, जिसने अपने स्वामी को मार कर अपने पुत्र प्रद्योत को राजसिंहासन पर बैठाया। उसी प्रद्योत का पुत्र मालक हुआ।

विष्णु० ४।२४।२ [बम्ब० प्रस० गी० मा०]

मालवी

मद्रदेश के राजा अश्वपति की रानी तथा सावित्री की माता। देखिए, मद्र।

मत्स्य० २०७।५, १० [कलकत्ता गु० प्र०]

मालव (मालवाः)

विन्ध्यपृष्ठ में स्थित जनपदों में से एक[१]। मत्स्य० में एक स्थान पर इसका उल्लेख प्राच्य जनपदों के अन्तर्गत आता है[२]। मालवों (जाति या मालव देश के निवासी) का भाग० में सौराष्ट्र, आवन्ति, अभीरों, शूरों तथा अर्बुदों के साथ सम्बन्ध स्थापित किया गया है। वहाँ कहा गया है कि इन स्थानों के द्विज धीरे धीरे संस्कारहीन हो जायँगे[३]। मालवजाति प्राचीन इतिहास में महत्व पूर्ण स्थान रखती है। मालवजाति के लोग पहले पंजाब में बसे फिर उत्तरी भारत, राजपूताना, मध्यभारत और युक्तप्रान्त (उत्तर प्रदेश) के विभिन्न स्थानों में फैल गये। सम्भवत कुछ समय के उपरान्त मालव मध्यभारत के उत्तर पश्चिम में स्थित अवन्ति महाजनपद में बस गये जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी। इस जनपद को आजकल मालवा कहते हैं[४]। मालवों का उल्लेख पतञ्जलि के महाभाष्य तथा यूनानी इतिहासज्ञों के लेखों में भी प्राप्त होता है[५]।

१—वायु० ४५।१३३-१३४
मत्स्य० ११३।५२ [कलकत्ता, गु० प्र०]
२—मत्स्य० ११३।४४ [कलकत्ता, गु० प्र०]
वही १६२।६७
३—भाग० १२।१।३८
४—बि० च० ला० ट्रा० वन्मि० इंपिट० पृ० ५५
५—वही० पृ० ६०

मालिनी

ययातिकुल में उत्पन्न पृथुलाश्व के पुत्र चम्प की नगरी चम्पा (चम्पावती) का प्राचीन नाम।

मत्स्य० ४८।९७
वायु० ९९।१०५

माहिषिक(२)(माहिषिकाः) एक क्षत्रिय जाति, जो बाद में सगर द्वारा पतित बना दी गयी थी।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।१३७—१४०
वायु० ८८।१३८-१४३

माहिष्मती [महिष्मती] नर्मदा के तट पर स्थित कार्तवीर्य अर्जुन की राजधानी[१]। यहाँ पर कार्तवीर्य ने रावण को बन्दी बनाया था तथा उसने कर्कोटक के पुत्र को पराजित किया था[२]। डा० भण्डारकर के अनुसार अवन्ति (दक्षिणापथ) की राजधानी माहिष्मती थी[३]।

१—भाग० १०।७६।२१
वायु० ६४।२६
ब्रह्माण्ड० ३।३८।२, ३।४६।११
२—विष्णु० ४।११।४
मत्स्य० ४३।२६
३—वि० च० ला० ट्रा० एन्म० इण्डि० पृ० ३८६

माहिष्मान् हैहय वंश की पाँचवीं पीढ़ी में साहञ्जि (संहेय वायु०) का पुत्र। भद्रश्रेण्य का पिता।

विष्णु० ४।११।३
वायु० ६४।५

माहेय एक जनपद।[१] वि० च० ला० का अनुमान है कि "माहेय" माही नदी के तटवर्ती प्रदेश में रहने वाले थे[२]।

१—वायु० ४५।१३०
२—वि० च० ला० ट्रा० एन्शि० इण्डि० पृ० ३६१

मितध्वज निमिवंश। धर्मध्वज का पुत्र तथा खाण्डिक्य का पिता।

भाग० ६।१३।१६-२०

मिताहार

एक वानर-प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३६

मित्र (१)

वसुदेव और मदिरा का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७१

वायु० ९६।१९६

मित्र (२)

राज्य के सात अंगों में से एक। मित्र तीन प्रकार का होता है। (१) वंशगत (२) शत्रु का शत्रु तथा (३) कृत्रिम

"पितृपैतामहं मित्रममित्रस्य तथा रिपो।
कृत्रिमञ्च महाभाग मित्रं त्रिविधमुच्यते।"

मत्स्य० २१९।१७-१८ [कलकत्ता, गु० प्र०]

मित्रदेवी

यदुवराज देवक की पुत्री तथा वसुदेव की सात पत्नियों में से एक।

मत्स्य० ४४।७२

मित्रबाहु

कृष्ण और नाग्नजिति का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७२।२४२

वायु० ९६।२४२

मित्रयु

मद्र (पौरव) वंश। उत्तर पाञ्चाल शाखा। पीढ़ी क्रम संख्या १०। दिवोदास का पुत्र। च्यवन का पिता।

वायु० ९९।२०६

विष्णु० ४।१९।६९

मत्स्य० ५०।११

मित्रवान् मित्रविन्दा तथा कृष्ण का पुत्र।
मत्स्य० ४७।१६ [कलकत्ता, गु० प्र०]

मित्रविन्द मित्रविन्दा तथा कृष्ण का पुत्र।
मत्स्य० ४७।१६ [कलकत्ता, गु० प्र०]

मित्रविन्दा अवन्ती के राजा विन्द और अनुविन्द की बहिन, जो कृष्ण की पत्नी बनी।
भाग० १०।५८।३०

मित्रसह सुदास का पुत्र। देखिए सौदास।
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१७८-१७९

मिथि (मिथिल, जनक) निमि-वंश। निमि का पुत्र। निमि की मृत्यु के बाद अराजकता के भय से ऋषियों ने निमि के शरीर को अरणी द्वारा मथ कर एक राजकुमार की उत्पत्ति की। उनका नाम मिथि और जनक हुआ "नाम्ना मिथिरिति ख्यातो जननाज्जनकोऽभवत्"। भाग० के अनुसार विदेह से उत्पन्न होने के कारण वे वैदेह कहलाये तथा मथन से उत्पन्न होने के कारण उनका नाम मिथिल हुआ—"जन्मना जनकः सोऽभूत् वैदेहस्तु विदेहजः। मिथिलो मथनाज्जातो मिथिला येन निर्मिता"। मिथि (मिथिल) जनक ने मिथिलापुरी का निर्माण किया। उनके पुत्र का नाम उदावसु (उदार-वसु, विष्णु०) था।
वायु० ८९।३-६
विष्णु० ४।५।७-१२
ब्रह्माण्ड० ३।६४।३-६
भाग० ९।१३।१२-१३

मिथिल देखिए, मिथि।

मिथिला

विदेह की राजधानी। इसका एक शासक बहुलाश्व था, जो अत्यन्त धर्मात्मा कहा गया है। विशेष के लिए देखिए, मिथि।

भाग० १० ८६।१६

ब्रह्माण्ड० ३।६४।३

मिथिलेश्वर

मिथिला का राजा, जिसने कार्तवीर्य अर्जुन और परशुराम के युद्ध में कार्तवीर्य का साथ दिया, और अन्तमें परशुराम के मुद्गल से मारा गया।

ब्रह्माण्ड० ३।३६।२, ८

मुण्डक

दनु नामक असुर के पुत्रों में से एक।

वायु० ६८ ८

मुण्ड (मुण्डाः)

एक प्राच्य जनपद[1]। एक जाति[2]।

१—वायु० ४५।१२२

२—मत्स्य० १६३।६६

मुदकर (मुदकराः)

एक प्राच्य जनपद।

मार्कण्डेय० ५७।४२ [कलकत्ता, देवान० द्वारा सं०]

मुद्गरक (मुद्गरकाः)

एक प्राच्य जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।५१

मुद्गल

चंद्र (पौरव) वंश। उत्तर पञ्चाल शाखा। भेद (वायु०) हर्यश्व (विष्णु०) का पुत्र। पाँचों [illegible] है। इसी मुद्गल से [illegible] ब्राह्मणों (मौद्गल्य) की उत्पत्ति हुई।

वायु० ६६।१६५, १६८
विष्णु० ४।१६।१६

मौद्गल्य देखिए, मुद्गल।

मुनि (१) निमि वंश की २५ वीं पीढ़ी में प्रद्युम्न, (शतद्युम्न, विष्णु०) का पुत्र। इसके बाद मुनि (शुचि, विष्णु०) राजगद्दी पर बैठा।
विष्णु० ४।५।१२
वायु० ८६।१६

मुनि (२) स्वायंभुव मनु के वंश में द्युतिमान् के पुत्रों में से एक। उसके नाम से क्रौञ्च-द्वीप के एक जनपद का नाम मौनिदेश पड़ा।
ब्रह्माण्ड० २।१४।२६

मुनिक [शुनक] मगध के बृहद्रथ वंश का अन्तिम राजा। विष्णु० के अनुसार रिपुञ्जय का अमात्य, जिसने अपने स्वामी को मारकर अपने पुत्र को राजा बनाया। ब्रह्माण्ड० तथा विष्णु० में पाठ शुनक है।
वायु० ६६।११०
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१२३
विष्णु० ४।२४।१-२ [बम्ब० सं० गो० ना०]

मुर एक दैत्य, जो भौमासुर की राजधानी प्राग्ज्योतिषपुर में कृष्ण के हाथों मारा गया।
भाग० १०।५६।२-११

मुष्टिक देखिए, बलराम।

मुसल — एक अस्त्र, जिसके द्वारा यादवों का संहार हुआ।

विष्णु० ५।३७।११

मुसलायुध — बलदेव का दूसरा नाम।

विष्णु० ५।२५।१८

मूक (१) — एक दैत्य, जो सव्यसाची (अर्जुन) द्वारा मारा गया

महाभा० ३।५।२६

मूक (२) (मूकाः) — मध्यदेश का एक जनपद।

मत्स्य० ११४।३६ [[illegible] पृ० ८०

मूलक — ऐक्ष्वाकु वंश। अश्मक का पुत्र, जिस समय परशुराम पृथ्वी में क्षत्रियों का संहार कर रहे थे, उस समय स्त्रियों ने उसे छिपा कर उसकी रक्षा की, इसीलिए उसे नारीकवच भी कहा गया है। वह दशरथ (शतरथ, वायु० ब्रह्माण्ड०) का पिता था[1]। ऐसा जान पड़ता है कि बाद में अश्मक तथा उसके पुत्र मूलक के नाम से जनपदों का भी नाम पड़ गया और उन जनपदों के निवासी भी उसी नाम से कहे जाने लगे। तदनन्तर अश्मक तथा मूलक जातिबोधक भी हो गये होंगे। इसकी पुष्टि डा० ला० के कथन से होती है—"मूलकों का दक्षिण के अश्मकों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क था। सम्भवतः इस जाति के लोग अवन्ति के दक्षिण में स्थित थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के टीकाकार भट्टस्वामी के कथनानुसार उनका देश महाराष्ट्र था। सुत्तनिपात के अनुसार अश्मक और मूलक गोदावरी के तट पर बसे थे और उनकी राजधानी पतिट्ठान (प्रतिष्ठान) था जो गोदावरी के उत्तर तट पर निज़ाम राज्य के औरंगाबाद ज़िले में स्थित थी[2]।"

१—वायु० ८८।१७८-१७९
भाग० ९।९।४०-४१

ब्रह्माण्ड० ३।६३।१७८
विष्णु० ४।४।३८
२—वि० च० ला० ट्रा० एन्शि० इण्डि० पृ० १८८

मूषिक (मूषिकाः) दक्षिणापथ का एक जनपद[1]। डा० रा० चौ० का अनुमान है कि शाङ्खायन श्रौतसूत्र में लिखित मूचीप अथवा मूचीप वही हैं जो मूषिक[2]। पार्जिटर का कथन है कि मूषिक सम्भवत: मुसि नदी के तट पर बस गये थे, जिस पर आजकल हैदराबाद स्थित है[3]।

१—ब्रह्माण्ड० २।१६।५६—५७
वायु० ४५।१२५
२—वि० च० ला० ट्रा० एन्शि० इण्डि० पृ० ३८४
३—मार्कण्डेय० पृ० ३६६

मृग उशीनर तथा मृगा का पुत्र। उसने यौधेय (नगर) का शासन किया।

वायु० ९९।२०–२१

मृगा उशीनर की पाँच पत्नियों में से एक।

वायु० ९९।१९

मृगकेतन अनिरुद्ध का पुत्र।

मत्स्य० ४७।२२ [कलकत्ता, गु० ग्र०]

मृगया आखेट। प्राचीन काल में राजाओं की जीवनचर्या में आखेट एक मुख्य अंग था।

ब्रह्माण्ड० १।२।२०
वायु० २।२०
वही २५।२७

वही ८८।१९
वही ९६।३७
वही ९९।२०४

मृगेन्द्रस्वातिकर्ण

आन्ध्र वंश। पीढ़ी क्रम १९। स्कन्द स्वाति का पुत्र। राज्यावधि तीन वर्ष।

मत्स्य० २७३।७

मृत्तिकावरपुर

भोजों की नगरी।

विष्णु० ६।१३।७

मृत्तिकावत

महाभोज के कुल में होने वाले भोज राजाओं की राजधानी। देखिए, मार्तिकावत।

विष्णु० ४।१३।६ [अन्य० संस्क० गी० प्रे०]

मृदु

परीक्षित के बाद १६ वाँ राजा। रङ्गनाथ के अनन्तर मृदु का नाम तथा उसके बाद तिग्म का नाम आता है।

विष्णु० ४।२१।२

मृदुर

श्वफल्क और गान्दिनी के पुत्रों में से एक।

वायु० ९६।११०

ब्रह्मा० ३।७१।११४-१६

मृदुविद्

श्वफल्क और गान्दिनी पुत्रों में से एक।

ब्रह्मा० ३।७१।११४-१६

मेकला — एक नगरी, जिसमें सात राजाओं ने शासन किया।

वायु० ६६।३७५
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१८८

मेकल (मेकलाः) — विन्ध्यपृष्ठ में स्थित एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।६३
मत्स्य० ११३।५८

मेघ (१) — तारकासुर के सेना के नायकों में से एक।

मत्स्य० १४७।४३

मेघ (२) (मेघाः) — कोमला में जिन सात महाबली राजाओं ने शासन किया, वे सब मेघ (मेघाः) नाम से विख्यात हुए।

वायु० ६६।३७२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१८५

मेघजाति — नहुष के सात पुत्रों में से एक।

मत्स्य० २४।५०

मेघदुन्दुभि — एक असुर, जिसने देवासुर संग्राम में भाग लिया।

भाग० ८।१०।२१

मेघपूर्ण — महेन्द्र का पुत्र।

वायु० ६६।१५६

मेघवासा हिरण्यकशिपु की सभा का एक असुर।

मत्स्य० १६०।३८ [कलकत्ता, गु० प्र०]

मेघस्वाति आंध्र वंश। पीढ़ी-क्रम ६। दिविलक (आपीतक, मत्स्य०) का पुत्र। पटुमान का पिता। राज्यकाल १८ वर्ष।

विष्णु० ४।२४।१२

मत्स्य० २७३।८

मेधा (मेधस्) स्वायंभुव मनु के दस पुत्रों में से एक। विष्णु० के अनुसार कर्दम की पुत्री तथा प्रियव्रत से उत्पन्न पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० २।११।१०४

विष्णु० २।१।५-७ [कम० संस्क० गी० ना०]

मार्क० ५३।२५

मेधातिथि स्वायंभुव मनु वंश में प्रियव्रत के दस पुत्रों में से एक। उसके पिता ने मेधातिथि को प्लक्षद्वीप का राजा बनाया।

ब्रह्माण्ड० २।१४।११

मेधावी परीक्षित के बाद १७ वाँ राजा। सुनय के बाद यह राजसिंहासन पर बैठा। उसका उत्तराधिकारी नृपञ्जय हुआ।

विष्णु० ४।२१।१

म्लेच्छ (१) (म्लेच्छाः) एक जाति। वेन की जंघा के मंथन से उत्पन्न[1]। मत्स्य० के अनुसार मनु से म्लेच्छ जाति की उत्पत्ति हुई[2]। द्रुह्यु वंशज प्रचेतस् के १०० पुत्रों ने उत्तर दिशा में म्लेच्छों पर शासन किया[3]।

१—मत्स्य० १०।७

२—मत्स्य० १।१०

३—भाग० ९।२३।१६

वायु० ९९।१२

म्लेच्छ (२) (म्लेच्छाः) अङ्गद्वीप को नाना म्लेच्छ जातियों से आकीर्ण कहा गया है। वहां के निवासी उदीच्य म्लेच्छ थे[1]। म्लेच्छों के ११ राजाओं ने ३०० वर्ष तक राज्य किया[2]।

१—वायु० ४८।१८
२—वायु० ९९।३६४

म्लेच्छजाति देखिए, म्लेच्छ (१)

वायु० ९९।२६८

म्लेच्छराष्ट्राधिप (म्लेच्छराष्ट्राधिपाः) प्रचेतस् के १०० पुत्र म्लेच्छ राष्ट्रों के अधिप हुए।

वायु० ९९।१२

मैथिल (१) मिथिला-नरेश।

वायु० ९९।७८
भाग० १०।८२।२६

मैथिल (२) (मैथिलाः) मिथिला के २८ राजाओं की सामुदायिक संज्ञा। (इत्येते मैथिला प्रोक्ताः)

ब्रह्माण्ड० ३।६४।९-२४
मत्स्य० ६०३।१५ [कलकत्ता गु० प्र०]

मोदक स्वायम्भुव मनु वंशज हव्य के पुत्रों में से एक। उसी के नाम से मोदाक नामक प्रदेश (वर्ष) का नाम पड़ा।

ब्रह्माण्ड० २।१४।१८

मोदाक एक जनपद। हव्य के पुत्र, मोदक के नाम से इस जनपद का नाम पड़ा[1]। वायु० में यह केतुमाल वर्ष का जनपद माना गया है[2]।

१—ब्रह्माण्ड० २।१४।१७, २०

२—वायु० ४४।१८

मौद्गल्य देखिए, मुद्गल।

वायु० ९९।१९८,१९८

मौन (मौनाः) एक राजवंश, जिसमें १८ राजा हुए।

वायु० ९९।३९०

मौनिक (मौनिकाः) दक्षिणापथ का एक जनपद।

ब्रह्म० ४५।१२७

मौनिदेश [मुनिदेश] एक जनपद, जिसका नामकरण मुनि के नाम से हुआ। देखिए, मुनि।

ब्रह्माण्ड० २।१४।२९

मौर्य (मौर्याः) नन्दराजवंश के चाणक्य नामक ब्राह्मण द्वारा नाश किए जाने पर मौर्य-राजवंश स्थापित हुआ। सर्वप्रथम मौर्यवंशी चंद्रगुप्त का उस ब्राह्मण ने राज्याभिषेक किया। मत्स्य० में चन्द्रगुप्त से लेकर बृहद्रथ तक मौर्य राजाओं की संख्या नव होती है, यद्यपि वहाँ दस मौर्यों का स्पष्ट उल्लेख है। (मौर्याः ह्येते दशनृपाः) ब्रह्माण्ड० में नव मौर्यों का स्पष्ट उल्लेख है। (इत्येते नव मौर्याः) विष्णु० में इनकी संख्या पूरी हो जाती है। इस वंश का अन्तिम राजा बृहद्रथ हुआ। चन्द्रगुप्त से लेकर बृहद्रथ तक मौर्य-वंश के राजाओं ने, पृथ्वी पर १३७ वर्षों तक राज्य किया।

वायु० ९९। ३३१।

विष्णु० ४।२४।०

मत्स्य० २७१।२१ [कलकत्ता गु० प्र०]
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१४४
भाग० १२।१।२२–२५

मौलि — मणिभद्र का पुत्र।
वायु० ६९।१५८

मौलिक (मौलिकाः) — दक्षिण का एक देश[1]। सुत्तनिपात के पारायणवग्ग के अनुसार मौलिक मूलक देश के निवासी थे[2]।
१—ब्रह्माण्ड० २।१६।५८
२—बि० च० ला० ज्या० एन्शि० इण्डि० पृ० ३२१

यक्षास्य — एक वानर-प्रमुख।
ब्रह्माण्ड० ३।७।२३५

यक्षेश्वर — शिव और सोम के युद्ध में उसने शिव का साथ दिया।
मत्स्य० २३।३८ [कलकत्ता गु० प्र०]

यजु — चैद्योपरिचर (वसु) का गिरिका से उत्पन्न सात पुत्रों में से एक।
मत्स्य० ५०।२८ [कलकत्ता, गु० प्र०]

यजुदास — देवकी के उन पुत्रों में से एक, जिन्हें कंस ने मार डाला था।
वायु० ९६।१७२

यज्ञबाहु — प्रियव्रत और बर्हिष्मती के पुत्रों में से एक। प्रियव्रत ने उसे शाल्मली द्वीप का शासक बनाया।
भाग० ५।१।२५

यज्ञश्रीः [यज्ञश्रीः शातकर्णि, यज्ञश्रीः शान्तिकर्णिक] आन्ध्र वंश। इस वंश का २६वाँ राजा। यह शिवस्कन्द का पुत्र था, या नहीं, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, किन्तु शिवस्कन्द के बाद यह राजा हुआ, यह निश्चित है[1]। शासन-काल मत्स्य० के अनुसार १९ वर्ष तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार १९ वर्ष है। ब्रह्माण्ड० में यज्ञश्री शातकर्णि तथा मत्स्य० में यज्ञश्रीः शान्तिकर्णिक, पाठ है[2]।

१—मत्स्य० २७३।१४
विष्णु० ४।२४।१२
२—ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६८

यज्ञहोत्र मनु (उत्तम) का पुत्र।

भाग० ८।१।२३

यति नहुष का ज्येष्ठ पुत्र, जिसने राजा बनना स्वीकार नहीं किया।

भाग० ९।१८।१-२
मत्स्य० २४।५०

यदु (१) ययाति और देवयानी का ज्येष्ठ पुत्र, जो यदुवंश का प्रवर्तक हुआ[1]। शुक्र के शाप के कारण जब ययाति वार्द्धक्य को प्राप्त हुआ तो उसने यदु से अपने वार्द्धक्य को लेने तथा अपनी आयु देने के लिए कहा, किन्तु यदु ने इसे स्वीकार नहीं किया। विष्णु० के अनुसार ययाति ने उसे शाप दिया कि तुम्हारी सन्तान राज्य करने योग्य न होगी[2]। ययाति के इस शाप का वास्तविक स्वरूप क्या था, ठीक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आगे चलकर इस वंश के बहुत से राजा हुए हैं। सम्भवतः इसका यह अर्थ है कि यदुवंश में अराजक (गणतन्त्र) राज्य प्रचलित हुए। भाग० में भी यह उल्लेख है कि ययाति के शाप से यदुवंशज राजसिंहासन के अधिकारी नहीं हैं—(ययातिशापाद् यदुभिर्नासितव्यं नृपासने) किन्तु कृष्ण ने अपने मातामह उग्रसेन को यदुवंशियों का राजा बनाया[3]। यदु के चार पुत्र थे। सहस्रजित, क्रोष्टा, नल, और रिपु[4]। विशेष के लिए देखिए, ययाति।

१—भाग० ६।१८।३३
वही ६।२३।१८-२३, ३०
विष्णु० ४।१०।३-५
वही ४।११।१—३
मत्स्य० ३४।३० [कलकत्ता, गु० प्र०]
२—भाग० १०।४५।१३
३—भाग० ६।२३।२०–२१

यदु (२)

एक जाति। मगधदेश के राजा विश्वस्फूर्जि (पुरञ्जय) ने जिन पुलिन्द आदि जातियों को (राजा ?) बनाया, उनमें यदु का भी नाम है। देखिए, पुरञ्जय(५)।
भाग० १२।१।३६

यदुक

मणिधान्यों का एक जनपद (राज्य)।
वायु० ९९।३८४
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१९६

यदु-समाज[यादव-समाज] यादवों की सभा।
विष्णु० ४।१३।३४ [वम्ब० मै० गो० ना०]
वही ४।१३।६४

यदूद्वह

कृष्ण का नाम।
ब्रह्माण्ड० ३।३६।२९

यम

विवस्वत के पुत्र तथा पितृगणों के स्वामी।
वायु० ६२।१८६
कूर्म० ५।१२९।६
मत्स्य० ८।५
वही २२५।४

उसके शाप का भाजन बनना पड़ा। विष्णु० तथा ब्रह्माण्ड० में कहा गया है कि तुर्वसु से कई पीढ़ी आगे मरुत्त हुआ, जो ययाति के शाप के कारण अनपत्य था, इसलिए उसने पौरव दुष्यन्त को अपना पुत्र माना—"ततश्च पौरव दुष्यन्त पुत्रमकल्पयदेवं ययातिशापात्तद्वंश पौरव वंशमाश्रितवान्"। केवल कनिष्ठ पुत्र पुरु ने ही पिता की आज्ञा का पालन किया और ययाति ने प्रसन्न होकर पुरु को समस्त भूमण्डल के राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। उसने अन्य चार पुत्रों को माण्डलिक राजा बनाया। ययाति ने दक्षिणपूर्व में तुर्वसु (भाग० द्रुह्यु) को, दक्षिण में यदु को, पश्चिम में द्रुह्यु (भाग० तुर्वसु) को, तथा उत्तर में अनु को स्थापित किया।

विष्णु० ४।१०।१–६, १६–१८
भाग० ६।१८।१–२, ३१–३३
वही ६।१८।४१–४५
वही ६।२०।२१—२३
मत्स्य० ३४ अ०
विष्णु० ४।१६।२ [वम्ब० सस्क० गो० ना०]
ब्रह्माण्ड० ३।७४।३–४

यवन (१) (यवनाः) एक जाति। ब्रह्माण्ड० में एक स्थान पर यवनों का गान्धार, पारद, पह्लव आदि जातियों के साथ उल्लेख है। वायु० में कहा गया है कि विष्णु का अंशभूत प्रमिति, यवन, शक, तुषार, बर्बर आदि अधार्मिक (म्लेच्छ) जातियों का अन्त करने वाला कलियुग के अन्त में होगा[1]। राजा बाहु के राज्य का अपहरण करने वाले शक, पारद आदि के साथ यवनों का भी उल्लेख है। बाहु के पुत्र सगर ने भार्गव से आग्नेय अस्त्र प्राप्त किया और वह इन शक, यवन, काम्बोज, पारद, पह्लव आदि जातियों का नाश करने में तुल गया। किन्तु अपने गुरु वसिष्ठ की आज्ञा से उन्हें धर्म से च्युत कर ही सगर ने सन्तोष किया। इसके पहले शक, पारद, यवन आदि क्षत्रिय थे[2]। अपनी दिग्विजय में दौष्यन्ति भरत ने जिन शक, हूण आदि अधार्मिक (म्लेच्छ) जातियों का संहार किया था, उनमें यवन भी थे[3]। यवन भारतवर्ष में स्थित भागस्वरूप नामक द्वीप के पश्चिम भाग में

निवासी कहे गये हैं[४]। मत्स्य० में एक स्थान पर यवन तुर्वसु के पुत्र माने गये हैं "तुर्वसोः यवना सुताः"[५]। वायु० में कहा गया है कि आठ यवन राजा होंगे, जो ८० वर्ष तक पृथ्वी में राज्य करेंगे। "यवनाष्टौ भविष्यन्ति" "अशीतिं चैव वर्षाणि भोक्तारो यवना महीम्"[६]। महाभारत में इनका उल्लेख उत्तरापथ के काम्बोज, गान्धार, किरात आदि के साथ हुआ है[७]। महाभारत युद्ध में यवन कौरवों के सहायक थे[८]। गौतमधर्मशास्त्र में यवन शूद्रा स्त्री तथा क्षत्रिय पुरुष से उत्पन्न माने गये हैं[९]।

१—ब्रह्माण्ड० २।१६।४८
वायु० ९८।१०७—११०
मत्स्य० १४४।५७—५८ [राजन्य, पु० प्र०]
२—वायु० ५८।१२१ १२२
वायु० ८८।१२४।१२७—१२९
ब्रह्म० ८८।१६२।१४३
भाग० ६।८।५
ब्रह्माण्ड० ३।४८।४४
वही ३।६३।१२१—१२७
३—भाग० ९।२०।२१—३०
४—ब्रह्माण्ड० २।१६।६०
वायु० ४५।८०—८२
५—मत्स्य० ३४।३०
६—वायु० ९९।३६० ३६२
मत्स्य० २७२।२६२ [कल० पु० प्र०]
७—डि० ब० ला०, इं० ऐन्शि० इण्डि० पृ० १२३
८—वे० डि० प्रथम भाग पृ० २७४
९—डि० ब० ला० इं० ऐन्शि० इण्डि० पृ० १२३

यवन (२) (यवनाः) एक उदीच्य देश अथवा जनपद०। इसका उल्लेख वायु० तथा ब्रह्माण्ड० में गान्धार, सिन्धुसौवीर, चीन आदि के साथ हुआ है।

वायु० ४५।११६—१२१
ब्रह्माण्ड० २।१६।४९

*पुराणों में जहाँ जनपद एवं देशों का उल्लेख हुआ है, वहाँ प्रायः उनसे जातियों का भी बोध होता है। प्रस्तुत स्थल में यवन के लिए प्रयुक्त उदीच्य देश अथवा जनपद उत्तर दिशा में रहने वाली एक जाति का भी बोधक प्रतीत होता है।

यवन (३) कालयवन। यवनेश (यवनेश्वर) का पुत्र[१]। वह अत्यन्त पराक्रमी था। एकबार उसने तीन करोड़ म्लेच्छों की सेना लेकर मथुरा पर चढ़ाई की। अन्त में मुचुकुन्द के क्रोधपूर्ण दृष्टि से वह भस्म होगया[२]।

१—विष्णु० ५।२३।४-८ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]
२—भा० १०।५०।४४
वही १०।५१।१२
वायु० ६८।१०२
ब्रह्माण्ड० ३।७३।१०२

यवनाश्व अन्त्र का पुत्र। देखिए, युवनाश्व (२)
वायु० ८८।२८

यवनेश (यवनेश्वर) देखिए, यवन (कालयवन)।

यवस (१) मनु (सावर्णि) के पुत्रों में से एक।
मत्स्य० ६।३३ [कलकत्ता, पु० प्र०]

यवस (२) प्लक्षद्वीप के सात वर्षों में से एक।
भाग० ५।२०।३ [बम्ब० संस्क० नि०]

यविक मणिभद्र के पुत्रों में से एक।
वायु० ६९।१२४

यवीनर (१) द्विमीढ का पुत्र तथा कृतिमान् का पिता।

भाग० ९।२१।२७ [बम्ब० संस्क० गी० का०]

वायु० ९९।१८८

यवीनर (२) भर्म्याश्व के पाँच पुत्रों में से एक। देखिए, पञ्चाल (३)।

भाग० ९।२१।३२

यशोदा (१) नन्द (गोप) की स्त्री। योगमाया की माता। वसुदेव जी कृष्ण के जन्म होने पर उन्हें योगमाया के स्थान में रखकर, उसे (योगमाया को) देवकी के पास ले आये थे। योगमाया को देवकी की सन्तान समझ कर उसे कंस ने मारने का प्रयत्न किया, किन्तु उसका प्रयास विफल हुआ।

भाग० १०।२।१

वही १०।३।८

वही १०।३।४७

वही १०।९ अ०

यशोदा (२) देखिए, खट्वाङ्ग (२)।

यशोदा (३) अंशुमान् की स्त्री। दिलीप की माता। यशोदा के भगीरथ पौत्र थे।

मत्स्य० १५।१८–१९ [कलकत्ता, गु० प्र०]

यशोदा (४) वसुदेव की पत्नियों में से एक।

मत्स्य० ४६।३१ [कलकत्ता, गु० प्र०]

यशोदानन्दन कृष्ण का नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।३३।२०

यशोदावत्सल कृष्ण का नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।२८।२२

यशोदेवी बृहन्मना की रानी। जयद्रथ की माता।

मत्स्य० ४८।१०५ [कलकत्ता, गु० प्र०]
वायु० ६६।११५

यशोधरा देवक की पुत्री। वसुदेव की सात पत्नियों में से एक।

मत्स्य० ४४।७२

यशोनन्दि किलकिला के राजा भूतनन्द के वंशजों में से एक। शिशुनन्दि का भ्राता। देखिए, भूतनन्द।

भाग० १२।१।३२-३३

यात्राकाल देखिए, युद्धयात्रा।

यादव (१) यदु के वंशज[1]। यदु-वंश में भगवान् श्री कृष्ण का अवतार हुआ था[2]। भाग० तथा विष्णु० में इनकी संख्या अनन्त मानी गयी है[3]। वायु० में यादवों

की संख्या तीन करोड़ तक पहुँच गयी है[४]। वायु० के अनुसार यादवों के ग्यारह कुल थे[५]। (कुलानि दशचैकं च यादवानां महात्मनाम्)।

१—महा० ६।२३।१०
विष्णु० ४।१४।८ [बम्ब० ईस्ट० गो० ना०]
मत्स्य० ३४।१० [कलकत्ता, ० गु० प्र०]
वही ४५ १८ [,, ,,]
वही० ४७।१ [,, ,,]
२—भाग० ६।२३।१६ [बम्ब० ईस्ट० निर्णय]
विष्णु० ४।११।२ [बम्ब० ईस्ट० गो० ना०]
३—भाग० १०।६०।२६।तथा ४१
विष्णु० ४।१५।२४, २८
४—वायु० ६६।२५२
५—वही ६६।२५५

यादव (२)

कृष्ण का नाम।
ब्रह्माण्ड० ३।७१।४१
वायु० ६६।४०

यादवनन्दन

कृष्ण का नाम।
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१००
वायु० ६६।६६९

यादव-समाज

देखिए, यदु-समाज,

यादवान्वय

यदु-कुल।
मत्स्य० ४।१७ [कलकत्ता गु० प्र०]

यादवी राजा बाहु की पत्नी, तथा सगर की माता।

वायु० ८८।१२०-१३३
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१२०

यादवेन्द्र कृष्ण का नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।३६।४६

यामुन (यामुनाः) एक जनपद। भाग० में इसका नाम कुरुजाङ्गल, पाञ्चाल, शूरसेन के साथ आया है।

भाग० १।१०।३४ [दन्त० मत्स्य० नि०]

युक्त रैवत मनु का पुत्र।

मत्स्य० ६।२१ [वेङ्कटेश, गु० प्र०]

युगन्धर (१) शुचि का पुत्र।

भाग० ६।२४।१४

युगन्धर (२) भूति का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१०१

युगन्धर (३) शिनिवंशज द्युम्नि का पुत्र।

मत्स्य० ४५।२४ [कलकत्ता, गु. प्र०]

युद्धयात्रा [यात्राकाल] शत्रु पर आक्रमण करने के लिए सेना सहित प्रयाण। जब विजिगीषु राजा यह समझे कि मेरा शत्रु विपत्तियों से अभिभूत है, तथा मैं : सेना, भृत्य, एवं प्रभूत धन आदि से आत्मरक्षा करने में समर्थ हूँ, तब वह शत्रु पर आक्रमण करे। अग्नि० में कहा गया है कि वर्षाकाल में पदाति सेना

हेमन्त, और शिशिर में रथ और अश्वों से युक्त सेना, वसन्त में चतुरंग बल से युक्त सेना तथा शरद के आरम्भ में पदातिबहुला सेना सर्वदा शत्रु के जीतने में समर्थ होती है।

मत्स्य० २३६।म० [वङ्गवा, पु० म०]
वही २४० म०
अग्नि० २२८।१-४

युधाजित् (१)

वृष्णि और माद्री का पुत्र। शिनि और अनमित्र का पिता। ब्रह्माण्ड० के अनुसार वृष्णि और माद्री का पुत्र।

भाग० ६।२४।१२
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१६
मत्स्य० ४५।२
वायु० ६६।१८

युधाजित् (२)

अनमित्र का पुत्र।

मत्स्य० ४५।२४ [कलकत्ता, पु० म०]

युधामन्यु

पाण्डव और कौरवों के युद्ध में पाण्डवों का सहायक।

गीता १।६

युधिष्ठिर

कुन्ती और पाण्डु के पुत्र, जो कुन्ती के गर्भ से धर्म द्वारा उत्पन्न हुए। द्रौपदी के गर्भ से युधिष्ठिर का पुत्र प्रतिविन्ध्य हुआ। युधिष्ठिर का देविका नामक स्त्री से देवक नाम का दूसरा पुत्र था। विष्णु० के अनुसार यौधेय से देवक पुत्र हुआ। मत्स्य० में युधिष्ठिर की स्त्री देवकी से उत्पन्न पुत्र

यौधेय माना गया है। महाभारत० के अनुसार स्वयम्वर में प्राप्त गोवासन शैव्य की पुत्री देविका से उत्पन्न पुत्र यौधेय हुआ। वायु० के अनुसार युधिष्ठिर की कन्या का नाम सुतनु था, जिसका पुत्र वज्र हुआ[१]। युधिष्ठिर की इच्छा राजसूय यज्ञ करने की थी, किन्तु श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को यह परामर्श दिया कि पहले पृथ्वी के समस्त राजाओं को जीतकर पूर्ण वसुधरा को अपने वश में कर लेना उचित है, तदनन्तर यह महाक्रतु होना चाहिए[२]। युधिष्ठिर ने अपने चारों भाई भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव को चारों ओर दिग्विजय के लिए भेजा, जिसमें उन्होंने बहुत से नरपतियों को जीत लिया तथा उनसे प्रभूत धन लाये[३]। इसके उपरान्त भीम ने अत्यन्त पराक्रमशाली मगध के राजा जरासन्ध को मार डाला[४]। अब ठीक अवसर जान कर धर्मराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ करने का आयोजन किया। उस महान् यज्ञ म सब राजा एकत्र हुए[५]। यज्ञ में उपस्थित सदस्यों में सब से पहले कृष्ण की पूजा का सहदेव द्वारा प्रस्ताव हुआ, जिसके अनुसार युधिष्ठिर ने सर्वप्रथम उन्हीं की पूजा की[६]। इसका शिशुपाल ने विरोध किया और वह कृष्ण की अत्यन्त कठोर शब्दों द्वारा निन्दा करने लगा[७]। ऐसा कहते उसे देखकर पाण्डव, मत्स्य० तथा कैकय, सृञ्जय आदि वशज राजा शिशुपाल को मारने के लिए उद्यत होगये[८]। अन्त में कृष्ण ने अपने चक्र से चेदिराज शिशुपाल का शिर काट लिया[९]। युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ, निर्विघ्न समाप्त होगया[१०]। राजा युधिष्ठिर को "धर्मराज" अजातशत्रु, एकराट्, अधिराट्, सम्राट् आदि पदवियों से विभूषित किया गया है [११]। उन्हें जम्बूद्वीप का स्वामी माना गया है[११अ]। युधिष्ठिर के राज्य में यथेष्ट यथावसर वर्षा होती थी, पृथ्वी में समस्त वस्तुएँ उत्पन्न होती थीं, गौएँ गोशालाओं को दूध से प्लावित करदेती थीं, यथावसर वनस्पतियाँ तथा ओषधियाँ हरी भरी रहती थीं, तथा प्रजा आधि, व्याधि दैवं, भौतिक तापों से मुक्त रहती थी—

"काम ववर्ष पर्जन्य सर्वकामदुघा-मही।
सिषिचु स्म व्रजान् गावः—
पयसोधस्वती मुदा॥
नद्यस्समुद्रा गिरयः सवनस्पतिवीरुधः।
फलन्त्योषधय, सर्वा काममन्वृतु तस्य वै।
नाधयो व्याधय क्लेशा दैवभूतात्महेतव ॥

युयुत्सु

युधिष्ठिर की राजधानी से जब श्री कृष्ण द्वारका जाने लगे, उस समय सुभद्रा, द्रौपदी, कुन्ती, धृतराष्ट्र और युयुत्सु दुखित हुए।

भाग० १।१०।६
वही १।१३।३

युयुध

वसुनन्द का पुत्र। सुभाषण का पिता।

भाग० ६।१३।२४

युयुधान (सात्यकि)

सत्यक का पुत्र। शिनि का पौत्र। जय (भूति, ब्रह्माण्ड०) का पिता[१]। उसने अर्जुन से धनुर्वेद की शिक्षा ग्रहण की[२] तथा युधिष्ठिर के राजसूय में भाग लिया[३]।

१—भाग० ६।२४।१४
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१००—१०१
२—भाग० ३।१।३१
३—वही १०।७५।६-७

युवनाश्व (१)

वैवस्वतमनुवंश में राजा प्रसेनजित् (सेनजित् भाग०) का पुत्र। उसके सौ स्त्रियाँ थीं, तथापि वह निःसन्तान था। अन्त में ऐन्द्र यज्ञ के प्रभाव से उसकी दाहिनी कोख से एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो मान्धाता (त्रसदस्यु) चक्रवर्ती हुआ।

वायु० ८८।६४
विष्णु० ४।२।१३
ब्रह्माण्ड० ३।६३।६६
भाग० ६।६।२५—३४

युवनाश्व (२)
[यवनाश्व]

अन्ध का पुत्र। श्रावस्त राजा का पिता। श्रावस्त ने श्रावस्ती नगरी का निर्माण किया। वायु० में पाठ यवनाश्व है।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।२७
वायु० ८८।२६

युवनाश्व (३)
(यौवनाश्व)

अम्बरीष और नर्मदा का पुत्र। संभूत (हरि०, वायु० तथा विष्णु०), (हारीत भाग०) का पिता। किन्तु भाग० में अम्बरीष की स्त्री नर्मदा न होकर पुरुकुत्स की स्त्री है[1]। यौवनाश्व ने एक बड़े युद्ध में भाग लिया, जो १४ मास तक चला था[2]।

१—भाग० ९।७।१
ब्रह्माण्ड० ३।६३।७१
वायु० ८८।७३
विष्णु० ४।३।५
२—ब्रह्माण्ड० ३।७४।८
वायु० ९९।८

युवनाश्व (४)

रणाश्व का पुत्र। मान्धाता का पिता।

मत्स्य० १२।३४

युवराज

राजकुमार।

वायु० ९१।२११

योगमाया

यशोदा और नन्द की पुत्री। देखिए, यशोदा (१)।

भाग० १०।३।९-१५

यौधेय (१)

युधिष्ठिर का पुत्र। देखिए, युधिष्ठिर।

यौधेय (२) नृग (मृग, वायु०) के नाम से प्रख्यात नगर। संभवतः वह उसकी राजधानी थी।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।२१, वायु० ९९।२१

यौधेयी युधिष्ठिर की रानी तथा देवक की माता।

यौवनाश्व देखिए, युवनाश्व (३)।

रक्षिन् राजा के रक्षक। उन्हें लम्बे कद वाले, शक्तिशाली, योद्धा और किसी भी परिस्थिति में व्याकुल न होने वाले, होना चाहिए। उन्हें स्वामिभक्त और सहिष्णु भी होना आवश्यक है।

मत्स्य० २१५।१४ [कलकत्ता यु० प्र०]

रघु ऐक्ष्वाकु वंश। दीर्घबाहु का पुत्र और खट्वाङ्ग का पौत्र। अज का पिता।

विष्णु० ४।४।८० [बम्ब० सं० गो० ना०]
वायु० ८८।१८२-१८३

रचना त्वष्टा की पत्नी। उसके दो पुत्र हुए—संनिवेश और विश्वरूप।

भाग० ६।६।४४ [बम्ब० मस्त० नि०]

रजस् स्वायम्भुव मन्वन्तर। वसिष्ठ का पुत्र। शतजित् का पिता। उसके सौ पौत्र थे, जो सभी राजा थे और जिन्होंने भारतवर्ष को सात खण्डों में विभक्त किया।

वायु० ८८।६०-६१
ब्रह्माण्ड० ३।१४।७०
विष्णु० २।११।४० [कम्ब० म० गो० ना०]

रजि आयु का पुत्र। उसके ५०० पुत्र थे। उसने देवताओं की प्रार्थना से दैत्यों का वध किया तथा इन्द्र को स्वर्ग का राज्य दिया।
भाग० ९।१७।१ तथा १२-१४ [कम्ब० म० नि०]

रजेयु पुरुवंशज रौद्राश्व के घृताची अप्सरा से दस पुत्रों में से एक।
वायु० ९९।१२४

रणक ऐक्ष्वाकु वंश। क्षुद्रक का पुत्र तथा सुरथ का पिता।
भाग० ९।१२।१।

रणञ्जय [रणेञ्जय] ऐक्ष्वाकु वंश। कृतञ्जय का पुत्र तथा संजय का पिता। वायु० के अनुसार भात का पुत्र। मत्स्य० में पाठ रणेञ्जय है।
भाग० ९।१२।१२
विष्णु० ४।२२।२
वायु० ९९।२८७
मत्स्य० २७०।११

रणधृष्ट सूर्यवंश। धृष्ट के तीन पुत्रों में से एक।
मत्स्य० १२।२२

रणविशारद — युद्ध में दक्ष। यह विशेषण पद ज्यामघ के पुत्र विदर्भ के स्नुषा में उत्पन्न क्रथ तथा कैशिक नामक पुत्रों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

ब्रह्माण्ड० ३।७०।३७

रणाश्व — संहताश्व के दो पुत्रों में से एक। युवनाश्व का पिता। मान्धाता का पितामह।

मत्स्य० १२।३४

रति (१) — शतरूपा का दूसरा नाम। स्वायम्भुव मनु की स्त्री।

ब्रह्माण्ड० २।९।३८

वायु० १०।१३

रति (२) — भरत-वंश। विभु की स्त्री। पृथुषेण की माता।

भाग० ५।१५।६

रत्न (रत्नानि) — चक्रवर्ती राजाओं के चौदह रत्न माने गये हैं, जिनमें सात प्राणहीन रत्न हैं—चक्र, रथ, मणि, खड्ग, चर्मरत्न, केतु तथा निधि तथा सात प्राणवान् रत्न कहे गये हैं—भार्या, पुरोहित, सेनानी, रथकृत्, मंत्री, अश्व तथा कलभ (हाथी का बच्चा)।

ब्रह्माण्ड० २।२९।७४-७७

वायु० ५७।७०

रत्ना — सोमवंश। शैब्या की पुत्री। अक्रूर की स्त्री तथा ग्यारह वीर पुत्रों की जननी।

मत्स्य० ४५।२८

रत्नकूता

भद्राश्व और घृताची की पुत्री।

वायु० ७०।६६

रत्नकूती

रौद्राश्व की दश पुत्रियों में से एक।

वायु० ६६।१२६

रथकृत

चक्रवर्ती राजाओं के सात प्राणवान रत्नों में से एक। देखिए, रत्नानि।

रथन्तर (कल्प)

इस कल्प में राजा पुष्पवाहन थे।

मत्स्य० १०१।१ [कलकत्ता, पु० प्र०]

रथराजी

वसुदेव की पत्नियों में से एक।

मत्स्य ४६।१२ [कलकत्ता पु० १०

रथवर

यदुवंश। क्रोष्टु-प्रवर्तित शाखा। भीमरथ का पुत्र। नवरथ का पिता। विष्णु० के अनुसार भीमरथ का पुत्र नवरथ है।

ब्रह्माण्ड० ३।७०।४२
वायु० ९५।४१
विष्णु० ४।१२।३९ [कम० हस्त० लि० ला०]

रथाकार

पुष्करद्वीप के अन्तर्गत सूर्य वर्ष (देश) का नाम।

ब्रह्माण्ड० २।१९।११
वही २।१९।१४

रथी — एक उपाधि, जो युद्ध में वीरता प्रदर्शन करने वाले योधा को प्राप्त होती थी। ब्रह्माण्ड० के अनुसार ययाति तथा कार्तवीर्यार्जुन रथी थे।

ब्रह्माण्ड० ३।६६।२१
वही ३।६८।२०

रथीतर (१) — सोमवंशज एक राजर्षि।

वायु० ६१।११७

रथीतर (२) — एक वानर-प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३४

रन्ध्रक (रन्ध्रकान्) — पश्चिम में स्थित एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।४८

रन्ति — देखिए, रन्तिनार।

वायु० ६६।१२८,१२६

रन्तिदेव — पुरुवंश। महायशस् का पुत्र।

मत्स्य० ४६।१७

रन्तिमार — पुरुवंश। ऋतेयु का पुत्र। सुमति, ध्रुव तथा अप्रतिरथ का पिता।

भाग० ६।२०।६ [बम्ब० ए० नि०]

रन्तिनार (रन्ति) — रिचेयु का पुत्र। उसकी स्त्री सरस्वती थी, जिससे त्रसु वध नामक पुत्र हुए।

वायु० ९९।१२९

रभस — क्षत्रवृद्ध कुल में रभ का पुत्र। गम्भीर का पिता।

भाग० ९।१७।१० [बम्ब० म० नि०]

रमणक — जम्बूद्वीप के अन्तर्गत आठ उपद्वीपों में से एक।

भाग० ५।१९।३०

रम्भ (१) — मनुवंश में विविंशति का पुत्र तथा खनिनेत्र का पिता।

भाग० ९।२।२५

रम्भ (२) — आयु का पुत्र। देखिए, रभस।

भाग० ९।१७।१

रम्यक [रम्य] — आग्नीध्र का पुत्र। वायु० के अनुसार वह नीलवर्ष का अधिपति हुआ। भाग० में उसकी स्त्री का नाम रम्या है। ब्रह्माण्ड० में नाम रम्य है। देखिए, आग्नीध्र।

भाग० ५।२।१
ब्रह्माण्ड० २।१४।९
वायु० ३३।१९ [illegible]
भाग० ५।२।२३

रय पुरुरवा और उर्वशी के छः पुत्रों में से एक।

भाग० ९।१५।१

रवि स्वारोचिष मनु के पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० २।३६।१६
वायु० ६२।१६

रहूगण सिन्धु-सौवीर का एक राजा।

भाग० ५।१०।१

राक्षसजित् ऋक्षराज और जाम्बवन्त के पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० ३।७।३०२-३०३

राघव दाशरथि। राम, जिन्होंने सुन्द और ताड़का के पुत्र मारीच को दण्डकारण्य में मारा। देखिए राम (२)।

ब्रह्माण्ड० ३।८।३६

राजक (अजक) विशाखयूप का पुत्र। मगध के राजा नन्दिवर्धन का पिता।

भाग० १२।१।३ [वम्ब० स० नि०]
वायु० ९९।३१३

राजकृत्य अभिषिक्त राजा का कर्तव्य। राजा के लिए बिना सहायकों के राजकुमार का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना अत्यन्त कठिन है, इसलिए उसे चाहिए कि वह कुलीन तेजस्वी, धर्मज्ञ निरालस्य तथा सहिष्णु व्यक्तियों का अपना

राजा को यथावसर मृदु एवं कठोर होना चाहिए। राजा को व्यसनी तथा दीर्घसूत्री नहीं होना चाहिए[४]। राजा को साम, भेद आदि चार उपायों का यथावसर प्रयोग करना चाहिए[५]।

१—मत्स्य० २२५ अ०
२—अग्नि० २२३ अ०
३—मत्स्य० २१०।७ ६
४—मत्स्य० २१६ अ०
५—मत्स्य० २२१–२०६ अ०

राजनीति राजनीति एक व्यापक शब्द है, जिसका पर्यायवाची शब्द "राजशास्त्र" कहा जा सकता है। प्रस्तुत प्रकरण में छ प्रकार की राजनीति कही गयी है, जिसकी राम (बलराम) तथा कृष्ण ने शिक्षा पायी—"राजनीतिं च षड्विधाम्" संभवतः यहाँ छ प्रकार की राजनीति से आशय उन छः गुणों से है, जो कौटिल्य के अर्थशास्त्र में विहित हैं—सन्धि-विग्रहासनयानसंश्रय-द्वैधीभावा- षाड्गुण्यम्" अर्थात् सन्धि (शत्रु को द्रव्य आदि देकर उससे मेल करना,) विग्रह (शत्रु का अपकार करते हुए उससे झगड़ा मोल लेना) आसन (शत्रु के साथ उपेक्षामात्र रखते हुए अपनी रक्षा करना) यान ,शत्रु के राज्य पर आक्रमण), संश्रय (दूसरे बलवान् राजा के समक्ष आत्मसम र्पण) तथा द्वैधीभाव, (सन्धि करने योग्य अर्थात् बली राजा के साथ सन्धि करना तथा निर्बल के साथ विग्रह करना[२]।

१—भाग० १०।४५।३४
२—कौटिल्य अर्थशास्त्र ७।१
अमरकोष द्वि० काण्ड क्षत्रि० १८

राजपत्नी रानी।

मत्स्य० २२६।१६७ [बलरक्षा, गु० प्र०]

राजपुत्र (१) बुध का नाम, जो राजा सोम के पुत्र होने के कारण राजपुत्र कहलाया।

मत्स्य० २४।३

राजरक्षारहस्य

राजा की रक्षा के विभिन्न उपाय, जिनके अन्तर्गत राजा के स्वास्थ्य रक्षा के लिए विविध औषधियों का प्रयोग, राजसद्म की अग्नि से रक्षा, अन्न को पहले पक्षियों को खिलाकर अथवा अग्नि में उसे डालकर अन्न की परीक्षा, आदि हैं। इन विविध उपायों से प्रयत्नपूर्वक राजा की रक्षा करनी चाहिए। क्योंकि राजा प्रजारूपी वृक्ष की जड़ के समान है—प्रजातरोर्मूलमिहावनीशः'''

मत्स्य० २१६ अ० [कलकत्ता, गु० प्र०]

राजर्षि

एक पदवी, जिसे प्राचीन काल में श्रेष्ठ राजा अपने तप अथवा ऋषिरूप में जीवन यापन करने के कारण प्राप्त करते थे। मानव, ऐल तथा ऐक्ष्वाकु आदि वंश के राजाओं को राजर्षि कहा गया है—"मानवे चैव ये वंशे ऐलवंशे च ये नृपाः। ये च ऐक्ष्वाकुनामागा ज्ञेया राजर्षयस्तुते"। पुरूरवा, ययाति, कार्तवीर्य अर्जुन, श्यामक आदि राजाओं ने राजर्षि पदवी प्राप्त की थी। सोमवंशज रथीतर, रुन्द विष्णुवृद्ध आदि राजा भी राजर्षि कहे गये हैं[1]। ब्रह्माण्ड० में लोहगंधी नामक एक राजर्षि का उल्लेख है[2]। अन्य राजर्षियों के लिए देखिए निम्नांकित पुराण[3]।

१—मत्स्य० १२।६२
वही ४२।२३
वही ४६।२८
वायु० ६१।११७
वही ६६।१६०
२—ब्रह्माण्ड० ३।६८।२३
३—वायु० ३२।२८ तथा ५४
वही ६१।८० तथा ८६-८८
वही ६६।१५ तथा १२७
वही ६१।१५-१६, तथा १८

राजराट्

राजाओं का राजा। ब्रह्मा के द्वारा अभिषिक्त सोम के लिए दी गयी पदवी।

ब्रह्माण्ड० ३।६५।२०
वायु० ६०।२०

राजवर्धन — दम का पुत्र तथा सुवृद्धि का पिता।

विष्णु० ४।१।३६-३७ [ब्रह्म० मत्स्य० गी० ना०]

राजवल्लभ — राजा के विशेष कृपापात्र अथवा राजा के चाटुकार। राजा के लिए कहा गया है कि वह राजवल्लभों और कायस्थों के अत्याचार से प्रजा की रक्षा करे।

अग्नि २०३।११

राजवान् — भृगुवंश। द्युतिमान् का पुत्र।

विष्णु० १।१०

राजवेश्म (राजवेश्मन्) — राजप्रासाद अथवा राजभवन।

ब्रह्माण्ड० ३।४१।१६४

राजशासनम् — राजा का आज्ञापत्र। राजशासन में (राजा की आज्ञा से) कम अथवा अधिक लिखने वाला "उत्तमदण्ड" का भागी समझा जाता था। प्राचीन काल में राजशासन, ताम्र, शिला आदि में उत्कीर्ण होते थे।

मत्स्य० २२७।११६ [कलकत्ता, गु० प्र०]

राजस — वेणुमान् का दूसरा नाम।

ब्रह्माण्ड० २।१६।६०

मत्स्य० १२२।६४ [कलकत्ता, गु० प्र०]

राजसत्तम — राजाओं में श्रेष्ठ। राजा शब्द के लिए प्रयुक्त विशेषणपद।

ब्रह्माण्ड० ३।५०।३१
वही ३।५१।५८

राजसिंह

विदर्भ का एक राजा, जिसकी पुत्री (वैदर्भी) का पाणिग्रहण मलयध्वज के साथ हुआ।

भाग० ४।२८।२८-२९ [बम्ब० संस्क० नि०]

राजसूय

एक यज्ञ, जिसे करने का अधिकार दिग्विजयी राजाओं को ही था। सोम ने तीनों लोकों को जीतकर इस यज्ञ को किया था[१]। युधिष्ठिर ने भी राजसूय यज्ञ किया था। देखिए, युधिष्ठिर।

भाग० ९।१४।४ [बम्ब० संस्क० नि०]
वायु० ९०।२२

राजा (राजन्)

स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत तथा उत्तानपाद सर्वप्रथम पृथ्वी के स्वामी हुए, तब से लेकर लोक में दण्डधारी राजा होने लगे। प्रजा के पालन करने से ही वस्तुतः वे राजा हुए "प्रजाना रञ्जनाच्चैव राजानस्तेऽभवन्नृपाः"। कलियुग में राजा शूद्रभूयिष्ठ, तथा पाखण्डप्रवर्तक होंगे, और प्रजा भी गुणहीन हो जायगी।

वायु० ५७।५७-५८
ब्रह्माण्ड० २।२९।६३
ब्रह्माण्ड० २।३१।८१

राजाज

शम्भु के दो पुत्रों में से एक। उनके (राजाज) के भाई का नाम गोम था—"राजाजश्चैव गोमश्च शम्भोः पुत्रौ प्रकीर्तितौ"।

ब्रह्माण्ड० ३।१।४९

राजाधिदेव
(राज्याधिदेव)

यदुवंश। कुकुर-शाखा। विदूरथ का पुत्र। शोणाश्व (शोणित, ब्रह्माण्ड० तथा वायु०) तथा श्वेतवाहन का पिता। ब्रह्माण्ड० तथा वायु० के अनुसार "राजाधिदेव" व्यक्तिवाचक न होकर शूर की पदवी (विशेषण) ही प्रतीत होती है। यहाँ पर शूर के पुत्र कई एक हैं, जिनमें उपर्युक्त दो शोणित (शोणाश्व) तथा श्वेतवाहन भी हैं। 'राज्याधिदेवः शूरस्तु विदूरथसुतोऽभवत्। तस्य शूरस्य तु सुता जज्ञिरे बलवत्तराः," मत्स्य० में तो स्पष्ट से राजाधिदेव व्यक्तिवाचक नाम है। 'राजाधिदेवस्य सुतौ"। भाग० तथा विष्णु० मे विदूरथ का पुत्र शूर है और राजाधिदेव (राज्याधिदेव) का नाम नहीं है। इसके अतिरिक्त यहाँ शूर के पुत्र का नाम भजमान है। विष्णु० में शूर के पुत्र का नाम शमी है।

भाग० ९।२४।२९
विष्णु० ४।१४।१
वायु० ९६।१३४

राजाधिदेवी

शूर की पुत्री तथा वसुदेव की पाँच बहिनों में से एक। भाग० के अनुसार [illegible] की पत्नी। ब्रह्माण्ड०, मत्स्य० तथा वायु० में राजाधिदेवी अन्य चारों बहिनों के बाद और माता कही गई है। विष्णु० के अनुसार इसके दो पुत्र थे, जिनका नाम विन्द तथा अनुविन्द था।

भाग० ९।२४।३१ तथा ३६
विष्णु० ४।१४।१०-१७
वायु० ९६।१४६

राजीवकोकिल (राजीवकोकिलाः) केतुमाल वर्ष में स्थित एक जनपद।

वायु० ४४।१४

राजेयम्

राजा रजि के पुत्रों का सामुदायिक नाम। राजा रजि इन्द्र को राज्य देकर स्वर्ग के लिए उद्यत हो गये। किन्तु रजि के पुत्रों ने इन्द्र के पद का

नष्ट कर डाला। तब राज्य से च्युत इन्द्र ने बृहस्पति की शरण ली। बृहस्पति ने रजि के पुत्रों के पास जाकर, उन्हें जिनधर्म ग्रहण करने के लिए मोहित किया। तदनतर जब वे (वैदिक) कर्म से बहिष्कृत हो गये तब उन्हें इन्द्र वज्र से मारने में समर्थ हुए।

मत्स्य० २४।३ –४६ [कलकत्ता, गु० प्र०]

राज्ञी

रैवत की पुत्री। विवस्वान् की पत्नियों में से एक। रैवत की माता।

मत्स्य० ११।२ ३

राज्य

किसी भूभाग पर प्रभुता के साथ शासन। राज्य को सात अंगों में विभक्त किया गया है। स्वामी अर्थात् राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, दण्ड, कोश तथा मित्र स्वाम्यमात्यो जनपदो दुर्गं दण्डस्तथैव च। कोशोमित्रं च धर्मंज्ञ सप्तांग राज्यमुच्यते।" इनमें मन्त्रिमण्डल तो राज्य का प्रमुख अंग माना गया है—"मन्त्रमूल सदा राज्यम्"। प्राचीन काल में राजा की अनुपस्थिति में राज्य का भार मन्त्री (अथवा मन्त्रियों) पर होता था। राजा सगर अपने राज्य को मन्त्री के हाथ में सौंप कर मुनि और्व के आश्रम में गये। "स मन्त्रिप्रवरे राज्य प्रतिष्ठा"। राज्य के दो मुख्य विभाग थे—आभ्यन्तर (गृह) तथा बाह्य (परराष्ट्र) (कुशल ननुते राज्ये आभ्यन्तरेषु च।"

मत्स्य० २१६।१६ [कलकत्ता, गु० प्र०]

ब्रह्माण्ड० ३।५०।३२ तथा ५१

राज्यवर्धन [राष्ट्रवर्धन, राज्यवर्धनक]

मानव वंश। दम का पुत्र तथा सुधृति का पिता। ब्रह्माण्ड० में पाठ राज्यवर्धनक तथा राष्ट्रवर्धन है।

भाग० ६।२।२६

ब्रह्माण्ड० ३।८।३५

वही ३।६१।७

राधाकान्त कृष्ण का नाम।

महाभा० ३।३६।८

राधिक [अराचीन] जयसेन का पुत्र तथा अयुत का पिता। विष्णु० में पाठ अराचीन है।

भाग० ९।२२।१०

विष्णु० ४।२०।३

राम (१)[परशुराम] जमदग्नि और रेणुका के कनिष्ठ पुत्र। एकबार राजा सहस्रबाहु अर्जुन जमदग्नि ऋषि के आश्रम पर आकर उनकी कामधेनु बलात् छीन ले गये। परशुराम ने यह जानकर सहस्रबाहु अर्जुन को मार डाला और कामधेनु वापस ले आये। सहस्रबाहु अर्जुन के पुत्रों ने परशुराम की अनुपस्थिति में जमदग्नि ऋषि का सिर काट लिया। इसपर परशुराम ने सहस्रबाहु के समस्त पुत्रों का वध कर डाला। इसके उपरान्त उन्होंने अपनी प्रतिज्ञानुसार भूमण्डल के क्षत्रिय राजाओं का २१ बार संहार किया। कहते हैं एक बार उन्होंने अपने पिता की आज्ञानुसार अपनी माता तथा भाइयों को भी समाप्त कर दिया था, किन्तु वे पिता के आशीर्वाद से पुनः जीवित हो गये[1]। "कार्तवीर्य अर्जुन का जामदग्न्य के हाथों मृत्यु होना पार्जिटर के अनुसार ऐतिहासिक घटना है, किन्तु २१ बार पृथ्वी में क्षत्रियों के संहार का उल्लेख उनकी दृष्टि में एक अतिरंजित किंवदन्ती मात्र है[2]।

१—भाग० ९।१५।१२-१३

वही ९।१५।१४-१५

वही ९।१६।१-८

वही ९।१६।९-२७

ब्रह्माण्ड० ३।४६ अ०

२—ऐंशि०, इं० हि० ट्रैडि० पृ० ११७

राम (२) [दाशरथि, राघव] इक्ष्वाकु वंश। रघुकुल में दशरथ तथा कौशल्या (कौसल्या) के पुत्र। इक्ष्वाकु वंश के अन्तर्गत रघु के कुल में अथवा वंश में उत्पन्न होने के

कारण उन्हें राघव तथा दशरथ के पुत्र होने के कारण उन्हें दाशरथि भी कहा जाता है। राम के तीन भाई थे—भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न, जो दशरथ की अन्य दो रानियों कैकेयी तथा सुमित्रा से उत्पन्न हुए थे। राम ने विश्वामित्र के यज्ञ में मारीच आदि राक्षसों को मारा। जनकपुर में सीता के स्वयम्वर में उन्होंने शिव के धनुष को अनायास ही तोड़ कर अपने महान् पराक्रम का परिचय दिया जिससे सीता ने उन्हें अपने पति के रूप में वरण किया। पिता की आज्ञानुसार उन्होंने वनवास स्वीकार किया। वन में उन्होंने खर, दूषण आदि चौदह सहस्र राक्षसों को मारा। वन में रावण द्वारा सीता जी के अपहरणों के उपरान्त उन्होंने कबन्ध को मारा, सुग्रीव आदि वानरों से मित्रता की तथा वालि को मारा। तदनन्तर राम ने लंका में प्रवेश कर रावण को मारा तथा विभिषण को वहाँ का राजा बनाया। चौदह वर्ष के वनवास के उपरान्त राम सीता के सहित विमान द्वारा अपना नगरी अयोध्या लौटे। तदनन्तर राम का राज्याभिषेक हुआ। राजसिंहासन स्वीकार करने के उपरान्त अपने भाइयों को राम ने दिग्विजय करने की आज्ञा दी। राम ने विधिपूर्वक राज्य करते हुए, प्रजा का यथाविधि *पालन किया। उनका राज्य यद्यपि त्रेतायुग में था, किन्तु वह युग सत्युग* ही जान पड़ता था। उनके राज्य में कोई प्राणी आधि (मानसिक दुःख) व्याधि (शारीरिक दुःख) से पीड़ित नहीं था। लोकापवाद से भयभीत होकर अन्त में राम ने सीता का परित्याग किया। राम के दो पुत्र कुश तथा लव हुए, जिन्होंने क्रमश: कोशल तथा उत्तर कोशल में राज्य किया। राम ने दस सहस्र वर्ष तक राज्य किया—

"दशवर्ष सहस्राणि रामो राज्यमकारयत्"

भाग० ९।१२।१६
ब्रह्माण्ड० ३।६७।१०—३३
विष्णु० ४।८।४०—४२ [ब्रह्म० स१६० गा० ना०]
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१८४—१८५
वही ३।७।१२५ २६
भाग० ६।१०।६—८
ब्रह्माण्ड० ३।७३ ३०—३२
विष्णु० ४।४।८८—९८

"निसर्गाद्दारुणः क्रूरो रावणाद्रावणस्तु सः" ।

सीता के रूप पर मुग्ध होकर उसने उनका अपहरण किया । अन्त में उसका नाश राम (दाशरथि) द्वारा हुआ ।

भाग० १।८।४३
वही ४।१।३७
वायु० ७०।३३-३४
वही ७०।४२-४४ तथा ४८
ब्रह्माण्ड० ३।८।३८-४१, ३७-५०, ५४
भाग० ९।१०।२३
वायु० ९।१०।१०—११

राष्ट्र (१) क्षत्रवृद्ध-कुल में काशि का पुत्र तथा दीर्घतमा का पिता ।

भाग० ९।१७।४

राष्ट्र (२) विषय (देश) अथवा राज्य ।

वायु० ८८।६८

राष्ट्रपाल उग्रसेन के नव पुत्रों में से एक । कंस का भाई ।

भाग० ९।२४।२४
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१३३
मत्स्य० ४४।७५
वायु० ९६।१३२

राष्ट्रपालिका [राष्ट्रपाली] उग्रसेन की पाँच पुत्रियों में से एक । ब्रह्माण्ड० में पाठ राष्ट्रपाली है ।

भाग० ९।२४।२५ तथा ४२
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१३४

राष्ट्रपीडाकर प्रजापालन न करते हुए अपने राज्य को दुःख पहुँचानेवाला राजा।

अग्नि० २२३।७

राष्ट्रभृत् भरत तथा पञ्चजनी का पुत्र। ऋषभ देव का पौत्र। देखिए, भरत (१)

रासारम्भप्रिय कृष्ण के लिए प्रयुक्त विशेषणपद।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।२१

राहुल [रातुल] शाक्य कुल में शुद्धोदन का पुत्र तथा प्रसेनजित् का पिता। विष्णु० में पद रातुल है।

वायु० ९९।२८६
विष्णु० ४।२२।३ [बम्ब० सं० लि० ना०]

रिक्तवर्ण आन्ध्रवंश। स्वातिवर्ण के पश्चात् आने वाला राजा जिसने २५ वर्षों तक राज्य किया।

मत्स्य० २७३।६ [कलकत्ता, गु० प्र०]

रिख अजमीढ के कुल में पुरुजानु का पुत्र।

वायु० ९९।१९५

रिपु (१) यदु के पुत्रों में से एक।

ब्रह्म० ६।११।१०

रिपु (२) स्वायंभुव मनुवंश । दिवञ्जय तथा वराङ्गी का पुत्र । उसकी पत्नी का नाम बृहती था, जिससे चक्षुष उत्पन्न हुआ[1] । विष्णु० के अनुसार शिलष्ट (शिष्ट, मत्स्य०) का सुच्छाया से उत्पन्न पुत्र । तथा चाक्षुष का पिता[2] ।

१—ब्रह्माण्ड० २।३६।१०१
वायु० ६२।८७
२—विष्णु० १।१३।१-२

रिपु (३) द्रुह्य (पौरव) वंश । बभ्रु का पुत्र । द्रुह्यु का पौत्र । वह यौवनाश्व द्वारा उस युद्ध में मारा गया, जो चौदह मास तक चला था ।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।७-८
वायु० ९९।८

रिपुञ्जय (१) मानव वंश । शिलष्ट तथा सुच्छाया के पाँच पुत्रों में से एक ।

विष्णु० १।१३।१-२

रिपुञ्जय (२) सुवीर का पुत्र । बहुरथ का पिता ।

भाग० ९।२१।२९—३०

रिपुञ्जय (३) मगध के राजा बार्हद्रथ वंश में विश्वजित् का पुत्र । वह बार्हद्रथ वंश का अन्तिम राजा था[1] । मत्स्य० के अनुसार राजा अचल के पश्चात् ५० वर्ष तक उसने राज्य किया[2] । देखिए, बार्हद्रथ ।

१—भाग० ९।२२।४७
विष्णु० ४।२३।१३
२—मत्स्य० २७१।२९ [कलकत्ता, पु० प्र०]

रिचेयु (रिचेयु) अनाधृष्टि रौद्राश्व का पुत्र। रिचेयु की स्त्री तक्षक की पुत्री थी, जिससे उसका पुत्र मतिनार (रन्ति) हुआ।

वायु० ९९।१२५—१२८

रिप्यन्त मानस का पुत्र। दम का पिता।

वायु० ७०।१०

रुक्म रुचक के पाँच पुत्रों में से एक। रुक्मेषु का भाई।

भाग० ९।२३।३४-३५

रुक्मकवच यादव वंश। कम्बलबर्हिष् (विनेयु, विष्णु०) का पुत्र। यह एक अत्यन्त पराक्रमी और विद्वान् राजा माना गया है। उसने युद्ध में तीक्ष्ण बाणों द्वारा अनेक योद्धाओं को मार कर उत्तम श्री प्राप्त की—"निहत्य रुक्मकवचः पुरा कर्मान्तो रणे। धन्विनो निशितैर्बाणैरवाप श्रियमुत्तमाम्"। ब्रह्माण्ड०, मत्स्य० तथा वायु० के अनुसार रुक्मकवच के पाँच पुत्र हुए, जिनके नाम रुक्मेषु, पृथुरुक्म, ज्यामघ, परिघ तथा हरि थे। किन्तु विष्णु० तथा हरिवंश में रुक्मेषु और ज्यामघ, रुक्मकवच के पुत्र न होकर ये उसके पौत्र हैं अर्थात् ये परावृत् (परावित्, हरिवंश) के पुत्र माने गये हैं। इसके विपरीत भाग० में रुक्मेषु तथा ज्यामघ इसी वंश में कई पीढ़ी पहले अर्थात् उशना के पुत्र रुचक के पाँच पुत्रों के अन्तर्गत आते हैं।

ब्रह्माण्ड० ३।७०।३१—३८
वायु० ९५।३१—३६
मत्स्य० ४४।३१—३६
ब्रह्म० १।१५।११-१२
भाग० ९।२३।३४—३५

रुक्मकेश विदर्भ देश के राजा भीष्मक के पाँच पुत्रों में से एक। उसके अन्य रुक्मी, रुक्मरथ, रुक्मबाहु, रुक्ममाली नामक चार भाई तथा रुक्मिणी नाम की एक बहिन थी, जो कृष्ण से व्याही गयी।

भाग० १०।५२।२१—२२

रुक्ममाली (रुक्ममालिन्) विदर्भराज भीष्मक के पाँच पुत्रों में से एक। देखिए, रुक्मकेश।

भाग० १०।५२।२१—२२

रुक्मरथ (१) विदर्भराज भीष्मकके पाँच पुत्रों में से एक। देखिए, भीष्मक।

रुक्मरथ (२) चन्द्र (पौरव) वंश। डिमीढ-शाखा। महापौरव का पुत्र। पृथ्वी के एक महान् राजा (एकराट्) सार्वभौम का पौत्र। रुक्मरथ भी राजा कहा गया है। वह सुपार्श्व का पिता था।

मत्स्य० ४६।७२—७३
विष्णु० ६६।१८७

रुक्मवती रुक्मी की पुत्री। स्वयम्वर में उसने कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का वरण किया। अनिरुद्ध की माता।

भाग० १०।६१।१८

रुक्मिणी विदर्भराज भीष्मक की पुत्री। देखिए, भीष्मक, तथा रुक्मकेश।

भाग० १०।५२।२१—२२ १२-१४ [कम० सं० नि०]

रुक्मी — विदर्भराज भीष्मक के पुत्रों में से एक। देखिए, रुक्मकेश

भाग० १०।५२।२१—२२ [बम्ब० गुज० नि०]

रुक्मेषु — देखिए, रुक्मकवच।

रुचक — यदुवंश। उशना का पुत्र। उसके पाँच पुत्र हुए—पुरुजित्, रुक्म, रुक्मेषु, पृथु तथा ज्यामघ।

भाग० ९।२३।३४-३५ [बम्ब० संस्क० नि०]

रुचिर — कुरुवंश। भद्रसेन का पुत्र तथा भौम का पिता।

मत्स्य० ५०।२१ [कलकत्ता, गु० प्र०]

रुचिराश्व (१) — सेनजित् के पुत्रों में से एक।

वायु० ९९।१७१

रुद्र (रुद्राः) — एक जाति, जिसका नाम किरात, लम्पक आदि के साथ आता है।

वायु० ४५।१०८

रुद्रा — रुद्राश्व की दस पुत्रियों में से एक।

वायु० ९९।१२९

रुद्रश्रेण्य — यदुवंश। महिष्मत् का पुत्र। दुर्दम का पिता। रुद्रश्रेण्य वाराणसी का राजा था।

मत्स्य० ४३।१०-११ [कलकत्ता, गु० प्र०]

रुन्द — चन्द्रवंश । एक राजर्षि ।

वायु० ६१।११७

रुरु (१) — चाक्षुष मनु के दस पुत्रों में से एक ।

मत्स्य० ६।२५ [कलकत्ता, गु० प्र०]

रुरु (२) — ऐक्ष्वाकु वंश । अहीनगु का पुत्र । पारियात्र का पिता ।

विष्णु० ४।४।४७ [बम्ब० स० गो० ना०]

रुरुक — ऐक्ष्वाकु वंश । विजय का पुत्र । धृतक का पिता । विष्णु० के अनुसार वृक का पिता । यह एक धर्मात्मा राजा था ।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।११६
वायु० ८८।१२१
विष्णु० ४।३।२५ [बम्ब० मत्क० गो० ना०]

रुमा — पनस की पुत्री । सुग्रीव की पत्नी । तीन पुत्रों की माता ।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२२१

रुषद्गु (रुशेकु) — यादव वंश स्वाहि (श्वाहि, भाग०) का पुत्र । चित्ररथ का पिता । भाग० तथा ब्रह्माण्ड० में पाठ रुशेकु है ।

विष्णु० ४।१२।१
ब्रह्माण्ड० ३।७०।१६—१७
भाग० ६।२३।११

रुषाभानु — हिरण्याक्ष की पत्नी।

भाग० ७।२।१८ [इस० संस्क० नि०]

रूपक (रूपकाः) — दक्षिणापथ के एक जनपद का नाम।

महाभा० २।३१।१०

रूपस (रूपसाः) — दक्षिणापथ का एक जनपद।

मत्स्य० ११४।४६ (कलकत्ता, गु० प्र०)
वायु० ४५।१२६

रूपधी — एक वानर प्रमुख।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३२

रेणुक — ऐक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न एक राजा, जिसकी कन्या कमली (रेणुका) थी। रेणुका जमदग्नि की पत्नी तथा परशुराम की माता थी।

ब्रह्माण्ड० ३।६६।१०—११

रेणुका — देखिए, रेणुक।

रेव [रेवत, रैवत] — वैवस्वत मनुवंश। आनर्त का पुत्र। भाग० के अनुसार [illegible] का पुत्र। वह अत्यन्त पराक्रमी राजा था, जिसकी राजधानी कुशस्थली थी। भाग० के अनुसार रेवत ने समुद्र के अन्दर कुशस्थली नामक नगरी का निर्माण किया और वहीं से उसने आनर्त आदि विषयों (देशों) का शासन किया— "सोऽन्तः समुद्रे नगरीं विनिर्माय कुशस्थलीम्। आस्थितो भुङ्क्ते विषयान् आनर्तादीनरिन्दम।" उसके सौ पुत्र थे, जिनमें ज्येष्ठ ककुद्मी था। भाग० में नाम रेवत तथा मत्स्य० के अनुसार रेवत है।

भाग० ६।३।२७—२६
मत्स्य० १२।२३
वायु० ८६।२४—२५
ब्रह्माण्ड० ३।६१।१७

रेवत (१) देखिए, रेव ।

रेवत (२) यादव वंश । अन्धक शाखा । कपोतरोमन् का पुत्र । तुम्बंबसखा का पिता ।
वायु० ६६।११६

रेवती रेवत की पौत्री । मत्स्य० के अनुसार रोचमान की पौत्री ककुद्मिन् (रैवत) की पुत्री । बलराम के साथ उसका विवाह हुआ ।
भाग० ६।३।२७-२६, ३६
मत्स्य० १२।२४ [कलकत्ता, गु० प्र०]

रैम्य (१) पौरव वंश । सुमति का पुत्र । दुष्यन्त का पिता ।
भाग० ६।२०।७ [बम्ब० सस्त० नि०]

रैवत (१) प्रियव्रत के पुत्रों में से एक ।
भाग० ५।१।२८

रैवत (२) देखिए, रैव ।

रोकल (रोकलाः) विन्ध्यपृष्ठ में स्थित एक जनपद ।
वायु० ४५।१३२—१३४

रोचन

स्वारोचिष मन्वन्तर के समय के इन्द्र का नाम।

भाग० ८।१।२०

रोचना (१)

वसुदेव की पत्नियों में से एक। उनके गर्भ से हस्त और हेमाङ्गद नामक पुत्र हुए।

भाग० ९।२४।४५ तथा ४६

रोचमान् (१)

आनर्त का पुत्र।

मत्स्य० १२।२२ (कल्याण, पृ० ५०)

रोचमान् (२)

उपदेवी और वसुदेव का पुत्र।

मत्स्य० ४६।१७ [कल्याण, पृ० ५०]

रोचिष्मान् (रोचिष्मत्)

स्वारोचिष मनु के पुत्रों में से एक।

भाग० ८।१।१९

रोमपाद (१) [लोमपाद]

अङ्ग (पौरव) वंश। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित अनव शाखा। भाग० के अनुसार धर्मरथ के पुत्र चित्ररथ थे, जो रोमपाद के नाम से विख्यात हुए। उनके दशरथ मित्र थे। रोमपाद के कोई सन्तान नहीं थी, इसलिए दशरथ ने अपनी कन्या शान्ता को उन्हें गोदरूप में दी—"सुतो धर्मरथो यस्य जज्ञे चित्ररथोऽप्रजाः। रोमपाद इति ख्यातस्तस्मै दशरथः सखा॥ शान्तां स्वकन्यां प्रायच्छत्"... ...मत्स्य० में चित्ररथ के पुत्र सत्यरथ और उनके पुत्र दशरथ हैं। मत्स्य० के अनुसार दशरथ लोमपाद के नाम से विख्यात हुए और इन्हीं दशरथ (लोमपाद) की शान्ता नामक कन्या थी—

"अथ धर्मरथस्याभूत् पुत्रश्चित्ररथ किल । तस्य सत्यरथः पुत्रस्तस्माद्दशरथ किल ॥ लोमपाद इति ख्यातस्तस्य शान्ता सुताभवत् ।" वायु० में भी पाठ लोमपाद है, किन्तु यहाँ पर चित्ररथ के पुत्र राजा दशरथ माने गये हैं, जो लोमपाद के नाम से विख्यात हुए । इन्हीं दशरथ (लोमपाद) की कन्या शान्ता थी—"सुनु धर्मरथस्यापि राजा चित्ररथोऽभवत् । अथ चित्ररथस्यापि राजा दशरथोऽभवत् । लोमपाद इतिख्यातो यस्य शान्ता सुताऽभवत् ।" इसप्रकार मत्स्य तथा वायु० दोनों में राजा दशरथ ही लोमपाद हैं, और उनकी पुत्री शान्ता है, जबकि भाग० में रोमपाद और दशरथ भिन्न भिन्न हैं तथा शांता नामक कन्या रोमपाद को गोदरूप में दशरथ द्वारा दी गयी है ।

भाग० ९।२३।७-८
वायु० ९९।१०३
मत्स्य० ४८।९४ तथा ९५ [कलकत्ता, गु० प्र०]

रोमपाद (२) [लोमपाद] विदर्भ का पुत्र । बभ्रु (बभ्रु, वायु० मनु, मत्स्य०) का पिता । वायु० मत्स्य० तथा ब्रह्माण्ड० में पाठ लोमपाद है । देखिए, बभ्रु (२) ।

भाग० ९।२४।१
ब्रह्माण्ड० ३।७०।२८
मत्स्य० ४४।३८, वायु० ९५।३७

रोहक (रोहकान्) एक प्रतीच्य जनपद, जो सिंधु नदी द्वारा सिञ्चित होता था ।

ब्रह्माण्ड० २।१८।४८
वायु० ४७।६

रोहिणी (१) वसुदेव की पत्नियों में से एक । रोहिणी के गर्भ से वसुदेव के बलराम आदि पुत्र हुए ।

वायु० ९६।१६१
भाग० ९।२४।४५–४६ [बम्ब० प्र० नि०]

रोहिणी (२) कृष्ण की रानियों में से एक।

भाग० १०।६१।१८ [बम्ब० म० नि०]
ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४२
वायु० ९६।२३३

रोहित (१) [रोहिताश्व] राजा हरिश्चन्द्र (त्रैशङ्कव) का पुत्र। हरित का पिता। विष्णु० में पाठ रोहिताश्व है। वायु० के अनुसार हरित का दूसरा नाम चञ्चुहारीत था। इसकी सविस्तर कथा ऐतरेयब्राह्मण के हरिश्चन्द्रोपाख्यान में दी गयी है।

भाग० ९।७।६
विष्णु० ४।३।१४ [बम्ब० हरि० गो० ना०]
वही ९।७।१
वायु० ८८।११८—११९

रोहित (२) शाल्मल द्वीप के राजा वपुष्मान् के सात पुत्रों में से एक, जो रोहित देश का पालक (राजा) हुआ।

ब्रह्माण्ड० २।१४।१२।१३
वायु० ३३।२८—३०

रोहित (३) कृष्ण का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४७
मत्स्य० ४७।१७
वायु० ९६।२३८

रोहिताश्व (१) रोहिणी के कुल में उत्पन्न।

वायु० ९९।११८

रोहिताश्व (२) देखिए, रोहित (१)

रौच्य वैवस्वत मन्वन्तर में प्रजापति रुचि का पुत्र ।

ब्रह्माण्ड० ४।१।५०

रौड एक वानर-प्रमुख ।

ब्रह्माण्ड० ३।७।२३३

रौद्राश्व पौरव वंश । अहयाति (हयाति, वायु०) का पुत्र । घृताची नामक अप्सरा से उसके दस पुत्र हुए । उसके ज्येष्ठ पुत्र ऋतेयु (रुचेयु, वायु०) का पुत्र रन्तिभार हुआ ।

भाग० ६।२०।३ तथा ६

वायु० ६६।१२३

रौध(रौधान्) एक जनपद, तथा जाति । इसका नाम खश, यवन आदि के साथ आया है ।

मत्स्य १२०।४३ [कलकत्ता गु० प्र०]

रौरस (रौरसान्) (१) एक प्रतीच्य जनपद ।

ब्रह्माण्ड० २।१८।४७

रौरस (२) पश्चिम में स्थित एक जनपद ।

ब्रह्माण्ड० २।१८।४७

रौहिणेय बलराम का नाम ।

विष्णु० ५।७।३३ [बम्ब० संस्क० गी० ना०]

लंका

जम्बूद्वीप के आठ उपद्वीपों में से एक[1]। रावण की राजधानी[2]।

१—भाग० ५।१६।३०
२—ब्रह्माण्ड० ३।६६।१४

लंकेश

लंका का अधिपति, अर्थात् रावण।

ब्रह्माण्ड० ३।६६।३१

लक्ष्मण

इक्ष्वाकु वंश। महाराज दशरथ के पुत्र। राम के अनुज। देवताओं की प्रार्थना से साक्षात् भगवान् हरि अपने अंशांश से चार रूपों में दशरथ के राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न नामक पुत्र हुए[1]। लक्ष्मण के दो पुत्र थे—अंगद तथा चित्रकेतु[2]।

१—भाग० ९।१०।२
वायु० ८८।१८८
२—भाग० ९।११।१२

लक्ष्मणा (१)

मद्र देश के राजा बृहत्सेन की पुत्री, जिसके स्वयंवर में मत्स्यवेध का आयोजन किया गया था[1]। उस स्वयंवर में चारों ओर से अस्त्र शस्त्र में दक्ष अत्यन्त पराक्रमी राजा उपस्थित हुए, किन्तु वे सब मत्स्यवेध में सफल न हुए[2]। अन्त में श्रीकृष्ण ने जल में मत्स्य की परछाईं देखकर अनायास ही मत्स्यवेध कर दिया और पश्चात् उन्होंने राजकन्या लक्ष्मणा के साथ पाणिग्रहण कर लिया[3]। जिस समय रथ में लक्ष्मणा को अपने साथ लेकर श्रीकृष्ण द्वारकापुरी चलने लगे, उस समय बहुत से राजाओं ने उनका पीछा किया, किन्तु उन सबों को कृष्ण ने पराजित कर दिया[4]।

१—भाग० १०।५८।५७
भाग० १०।८३।१३

२—भाग० १०।८३।१६—२०

३—वही १०।८३।२५—२६

४—वही १०।३३।३५

लक्ष्मणा (२) दुर्योधन की पुत्री, जो साम्ब को ब्याही गयी। देखिए, बलदेव।

भाग० १०।६८। १—१२ तथा ४३—५१

लङ्कु हेतृ का पुत्र। माल्यवान् तथा सुमाली का पिता।

वायु० ६६।१२८

लघु यदु के पांच पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० ३।६९।२

वायु० ९४।२

मत्स्य० ४३।७

लता मेरु की पुत्री तथा इलावृत् की पत्नी।

५—भाग० ५।२।१९ तथा २३

लड्वला वैराज प्रजापति की पुत्री, चाक्षुष मनु की पत्नी तथा दस पुत्रों की माता।

वायु० ६२।८९—९०

लमक (लमकाः) एक उदीच्य जनपद (प्रदेश)।

ब्रह्माण्ड० २।१६।५०

लम्पाक (लम्पाकाः) एक उदीच्य देश।

मत्स्य० ११४।४२
वही १४४।५८
वायु० ४५।११९
वही ५८।८३
वही ९८।१०८

लम्पाकार (लम्पाकारान्) एक जाति। इसका उल्लेख किरात आदि म्लेच्छ जातियों के साथ हुआ है।

महाभा० २।११।७४
वही ३।७३।१०९

लम्बोदर आन्ध्र वंश। शान्तकर्णि का पुत्र। भाग० के अनुसार यह शान्तिकर्ण के पुत्र पर्णमास का पुत्र है अर्थात् शान्तिकर्ण का पौत्र है। उसके पुत्र का नाम चिबिलक (आपीतक, मत्स्य०) था। मत्स्य० के अनुसार उसने १८ वर्षों तक राज्य किया।

भाग० १२।१।२४
मत्स्य० २७३।४

ललित्थ वसूपरिचर (वसु) तथा गिरिका के सात पुत्रों में से एक।

वायु० ९९।२२२

लव इक्ष्वाकु वंश। राम के दो पुत्रों में से एक। कुश के भ्राता[1]। उनका प्राचेतस मुनि (वाल्मीकि) के आश्रम में पालन पोषण हुआ। वह उत्तर-कोशल के राजा थे और उनकी राजधानी श्रावस्ती थी[2]।

१—भाग० ९।११।२१
२—ब्रह्माण्ड० ३।६३।१६८
वायु० ८८।२००

लवण (१) राक्षस मधु का पुत्र, जो शत्रुघ्न द्वारा मधुवन में मारा गया ।

भाग० ९।११।१४
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१८६
वायु० ८८।१८५

लवण (२) ज्योतिष्मान् का पुत्र, जिसके नाम के अनुसार "लवण" नामक वर्ष (देश) का नाम पड़ा ।

ब्रह्माण्ड० २।१४।२७–२९
वायु० ३३।२४

लवण (३) एक वर्ष (देश) का नाम । देखिए, लवण (२)

लाङ्गल ऐक्ष्वाकु वंश । शुद्धोद का पुत्र । प्रसेनजित् का पिता ।

भाग० ९।१२।१४

लाङ्गली बलराम का दूसरा नाम ।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।७३
वायु० ९६।७५–८४

लाम्याक (लाम्याकान्) चक्षु नदी द्वारा सिञ्चित एक जनपद ।

ब्रह्माण्ड० २।१८।४६

लावण्यवती — रथन्तर कल्प के पुष्पवाहन नामक राजा की रानी। (अयुत) दस हजार धनुर्धारी पुत्रों की माता।

मत्स्य० ९९।१-७

लेखक — राज्य के सभी अधिकरणों में लेखकों की नियुक्ति अनिवार्य थी। ये अपने विभाग सम्बन्धी सभी आवश्यक बातों का विवरण रखते थे। उनके लिए निर्देश है कि वे अनेक प्रकार की भाषा तथा लिपियों से परिचित और सब शास्त्रों में निपुण हों। जो भी विवरण वे लिखें स्पष्ट एवं सुन्दर लिपि में पर्याप्त अन्तर देकर लिखें।

मत्स्य० २१५।२५-२७

लोकपाल — दिशाओं तथा उपदिशाओं के अधिपति, जिनकी संख्या आठ है।

भाग० ८।११।२६

लोकपालत्वम् — लोकपाल का पद। भगवान् शंकर की आराधना से यम पितृलोक के लोकपाल हुए।

मत्स्य० ११।२७-२९ [कल्याण पु०म०]

लोकप्रकालन — भृगु का पुत्र।

वायु० ६६।२१

लोमपाद (१) — दशरथ का दूसरा नाम। देखिए, रोमपाद (१)

लोमपाद (२) — विदर्भ का पुत्र। बभ्रु का पिता। देखिए, रोमपाद (२)

लोहगन्धी　　एक राजर्षि।
　　ब्रह्माण्ड० ३।६८।२२-२३

लोहिनी　　बाण (बाणासुर) की स्त्री। वायु० में पाठ लौहित्य है, जो भ्रष्ट प्रतीत होता है।
　　ब्रह्माण्ड० ३।५।४५
　　वायु० ६७।८५

लौकिकाग्नि　　ब्रह्मा का पुत्र। उसका पुत्र ब्रह्मौदनाग्नि (ब्रह्मौदत्ताग्नि, ब्रह्माण्ड०) हुआ, जो भरत के नाम से विख्यात हुआ।
　　वायु० २९।७
　　ब्रह्माण्ड० २।१२।७

वंशक　　शिशुनाग वंश। अजातशत्रु के बाद वह राजा हुआ। राज्यावधि २४ वर्ष।
　　मत्स्य० २७२।६ [कलकत्ता, गु० प्र०]

वकुल (वकुलाः)　　केतुमाल का एक जनपद।
　　वायु० ४४।१५

वक्र (वक्राः)　　पिशाचों का एक गण।
　　ब्रह्माण्ड० ३।७।३८८
　　वायु० ६९।२६६

वक्रमुख (वक्रमुखाः)　　पिशाचों के सोलह गणों में से एक
　　ब्रह्माण्ड० ३।७।३८१
　　वही ३।७।३७६

वक्राक्ष

एक राक्षस। खरा का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७।१३५

वङ्ग (१)

राजा बलि की स्त्री के गर्भ से दीर्घतमस् द्वारा उत्पन्न बलि का क्षेत्रज पुत्र। उसी के नाम से वङ्ग जनपद का नाम पड़ा।

भाग० ९।२३।५
ब्रह्माण्ड० ३।७४।२७, ३१–३९ तथा ८७
वायु० ९९।८६
मत्स्य० ४८।२५
विष्णु० ४।१८।१ [बम्ब० संस्क० गी० ना०]

वङ्ग (२) (वङ्गाः)

एक प्राच्य जनपद। देखिए, वङ्ग (१)

ब्रह्माण्ड० २।१६।५९
वही २।१८।५१
वही ३।७४।३१
मत्स्य० ११४।४५ [कलकत्ता, गु० प्र०]
वायु० ४५।११२
वही ९९।४०१

वङ्गिरि

किलकिला नगरी के राजा भूतनन्द का उत्तराधिकारी। देखिए, भूतनन्द।

भाग० १२।१।३२

वज्र (१)

इन्द्र का एक आयुध[1], जो दधीचि मुनि की अस्थियों से विश्वकर्मा द्वारा बनाया गया था। इसी वज्र द्वारा इन्द्र ने पर्वतों के पंख काटे तथा वृत्रासुर का संहार किया[2]। किन्तु नमुचि असुर पर इस वज्र के प्रहार का कुछ भी प्रभाव न हुआ।[3]

१—विष्णु० ५।३०।६६-६७
ब्रह्माण्ड० ३।५।७२
२—भाग० ६।१० १३
३—वही ८.११।३२-३५

वज्र (२) अनिरुद्ध का पुत्र तथा प्रतिबाहु का पिता। युधिष्ठिर द्वारा वह मथुरा में शूरसेन प्रदेश का राजा बनाया गया।

भाग० १०।६०।३७—३८
वही० १.१५।३६
वही० ११।३१।२५

वज्रकर्ण मय के पुत्रों में से एक।

वायु० ६८।२६

वज्रदंष्ट्र एक असुर, जिसने देवासुर संग्राम में बलि की ओर से भाग लिया। उसने समुद्रमथन में भी भाग लिया था।

भाग० ८।१०.२०—२३
मत्स्य० २४८।६७—६८ [कलकत्ता, गु० प्र०]

वज्रनाभ (१) ऐक्ष्वाकु वंश। भाग० के अनुसार वह बलस्थल का पुत्र तथा खगण का पिता है। किन्तु ब्रह्माण्ड० में वह बल (बलस्थल) के पुत्र उलूक (औक, वायु०) का पुत्र माना गया है और वज्रनाभ के पुत्र का शंखण नाम दिया गया है। वायु० में भी वज्रनाभ शंखन (शंखण) का पिता है।

भाग० ६।१२।२—३
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२०५
वायु० ८८।२०५

वज्रनाभ (७) दनु के पुत्रों में से एक।

मत्स्य० ६।१९

वज्रमित्र शुङ्ग वंश। पीढ़ी क्रम संख्या ८। घोष (घोषवसु, विष्णु०) का पुत्र। भागवत का पिता। किन्तु मत्स्य० में वज्रमित्र घोष का पुत्र न होकर पुलिन्दक का पुत्र माना गया है, इस प्रकार यहाँ शुङ्ग वंश में वज्रमित्र एक पीढ़ी पीछे हट जाता है। वर्नाक ब्रह्माण्ड० आदि अन्य पुराणों में पुलिन्दक (पुलिन्द) और वज्रमित्र के मध्य में घोष का नाम आता है। राज्यावधि ७ वर्ष।

भाग० १२।१।१७-१८
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५४
मत्स्य० २७२।२८—२९ [कलकत्ता, गु० प्र०]
विष्णु० ४।२४।१० [बम्ब० वेङ्क० प्रे० सं०]

वज्रहन् एक राक्षस। उग्र का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७।१२

वज्राक्ष दनु के पुत्रों में से एक।

मत्स्य० ६।१६

वज्राङ्ग एक दैत्य। तारकासुर का पिता।

मत्स्य० १४७।५

वज्रिन् [वज्री] इन्द्र का दूसरा नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।५।५७
मत्स्य० २४।२७
वायु० ६७।१०५

वणिक्पथ वाणिज्य। सर्वप्रथम पृथु इसके प्रवर्तक हुए। देखिए, पृथु (४)।

विष्णु० १।१३।८४

वत्स (१) चन्द्रवंश। दिवोदास का पुत्र। उसका मुख्य नाम द्युमान् था। वह प्रतर्दन, शत्रुजित्, ऋतध्वज और कुवलयाश्व नामों से भी विख्यात हुआ। विष्णु० में द्युमान् का नाम नहीं है। यहाँ प्रतर्दन का ही दूसरा नाम वत्स है, किन्तु ब्रह्माण्ड० तथा वायु० में वत्स और प्रतर्दन एक न होकर वत्स प्रतर्दन का पुत्र है और दिवोदास के बाद द्युमान् का उल्लेख नहीं है। उसके पुत्र का नाम अलर्क था।

भाग० ६।१७।६
ब्रह्माण्ड० ३।६७।६७-६६
वायु० ६२।६४—६५
विष्णु० ४।८।६—८ [बम्ब० सरक० गो० ना०]

वत्स (२) पुरुवंश। सेनजित् के चार पुत्रों में से एक। अवन्तक, (अवर्तक मत्स्य०) का राजा।

भाग० ६।२१।२३
मत्स्य० ४६।५०—५१
वायु० ६६।१७३

वत्स (३) (वत्साः) मध्यदेश का एक जनपद।

वायु० ४५।११०

वत्सक (१) यदुवंश। शूर और मारिषा के दस पुत्रों में से एक। वसुदेव का भाई।

भाग० ९।२४।२७-२८

वत्सक (२) एक असुर, जो बलराम द्वारा मारा गया।

भाग० १०।४३।३०

वत्सक (३) सूर्यवंश। श्रावस्त का पुत्र। उसने गौड देश में श्रावस्ती का निर्माण किया।

मत्स्य० १२।३०

वत्सक (४) (वत्सकाः) एक जनपद।

वायु० ४५।१२

वत्सद्रोह [वत्सवृद्ध, वत्सव्यूह] ऐक्ष्वाकु वंश। उरुक्षय (उरुक्रिय, भाग०) का पुत्र। प्रतिव्योम का पिता[1]। भाग० में पाठ वत्सवृद्ध है। विष्णु० में वत्सद्रोह तथा वत्सवृद्ध के स्थान पर वत्सव्यूह पाठ प्रतीत होता है, क्योंकि वहाँ भी वत्सव्यूह का पुत्र प्रतिव्योम है, इसके विपरीत विष्णु० में वत्सव्यूह एक पीढ़ी आगे बढ़ जाता है। यहाँ पर उरुक्षेप (उरुक्षय, मत्स्य०) का वत्सव्यूह पुत्र न होकर पौत्र है। वायु० में वत्सव्यूह एक पीढ़ी आगे तो नहीं है, किन्तु वहाँ उसके पिता तथा पुत्र में दोनों के नाम में पाठभेद है। यहाँ वत्सव्यूह क्षय (उरुक्षय, मत्स्य०) का पुत्र तथा प्रतिव्यूह (प्रतिव्योम, मत्स्य०, भाग० तथा विष्णु०) का पिता है[2]।

१—मत्स्य० २७१।४ [कलकत्ता, ० पु० म०]
भाग० ९।१२।१०

२—विष्णु० ४।२२।४ [बम्ब० हस्त० ते० ना०]

३—वायु० ९९।२८१

वत्सप्रि [वत्सप्रीति] सूर्य (मानव) वंश। नाभागनेदिष्ठ शाखा। भलन्दन का पुत्र तथा प्रांशु का पिता[1]। वायु० के अनुसार भलन्दन का पुत्र वत्सप्रि न होकर प्रांशु है[2]। भाग० में पाठ वत्सप्रीति है।

१—विष्णु० ४।१।१६-१७
भाग० ६।२।२३-२४
२—वायु० ८६।३—४

वत्सर ध्रुव और भ्रमि के दो पुत्रों में से एक, जो राज्य का अधिकारी हुआ। देखिए, ध्रुव।

भाग० ४।१०।१
वही ४।१३।११—१३

वत्सपालक वसुदेव के भाइयों में से एक।

विष्णु० ४।१४।१०

वत्सवृद्ध देखिए, वत्सद्रोह।

वत्सव्यूह देखिए, वत्सद्रोह।

वत्सहनु पुरुवंश। सेनजित् का पुत्र।

विष्णु० ४।१६।११ [बम्ब० मरक० गो० ना०]

वध प्राणदण्ड। कन्या के साथ, तथा दूसरे की भार्या के साथ बलात्कार करने वाला, चण्डाली के साथ गमन करने वाला, स्त्री, बालक, तथा ब्राह्मण की हत्या करने वाला व्यक्ति प्राणदण्ड का अधिकारी था।

मत्स्य० २२६।१२४, १३९,१४०

वपुष्मत् (वपुष्मान्)

प्रियव्रत के पुत्रों में से एक । शाल्मलद्वीप का राजा । उसके सात पुत्र हुए—श्वेत, हरित, जीमूत, रोहित, वैद्युत, मानस तथा सुप्रभ । ये सातों पुत्र क्रमशः इन्हीं सात नामों वाले देशों के राजा हुए ।

ब्रह्माण्ड० २।१४।१२, ३२-३४
वायु० ३३।६
विष्णु० २।१।६-७

वयुन

दक्ष प्रजापति की कन्या धिषणा और कृशाश्व के चार पुत्रों में से एक ।

भाग० ६।६।२०

वर

विरज के दो पुत्रों में से एक ।

वायु० ६८।२३

वराहद्वीप

जम्बूद्वीप का एक प्रदेश ।

वायु० ४८।१४

वरोपान

सावर्णि मनु के पुत्रों में से एक ।

मत्स्य० ९।३३

वरुथ

चंद्र (पौरव) वंश । दुष्यन्त का पुत्र ।

मत्स्य० ४८।४

वर्तिवर्धन

अश्वक का पुत्र । उसने २० वर्ष तक राज्य किया ।

वायु० ९९।३१२

वर्धन — कृष्ण और मित्रविन्दा के दस पुत्रों में से एक।

भाग० १०।६१।१६

वर्धमान — वसुदेव और उपदेवी का पुत्र।

मत्स्य० ४६।१७
वायु० ९६।१७८
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१८२

वर्मभृत् — वृष्णिवंशी। चित्रक के पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।११४

वसती (वसतीः) — एक पर्वतीय जनपद, जो सिन्धु द्वारा सिंचित था।

ब्रह्माण्ड० २।१८।४८

वस (वसान्) — एक जाति तथा (जनपद)।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१०८

वसु (१) — मानव वंश। भूतज्योति का पुत्र। प्रतीक का पिता।

भाग० ९।२।१७-१८

वसु (२) — कुश के चार पुत्रों में से एक। अजक का पौत्र।

भाग० ९।१५।४
ब्रह्माण्ड० ३।६६।३२
वायु० ९१।६२

वसु (३)

कृष्ण और नाग्नजिति का पुत्र ।

भाग० १०।६१।१३

वसु (४)

दक्ष प्रजापति (प्राचेतस्) की पुत्रियों में से एक । धर्म की पत्नी । उसके आठ पुत्र हुए, जो वसु हुए–(वस्वोऽष्टौ वसो पुत्रा.) उनके नाम इस प्रकार हैं–द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, दोष, वसु और विभावसु । इनमें अर्क की पत्नी का नाम वासना था, तथा वसु के पुत्र का नाम विश्वकर्मा था ।

भाग० ६।६।१०

वसु (५)

पृथु की पुत्री का पुत्र । उपमन्यु का पिता । वह चेदि का स्वामी कहा गया है ।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।६८
वही ३।६८।२७
मत्स्य० ५०।२५
वायु० ९३।२६

वसु (६)

वसुदेव और देवरक्षिता का पुत्र, जो कंस द्वारा मारा गया ।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१८१,
वायु० ९६।१७४

वसु (७)

पुरूरवस् तथा उर्वशी के पुत्रों में से एक ।

मत्स्य० २४।३३ [कलकत्ता, गु० प्र०]

वसु (८)

स्वायम्भुव मनु के दस पुत्रों में से एक ।

ब्रह्माण्ड० २।१३।१०४
मत्स्य० ९।५
वायु० ३३।१७

वसुदेव (३) चञ्चु के दो पुत्रों में से एक। विजय का भाई।

विष्णु० ४।३।१५

वसुमान् (१) वैवस्वत मनु के दस पुत्रों में से एक।

भाग० ८।१३।३

वसुमान् (२) श्रुतायु का पुत्र।

भाग० ९।१५।२

वसुमान् (३) जमदग्नि तथा रेणुका का पुत्र। परशुराम का भाई।

भाग० ९।१५।१३

वसुमान् (४) कृष्ण तथा जाम्बवती के पुत्रों में से एक।

भाग० १०।६१।१२

वसुमित्र शुङ्गवंश। पीढ़ी क्रम ४। सुज्येष्ठ (ज्येष्ठ, वायु०) का पुत्र। वह भद्रक (आर्द्रक, विष्णु, भद्र, ब्रह्माण्ड०) का पिता था। मत्स्य० में वसुज्येष्ठ और सुज्येष्ठ के बाद वसुमित्र का नाम आता है, किन्तु स्पष्ट नहीं है कि वह किसका पुत्र है। राज्यावधि १० वर्ष।

भाग० १२।१।१६—१७
मत्स्य० २७१।२७,
वायु० ९९।३३६,
विष्णु० ४।२४।३५
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५१–१५२

वसुमोद

स्वायंभुव मनु-वंश। हव्य का पुत्र। उसके नाम से वसुमोदक वर्ष (देश) का नाम पड़ा।

वायु० ३३।१६

वसुमोदक

एक वर्ष (देश) का नाम। देखिए, वसुमोद

वसूत्तम

भीष्म का दूसरा नाम।

भाग० १।९।६

वस्तु

लोमपाद का पुत्र।

देखिए, लोमपाद (२)

वस्वनंत

निमिवंश। उपगुप्त का पुत्र तथा युयुध का पिता।

भाग० ९।१३।२५

वस्वोकसारा
[वस्वौकसारा]

मानस के ऊपर तथा मेरु के पूर्व स्थित इन्द्र की नगरी। ब्रह्माण्ड० में पाठ वस्वौकसारा है।

वायु० ५०।८७

ब्रह्माण्ड० ३।२१।२०

वहीनर

सोम (पौरव) वंश। दुर्दमन (दमन, भाग०) का पुत्र। दण्डपाणि का पिता।

भाग० ९।२२।४२

मत्स्य० ५०।८६ [वहीनर, पु० ना०]

वह्नि (१) कुकुर का पुत्र तथा विलोमन का पिता। देखिए, कुकुर।

भाग० ६।२४।१९

वह्नि (२) देखिए, वृक (४)।

वाङ्ग (वाङ्गाः) एक जनपद।

वायु० ४४।१५

वाचाङ्ग (वाचाङ्गाः) केतुमाल वर्ष का एक जनपद।

वायु० ४४।१४

वाटधान (वाटधानाः) एक उदीच्य देश।

वायु० ४५।११५

मत्स्य० ११३।४० [कलतया, गु० प्र०]

ब्रह्माण्ड० २।१६।४६

वातरम्भ (वातरम्भाः) एक जनपद।

वायु० ४३।२०

वातापि दनु वंश। ह्राद और धमनि के दो पुत्रों में से एक। यह देवासुर संग्राम में ब्रह्मा के पुत्र से लड़ा[1]। हिरण्यकशिपु के १३ मानवों में से एक[2]। सिंहिका और विप्रचित्ति का पुत्र[3]।

१—भाग० ६।१८।१५

पद्मो ८।१०।३२
२—न स्व० ३।२६
३—विष्णु० ३।२४।११

वाम कृष्ण और भद्रा के दस पुत्रों में से एक।

भाग० १०।६१।१७

वामचूड (वामचूडाः) एक जनपद।

मत्स्य० ११२। २

वामदेव प्रियव्रत का पौत्र। कुशद्वीप के अधिपति हिरण्यरेता के सात पुत्रों में से एक। हिरण्यरेता ने कुशद्वीप को सात भागों में विभक्त कर अपने सातों पुत्रों, वसु, वसुदान, विविक्त, वामदेव आदि को बाँट दिया।

भाग० ५।२०।१४

वामन भाग० के अनुसार विष्णु का पन्द्रहवाँ अवतार। ये वैवस्वत मन्वन्तर में कश्यप की पत्नी अदिति के गर्भ से वामनरूप में अवतरित हुए।

भाग० १।३।१८-१९
ब्रह्म० ४७।४२-४६
भाग० ८।१९।१

वारणावतम् (नगरम्) हस्तिनापुर।

वायु० ६१।६१

वाराणसी काशी जनपद की राजधानी। काशी के राजवंश की स्थापना धन्वन्तरि से हुई। दिवोदास वाराणसी का राजा कहा गया है—(दिवोदास इति ख्यातो वाराणस्यधिपोऽभवत्) जिसे क्षेमक राक्षस के आक्रमण के

कारण वहाँ से हटना पड़ा था। महात्मा निकुम्भ के शाप से वाराणसी पुरी सहस्र वर्ष तक शून्य पड़ी रही[२]। यदुवंशज महिष्मान् के पुत्र रुद्र-श्रेण्य वाराणसी का राजा हुआ[३]। एक समय कृष्ण के द्वारा वाराणसी दग्ध कर दी गयी थी[४]—"नरावतारे कृष्णेन दग्धा वाराणसी यथा"। देखिए, काशी

१—भाग० ७।१४।३१

२—ब्रह्माण्ड० ३।६७।२६–६२

वायु० ६२।२३—२८

३—मत्स्य० ४३।१०–११ [कलकत्ता, गु० प्र०]

४—विष्णु० ५।३४।३ [बम्ब० संस्क० गो० ना०]

वाराह (वाराहाः) एक जनपद।

वायु० ४३।२०

वारिमेजय अक्रूर के ग्यारह पुत्रों में से एक।

मत्स्य० ४५।२६

वारिसार चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र तथा अशोकवर्धन का पिता।

भाग० १२।१।१३

वारुण भारत वर्ष के नव भेद (द्वीपों) में से एक। (भारतस्यास्य वर्षस्य नव भेदान्निबोधत...इंद्रद्वीपः कशेरुमांस्ताम्रवर्णो गभस्तिमान्। नागद्वीपस्तथा सौम्यो गांधर्वस्त्वथ वारुणः। अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः।

ब्रह्माण्ड० ३।१६।८–१०

मत्स्य० ११३।८

वारुणम् व्रतम् राजा का कर्तव्य है कि वह पापियों तथा दुष्टों का राज्य में दमन करे। राजा का यही कर्तव्य वारुणव्रत के नाम से कहा गया है।

मत्स्य० २२५।५

वारुणी (पुष्करिणी) अरण्य प्रजापति की पुत्री। मनु की पत्नी, तथा चाक्षुष मनु की माता।

ब्रह्माण्ड० ३।३६।१०२

वायु० ६२।८६

वार्क्षम् छः प्रकार के दुर्गों में से एक।

मत्स्य० २१६।७

वार्क्षी देखिए, मारिषा (१)

वार्त्र दसवाँ देवासुर-संग्राम।

ब्रह्माण्ड० ३।७२।७८

वायु० ९७।७६

वार्षपर्वणी दनुवंशराज स्वर्भानु की पुत्री।

विष्णु० १।२१।६ (कलकत्ता, प्र० सं०)

वाली (वालिन्) विरजा और महेन्द्र का पुत्र। सुग्रीव का ज्येष्ठ भाई। पत्नी का नाम तारा तथा पुत्र का नाम अङ्गद था। यह राजा हुआ[1] और अन्त में राम द्वारा मारा गया[2]।

१—ब्रह्माण्ड० ३।७।२१४-२२०

२—भाग० ९।१०।१२

वासना देखिए, वसु (४)

वासव — इन्द्र का नाम।

ब्रह्माण्ड० २।१०।४४

वासिक (वासिकाः) — एक जनपद।

मत्स्य० १२१।५०

वासुकि — कद्रू और कश्यप के पुत्र, जो शतफणवाले (शतशीर्ष) थे और पाताल में राजाओं के राजा थे।

वायु० ५०।३६—४०

वासुदेव — कृष्ण का नाम।

भाग० १०।८।१४ तथा १६

वाह्लिक (वाह्लिकाः) — एक राजवंश, जिसके तीन राजाओं ने विन्ध्य के राजकुल के अनन्तर राज्य किया।

वायु० ९९।३७३

वाह्य (वाह्याः) — एक जनपद।

मत्स्य० ११३।३४

विकम्पन — एक राक्षस, जो लंका के युद्ध में मारा गया।

१—भाग० ६।१०।१८

विकर्ण — युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भाग लेने वाले क्षत्रियों में से एक।

भाग० १०।७४।६

विकुक्षि — इक्ष्वाकु के सौ पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र। अपने पिता के बाद उसने पृथ्वी पर शासन किया। भाग० के अनुसार पुरञ्जय का पिता। ब्रह्माण्ड० के अनुसार उसके शकुनि आदि—५०० पुत्र थे। मत्स्य० के अनुसार विकुक्षि के १५ पुत्र थे।

भाग० ९।६।४—१२
वायु० ८८।८१
हरि ११।१६—२०
मत्स्य० १२।२६—२८ [अयोध्या, पृ० ४०]

विग्रह — शत्रुता। विग्रह बलवान से नहीं करना चाहिए। अपने से न्यून शक्ति वाले के साथ शत्रुता करना उचित है। विग्रह केवल वही राजा करे जो अपने प्रभाव को बढ़ाने की इच्छा रखता हो अथवा शत्रु द्वारा पीड़ित हो, और जिसके लिए देश काल तथा शक्ति (सेना) बल अनुकूल हो। "हीनेन विग्रहः कार्यः स्वयं राज्ञा बलीयसा। आत्मानोऽभ्युदयाकांक्षी पीड्यमानः परेण वा। देश कालबलोपेतः प्रारभेतेह विग्रहम् ।" राजा को चाहिए यह कि निम्नलिखित प्रकार के विग्रहों का त्याग करे—जो निष्फल हो अथवा जिसमें परिणाम संदिग्ध हो, जो वर्तमान के लिए दोषयुक्त हो तथा भविष्य में अनेक बुराइयों को पैदा करने वाला हो, अथवा जिसमें किसी अपरिचित पराक्रम वाले राजा द्वारा आक्रमण होने की शंका हो, जो किसी दूसरे के लिए हो, अथवा स्त्री निमित्त हो, अथवा जिसमें दीर्घकाल पर्यन्त बलवान के साथ युद्ध हो, ऐसे राजा के साथ जो अकस्मात् भाग्य का कृपापात्र बन गया हो अथवा बलवान मित्र से युक्त हो, जो तत्काल तो फलदायक हो, किन्तु परिणाम फलहीन हो अथवा भविष्य में फलयुक्त हो, किन्तु उस समय फल रहित हो। अतः राजा को चाहिये कि वह ऐसा काम करे जो तत्काल तथा भविष्य में शुभ फल

देने वाला हो अपनी सेना हृष्ट पुष्ट समझ कर ही वह दूसरे के साथ शत्रुता करे। जब यह समझ ले कि अपने मित्र, आक्रन्द तथा आक्रन्दासार दृढ अनुराग वाले हैं तथा शत्रु के आक्रन्द बिलकुल विपरीत परिस्थिति में हैं तभी वह विग्रह करे।

अग्नि० २३४।२०, २३६ अ०
वही २४०।१५
वही २४०।१६-१८
वही २४०।२०-२४
वही २४०।२५-२६

विक्रमित्र

राजा घोषमुन के बाद होने वाला राजा।

वायु० ६६।२४१

विक्रान्त (१)

वैवस्वत मनु वंश। राजा दम का पुत्र। सुधृति का पिता। उसने अपने राज्य का विस्तार किया।

वायु० ८६।१३

विक्रान्त (२)

भेद का पुत्र।

वायु० ६६।१६६

विक्रान्त (३)

चन्द्र (पौरव) वंश। पुष्पवान् का पुत्र।

वायु० ६६।२२४

विचारु

कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र।

भाग० १०।६१।६

विचित्र (१) रौच्य मनु का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ४।१।१०, ४।१०४
वायु० १००।१०८

विचित्र (२) सावर्णि मनु देवसावर्णि का पुत्र।

भाग० ८।१३।३०

विचित्रवीर्य्य राजा शन्तनु (शान्तनु मत्स्य० तथा विष्णु०) का पुत्र। विचित्रवीर्य्य की दो स्त्रियाँ थीं—अम्बिका तथा अम्बालिका। दोनों काशिराज की पुत्रियाँ थीं। अति विलासी होने के कारण वह यक्ष्मा रोग से मर गया। वंश को चलाने के लिए सत्यवती ने कृष्ण-द्वैपायन व्यास से विचित्रवीर्य की स्त्रियों से नियोग द्वारा पुत्र उत्पन्न करने की प्रार्थना की। नियोग से दोनों स्त्रियों के दो पुत्र हुए धृतराष्ट्र और पाण्डु।

ब्रह्माण्ड० ३।१०।७०
वायु० १३।१८, ९९।२४०
मत्स्य० १४।१७ [कन्यका, पु०]
भाग० ९।२२।२१—२५

विजय (१) सुदेव का पुत्र। भरुक का पिता।

भाग० ९।८।१-२

विजय (२) पुरुरवा और उर्वशी के छः पुत्रों में से एक। भीम का पिता।

भाग० ९।१५।१-२

विजय (३) जयद्रथ और सम्भूति का पुत्र। धृति का पिता।

भाग० ९।२३।१२

विजय (४) कृष्ण और जाम्बवती का पुत्र।

भाग० १०।६१।१२
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१८२

विजय (५) निमिवंश। जय का पुत्र तथा श्रुत का पिता।

भाग० ६।१३।२४

विजय (६) चञ्चु के दो पुत्रों में से एक। वह समस्त क्षत्रियों का विजेता कहा गया है। वह रुरुक का पिता था।

विष्णु० ४।३।१५
वायु० ८८।१२०

विजय (७) आन्ध्र-वंश। वह यज्ञ श्री के बाद राजा हुआ। यज्ञ श्री का पुत्र। राज्यावधि ६ वर्ष।

मत्स्य० २७३।१५ [कलकत्ता, गु० प्र०]
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६८

विजयस्थल (विजयस्थला:) एक जनपद।

वही ४३।१६

विजय (१) पर्वत की पुत्री। सहदेव की पत्नी। सुहोत्र की माता।

भाग० ६।२२।३१
वही ६६।२४८

विजय (२) कृष्ण की रानियों में से एक।

मत्स्य० ४७।१४ [कलकत्ता, गु० प्र०]

विदुर कृष्णद्वैपायन (व्यास) का विचित्रवीर्य की रानियों की दासी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र। विचित्रवीर्य की दो पत्नियाँ थीं—अम्बा और अम्बालिका। यक्ष्मा रोग से ग्रस्त होने के कारण विचित्रवीर्य की मृत्यु हो गयी। अतः सत्यवती ने नियोग द्वारा पुत्रोत्पत्ति के लिए कृष्ण-द्वैपायन व्यास को नियुक्त किया। देखिए, विचित्रवीर्य।

विष्णु० ४।२०।१०

विदूरथ (१) पौरव वंश की ३५ वीं पीढ़ी में। सुरथ का पुत्र। सार्वभौम का पिता।

विष्णु० ४।२०।३
वायु० ९९।२३०
भाग० ९।२२।१०
हरिवंश ३२।३

विदूरथ (२) वृष्णिवंश। श्वफल्क के भाई चित्रथ के पुत्रों में से एक। शूर का पिता।

भाग० ९।२४।१८ तथा २९

विदूरथ (३) दन्तवक्त्र का भ्राता। अपने भ्राता की मृत्यु का समाचार पाकर वह अत्यन्त व्यथित हुआ और कृष्ण को मार डालने की इच्छा से वह उनपर झपटा, किन्तु कृष्ण ने तुरन्त उसका सिर काट लिया।

भाग० १०।७८।११-१२

विदूरथ (४) वृष्णि-वंश। भजमान का पुत्र। शूर का पिता।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१३६
वायु० ९६।१३५

विदूरथ (५) — क्रोष्टु कुल। निर्वृति का पुत्र। दशार्ह का पिता।

मत्स्य० ४४।४०

विदेह (१) — एक प्राच्य जनपद¹। कंस के भय से यादव, विदेह, विदर्भ, कोसल आदि देशों में जा बसे थे²।

१—मत्स्य० ११४।४७
ब्रह्माण्ड० २।१६।५४
वायु० ४५।१२१
२—भाग० १०।२।३

विदेह (२) — राजा जनक का नाम।

भाग० ११।२।१४

विदेहजा — सीता का नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।१७।२२

विदेहपुरी — राजा जनक की राजधानी।

विष्णु० ४।११।८८ [वायु० ८९० ...]

विधाता — स्वायंभुव मनु वंश। भृगु तथा ख्याति का पुत्र। मेरु की पुत्री नियति से यह ब्याहा गया।

ब्रह्म० ४।२।२८। मत्स्य ४५
ब्रह्माण्ड० २।११।७
वायु० २८।१
विष्णु० १०।३

बिंबिसार

शिशुनाग वंश। क्षेमज का पुत्र।[1] ब्रह्माण्ड० के अनुसार क्षत्रौजा के बाद आने वाला राजा। अजातशत्रु का पिता। उसने २८ वर्ष तक राज्य किया।[2]

१—भाग० १२।१।६

२—ब्रह्माण्ड० ३।७४।१३०

विनय

नम्रता। राजा को विनीत होना अत्यन्त आवश्यक है। विनयगुण से रहित बहुत से राजा अपने राज्य से हाथ धो बैठे, किन्तु विनयगुण सम्पन्न राजाओं ने वन में रहते हुए भी राज्य प्राप्त किया —

तेभ्यः शिक्षेत् विनयं विनीतात्मा च नित्यशः।
समग्रां वशगां कुर्यात् पृथ्वीं नात्रसंशयः।
बहवो विनयाद्भ्रष्टा राजानः सपरिच्छदाः।
वनस्थाश्चैवराज्यानि विनयात् प्रतिपेदिरे ॥

मत्स्य० २१५।५१-५२

विनीत

उत्तम मनु के तेरह पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० २।३६।४०

विनेयु

पौरव वंश। भद्राश्व तथा घृता का पुत्र।

मत्स्य० ४६।५

विन्द

विष्णु० के अनुसार राजाधिदेवी का पुत्र, तथा अनुविन्द का भाई। विन्द तथा अनुविन्द दोनों भाई अवन्ति के राजा थे। वे दुर्योधन के परम अनुयायी थे। उनकी बहिन मित्रविन्दा स्वयम्वर में श्रीकृष्ण को वरण करना चाहती थी, किन्तु वे अपनी बहिन कृष्ण को नहीं देना चाहते थे। अन्त में श्री कृष्ण ने मित्रविन्दा को सब राजाओं के देखते देखते बल-पूर्वक ले गए। देखिए, मित्रवृन्दा

१—विष्णु० ४।१४।१०-१७
वायु० ९।१५७
२—भाग० १०।५१।२०-२१

विन्ध्य रैवत मनु का पुत्र। देखिए, मनु (५)

विन्ध्यनिलय (विन्ध्यनिलयाः) एक जाति

वायु० ६२।१२४

विन्ध्यशक्ति एकादश मौन राजाओं के अनन्तर राजा किलकिल का पुत्र होगा, जो ९६ वर्ष तक राज्य करेगा। उसके बाद वैदिशक अथवा विदिशक राजा होंगे।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१७८, वायु० ९९।३६३

विन्ध्यसेन क्षेमजित् के बाद होने वाला राजा। उसने २८ वर्ष तक राज्य किया—"अष्टाविंशति वर्षाणि विन्ध्यसेनो भविष्यति"।

मत्स्य० २७२।८

विन्ध्यावली राजा बलि की रानी।

भाग० ८।२०।१७

विपुल वसुदेव द्वारा रोहिणी के पुत्रों में से एक।

भाग० ९।२४।४६

विपृष्ट — वसुदेव का घृतदेवा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

भाग० ९।२४।५०

विप्र (१) (विभु) — राजा जरासन्ध के कुल में श्रुतञ्जय का पुत्र। शुचि का पिता। मत्स्य० में पाठ विभु है। मत्स्य० के अनुसार उसने २८ वर्ष तक राज्य किया।

भाग० ९।२२।४७
मत्स्य० २७०।२८

विप्रचित्ति — दनु के पुत्रों में से एक। उसकी पत्नी सिंहिका के गर्भ से १०१ पुत्र उत्पन्न हुए, उनमें सबसे बड़ा राहु था। उसने देवासुर-संग्राम में देवों के विरुद्ध भाग लिया।

भाग० ६।६।३१ तथा ३७,
वही ९।१८।१३
मत्स्य० ४७।५२

विपृथु (१) — विष्णुवंश। चित्रक के पुत्रों में से एक। मत्स्य० के अनुसार अश्विनी का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।११४
वायु० ९६।११३
मत्स्य० ४५।३२

विभावसु — दनु के पुत्रों में से एक।

भाग० ६।६।३०

विभु (१) — चन्द्र (पौरव) वंश। काशि-शाखा। सत्यकेतु का पुत्र। काशिराज का १५वीं पीढ़ी में। सुविभु का पिता।

विष्णु० ४।८।६

विभु (२) चन्द्र (पौरव) वंश। बार्हद्रथ शाखा। श्रुतंजय के बाद आने वाला राजा। राज्यकाल २८ वर्ष। देखिए, विभु (१)

विभु (३) प्रियव्रत के वंश में प्रस्तावि का पुत्र। पृथु का पिता।

वायु० ३३।५१
ब्रह्माण्ड० २।१४।६७

विभ्राज चन्द्र (पौरव) वंश। पीढ़ी संख्या ७५। सुकृत का पुत्र तथा अणुह का पिता।

मत्स्य० ४९।५९
वायु० ९९।१७८

विभ्राजमान ब्रह्मदत्त का दूसरा नाम, जो पाञ्चाल का राजा हुआ।

मत्स्य० २०।२१-२४

विभूत स्वारोचिष मनु के पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० २।३६।१८

विमल (१) वैवस्वत मानव वंश। सुद्युम्न के तीन पुत्रों में से एक। सुद्युम्न के तीनों पुत्र दक्षिणापथ के राजा हुए।

मत्स्य० १२।१८

विमल (२) क्रोष्टु-वंश। जीमूत का पुत्र। भीमरथ का पिता।

मत्स्य० ४४।४१

विरज — देखिए, विरोचना।

विराट् (१) — स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के वंश में नर का पुत्र। महावीर्य का पिता।

वायु० ३३।५८
ब्रह्माण्ड० २।१४।६८
विष्णु० २।१।३६

विराट् (२) — ऐक्ष्वाकु वंश। दक्षिणापथ का रक्षक।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।११

विरूप (१) — ऐक्ष्वाकु वंश। अम्बरीष के तीन पुत्रों में से एक। पृषदश्व का पिता।

भाग० ९।६।१,
ब्रह्माण्ड० ३।६३।६
वायु० ८८।६

विरूप (२) — कृष्ण का पुत्र।

भाग० १०।९०।३४

विरूपाक्ष — दनु के पुत्रों में से एक।

भाग० ६।६।३१

विरोचन — प्रह्लाद का पुत्र। दैत्यराज बलि का पिता[१]।
उसने देवासुर संग्राम में इन्द्र के विरुद्ध भाग लिया[२]
अन्त में वह इन्द्र द्वारा मारा गया[३]।

विविक्त देखिए, वामदेव।

विविसार शिशुनाग वंश। पीढ़ी-क्रम ५। क्षत्रौजा के बाद होने वाला राजा, जिसने २८ वर्ष तक राज्य किया। विष्णु० के अनुसार क्षत्रौजा का पुत्र बिन्दुसार है, और बिन्दुसार का पुत्र अजातशत्रु है। ब्रह्माण्ड० में पाठ विधिसार है और राज्यावधि ३८ वर्ष। इसके बाद यहाँ अजातशत्रु का नाम है। देखिए, विम्बिसार।

वायु० ६६।३१८
विष्णु० ४।२४।३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१३०

विबुध निमि-वंश का १६वाँ राजा। वायु० के अनुसार उसके पिता का नाम देवमीढ था, किन्तु विष्णु के अनुसार धृति।

वायु० ८६।१२
विष्णु ४।५।१२

विश वैवस्वत मनु वंश,। क्षुप का पुत्र। विविंश का पिता।

वायु० ८६।६

विशज वैदेश का भावी चतुर्थ राजा।

वायु० ६६।३६८

विशद भरत-कुल में जयद्रथ का पुत्र। सेनजित् का पिता।

भाग० ६।२१।२३

भाग० ५।१।२४
वही ६।६।१५

विश्वक्सेन चन्द्र (पौरव) वंश। द० पाञ्चाल शाखा। पीढ़ीक्रम १८। मत्स्य० के अनुसार ब्रह्मदत्त का पौत्र, युगदत्त का पुत्र, तथा उदक्सेन का पिता। विष्णु० के अनुसार ब्रह्मदत्त का पुत्र।

मत्स्य० ४६।५८
विष्णु० ४।१६।१३

विश्वग्ज्योति स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के कुल में रजस् के सौ पुत्रों में से एक।

विष्णु० २।१।४१ [वम्ब० मरफ़० गो० ना०]
वायु० ३३।६१
ब्रह्माण्ड० २।१४।७१

विश्वजित् (१) चन्द्र (पौरव) वंश। दक्षिण पाञ्चाल शाखा। पीढ़ी-क्रम संख्या ५। जयद्रथ का पुत्र। वायु० के अनुसार बृहद्रथ का पुत्र। सेनजित् का पिता।

वायु० ९९।१७२
विष्णु० ४।१६।११

विश्वजित् (२) चन्द्र (पौरव) वंश। बार्हद्रथ-शाखा। सत्यजित् का पुत्र।[१] रिपुञ्जय का पिता। वायु में पाठ वीरजित् है। ब्रह्माण्ड० के अनुसार राज्यावधि २५ वर्ष।

वायु० ९९।३०७
भाग० ९।२२।४९
विष्णु० ४।२३।१ [वम्ब० संस्क० गो० ना०]
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१२०

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६०-१६३
वायु० ९९।२७७

विश्वा — दक्ष प्रजापति (प्राचेतस्) की आठ कन्याओं में से एक । धर्म की पत्नी । उसका पुत्र विश्वेदेव हुआ ।

भाग० ६।६।४, तथा ७

विश्वावसु — पुरूरवा का पुत्र । देखिए, पुरूरवा ।

ब्रह्माण्ड० ३।६६। २२

विषय — प्रदेश ।

मत्स्य० २१६।८

विषूची — भरत-कुल में राजा विरज की रानी । सौ पुत्रों तथा एक कन्या की माता ।

भाग० ५।१५।१५

विष्णुयशस् — कल्कि का नाम ।

भाग० १।३।२८

विष्णुरात — राजा परीक्षित का नाम ।

भाग० १।१२।१७

वीतहव्य — निमि-वंश । सुनक (सुनय, विष्णु०) का पुत्र । धृति का पिता ।

विष्णु० ४।५।१२
भाग० ९।२३।२२

वीतिहोत्र (१) [वीरहोत्र] तालजंघ का ज्येष्ठ पुत्र। यादव वंश के अन्तर्गत हैहय शाखा की १३ वीं पीढ़ी में। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार वीतिहोत्र का पुत्र अनन्त था। देखिए, तालजंघ।

वायु० ९४।५१
ब्रह्माण्ड० ३।६९।५४
भाग० ९।२३।२८

वीतिहोत्र (२) प्रियव्रत और बर्हिष्मती का पुत्र, जो पुष्करद्वीप का राजा हुआ।

वीतिहोत्र (३) (वीतिहोत्राः) विन्ध्याद्रि में स्थित एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।६४

वीतिहोत्र (४) (वीतिहोत्राः) तालजंघ के पाँच वंशों में से एक। देखिए। तालजंघ।

ब्रह्माण्ड० ३।६९।५२

वीरव्रत (१) प्रियव्रत वंश। मधु और सुमना का पुत्र। मन्थु और प्रमन्थु का पिता।

भाग० ५।१५।१५

वृक (१) पृथु के पुत्रों में से एक। उसके बड़े भाई विजिताश्व ने उसे दक्षिण दिशा का शासक बनाया।

वृक (२) भरुक का पुत्र तथा बाहुक का पिता।

भाग० ६।८।२

वृक (३) शूर तथा मारिषा का पुत्र। वसुदेव का भाई।

भाग० ६।२४।२१-२८

वृक (४) कृष्ण और मित्रवृन्दा का पुत्र तथा वर्धन, वह्नि आदि का भाई।

भाग० १०।६१।१६

वृजनीवान क्रोष्टु का पुत्र। यादव वंश का तीसरा राजा।

विष्णु० ४।१२।१

वृत्र त्वष्टा का पुत्र। वह अत्यन्त पराक्रमी, भयानक और पापी था। उसने समस्त लोकों को घेर लिया था। जब देवताओं ने मिलकर उस पर अपने अपने दिव्य अस्त्र शस्त्रों से प्रहार किया, तब वृत्रासुर ने उन समस्त अस्त्र-शस्त्रों को निगल लिया। तदनन्तर वृत्र और इन्द्र का भयंकर युद्ध हुआ। अन्त में इन्द्र द्वारा वृत्रासुर मारा गया।

भाग० ६।६।१८-१९
वही ६।१०—१२ अ० तक

वृष मय के पुत्रों में से एक।

वायु० ६८।२८

वृष (२)

यादव वंश। हैहय शाखा की २७ वीं पीढ़ी में भरत का पुत्र। मधु का पिता।

विष्णु० ४।११।८

वृष (३)

अनुवंश। शिवि का पुत्र। उशीनर का पौत्र।

विष्णु० ४।१८।१

वृषदर्भ

शिवि के चार पुत्रों में से एक। उसी के नाम से वृषदर्भ जनपद का नाम पड़ा।

वायु० ६६।२३–२४

वृषपर्वा

दनु के पुत्रों में से एक। उसने देवासुर-संग्राम में असुरों की ओर से भाग लिया।

भाग० ६।६।३१

वही ६।१०।२६

वृषभ

कार्तवीर्य अर्जुन के १०० पुत्रों में से एक।

भाग० ९।२३।२७

वृषसेन

अङ्ग-कुल में कर्ण का पुत्र और पृथुसेन का पिता।

विष्णु० ४।१८।७ [क्म० हस्त० नि०]

मत्स्य० ४८।१०३

वृष्टि

सावर्णि मनु के पुत्रों में से एक।

मत्स्य० ९।३३–३४

वृष्णि (१) मधु के सौ पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र। उसी से वृष्णिवंश का आरम्भ हुआ।
भाग० ९।२३।२९

वृष्णि (२) सात्वत के सात पुत्रों में से एक। सुमित्र और युधाजित् का पिता। मत्स्य० के अनुसार वृष्णि की दो भार्या थीं—गान्धारी और माद्री। इनमें गान्धारी के गर्भ से सुमित्रनन्दन तथा माद्री के गर्भ से युधाजित नामक पुत्र हुआ।
मत्स्य० ४५।१०–१२ [कलकत्ता, गु० प्र०]
वायु० ९६।१७—१८

वृष्णि (३) वृष्णिवंश। अनमित्र के पुत्रों में से एक। चित्ररथ का पिता।
भाग० ९।२४।१३-१५

वृष्णिमान् शुचिरथ का पुत्र। सुषेण का पिता।
विष्णु० ४।२१।३ [बम्ब० संस्क० गी ना०]

वेगवान् सूर्य (मानव) वंश। नाभागनेदिष्ट शाखा। पीढ़ीक्रम २१। बन्धुमान् का पुत्र। बधु का पिता।
वायु० ८६।१४
भाग० ९।२।३०

वेन अङ्ग और सुनीथा का पुत्र, जो अत्यन्त क्रूर था। देखिए, पृथु (४)

वेणुमण्डलम् कुशद्वीप के अन्तर्गत द्वितीय वर्ष (देश) जिसका नाम ज्योतिष्मान् के पुत्र वेणुमान् के नाम से पड़ा।

ब्रह्मा० उ० २।१४।२८
वायु० ३।३।८

वेणुमान् ज्योतिष्मान् का पुत्र। देखिए, वेणुमण्डलम्।

वेला महाश्व तथा पृथ्वी की पुत्री।

वायु० १०।३।६

वैदिश (वैदिशाः) विन्ध्यपृष्ठ में स्थित एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।६४-६६

वैरथ ज्योतिष्मान् का पुत्र, जिसके नाम से कुशद्वीप के अन्तर्गत वैरथाकार वर्ष (देश) का नाम पड़ा।

ब्रह्माण्ड० २।१४।२७-२८
विष्णु० २।४।३६

व्यास देखिए, कृष्ण द्वैपायन।

भाग० १।३।४

व्युष्ट मानव वंश। औत्तानपादि ध्रुव के वंश में पुष्पार्ण और दोषा का पुत्र। सर्वतेजा का पिता।

भाग० १।१३।१४

व्योम — मय का पुत्र। वह अत्यन्त बली और मायावी था। अन्त में वह कृष्ण के द्वारा मारा गया।

भाग० १०।३७।२८-३४

व्योमन् — ज्यामघ की ८ वीं पीढ़ी में। दशार्ह का पुत्र। जीमूत का पिता।

विष्णु० ४।१२।१६[बम्ब० संस्क० गी० ना०]

वायु० ९५।४०

हरिवंश० ३६।२४

व्रतेयु — रौद्राश्व के घृताची अप्सरा से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक।

भाग० ९।२०।५

शक (१) — एक उदीच्य देश।

ब्रह्माण्ड० २।१६।४८

शक (२) — बृहद्रथ (मौर्य) का पुत्र। उसने २६ वर्ष तक राज्य किया।

मत्स्य० २७१।२४ [कलकत्ता, गु० प्र०]

शक (३) (शकाः) — वायु० के अनुसार पच्चीस शक राजा, जो शिशुनाक (शिशुनाग), ऐक्ष्वाकु, पाञ्चाल, हैहय, कलिङ्ग राजाओं के समकालीन कहे गये हैं। मत्स्य० के अनुसार अठारह शक राजा हुए। वहाँ पर उनका उल्लेख सात आन्ध्र, दस आभीर तथा सात गर्दभिनों के बाद हुआ है। विष्णु० में शक राजाओं की संख्या सोलह है। वायु० में दूसरे स्थान पर उल्लेख है कि शक (जाति) के राजाओं ने तीन सौ अस्सी वर्ष तक राज्य किया।

शकुनि (४) एक असुर। वृक का पिता। उसने देवासुर संग्राम में भाग लिया था।

भाग० ६।२४।२२

वही १०।८८।१८

शकुनि (५) ऐक्ष्वाकु वंश। विकुक्षि के पुत्रों में से एक। उसके ५० भाई थे, जो उत्तरापथ के शासक थे। उनमें कुछ विराट आदि दक्षिणापथ के भी रक्षक थे।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।६

वायु० ८८।६

शकुन्तला विश्वामित्र और मेनका की पुत्री, जिसका पालन-पोषण कण्व के आश्रम में हुआ। राजा दुष्यन्त के साथ उसका गान्धर्व विवाह हुआ। उसके पुत्र का नाम भरत था।

मत्स्य० ४६।११

विष्णु० ४।१६।१२-१३

भाग० ६।२०।१३

शक्यमा माहिषों (महिषों) का एक राजा।

वायु० ६६.२७४

शक्रजित् [सत्राजित्] यादव वंश। सात्वतों की वृष्णि—शाखा। वृष्णि की तीसरी पीढ़ी में। वृष्णि का प्रपौत्र। अनमित्र का पौत्र। निघ्न का पुत्र। शक्रजित् (सत्राजित्) का प्राणों के समान प्रिय मित्र सूर्य था। सूर्य ने उसे स्यमन्तक मणि दी। उसे लेकर वह नगर पहुँचा। उस मणि की चमक सूर्य की प्रभा के सदृश थी। अतः लोगों ने समझा कि सूर्य ही नगर में आ रहा है और सब उसे देखने दौड़े। किन्तु शक्रजित् ने प्रेमवश वह दिव्य मणि अपने छोटे भाई प्रसेनजित् (प्रसेन, विष्णु०) को दे दी। उस मणि का यह प्रभाव

था कि कि जिस राष्ट्र में वह मणि रहती थी, वहाँ अनावृष्टि नहीं होती थी। श्रीकृष्ण उस मणि को राजा उग्रसेन के देने योग्य समझते थे, किन्तु यादवों में फूट पड़ जाने के डर से उन्होंने उस मणि को सत्राजित् से नहीं लिया। उस मणि में एक विशेषता यह भी थी कि सदाचारी व्यक्ति उसे रखे तो वह मणि अपना गुण प्रदर्शित करती थी अन्यथा मणि रखने वाले को ही मार डालती थी। यह घटना प्रसेनजित् के साथ हुई। मणि धारण किए हुए वह मृगयार्थ वन गया, वहाँ सिंह ने उसे मार डाला, किन्तु ज्योंही सिंह उस मणि को लेकर जा रहा था त्यों ही ऋक्षराज जाम्बवान् ने मार डाला और वह अपने पुत्र सुकुमार को देने के लिए ले गया। इधर नगर में लोगों को सन्देह हुआ कि कृष्ण मणि को चाहते थे, किन्तु उन्हें प्राप्त नहीं हुई, अतः अवश्य उन्होंने प्रसेनजित् का वध किया होगा। अपने प्रति इस अपवाद को सुनकर कृष्ण यादव सेना को लेकर प्रसेन का पता लगाते हुए वन गये। वहाँ उन्होंने अश्वसहित प्रसेन को सिंह द्वारा मरा हुआ देखा। सिंह का पता लगाते हुए वे वहाँ पहुँचे जहाँ ऋक्षराज जाम्बवान् ने सिंह को मार डाला था। ऋक्षराज जाम्बवान् को पराजित कर कृष्ण ने उससे मणि लेली। जाम्बवान् ने कृष्ण के साथ अपनी पुत्री जाम्बवती का विवाह कर दिया। मणि और जाम्बवती को लेकर कृष्ण द्वारका लौटे और वहाँ उन्होंने समस्त यादवों को सारा वृत्तान्त सुनाया तथा सत्राजित् को मणि लौटा दी। सत्राजित् को कृष्ण पर मिथ्या दोषारोपण करने का बहुत पश्चात्ताप हुआ और अपने आचरण के प्रायश्चित्त करने के लिए उन्होंने अपनी पुत्री सत्यभामा का कृष्ण के साथ विवाह कर दिया। किन्तु अक्रूर, कृतवर्मा, शतधन्वा आदि यादव भी सत्यभामा को चाहते थे और उन्होंने बहुत पहले ही इस सम्बन्ध में सत्राजित् से प्रस्ताव किया था। अतः श्रीकृष्ण के साथ सत्यभामा का विवाह होते देख उन्होंने द्वेष और ईर्ष्या से सत्राजित् को मारने का आयोजन किया। इसी बीच कृष्ण पाण्डवों के विरुद्ध दुर्योधन का प्रयत्न शिथिल करने के लिए हस्तिनापुर चले गये। श्रीकृष्ण की अनुपस्थिति में शतधन्वा ने सोते हुए सत्राजित् को मार दिया और उससे मणि भी ले ली। सत्यभामा ने हस्तिनापुर जाकर कृष्ण को यह समाचार सुनाया। कृष्ण के लौटने की सूचना पाते ही शतधन्वा स्यमन्तक मणि को अक्रूर के हाथ सौंप

कर घोड़े पर सवार हुआ और मिथिला की ओर भागा। कृष्ण और बलदेव ने सेनासहित उसका पीछा किया। शतधन्वा का घोड़ा मार्ग में ही (मिथिला के वन में) मर गया। कृष्ण ने चक्र से शतधन्वा का सिर काट लिया। शक्रजित् की दस स्त्रियाँ थीं, जो सब कैकेय की पुत्रियां थीं। उन स्त्रियों से शक्रजित् के १०० विख्यात् पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ पुत्र का नाम भङ्गकार था। विष्णु० तथा मत्स्य० में पाठ सत्राजित् है।

विष्णु० ४।१३।८-५०
वायु० ९६।२०-७४
मत्स्य० ४४।४-१८
वही ४५।१६

शङ्कु
कृष्ण और नाग्नजिति के पुत्रों में से एक।

भाग० १०।६१।१३

शङ्कुशिरा
दनु के पुत्रों में से एक।

भाग० ६।६।३०

शङ्खद्वीप
जम्बूद्वीप का एक प्रदेश।

वायु० ४८।१४

शङ्खपद
कर्दम प्रजापति का पुत्र, जो दक्षिण दिशा का राजा हुआ।

ब्रह्माण्ड० २।८।१६
वायु० २८।२६
वही २८।२७-२६
ब्रह्माण्ड० २।११।२२, २३
मत्स्य० ८।१०

शतद्युम्न (२) चाक्षुषमनु और नड्व के पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० २।३६।७८, १०६

मत्स्य० ४।४१

वायु० ६२।६१

शतद्रुति बर्हिषद् की रानी।

भाग० ४।२४।११

शतधनुस् एक राजा, जिसकी शैब्या नामक धर्मपरायणा पत्नी थी।

विष्णु ३।१८।५३-९४

शतधन्वन् (१) शतधन्वा ने अक्रूर और कृतवर्मा से प्रेरित होकर सत्राजित् को मार डाला। तदनन्तर मिथिलापुरी के एक उपवन में श्री कृष्ण ने उस क्रूरकर्मा का अन्त कर दिया। विशेष के लिए देखिए भाग० अध्याय ५७।

भाग० १०।५७।२-६ तथा १९—२३

वायु० ९६।९-७४

शतधन्वन् (२) प्रचेतस् का पुत्र। उदीच्य देश के म्लेच्छों का अधिपति।

विष्णु० ४।१७।५

शतधन्वन् (३) [शतधन्वा शतधर, शतधनु] मौर्य-वंश। भाग० तथा विष्णु० के अनुसार सोमशर्मा का पुत्र। बृहद्रथ का पिता। वायु० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार क्रमशः शतधर तथा शतधनु देववर्मा के पुत्र माने गये हैं। राज्यावधि ८ वर्ष।

वायु० ९९।३३५

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१४८

मत्स्य० २७२।२२

शतरथ [दशरथ] मूलक का पुत्र। इडविड का पिता। विष्णु० में पाठ दशरथ है।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।१८०
वायु० ८८।१८०
विष्णु० ४।४।३६

शतानीक परीक्षित की दूसरी पीढ़ी में। जनमेजय का पुत्र। सहस्रानीक (अश्वमेधदत्त, विष्णु०) का पिता। याज्ञवल्क्य से उसने वेदों का ज्ञान प्राप्त किया और कृप से अस्त्र-शिक्षा। सब विषयों से विरक्त चित्त होकर वह शौनक ऋषि की शरण में गया। उनके उपदेशों से वह बड़ा आत्मज्ञानी हुआ।

विष्णु० ४।२१।२
भाग० ९।२२।३८–३९

शतायु पुरूरवस् और उर्वशी के छः पुत्रों में से एक।

मत्स्य० २४।३४
वायु० ९१।५२

शत्रुघ्न (१) दशरथ के पुत्र। सुबाहु और श्रुतसेन (शूरसेन, ब्रह्माण्ड०) के पिता। देखिए, मधुवन। वाल्मीकि० में भी पाठ शूरसेन है।

भाग० ९।१०।२ तथा ५१
वही ९।११।१२–१४
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१८७
वही ३।७२–१११
वायु० ८८।१८८
वा० रा० उत्तरा० सर्ग १००, १०१

शत्रुघ्न (२)

श्वफल्क और गान्दिनी के पुत्रों में से एक।

भाग० ९।२४।१७

शन्तनु [शान्तनु]

प्रतीप के तीन पुत्रों में से एक। उनके तीन पुत्र देवापि, शन्तनु और बाह्लीक थे। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण देवापि ही प्रतीप के राज्य का उत्तराधिकारी था। किन्तु देवापि छोटी अवस्था में ही वन को चला गया। अतः शन्तनु गद्दी पर बैठा। शन्तनु का प्रधान मन्त्री अश्मरात था। शन्तनु के तीन पुत्र थे—गंगा से उत्पन्न भीष्म और सत्यवती (धीवर कन्या) से उत्पन्न चित्रांगद और विचित्रवीर्य। भीष्म ने सत्यवती के विवाह से पूर्व सत्यवती के पिता से प्रतिज्ञा की थी कि मैं स्वयं राज्य का उत्तराधिकारी न हूँगा। इस शंका को दूर करने के लिए उसने विवाह न करने का भी प्रण किया। देखिए, देवापि।

भाग० ९।२२।१२–१७
विष्णु० ४।२०।४–६

शबर [शबरान्]

एक जंगल जाति अथवा जनपद।

ब्रह्माण्ड० ३।७३।१०८

शमीक

यादव वंश। शूर और मारिषा का पुत्र। उसकी स्त्री सुदामिनी थी, जिससे सुमित्र, अर्जुनपाल आदि कई एक पुत्र उत्पन्न हुए।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५०
भाग० ९।२४।२९ तथा ४४
वायु० ९६।१४८

शम्बर

दनु के पुत्रों में से एक।

भाग० ६।६।३०

मत्स्य० ६।१७

वायु० ६८।११

वही ६८।२१

शर्मिष्ठा

वृषपर्वा की पुत्री। राजा ययाति की पत्नी। उसके तीन पुत्र हुए—द्रुह्यु, अनु तथा पुरु। देखिए, ययाति।

भाग० ९।१८।२२

ब्रह्माण्ड० ३।६८।२१

भाग० ९।१८।३३

शर्य्याति (१)

सूर्य (मानव) वंश। वैवस्वत मनु के दस पुत्रों में से एक।

भाग० ८।१३।२

वही० ९।१।१२

शर्याति (२)

नहुष का पुत्र।

मत्स्य० २४।५०

शलदा

भद्राश्व तथा घृताची अप्सरा से उत्पन्न दस (पुत्र) पुत्रियों में से एक।

वायु० ७०।६७-६८

शल्य (१)

कौरवों की सेना के सहायक राजाओं में से एक।

भाग० १।१५।१६

शशबिन्दु यादव वंश का सातवाँ राजा। चित्ररथ का पुत्र। वह चतुर्दश रत्नयुक्त चक्रवर्ती राजा कहा गया है। वह महान् योगी, ऐश्वर्यसम्पन्न तथा अत्यन्त पराक्रमी था। वह युद्ध में अजेय था। उसके १० हजार पत्नियाँ थीं, जिससे उसके भाग० के अनुसार दस लक्ष सहस्र (विष्णु० के अनुसार १० लक्ष) पुत्र हुए, उनमें पृथुश्रवा आदि छः पुत्र प्रधान थे।

विष्णु० ४।१२।१-२
भाग० ६।२३।३१-३४

शाकद्वीपेश्वर शाकद्वीप का राजा। उसके सात पुत्र थे, जिनके अनुसार शाकद्वीप के अन्तर्गत सात वर्षों (देशों) के नाम पड़े।

विष्णु० २।४।५६ [अग्न० सस्क० गो० ना०]

शातकर्णि [शान्तकर्णि] आन्ध्र वंश। पूर्णोत्संग का पुत्र। वायु० के अनुसार राज्यावधि ५६ वर्ष। ब्रह्माण्ड० के अनुसार उसने एक वर्ष तक राज्य किया। किन्तु पार्जिटर ने स्कन्दस्तम्भि नाम के एक और राजा का उल्लेख किया है। मत्स्य० में पाठ शान्तकर्णि है।

वायु० ९९।३५०
मत्स्य० २७३।४
विष्णु० ४।२४।१२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६९
पार्जिटर, डा० आ० प० ए० पृ० ३९

शान्तनु देखिए, शन्तनु।

भ्रष्ट करने लगा। उसके विमान से नगरी पर शस्त्रों की वर्षा होने लगी। अन्त में सात्यकि, चारुदेष्ण, साम्ब आदि बड़े बड़े महारथियों को साथ लेकर प्रद्युम्न जी युद्धक्षेत्र में शाल्व का सामना करने के लिए आये। यदुवंशियों और शाल्व का घमासान युद्ध सत्ताइस दिनों तक चलता रहा। अन्त में वह श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया।

भाग० १०।६०।१८
वही १०।७६ अ० तथा ७७ अ०

शाल्व (२) (शाल्वान्) एक जनपद। कंस, जब अपने अन्य सहायक राजाओं को साथ लेकर यदुवंशियों को नष्ट करने में उतारू हो गया, तब वे भयभीत होकर कुरु, पञ्चाल, केकय, शाल्व, विदर्भ, निषध, विदेह आदि जनपदों में जा बसे।

भाग० १०।२।१-३

शिनेयु यादव वंश। क्रम संख्या १२। उशना का पुत्र। रुक्मकवच का पिता।

विष्णु० ४।१२।२

शिप्रक [शिशुक, सिन्धुक, वृषल] आन्ध्र वंश का प्रथम राजा। काण्व वंश के अन्तिम राजा सुशर्मा के राज्य में वह कर्मचारी के पद पर था। अपने स्वामी सुशर्मा का वध कर उसने अपना राज्य स्थापित किया। राज्यकाल २३ वर्ष। मत्स्य० में पाठ शिशुक तथा वायु० और ब्रह्माण्ड० में सिन्धुक है। भाग० में पाठ वृषल है।

वायु० ९९।३४८-३४९
विष्णु० ४।२४।१२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६१
भाग० १२।१।२२
मत्स्य० २७३।१

शिबि

चंद्र (पौरव) वंश। आनव शाखा। आनव वंश का १०वां राजा। उशीनर तथा दृषद्वती का पुत्र। शिबि ने अपना राज्य शिवपुर में स्थापित किया। उसके ४ पुत्र थे। वृषदर्भ, सुवीर, कैकय तथा मद्रक। इन्होंने अपने नाम से पृथक् पृथक् जनपदों की स्थापना की।

वायु० ९९।२४–२५

शिव

मेधातिथि के सात पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० २।१४।३७

शिवस्कन्ध

आन्ध्रभृत्य। आन्ध्र वंश का २५ वां राजा। शातकर्णि शिवश्री का पुत्र। राज्यावधि निश्चित नहीं है।

मत्स्य० २७३।१४
विष्णु० ४।२४।११

शिवस्वाति [शिवस्वामी]

आन्ध्र वंश का २१ वां राजा। चकोर-शातकर्णि (चकोर, भाग०) का पुत्र। गौतमीपुत्र का पिता। ब्रह्माण्ड० तथा मत्स्य० के अनुसार राज्यावधि २८ वर्ष। वायु० में पाठ शिवस्वामी है।

मत्स्य० २७३।११
विष्णु० ४।२४।१२–१३
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६७

शिवश्री [शातकर्णी, शान्तिकर्ण]

पुलोमा (पुलोमत्, विष्णु०) का पुत्र। शिवस्कन्ध का पिता। मत्स्य० के अनुसार राज्यावधि सात वर्ष। विष्णु० में शातकर्णी के साथ शिवश्रीः भी

पठित है। मत्स्य० में दोनों शब्द पृथक् पृथक् प्रयुक्त हुए हैं तथा पाठ शान्तिकर्ण है। संभवतः दोनों नाम एक ही व्यक्ति के हैं।

मत्स्य० २७२।१३

विष्णु० ४।२४।१३

शिवशैल [शिवशैलान्] एक जनपद, जो सिन्धुनदी द्वारा सिञ्चित था।

ब्रह्माण्ड० २।१८।४८

शिशिर मेधातिथि के सात पुत्रों में से एक, उसके सभी भाई प्लक्षद्वीप के राजा थे।

ब्रह्माण्ड० २।१४।३६ तथा ३८

शिशुनाक [शिशुनाग] मगध का राजा। प्रद्योत वंश के अंतिम राजा नन्दिवर्धन के बाद यह राजा हुआ जिससे शिशुनाग वंश का आरम्भ हुआ। प्रद्योत वंश को समूल नष्ट कर वह राज्यसिंहासन पर बैठा। भाग० तथा मत्स्य० के अनुसार काकवर्ण का पिता। वायु० के अनुसार शकवर्ण का पिता। राज्यावधि ४० वर्ष। भाग० तथा ब्रह्माण्ड० में पाठ शिशुनाग है।

मत्स्य० २७१।५

वायु० ९९।३१५

भाग० १२।१।५

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१२७

शिशुपाल चेदि-वंश। चेदिराज दमघोष और श्रुतश्रवा का पुत्र। वह भगवान् कृष्ण का परम द्वेषी था। अन्त में उन्हींके हाथों उसकी मृत्यु हुई। देखिये, चेदि (२)।

भाग० ९।२४।४०

वही ७।१।१७

विष्णु० ४।१४। ११-१५

शीघ्र

ऐक्ष्वाकु वंश का राजा। अग्निवर्ण का पुत्र।

वायु० ८८।२१०
विष्णु० ४।४।१०८

शुचि (१)

[illegible]न का पुत्र। सनद्वाज का पिता। देखिए, शतद्युम्न (१)।

भाग० ९।१३।२२

शुचि (२)

पूरु (पौरव) वंश। बार्हद्रथ शाखा। विप्र (विभु, विष्णु०) का पुत्र। क्षेम्य का पिता। मत्स्य० के अनुसार राज्यावधि ५८ वर्ष।

वायु० ९९।३०२
मत्स्य० २७०।२८
विष्णु० ४।२३।६

शुचिरथ

परीक्षित के बाद आठवीं पीढ़ी में। चित्ररथ का पुत्र।

विष्णु० ४।२१।४
वायु० ९९।२७२

शुद्धोदन

ऐक्ष्वाकु वंश। शाक्य का पुत्र। राहुल (राहुल, विष्णु०) का पिता।

विष्णु० ४।२२।४
वायु० ९९।२८८
मत्स्य० २७१।१२

शुनक

बृहद्रथ वंश के अन्तिम राजा पुरञ्जय का मंत्री। इसने अपने स्वामी को मारकर अपने पुत्र प्रद्योत को राजसिंहासन पर बैठाया।

भाग० १२।१।२-३
ब्रह्माण्ड० ३।२३।१८०

शुनामुख (शुनामुखाः) सिन्धु द्वारा सिञ्चित एक जनपद

ब्रह्माण्ड० २।१८।४८
वायु० ४७।४४

शुल्क (कर) राज्यकर, जो वाणिज्य आदि आय पर लिया जाता था। राज्य के अन्दर राजा आयात की वस्तुओं के विक्रय पर लाभ का बीसवाँ भाग कररूप में लेता था। बाहर से आने वाली वस्तुओं पर कर आय-व्यय के निर्णय करने के उपरान्त लिया जाता था, ताकि व्यापारी को भी लाभ हो सके। व्यापारी के लाभ के लिए बीसवा अंश निर्धारित था। इससे अधिक लाभ के लिए वह दण्ड का भागी होता था। राजा को चाहिए कि वह शूकधान्य, औषधि, फल आदि में छठा भाग तथा शिम्बि धान्य में आठवाँ भाग कररूप में ले। स्त्री, सन्यासी तथा ब्राह्मण कर से मुक्त थे।

अग्नि० २२३।२३-३०

शूर (१) देवमीढ का पुत्र। वसुदेव का पिता। देखिए, वसुदेव (१)

भाग० ६।२४।२७-२८
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१४५
विष्णु० ४।१४।८

शूर (२) विदूरथ का पुत्र। भजमान का पिता [१]। ब्रह्माण्ड तथा विष्णु के अनुसार भजमान शूर का पितामह है [२]।

भाग० ९।२४।२६
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१९३
विष्णु० ४।१४।१

शूर (३) मदिरा तथा वसुदेव का पुत्र।
भाग० ९।२४।४८

शूर (४) कृष्ण और भद्रा का पुत्र।
भाग० १०।६१।१७

शूर (५) (शूराः) शूरदेश के निवासी।
भाग० १२।१।३८

शूरसेन (१) कार्तवीर्य अर्जुन के पुत्रों में से एक।
भाग० ९।२३।२७
मत्स्य० ४३।४६
वायु० ९४।४९
हरि० ९९।१२५

शूरसेन (२) यदुवंशी राजा, जो मथुरापुरी में रहते हुए मथुरा तथा शूरसेन विषयों (प्रदेशों) का शासन किया।
भाग० १०।१।२७

शूरसेन (३) [श्रुतसेन] ऐक्ष्वाकु वंशज शत्रुघ्न के दो पुत्रों में से एक। उसने मथुरापुरी की रक्षा की भाग० में पाठ श्रुतसेन है।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।१८७

वायु० ८८।१८६

भाग० ९।११।१४

शूरसेन (शूरसेनाः) (४) मध्य देश का एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।४१

वही ३,१४।१२८

भाग० १।१०।३४

वायु० ४५।११०

शूरसेन (शूरसेनाः) (५) २३ शूरसेन राजा।

मत्स्य० २७३।१७

शैशुवाक (शैशुनाकाः) [शैशुनागाः] शिशुनाक् वंश में होने वाले दस राजा, (अर्थात् शिशुनाग से लेकर महानन्दि तक शिशुनाग, काकवर्ण, क्षेमधर्मा, क्षेत्रज्ञ (क्षत्रौजा, ब्रह्माण्ड०) बिम्बिसार, अजातशत्रु, दर्भक, अजय, नन्दिवर्धन, महानन्दि) जिन्होंने ३६२ वर्ष तक राज्य किया। भाग० तथा ब्रह्माण्ड० के अनुसार राज्यावधि ३६० वर्ष। ब्रह्माण्ड० तथा भाग० में पाठ शिशुनाग है।

वायु० ९९।३२१

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१३३-१३४

भाग० १२।१।५-७

श्यामक [श्याम] शूर और मारिषा (मारिषी, ब्रह्माण्ड०) का पुत्र। वसुदेव का भ्राता। उसकी शूरभूमि (शम्भू) पत्नी थी, जिससे उसके हरिकेश तथा हिरण्याक्ष नामक पुत्र हुए। ब्रह्माण्ड० में पाठ श्याम है।

भाग० ९।२४।२६ तथा ४२
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५०

श्रावस्त [शावस्त] ऐक्ष्वाकु वंश। युवनाश्व का पुत्र। बृहदश्व का पिता। इसने श्रावस्ती पुरी बसायी। भाग० में पाठ शावस्त है।

वायु० ८८।२६-२७
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२७-२८
भाग० ९।६।२१
विष्णु० ४।२।

श्रीदेवा देवकी की पुत्री। वसुदेव की पत्नी।

भाग० ९।२४।२३-५१
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१३१
वही ३।७१।१६२-१८१
वायु० ९६।१३०

श्रीशान्तकर्ण [श्रीशान्तिकर्णि] आन्ध्र वंश। पौरी संख्या २। कृष्ण का पुत्र। राज्यावधि ५६ वर्ष। विष्णु० के अनुसार पूर्णोत्सङ्ग (पौर्णमास, भाग०) श्रीशान्तकर्णि का पिता। ब्रह्माण्ड० में पाठ श्रीशान्तकर्णि तथा भाग० में भी शान्तकर्णी है।

विष्णु० ४।२४।१२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६२
भाग० १२।१।२३

श्रुत ऐक्ष्वाकु वंश। राजा भगीरथ का पुत्र और नाभाग का पिता। मत्स्य० में श्रुत का नाम नहीं है। वहाँ भगीरथ का पुत्र नाभाग माना गया है। "भगीरथस्य तनयो नाभाग इति विश्रुत"।

वायु० ८८।१७०
मत्स्य० १२।४५

श्रुतकीर्ति (१) अर्जुन और द्रौपदी का पुत्र।

भाग० ६।२२।२६
मत्स्य० ५०।५२
विष्णु० ४।२०।११

श्रुतकीर्ति (२) शूर और मारिषा की पाँच पुत्रियों में से एक। वसुदेव की बहिन। केकय देश के राजा धृष्टकेतु के साथ उसका विवाह हुआ। उसके सतर्दन आदि पाँच पुत्र हुए। उनकी भद्रा नाम की पुत्री थी जो कृष्ण को ब्याही गयी।

१—भाग० ६।२४।३०
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५०,१५७
२—भाग० १०।५८।५६

श्रुतकर्मा सहदेव और द्रौपदी का पुत्र।

भाग० ६।२२।३०
मत्स्य० ५०।५२
विष्णु० ४।२०।११

श्रुतञ्जय चंद्र (पौरव) वंश। बार्हद्रथ शाखा। सेनजित् का पुत्र। वायु० तथा मत्स्य० में यह स्पष्ट नहीं कि यह (सेनजित्) का पुत्र है। विष्णु के अनुसार विप्र का पिता।। राज्यावधि ४० वर्ष।

विष्णु० ४।२३।३
मत्स्य० २७०।२३
वायु० ६६।३००

श्रुतदेवा [श्रुतदेवी] शूर और मारिषा की पुत्रियों में से एक, जो कृष्ण देश के अधिपति वृद्धशर्मा को ब्याही गयी। दन्तवक्त्र (दन्तवक्र, ब्रह्माण्ड०) की माता। मत्स्य० में पाठ श्रुतिदेवी है।

भाग० ९।२४।३०–३७
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५० ५६
मत्स्य० ४६।५

श्रुतश्रवा (१) शूर और मारिषा की पुत्रियों में से एक। वसुदेव की बहिन। उसका चेदिराज दमघोष से पाणिग्रहण हुआ। वह चैद्य शिशुपाल की माता थी।

भाग० ९।२४।३०
वही ९।२४।३९–४०
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१५२

श्रुतश्रवा (२)[श्रुतवान्] चंद्र (पौरव) वंश। मगध-शाखा। सहदेव का पौत्र। सोमापि (सोमाधि, मत्स्य०, सोमावि, वायु०) का पुत्र। मत्स्य० के अनुसार राज्यावधि ६४ वर्ष। भाग० में दूसरे स्थान पर उसी प्रकरण में श्रुतश्रवा मार्जारि का पुत्र कहा गया है। वायु०, ब्रह्माण्ड० तथा मत्स्य० में दूसरे स्थान पर यह स्पष्ट नहीं है कि श्रुतश्रवा सोमाधि का पुत्र है, वहाँ सोमाधि के पुत्र में यह अस्पष्ट है। विष्णु० में पाठ श्रुतवान् है।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।११०–१११
भाग० ९।२२।९
विष्णु० ४।२३।३
मत्स्य ५०।१६
वायु० ९९।२९८ तथा २९७
मत्स्य० २७१।१८

श्रुतसेन (१) देखिए, शूरसेन (३)

श्रुतसेन (२) भीमसेन और द्रौपदी का पुत्र।

भाग० ६।२२।२६
मत्स्य० ५०।५।२

श्रुतसेन (३) परीक्षित के चार पुत्रों में से एक।

भाग० ६।२२।३८

श्रुतानीक नकुल और द्रौपदी का पुत्र।

विष्णु० ४।२०।११

श्रुतायु (१) निमिवंश का ३२ वां राजा। अरिष्टनेमि का पुत्र। सुपार्श्व का पिता।

विष्णु० ४।५।१२
भाग० ६।१३।२३

श्रुतायु (२) पुरूरवा और उर्वशी का पुत्र। वसुमान् का पिता।

भाग० ६।१५।१-२
ब्रह्माण्ड० ३।६६।२३

श्रुतायु (३) भानुश्चन्द्र का पुत्र, जो भारत संग्राम में मारा गया।

मत्स्य० १२।५५

श्वफल्क — वृष्णि के दो पुत्रों में से एक। चित्रक का भाई। श्वफल्क की पत्नी का नाम गान्दिनी था, जो काशिराज की पुत्री थी। उससे अक्रूर आदि बारह पुत्र उत्पन्न हुए। उसकी बहन सुचीरा थी। श्वफल्क परम धार्मिक राजा था। उसके राज्य में व्याधि, दुर्भिक्ष आदि नहीं होते थे।

भाग० ९।२।२२
वही ६।२४। १५–१७
ब्रह्माण्ड० ३।७१। १०२–१०६

श्वमुख (श्वमुखान्) — नलिनी नदी द्वारा सिंचित एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१८।७

श्वसृप — हिरण्यकश्यपु के तेरह दानवों में से एक।

मत्स्य० १६।६–२७

श्वापद — एक असुर जिसका नगर तलतल में कहा गया है।

ब्रह्माण्ड० २।२०।१८

श्वेत (१) — पाताल लोक के प्रमुख नागों में से एक।

भाग० ५।२४।३१

श्वेत (२) — एक दैत्य। विप्रचित्ति का पुत्र, जिसने देवताओं के विरुद्ध युद्ध में दानवों की ओर से भाग लिया।

मत्स्य० १७३।१८ १७६।१७

श्वेत (श्वेतम्) — जम्बूद्वीप के वर्षों (देशों) में से एक, जिसमें आग्नीध्र ने अपने पुत्र हिरण्वान् को राजा बनाया।

ब्रह्माण्ड० २।१४।४०

श्वेत (श्वेताः) एक राजवंश, जिसका उल्लेख काश्य, कुश आदि के साथ हुआ है।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।२६८

पट्पुर (पट्पुराः) विन्ध्यपृष्ठ में स्थित एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।६५

वायु० ४५।१३३

षष्ठम् (अंशम्) उपज का छठा भाग, जो प्राचीन काल में राज्य कर के रूप में लिया जाता था। राजर्षि गय को ब्राह्मणों ने अपने पुण्य का छठा अंश दिया।

भाग० ५।१५।११

षाड्गुण्यविधि छः प्रकार की नीति (गुण)। अभिषिक्त राजा के कर्तव्य में कहा गया है कि उसे सन्धि-विग्रहिक के पद में नयविशारद तथा षाड्गुण्यविधि के मर्मज्ञ को नियुक्त करना चाहिए। सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव तथा संश्रय षड्गुण्य के अंतर्गत आते हैं।

१—मत्स्य० २१५।१६

२—अग्नि० २३४।१७

संग्रामजित् कृष्ण और भद्रा का पुत्र।

भाग० १०।६१।१७

संयाति पौरव वंश का १३वां राजा। बहुगव का पुत्र। अहंयाति का पिता।

विष्णु० ४।१६।१

संश्रय षाड्गुण्य के अन्तर्गत छठा गुण, जिसे उदासीन अथवा मध्यम कहा गया है। दूसरे राजा से सहायता लेना संश्रय है। विजिगीषु को यह नीति (गुण) उस समय अपनानी चाहिए, जब उससे अधिक बलवान् राजा उस पर आक्रमण करे, और जब वह सब प्रकार की शक्ति से रहित हो। संश्रय-नीति को सब नीतियों (गुणों) में अधम माना गया है—"संश्रयस्तेन वक्तव्यो गुणनामधमो गुणः।" किन्तु परिस्थितिवश जब राजा को इस नीति

को अपनाना आवश्यक हो तो उसे चाहिए कि वह दूसरे बलवान राजा का आश्रय ले।

अग्नि० २१४।२० तथा २४
वही २४०।११-१२

सगर

ऐक्ष्वाकु वंश। बाहु (वृक, भाग०, बाहु, मत्स्य०) का पुत्र। हैहय, तालजंघ, शक, यवन, पारद, पह्लव आदि शत्रुओं से पराजित होकर राजा बाहु अपनी गर्भवती पत्नी के साथ और्व के आश्रम में चले गये। उनकी रानी गर्भवती थी। यह जानकर उसकी सौतों ने उसे विष दे दिया, किन्तु गर्भ पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसी बीच बाहु की अकस्मात् मृत्यु हो गयी। उसकी गर्भवती पत्नी ने सती होने का निश्चय किया, किन्तु त्रिकालदर्शी ऋषि और्व ने रानी को समझाया कि तुम्हारे गर्भ में बालक है, जो चक्रवर्ती राजा होगा। अतः तुम्हें अपने प्राणों की रक्षा करनी चाहिए इसके उपरान्त और्व के आश्रम में रानी के गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ और चूँकि वह विष (गर) के साथ ही पृथ्वी में आया, इसलिए उसका नाम सगर पड़ा। सगर चक्रवर्ती राजा हुए। महाभारत० के अनुसार राजा सगर ने अपनी दिग्विजय में अनेक राजाओंको पराजित किया। अन्त में उन्होंने अपने पूर्व वैर का स्मरण करते हुए हैहयों को पराजित किया और उनकी नगरी को भस्म कर दिया, इसके साथ ही उनके राज्य को भी नष्ट भ्रष्ट कर दिया। इसके उपरान्त जब सगर ने काम्बोज, तालजंघ, शक, यवन, पह्लव, पारद आदि शत्रुओं पर आक्रमण किया, तब वे भयभीत होकर वसिष्ठ जी की शरण में गये। वसिष्ठ की आज्ञा से सगर ने उनके प्राणों का हरण तो नहीं किया किन्तु उन्हें विरूप कर धर्म से वंचित कर दिया, जिससे वे वेदोक्त कर्मों के अधिकारी नहीं रह गये। सगर की पहली रानी सुमति थी, जिससे ६० हजार पुत्र उत्पन्न हुए, किन्तु वे सब कपिल मुनि की कोपाग्नि में भस्म होगये। उनकी दूसरी रानी का नाम केशिनी था, जिससे असमञ्जस नामक पुत्र हुआ, जो बाद में अंशुमान् का पिता हुआ। सगर ने अपने पौत्र अंशुमान् को राज्य का भार सौंप दिया। मत्स्य० के अनुसार सगर की दो रानियों का नाम प्रभा तथा भानुमती था।

मत्स्य० १२।३६-४३
विष्णु० ४।३।१५-२१
विष्णु० ४।४।१-१६
भाग० ६।८ अ०
ब्रह्माण्ड० ३।५४ अ०

सचिव (सचिवाः) अमात्य। सचिव शब्द का प्रयोग प्रायः बहुवचन में किया गया है; जिस प्रसंग में यह प्रयुक्त हुआ है, उससे यही बोध होता है, कि सचिव शब्द किसी विशेष मंत्रिपद के लिए रूढ़ न होकर साधारणतया राजा के सभी अमात्यों के लिए है। कौटिल्य ने भी सचिव शब्द का प्रयोग बहुवचन में किया है। सचिव पद के लिए आवश्यक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-सचिव कुलीन हों, आचरण के पवित्र हों, साहसी, वेदों का ज्ञान रखने वाले, अनुरागी, दण्डनीति का सम्यक् प्रयोग करने वाले हों, मैत्री भाव रखने वाले, कठिनाइयों को सहनेवाले, सत्यभाषी, सत्त्वयुक्त, दृढ़ और स्थिरप्रकृति आरोग्य, स्वामी के प्रति दृढ़ भक्ति वाले तथा व्यर्थ की शत्रुता न रखने वाले हों। वे प्राज्ञ हों, अच्छी स्मरण एवं धारणा शक्ति वाले हों और अनेक शिल्पों के जानने वाले हों।

अग्नि० २३६।६-१६
मत्स्य० १४७।३२
कौटिल्य अर्थशास्त्र १।३।१

सञ्जय (१) निमिवंश का ३४ वां राजा। सुपार्श्व का पुत्र। क्षेमारि का पिता।

विष्णु० ४।५।१२
वायु० ८६।२१

सञ्जय (२) ऐक्ष्वाकु वंश। रणञ्जय का पुत्र। शाक्य का पिता।
भाग० ६।१२।१३-१४

सत्यकेतु — चन्द्र (पौरव) वंश। काशि-शाखा। काशिराज की १४ वीं पीढ़ी में। धर्मकेतु का पुत्र। धृष्टकेतु का पिता। विष्णु० के अनुसार विभु का पिता।

विष्णु० ४।८।६
भाग० ९।१७।८-९
ब्रह्माण्ड० ३।६७।७१
वायु० ९२।७०

सत्यजित् — चन्द्र (पौरव) वंश। बार्हद्रथ शाखा। सुनेत्र का पुत्र[१]। राज्यावधि ८३ वर्ष।

वायु० ९९।३०७
विष्णु० ४।२३।३

सत्यधृत — देखिए, सत्यधृति (२)

सत्यधृति (१) — चन्द्र (पौरव) वंश। द्विमीढ-शाखा। धृतिमान (कृतिमान्, भाग०) का पुत्र। दृढनेमि का पिता।

वायु० ९९।१८४
विष्णु० ४।१९।१२
भाग० ९।२१।२७

सत्यधृति (२) [सत्यहित] [सत्यधृत] — चन्द्र (पौरव) वंश। बृहद्रथ द्वारा प्रवर्तित, मगध-शाखा। पुष्पवान्, (पुष्यवान्, मत्स्य०,) का पुत्र। भाग० में स्पष्ट नहीं है कि वह किसका पुत्र है। सुधन्वा का पिता। वायु० तथा भाग० में पाठ सत्यहित है। विष्णु० में पाठ सत्यधृत है।

वायु० ९९।२२४
भाग० ९।२२।७
विष्णु० ४।१९।१९
मत्स्य० ५०।३०

सत्यधृति (३) चन्द्रवंश। शतानन्द का पुत्र, जो धनुर्वेद में दक्ष था। शरद्वान् का पिता।

भाग० ९।२१।३५

सत्यरथ (१) सूर्य वंश। सत्यव्रत का पुत्र। हरिश्चन्द्र का पिता।

मत्स्य० १२।३७–३८

सत्यरथ (२) निमिवंश की ३८ वीं पीढ़ी में। मीनरथ का पुत्र।

विष्णु० ४।५।१२

सत्यरथ (३) चित्ररथ का पुत्र। दशरथ का पिता।

मत्स्य० ४८।४६

सत्यवती शान्तनु की दूसरी पत्नी। विचित्रवीर्य तथा चित्राङ्गद की माता।

विष्णु० ४।२०।१०

सत्यवान् (१) [सत्यवाक्] चक्षु (चाक्षुष, ब्रह्माण्ड०) मनु के १२ पुत्रों में से एक। ब्रह्माण्ड० तथा विष्णु० में पाठ सत्यवाक् है।

ब्रह्माण्ड० २।३६।७९–८०
विष्णु० ३।१।१५
भाग० ४।१३।१६

सत्यवान् (२) द्युमत्सेन का पुत्र। सावित्री का पति।

मत्स्य० २०८।१२–१४

सत्यव्रत (१) ऐक्ष्वाकु वंश। वंश-पीढ़ी क्रम संख्या २६। त्रय्यारुणि का पुत्र। उसके आचरण से क्रुद्ध होकर उसके पिता ने आज्ञा दी कि वह चाण्डालों की भाँति जीवन निर्वाह करता हुआ उनके बीच रहे। उसने विदर्भ की रानी का अपहरण किया था। देखिए, त्रिशङ्कु।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।७७-११३
हरिवंश १२।१२-२४
वही १३।१-२३

सत्यव्रत (२) मत्स्यावतार के समय द्रविड़ देश के राजा (द्रविडेश्वर) थे, जो अपनी तपस्या के कारण भविष्य में विवस्वान् के पुत्र हुए और श्राद्धदेव के नाम से विख्यात हुए।

भाग० ८।२४ १०

सत्यश्रवस् वीतिहोत्र का पुत्र। उरुश्रवा का पिता।

भाग० ६।२।२०

सत्यहित देखिए, सत्यधृति (२)।

सत्या (१) प्रियव्रत-वंश। मन्यु की रानी तथा भौवन की माता।

भाग० ५।१५।१५

सत्या (२) कोशल-नरेश नग्नजित् की पुत्री नाग्नजिति। कृष्ण की रानी।

भाग० १०।५८।३२-५२
ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४२
मत्स्य० ४७ १३

सन्धि नहीं करनी चाहिए, जिनमें बाल, वृद्ध, रोगी, भाई-बन्धुओं से परित्यक्त, भीरु, विषयों में आसक्त, विरक्त, दुर्भिक्ष तथा व्यसनों से घिरा हुआ, जिस राजा की सेना सुदृढ़ न हो, आदि। "एतैः सन्धिं न कुर्वीत"।

१—अग्नि० २३६।७-६
२—वही २४०।६
३—वही २३४।२०
४—वही० २३८।२२
५—वही २४०।१०-१८

सन्धिविग्रहिक [सान्धिविग्रहिक]

इसे राजा का परराष्ट्र मंत्री कहना अधिक संगत होगा। षाड्गुण्य अर्थात् छः प्रकार के उपायों (सन्धि विग्रह, आसन, यान, संश्रय तथा द्वैधीभाव) के संचालन में राजा का परामर्शदाता सन्धिविग्रहिक होता था। सन्धि और विग्रह को षाड्गुण्य नीति का मुख्य आधार माना गया है इसीलिए सम्भवतः परराष्ट्र मंत्री को सन्धिविग्रहिक कहा गया है। सन्धिविग्रहिक की विशेषताएँ इस प्रकार हैं—वह षाड्गुण्य के विभिन्न पहलुओं को अच्छी तरह समझने वाला हो, नीति में कुशल हो तथा अनेक भाषाओं का जानने वाला हो। वह युद्ध में भी राजा के साथ रहता था। चन्द्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरि शिलालेख से पता चलता है कि उसका सचिव वीरसेन जो अपने को सन्धिविग्रहिक कहता है, चन्द्रगुप्त के साथ मालवा के युद्ध में था।

अर्थशास्त्र ६।६८—६६
अग्नि० २३४ अ६
वही २४० अ०
मनु० ७, १५६—१८०
मत्स्य० २१५।१६
फ्लीट-गुप्त इन्स्क्रिप्शन्स पृ० ३५-३६

सन्नति

चंद्र (पौरव) वंश। द्विमीढ-शाखा। सन्नतिमान् का पुत्र। कृत का पिता। देखिए, सन्नतिमान्।

वायु० ८६।१८

समासद

ये राज्य की न्याय-सभा के सदस्य होते थे, जिनका कार्य अपराधियों के दोषों की परीक्षा एवं उचित दण्ड निर्णय करना था। समासद अधिकांश ब्राह्मणों में से चुने जाते थे। क्षत्रिय और वैश्य भी परिस्थिति विशेष के कारण उसके सदस्य हो सकते थे। शूद्र न्याय-सभा के सदस्य नहीं हो सकते थे। कहा गया है कि समासद द्विज-मुख्य ही होने चाहिए। इसका मुख्य कारण यही समझ में आता है कि समासदों को धर्मशास्त्र का सम्यक् ज्ञान होना आवश्यक था। धर्मशास्त्रों का अध्ययन ब्राह्मणों का एकमात्र व्यवसाय समझा जाता था। किन्तु यह स्मरण रहे कि क्षत्रियों और वैश्यों को समासद होना निषिद्ध नहीं था।

मत्स्य० २१५।२५
विष्णु० ३।२४।२५

समर

चन्द्र (पौरव) वंश। द० पाञ्चाल शाखा। पीढ़ी क्रम संख्या ११। नीप के १०० पुत्रों में ज्येष्ठ समर था। वह काम्पिल्याधिपति के नाम से सम्बोधित किया गया है। किन्तु मत्स्य० में यह स्पष्ट नहीं है कि वह नीप का पुत्र था, वहाँ वह काव्य का पुत्र प्रतीत होता है।

वायु० ९९।१७६
मत्स्य० ४९।५४
विष्णु० ४।१९।११

सम्राट् (१)

अमरसिंह के अनुसार राजसूययज्ञ करनेवाला, मण्डलेश्वर का अधिपति तथा अन्य राजाओं पर शासन करनेवाला सम्राट् है[१]। वायु० के अनुसार वह सम्पूर्ण भारत वर्ष को जीतने वाला होता है[२]। "कृत्स्नं जयति यो ह्येन स सम्राडिति कीर्त्यते।" सम्राट् हरिश्चन्द्र (ऐक्ष्वाकु) राजसूय यज्ञ करने वाले थे[३]।

१—अमरकोश द्वि० क्षत्रि० ८।२
२—वायु० ४५।८६
३—वायु० ८८।११७

सम्राट् (२) — प्रियव्रत कुल में चित्ररथ और ऊर्णा का पुत्र। मरीचि का पिता।

भाग० ५।१५।१४

सरघा — प्रियव्रत वंश में बिन्दुमान् की रानी। मधु की माता।

भाग० ५।१५।१५

सर्वकाम — ऐक्ष्वाकु वंश का राजा। ऋतुपर्ण का पुत्र। सुदास का पिता।

वायु० ८८।१७५
विष्णु० ४।४।१६

सव्यसाचिन् — अर्जुन का नाम।

महाभा० १।२।११

सहदेव (१) — पाण्डु की दूसरी पत्नी माद्री से दोनों अश्विनीकुमारों द्वारा सहदेव और नकुल का जन्म हुआ। सहदेव का द्रौपदी से उत्पन्न पुत्र श्रुतकर्मा था। सहदेव की दूसरी पत्नी विजया से सुहोत्र नामक पुत्र हुआ।

भाग० ९।२२।२८-३१
महाभा० १।७।११५५
मत्स्य० ४६।१०
वायु० ९९।२५४

सहदेव (२) — सूर्य (मानव) वंश। नाभागनेदिष्ट शाखा। पीढ़ी-क्रम-संख्या २९। हर्यश्व का पुत्र।

वायु० ८८।१६–२०
विष्णु० ४।११।८
ब्रह्माण्ड० ३।६९।१४

सहदेव (३)

चंद्र (पौरव) वंश। उत्तर पाञ्चाल शाखा। सुदास का पुत्र। सोमक का पिता। देखिए, सुदास।

वायु० ९९।२०८
विष्णु० ४।१९।१८
भाग० ९।२२।१

सहदेव (४)

चंद्र (पौरव) वंश। मगध-शाखा। जरासन्ध का पुत्र। सोमापि (सोमाद्रि मत्स्य०) का पिता।

वायु० ९९।२९७
विष्णु० ४।१९।१९
मत्स्य० ५०।३२
भाग० ९।२२।९

सहदेवा

देवक की पुत्री। वसुदेव की रानी। आठ पुत्रों की माता।[1]

भाग० ९।२४।२३ तथा ५२
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१३१७८
वायु० ९६।१७३

सहस्रजित्

यदु का पुत्र। शतजित् का पिता। उसी के नाम से सहस्रजित् की शाखा के लोग हैहय कहलाये।

१—विष्णु० ४।११।१.

साम

नीति के चार अंगों में से एक। उसके अन्य अंग-भेद, दान, तथा दण्ड हैं[1]। सात उपायों में से एक। सामप्रयोग दो प्रकार का कहा गया है। अतथ्य और अतथ्य।[2]

१—मत्स्य० १४७।६५-७७
विष्णु० ५।२२।१७
२—मत्स्य० २२२ अ०

सामन्त

किसी बड़े राज्य के पड़ोसी राजा।

ब्रह्माण्ड० ३।२७।१२
वही० ३।२८।१२
वही० ३।३८।२०
वही० ३।७४।१२४

साम्ब

कृष्ण और जाम्बवती के पुत्र। वे अनिरुद्ध के विवाहोत्सव में द्वारकावासियों के साथ भोजकटक नगर में गये। १२ अक्षौहिणी सेना सहित कृष्ण बलराम, प्रद्युम्न आदि के साथ साम्ब भी थे। बाणासुर की नगरी को घेरने के समय साम्ब बाणासुर के पुत्रों के साथ लड़े।

भाग० १।१०।२६
वही० १।११।१७
वही० १।१४।३१
वही० ३।१।३०
वही० १०।६१।१७
मत्स्य० ४६।२७
वही० ४७।१८
भाग० १०।६३।३, ८

सारथि

राजा के रथ का चालक। युद्ध में सारथि राजा का आवश्यक कर्मचारी था। वह शुभ लग्न तथा शकुन के सम्बन्ध में राजा को परामर्श देता था। युद्ध

यात्रा के प्रस्थान करने से पहले शुभ लक्षणों तथा मुहूर्त का ज्ञान होता था। वह अश्वविद्या में दक्ष था तथा उसे अश्व-चिकित्सा का भी ज्ञान था। स्थिरदृष्टि, रथ में बैठकर लड़ने वाले योद्धाओं की शक्ति तथा दुर्बलता का ध्यान रखना, नियमचारी होना, भूभाग का ज्ञान रखना, तथा अपनी विद्या में दक्ष होना, सारथि के विशेषरूप से गुण कहे गये हैं।

मत्स्य० २१५।२०-२१

सार्वभौम (१)

चन्द्र (पौरव) वंश। द्विमीढ शाखा। सुधर्मा (सुधन्वा, मत्स्य०) का पुत्र। सार्वभौम एक विख्यात राजा था।

वायु० ९९।१८९
मत्स्य० ४९।७२

सार्वभौम (२)

चन्द्र-वंश। विदूरथ का पुत्र। जयत्सेन का पिता।

विष्णु० ४।२०।१२

सावित्री

मद्र देश के राजा अश्वपति की रानी मालती से उत्पन्न पुत्री। देखिए, सत्यवान् (२)

मत्स्य० २०७।५-१०

साहञ्जि

हैहय की चौथी पीढ़ी में। कुन्ति का पुत्र। महिष्मान् का पिता।

विष्णु० ४।११।९

सिन्धुद्वीप

ऐक्ष्वाकु वंश का राजा। अम्बरीष का पुत्र।

वायु० ८८।१७१

सीरध्वज — निमि-वंश की २२ पीढ़ी में। ह्रस्वरोमन् का पुत्र। सीरध्वज सीता के पिता थे। एक समय जब ये सन्तानार्थ अश्वमेधयज्ञ के लिए यज्ञ-भूमि जोत रहे थे उसी समय भूमि में उन्हें सीता मिलीं।

वायु० ८९।१५
विष्णु० ४।५।१२
भाग० ९।१३।१८–१९

सुकुमार (१) — चद्र (पौरव) वंश। सुविभु का पुत्र। काशिराज की १७ वीं पीढ़ी में। धृष्टकेतु का पिता।

विष्णु० ४।८।९
ब्रह्माण्ड० ३।६७।७१
वायु० ९२।७१

सुकुमार (२) — क्षत्रवृद्ध-वंश। धृष्टकेतु का पुत्र। वीतिहोत्र का पिता। वह राजा था।

भाग० ९।१७।९

सुकवि [सुकृत] — चद्र (पौरव) वंश। वंश-पीढ़ी-क्रम १४। पृथु का पुत्र। विभ्राज का पिता। मत्स्य० में पाठ सुकृत है। वायु० में यह पृथु का पुत्र कहा गया है, जो भ्रष्ट प्रतीत होता है।

वायु० ९९।१७८
विष्णु० ४।१९।१२
मत्स्य० ४९।४४

सुकेतु (१) — निमि-वंश का पांचवाँ राजा। नन्दिवर्धन का पुत्र। देवरात का पिता।

वायु० ८९।७
विष्णु० ४।५।१२

सुकेतु (२)
औत्तम मनु का पुत्र।
ब्रह्मांड० २।३६।४०
वायु० ६२।३४

सुकेतु (३)
सगर का पुत्र।
ब्रह्मांड० ३।६३।१४०

सुकेतु (४)
केतुमान् का पुत्र। धर्मकेतु का पिता।
ब्रह्मांड० ३।६७।७४

सुकेतु (५)
चंद्र (पौरव) वंश। काशि-शाखा। काशिराज की १२ वीं पीढ़ी में। सुनीथ का पुत्र। धर्मकेतु का पिता।
विष्णु० ४।८।६

सुक्षत्र
चंद्र (पौरव) वंश। बार्हद्रथ शाखा। निरामित्र (निरमित्र, विष्णु०) का पुत्र। बृहत्कर्मा का पिता। वायु० तथा मत्स्य० के अनुसार राज्यावधि ५६ वर्ष। मत्स्य में पाठ सुरक्ष तथा वायु० में सुक्षत्र है।
वायु० ९९।२९९
मत्स्य० २७१।२२
विष्णु० ४।२३।३
ब्रह्मांड० ३।७४।११२

सुखावल
परीक्षित के बाद १८ वीं राजा। नृचक्षु का पुत्र। परिप्लव का पिता।
विष्णु० ४।२१।२

सुखोदय मेधातिथि के सात पुत्रों में से एक, जिसके नाम से सुखोदय वर्ष का नाम पड़ा।

ब्रह्माण्ड० २।१४।२६ तथा ३८

सुग्रीव एक हरियूथप। विरजा और महेन्द्र का पुत्र। बाली का छोटा भाई। उसकी स्त्री का नाम रूमा था।[1] नील और हनुमान के साथ सुग्रीव भी राम की सहायता के लिए लङ्का गया था। राम के राज्याभिषेक के समय उसने व्यजन ग्रहण किया था[2]।

१—ब्रह्माण्ड० ३।७।२१५
वही० ३।७।२२१
२—भाग० ६।१०।१६, १६ तथा ४३

सुचन्द्र सूर्य (मानव वंश)। नाभागनेदिष्ट शाखा। पीढ़ी-क्रम संख्या २६। हेमचंद्र का पुत्र।

वायु० ८६।१८
विष्णु० ४।१।२०

सुचारु यादव-वंश। वृष्णि शाखा। श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र।

विष्णु० ५।२८।२
भाग० १०।६१।८

सुज्येष्ठ [वसुज्येष्ठ] शुङ्ग-वंश। शुङ्ग-वंश का तीसरा राजा। अग्नि-मित्र का पुत्र। वसुमित्र का पिता। राज्यावधि सात वर्ष। विष्णु० में पाठ वसुज्येष्ठ है।

विष्णु० ४।२४।१०
वायु० ६६।३३८
मत्स्य० २७२।२७
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५१

सुतपा चन्द्र (पौरव) वंश। तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित पूर्वी आनव शाखा। अनु की १२ वीं पीढ़ी में। हेम का पुत्र।

वायु० ९९।२६

सुदक्षिण काशिपति का पुत्र। उसने कृष्ण को मारने की इच्छा से द्वारका में चढ़ाई की, अन्त में उसे स्वयं अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा।

भाग० १०।६६।२७-४०

सुदर्शन (१) [चक्र] भगवान् कृष्ण का अस्त्र।

भाग० १।७।१२

सुदर्शन (२) ऐक्ष्वाकु-वंश का राजा। ध्रुवसन्धि का पुत्र। अग्निवर्ण का पिता।

वायु० ८८।२०६
विष्णु० ४।४।१०६
भाग० ९।१२।५
ब्रह्माण्ड० ३।६३।२०६

सुदर्शन (३) महाराज भरत और पञ्चजनी के ५ पुत्रों में से एक। उसका एक भाई सुमति भी था।

भाग० ५।७।३

सुदास (१) ऐक्ष्वाकु वंश का राजा। सर्वकाम का पुत्र। कल्माषपाद, (मित्रसह) का पिता।

भाग० ९।९।१८
वायु० ८८।१७६
विष्णु० ४।४।३८

सुदास (२) बृहद्रथ का पुत्र। शतानीक का पिता।

भाग० ९।२२।४३

सुदास (३) चन्द्र (पौरव) वंश। च्यवन का पुत्र। सहदेव का पिता।

भाग० ९।२२।१

विष्णु० ४।१९।१८

सुदेव (१) चम्प का पुत्र। विजय का पिता।

भाग० ९।८।१

सुदेव (२) देवक के चार पुत्रों में से एक।

भाग० ९।२४।२२

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१३०

मत्स्य० ४४।७२

वायु० ९६।१२९

सुदेव (३) चञ्चु के दो पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।११८

वायु० ८८।१२०

सुदेव (४) कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।२४५

सुदेष्णा राजा बलि की रानी, जिसके गर्भ से दीर्घतमस् मुनि द्वारा पाँच क्षेत्रज पुत्र हुए।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।२४-८८

सुनय (२) परीक्षित के बाद १६ वां राजा, जो परिप्लव के बाद गद्दी पर बैठा।

विष्णु० ४।२१।३

सुनामन् (१) उग्रसेन का पुत्र। कंस का भाई।

भाग० ६।२४।२४

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१३३

मत्स्य० ४४।७४

वायु० ६६।१३२

सुनामन् (२) (सुनामा) देवकी और वसुदेव का पुत्र।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।१८३

सुनीत बृहद्रथ-वंश। सुव्रत का पुत्र। सत्यजित् का पिता।

विष्णु० ४।२३।३

सुनीति राजा उत्तानपाद की रानी। उसकी दूसरी रानी का नाम सुरुचि था। ध्रुव की माता।

भाग० ४।८।८। तथा ६४

सुनीथ (१) । परीक्षित के बाद का ११ वां राजा। सुषेण का पुत्र। नृचक्षु (नृप, विष्णु०) का पिता।

विष्णु० ४।२१।३

भाग० ६।२२।४१

सुनीथ (२) चन्द्र (पौरव) वंश। काशि-शाखा। काशिराज की ११ वीं पीढ़ी में। सन्नति (सन्नति, वायु०) का पुत्र। सुकेतन (सुकेतु, वायु०) का पिता।

विष्णु० ४।८।६

वायु० ९२।७८

भाग० ९।१७।९

ब्रह्माण्ड० ३।६७।६८

सुनीथा अङ्ग की रानी। वेन की माता।

भाग० ४।१३।१८

सुनेत्र (१) चन्द्र (पौरव) वंश। बार्हद्रथ शाखा। ब्रह्माण्ड० में सुमति के बाद सुनेत्र का नाम है। किंतु वायु० में सुचल के बाद सुनेत्र का नाम आता है। राज्यावधि ४० वर्ष।

वायु० ९९।३०१

ब्रह्माण्ड० ३।७४।११६

सुनेत्र (२) अनुयम के पश्चात् आने वाला राजा, जिसने १५ वर्ष तक राज्य किया।

मत्स्य० २७०।२९

सुन्दर शातकर्णि आन्ध्र वंश। पुरीन्द्रसेन (प्रविल्लसेन,) का पुत्र। चकोर. शातकर्णि का पिता। राज्यावधि १ वर्ष।

मत्स्य० २७३।११

विष्णु० ४।२४।१२

सुपार्श्व (१) ऐक्ष्वाकु वंश का राजा। पीढ़ी-क्रम संख्या ११। [illegible] का पुत्र। [illegible] का पिता।

विष्णु० ४।५।३१

सुपार्श्व (२) चन्द्र (पौरव) वंश । दृढनेमि का पुत्र । सुमति का पिता ।

भाग० ९।२१।२७–२८

विष्णु० ४।१९।१३

सुपार्श्व (३) चन्द्र (पौरव) वंश । रुक्मरथ का पुत्र ।

वायु० ९९।८८

मत्स्य० ४९.७३

सुप्रतीक प्रवीर के बाद आने वाला राजा, जिसने ३० वर्ष तक राज्य किया ।[1] ब्रह्माण्ड० में दूसरे स्थान पर गंगा और विन्ध्य के मध्य में स्थित सुप्रतीक के नगर की चर्चा की गई है किन्तु नगर का नाम नहीं है ।[2] एक बाल्हीक राजा ।[3]

१—ब्रह्माण्ड० ३।७४।१८६

२—वही ३।७।३४७

३—वायु० ९९।३७७

सुप्रभ शाल्मल के राजा वपुष्मत् का सप्तम पुत्र । उसी के नाम से जनपद का भी नाम पड़ा, जिसका वह शासक बना ।

ब्रह्माण्ड० २।१४।१२ तथा ३४

वायु० ३३।२८

सुबल सुनीत का पिता । देखिए, सुमति ।

विष्णु० ४।२३।३

सुबाहु ऐक्ष्वाकु वंश । शत्रुघ्न के दो पुत्रों में से एक ।[1] उसने मथुरापुरी का शासन किया ।[2]

सुमति (३)

अरिष्टनेमि की पुत्री। सुपर्ण की बहन। सगर की रानी। साठ हजार पुत्रों की माता।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।१५६
भाग० ६।८।६

सुमति (४)

चन्द्र (पौरव) वंश। सुपार्श्व का पुत्र। सन्नतिमान् का पिता।

भाग० ६।२१।२८
विष्णु० ४।१६।१३

सुमना

भरत-कुल में मधु की रानी। वीरव्रत की माता।

भाग० ५।१५।१५

सुमाली

नन्दवंश। महापद्म के आठ पुत्रों में से एक। कहा गया है कि महापद्म के सभी पुत्र पृथ्वी पर १०० वर्ष तक शासन करेंगे।

भाग० १२।१।११

सुमित्र (१)

ऐक्ष्वाकु वंश का अन्तिम राजा।

ब्रह्माण्ड० ३।७४।१०६, २४४
वायु० ६६।२६०

सुरथ (१)

पौरव वंश की ३४ वीं पीढ़ी में। जनमेजय का पुत्र।

वायु० ६६।२२६

सुरथ (२) — चन्द्र का पुत्र। विदूरथ का पिता।

वायु० ६६।२२०
विष्णु० ४।२०।२
भाग० ९।२२।६

सुराष्ट्र (सुराष्ट्राः) — एक देश।

भाग० ३।१।२४
मत्स्य० ११३।७२

सुवर्णरोमन् — निमि वंश की २० वीं पीढ़ी में। महारोमा का पुत्र। ह्रस्वरोमा का पिता।

वायु० ८९।१४
विष्णु० ४।५।१२

सुनर्मा (सुधर्मा) — चंद्र (पौरव) वंश। द्विमीढ़ शाखा। दृढ़नेमि का पुत्र। मत्स्य० में पाठ सुधर्मा है। सार्वभौम का पिता।

मत्स्य० ४९।७१
वायु० ९९।१८५

सुविभु — चंद्र (पौरव)वंश। काशिराज की १६ वीं पीढ़ी में। विभु का पुत्र। सुकुमार का पिता।

विष्णु० ५।८।१६

सुवीर (सुनीथ) — चंद्र (पौरव) वंश। द्विमीढ-शाखा। क्षेम (क्षेम्य, भाग०, विष्णु०) का पुत्र। रिपुंजय (नृपंजय, वायु० विष्णु०) का पिता।

विष्णु० ४।१९।१५
वायु० ९९।१९३
भाग० ९।२१।२९

सुव्रत (भुवत, अणुव्रत) चंद्र (पौरव) वंश । बार्हद्रथ शाखा । क्षेम (क्षेम्य, विष्णु०) का पुत्र । विष्णु० के अनुसार धर्म का पिता । राज्यावधि ६४ वर्ष । वायु० में पाठ भुव्रत और मत्स्य० मे पाठ अणुव्रत है ।

विष्णु० ४।२३।२
वायु० ९९।३०२
मत्स्य० २७०।२८

सुशर्मा कण्व-वंश । पीढ़ी क्रम ४ । कण्ववंश का अन्तिम राजा । राज्यावधि १० वर्ष । नारायण का पुत्र । शिशुक (शिमुख, सिन्धुक) ने उसका वध कर अपना राज्य स्थापित किया । भाग० के अनुसार उसका सेवक (वृषल) उसे मारकर स्वयं राजा बन बैठा । उसके बाद उसका भाई कृष्णराजा हुआ ।

वायु० ९९।३४६–४८
विष्णु० ४।२४।१२
मत्स्य० २७३।१–२
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१५९–६०
भाग० १२।१।२०

सुशान्ति चंद्र (पौरव) वंश । उत्तर-पाञ्चाल शाखा । वंश पीढ़ी क्रम संख्या २ । शान्ति (नील, मत्स्य०) का पुत्र । भाग० तथा विष्णु० के अनुसार नील का पौत्र ।

भाग० ९।२१।३०–३१
विष्णु० ४।१९।१५
मत्स्य० ५०।१

सुशीला
कृष्ण की रानियों में से एक।
मत्स्य० ४७।१४
वायु० ९६।२३४

सुश्रुव
निमिवंश की ४५ वीं पीढ़ी में सुभाष का पुत्र।
पार्जिटर की वंशावली के अनुसार श्रुत का पुत्र। जय का पिता।
विष्णु० ४।५।१२

सुश्रम (१)
बृहद्रथ-वंशज एक राजा, जिसने ६८ वर्ष तक राज्य किया।
वायु० ३।७४।१।८

सुश्रम (२)
बृहद्रथ-वंश। धर्म का पुत्र। दृढसेन का पिता।
विष्णु० ४।२३।३

सुषेण (१)
वसुदेव और देवकी के पुत्रों में से एक।
भाग० ६।२४।५४

सुषेण (२)
यादव वंश। वृष्णि-शाखा। कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र।
विष्णु० ५।१२८।२
वायु० ९६।२३७
भाग० १०।६१।८

सुषेण (३)
वृष्णिमान् का पुत्र। सुनीथ का पिता।
विष्णु० ४।२१।३

सुहोत्र (१)

पौरव वंश की २६ वीं पीढ़ी में बृहत्क्षत्र का पुत्र। हस्ति का पिता।

विष्णु० ४।१९।१०

सुहोत्र (२)

चंद्र (पौरव) वंश। सुधनुस् (सुधन्वा) का पुत्र। च्यवन का पिता। देखिए, सुधनु।

वायु० ९९।२१८

विष्णु० ४।१९।२९

सुहोत्र (३)

चंद्र (पौरव) वंश। कान्यकुब्ज शाखा। अमावसु की चौथी पीढ़ी में। काञ्चनप्रभ (काञ्चन, विष्णु०) का पुत्र।

विष्णु० ४।७।२

वायु० ९१।५३

हरिवंश २७।४

सूदाध्यक्ष

राजा के महानस (भोजनालय) का अध्यक्ष। भोजन बनाने के लिए नियुक्त सूदों का वह निरीक्षण करता था। सूदाध्यक्ष के लिए यह आवश्यक था कि वह पाकशास्त्र का विशेष ज्ञाता हो, कुशल एवं स्वच्छ हो, किसी दूसरे के बहकाने में न आसके। वैद्यक शास्त्र में भी निपुण हो। मत्स्य० में उसे "चिकित्सक विदाम्वर" कहा गया है। विष्णु ध० में कहा गया है कि चिकित्सक के कहने के अनुसार उसे काम करना चाहिए। उसे इस बात का सर्वदा ध्यान रखना चाहिए कि किस अवस्था में राजा के लिये कौन सा भोजन लाभदायक होगा, तथा रसोइये ने कोई विष या ऐसी वस्तु तो नहीं मिलाई, जो राजा के लिए प्राणघातक अथवा स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने वाली हो।

विष्णु० ध० २।२४।२२-२३

मत्स्य० २१५।२२-२३

सृञ्जय (१) चंद्र (पौरव) वंश । आनव शाखा । अनु की चौथी पीढ़ी में । कालानल का पुत्र । पुरञ्जय का पिता ।

विष्णु० ४।१८।१
वायु० ६६।२४

सृञ्जय (२) सूर्य (मानव) वंश । नाभागनेदिष्ट शाखा । धूम्राश्व का पुत्र । सहदेव का पिता ।

वायु० ८६।१६
विष्णु० ४।१।२०
भाग० ६।२।३४

सृञ्जय (३) शूर और मारिषा का पुत्र । उसकी पत्नी का नाम राष्ट्रपाली था । वृष आदि का पिता ।

भाग० ६।२४।२६ तथा ४२

सृञ्जय (४) [सञ्जय] चन्द्र (पौरव) वंश । भर्म्याश्व (हर्यश्व, विष्णु०) का पुत्र । देखिए पञ्चालाः ।

विष्णु० ४।१६।१५
भाग० ६।२१।३२–३३

सेतु चद्र (पौरव) वंश । बभ्रु का पुत्र । आरद्वान् का पिता । वायु० के अनुसार वह द्रुह्य का पुत्र तथा अरुद्ध का पिता है ।

विष्णु० ४।१७।१
वायु० ६६।७

सेनजित् (१) चद्र (पौरव) वंश । दक्षिण पाञ्चाल शाखा की छठी पीढ़ी में । विश्वजित् का पुत्र । मत्स्य० में वह अश्वजित् का पुत्र माना गया है ।

विष्णु० ४।१६।१२
मत्स्य० ४६।४६

सेनजित् (२) [सेनाजित्] चंद्र (पौरव) वंश। बार्हद्रथ शाखा। बृहत्कर्मा का पुत्र। श्रुतञ्जय का पिता। राज्यावधि ५० वर्ष।

वायु० ६६।३००
मत्स्य० २७१।२३
विष्णु० ४।२३।३

सेनापति राजा की सहायक सम्पत्ति के विवरण में सेनापति को प्रमुख स्थान दिया गया है। पुराणों की परम्परा के अनुसार ब्राह्मण तथा क्षत्रिय ही सेनापति का स्थान ग्रहण कर सकते थे। सेनापति की निम्नलिखित विशेषताएँ पुराणों में दी गई हैं—उसे उच्च कुल का तथा शील सम्पन्न होना चाहिए। वह धनुर्विद्या में निष्णात हो, हस्तिशिक्षा तथा अश्वशिक्षा में कुशल और वाणी में मधुर हो। कृतज्ञ तथा कार्य करने में शूर, व्यूहरचना के विधान को जानने वाला हो।

मत्स्य० २१४। अ०

सैन्धव (१) सिन्धु (देश) का राजा।

भाग० २।१५।१६

सैन्धव (२) (सैन्धवान्) सिन्धु नदी द्वारा सिंचित एक जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१८।४८

सोमक भाग० के अनुसार सुदास का पुत्र। विष्णु० के अनुसार सुदास का पौत्र। भाग० के अनुसार सुदास का सोमक भाई है। सोमक के सौ पुत्र थे, जिनमें

ज्येष्ठ बन्धु था। देखिए, सहदेव।

विष्णु० ४।१९।१८
वायु० ९९।२०८
भाग० ९।२२।१

सोमदत्त (१)

सूर्य (मानव) वंश। नाभागनेदिष्ट कुल। पीढ़ी-क्रम संख्या ११। कृशाश्व का पुत्र। जनमेजय (वायु०) का पिता। भाग० के अनुसार सुमति का पिता।

वायु० ८६।२०
वही ४।१।१८
भाग० ९।२।३५

सोमदत्त (२)

वाल्हीक का पुत्र। भूरि आदि तीनों पुत्रों का पिता।

भाग० ९।२२।१८

सोमवित् [सोमाधि, सोमापि]

चंद्र (पौरव) वंश। मगध-शाखा। सहदेव का पुत्र। जरासन्ध का पौत्र। मत्स्य० में पाठ सोमवित्, वायु० में सोमाधि तथा विष्णु० में सोमापि है।

वायु० ९९।२२०
विष्णु० ४।४।१९
मत्स्य० ५०।३१
वही २७०।१९

सौदास

ऐक्ष्वाकु वंश। सुदास का पुत्र। उसे मित्रसह,(कल्माषपाद) भी कहा गया है। उसकी रानी का नाम मदयन्ती था, जिससे वसिष्ठ द्वारा उसका नियोगजन्य अश्मक नामक पुत्र हुआ।

ब्रह्माण्ड० ३।६३।१७६-१७७

भाग० ९।१८, ३८ ४४

सौवीर (सौवीराः) एक देश का नाम।

भाग० ३।१।२४

वही० १।१०।३५

वायु० ४५।१६

स्कन्दस्वाति एक आन्ध्र राजा, जिसने सात वर्ष तक राज्य किया।

मत्स्य० २७२।६

स्कन्धस्तम्भि आन्ध्रवंश का पाँचवाँ राजा। राज्यकाल १८ वर्ष।

पार्जिटर, डि० आफ० दि० क० एज, पृ० ३६

स्थपति भवन-निर्माण, दुर्ग-रचना, मंदिर-निर्माण आदि कार्यों का मुख्य कर्मचारी। उसीकी अध्यक्षता में ये सब कार्य होते थे। इस पद पर वही व्यक्ति नियुक्त होता था, जो वास्तुशास्त्र में निपुण हो।

मत्स्य० २५४।१६

विष्णु० ध० २।२४।१६

अग्नि० २२०।७

स्मर देवकी का पुत्र, जो कंस द्वारा मारा गया।

भाग० १०।८५।५१ तथा ५६

स्वर्वीथि

वत्सर की रानी । पुष्पार्ण की माता ।

भाग० ४।१३।१२

स्वाहि

यादव वंश का चतुर्थ राजा । वृजिनीवान् का पुत्र ।

विष्णु० ४।११।१

स्वाति

आन्ध्र वंश का ६ वाँ राजा । मेघस्वाति का पुत्र । राज्यावधि १८ वर्ष ।

मत्स्य० २७३।५

स्वातिवर्ण

आन्ध्र वंश । कुन्तल स्वातिवर्ण के बाद आने वाला राजा । राज्यावधि एक वर्ष ।

मत्स्य० २७३।८

स्वरथ

ज्योतिष्मान् का पुत्र ।

वायु० ३३।२४

स्तिमित्र (स्तिमित्राः) महाभारत० में सौद स्तिमित्रों का उल्लेख है ।

महाभारत० ३।७४।१८७

हंसभग (हंसभगाः) एक प्राच्य देश।

ब्रह्माण्ड० २।१६।५१

हंसमार्ग (हंसमार्गाः) एक पर्वताश्रयी जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।६६

हय शतजित् के तीन पुत्रों में से एक। हैहय का भाई।

विष्णु० ४।११।३
वायु० ६४।४

हयग्रीव दनु के ६१ पुत्रों में से एक। उसने वृत्र और इन्द्र के संग्राम में वृत्रासुर का साथ दिया।

भाग० ६।६।३०
वही ६।१०।१६
वायु० ६८।१०

हरहा रैवत मनु के पुत्रों में से एक।

ब्रह्माण्ड० २।३६।६३

हरि [हरित] रुक्मकवच के पाँच पुत्रों में से एक। उसके पिता ने विदेह में उसको राजा बनाया। विष्णु० में पाठ हरित है।

ब्रह्माण्ड० ३।७०।२६
वायु० ६५।२३–२६
मत्स्य० ४४।२३–२६
विष्णु० ४।१२।४

हरिताश्व

सूर्यवंश। सुद्युम्न के तीन पुत्रों में से एक।

मत्स्य० १२।१६-१८

हरिवर्ष (१)

आग्नीध्र और पूर्वचित्ति के नव पुत्रों में से एक, जिनमें एक हिरण्मय भी था। आग्नीध्र के ये सभी पुत्र जम्बूद्वीप के पृथक् पृथक् वर्षों (देखो) के राजा हुए।

भाग० ५।२।१९-२१
ब्रह्माण्ड० २।१४।४६
वायु० ३३।३६

हरिवर्ष (२)

जम्बूद्वीप के नव वर्षों (देखो) में से एक।

भाग० ५।१६।९

हरिश्चन्द्र

ऐक्ष्वाकु वंश। सत्यव्रत (त्रिशंकु) का पुत्र। उन्होंने राजसूय यज्ञ किया था। उन्हें सम्राट् कहा गया है। उनके पुत्र का नाम रोहित (रोहिताश्व, विष्णु०) था। ऐतरेय ब्राह्मण में हरिश्चन्द्रोपाख्यान है जिसमें राजा हरिश्चन्द्र की कथा विस्तृतरूप से दी गयी है।

भाग० ९।७।११
ब्रह्माण्ड० ३।६३।११४

हर्यश्व

पृथु और अर्चि के पाँच पुत्रों में से एक।

भाग० ४।२४।४

हर्यङ्ग

चन्द्र (पौरव) वंश । तितिक्षु द्वारा प्रवर्तित पूर्वी आनव शाखा । अनु की २३ वीं पीढ़ी में । तितिक्षु की १५ वीं पीढ़ी में । चम्प का पुत्र तथा भद्ररथ का पिता ।

वायु० ९९।१०७-१०९
विष्णु० ४।१८।५

हर्य्यश्व (१)

वैवस्वत मनु का वंश । रघु के बाद १३ वाँ राजा । दृढाश्व का पुत्र । निकुम्भ का पिता ।

विष्णु० ४।२।१३
वायु० ८८।६२
भाग० ९।६।२४
ब्रह्माण्ड० ३।६३।६१

हर्य्यश्व (२)

निमि वंश का ११ वाँ राजा । धृष्टकेतु का पुत्र । मरु का पिता ।

वायु० ८९।१०
विष्णु० ४।५।१२
ब्रह्माण्ड० ३।६४।१०
भाग० ९।१३।१५

हर्य्यश्व (३)

ऐक्ष्वाकु वंश का २५ वाँ राजा । विष्णु० के अनुसार अनरण्य का पौत्र तथा पृषदश्व का पुत्र । ब्रह्माण्ड०, भाग० तथा वायु० के अनुसार त्रसदस्यु का पौत्र तथा अनरण्य का पुत्र । भाग० में हर्य्यश्व के पुत्र का नाम अरुण है, किन्तु विष्णु० में वसुमना पुत्र माना गया है ।

वायु० ८८।२६।७६
विष्णु० ४।३।१३
भाग० ९।७।४
ब्रह्माण्ड० ३।६३।७५

हर्ष

कृष्ण और मित्रवृन्दा का पुत्र।

भाग० १०।६१।१६

हली (हलिन्)

बलराम का नाम।

ब्रह्माण्ड० ३।७१।६६

हवि

चाक्षुष मनु का पुत्र।

मत्स्य० ४।४१

हविर्धान

मानव वंश। ध्रुव-कुल। पृथु का पौत्र। शिखण्डिनी (नभस्वती, भाग०) और अन्तर्धान का पुत्र। उसकी पत्नी आग्नेयी धिषणा थी। भाग में उसकी पत्नी का नाम हविर्धानी है, जिससे छः पुत्र हुए।

मत्स्य० ४।४५
विष्णु० १।१४।१
ब्रह्माण्ड० २।३७।२३
वायु० ६३।२२
भाग० ४।२४।५ तथा ८

हविर्धानी

देखिए, हविर्धान।

हव्य

स्वायम्भुव मनु का पुत्र।

वायु० ३३।१८
वही ३३।६
मत्स्य० ९।५

हस्तिन् पौरव वंश की २७ वीं पीढ़ी में। भरत-कुल बृहत्क्षत्र का पुत्र। वायु० तथा विष्णु० के अनुसार सुहोत्र का पुत्र। हस्तिन् ने हस्तिनापुर बसाया।

विष्णु० ४।१९।१०
भाग० ९।२१।१०
वायु० ९९।१६५

हस्तिनापुर देखिए, हस्तिन्।

हारीत (१) [हरित] यौवनाश्व का पुत्र। वायु० के अनुसार युवनाश्व का पुत्र। वायु० तथा विष्णु में पाठ हरित है।

वायु० ८८।७३
विष्णु० ४।३।५
भाग० ९।७।१

हारीत (२) [हारीताः] हरित-वंश में उत्पन्न होने वाले जो सभी क्षीर क्षात्रोपेत ब्राह्मण तथा आङ्गिरस हुए।

वायु० ८८।७७
विष्णु० ४।३।५

हाल एक (आन्ध्र) राजा जिसने ५ वर्ष तक राज्य किया। हाल को गाथा-सप्तशती का रचयिता माना जाता है।

मत्स्य० २७३।८
ब्रह्माण्ड० ३।७४।१६५

हिरण्यकशिपु — एक दैत्य। कश्यप और दिति का पुत्र। उसकी पत्नी का नाम कयाधु था। प्रह्लाद का पिता। हिरण्याक्ष का भाई। उसने अपनी भुजाओं के बल से तीनों लोकों को अधीन कर लिया था।

वायु० ७०।१
भाग० ६।१८।१२
वही ७।१।४१
वही ३।१७।१८-२०
मत्स्य० ८।४
वही ४७ अ०

हिरण्यनाभ (कौशल्य) — ऐक्ष्वाकु वंश में एक राजा।

वायु० ८८।११-२५

हिरण्यरेता (हिरण्यरेतम्) — विश्वकर्मा की पुत्री बर्हिष्मती तथा प्रियव्रत के दस पुत्रों में से एक।

भाग० ५।१।२५

हिरण्यरोमा — एक लोकपाल का नाम।

ब्रह्माण्ड० २।११।१६

हिरण्याक्ष — एक दैत्य। हिरण्यकशिपु का भ्राता। वह विष्णु (वराह) के द्वारा मारा गया। देखिए, हिरण्यकशिपु।

भाग० ३।१७।१८-२१
वही ३।१८ अ०

हूण (हूणाः) एक जाति। भरत ने अपनी दिग्विजय के समय हूणों का संहार किया।[1] मत्स्य० में १६ हूणों का उल्लेख है।[2]

१—भाग० ६।२०।३०

२—मत्स्य० २७३।१६

हूणदर्भ एक प्राच्य जनपद।

ब्रह्माण्ड० २।१६।५२

हेम चन्द्र (पौरव) वंश। आनव शाखा। अनु की ११ वीं पीढ़ी में। तितिक्षु की दूसरी पीढ़ी में। उशद्रथ का पुत्र। सुतपा का पिता।

वायु० ६६।२५–२६

विष्णु० ४।१८।१

हेमचन्द्र सूर्य (मानव) वंश। नाभागनेदिष्ट कुल। पीढ़ी-क्रम संख्या २५। विशाल का पुत्र।

वायु० ८६।१७

विष्णु० ४।१।१८

भाग० ६।२।३४

हैम-भौमक (हैम-भौमकाः) भद्रवर्ष में स्थित एक जनपद।

वायु० ४३।२८

हैमवत (वर्ष) भारत (वर्ष) का नाम।

ब्रह्माण्ड० २।१५।३१

वायु० ३४।२८

हैरण्यवत

एक वर्ष (देश) का नाम, जिसमें हैरण्यवती नदी बहती है। वहाँ के लोग महाबली, तेजस्वी तथा दीर्घायु होते हैं। वहाँ एक लकुच नामक वृक्ष है, जिसके फल के रस का पान करने के कारण वे स्वस्थ रहते हैं।

ब्रह्माण्ड० २।१५।६६-६८

हैहय (१)

यदु का प्रपौत्र। शतजित के तीन पुत्रों में से एक। हैहय वंश का प्रवर्तक। विष्णु० के अनुसार धर्मनेत्र का पिता। वायु० के अनुसार धर्मतन्त्र का पिता।

विष्णु० ४।११।३

वायु० ९४।५

हैहय (हैहयाः) (२)

हैहय वंश के राजा। इनकी संख्या भिन्न भिन्न है। ब्रह्माण्ड० में एक स्थान पर उनकी संख्या १०० है। "शतं नामाः स हैहया.[१]।" दूसरे स्थान पर ये शिशुनागों के समकालीन २४ राजा माने गये हैं।[२] मत्स्य० में इनकी संख्या २८ है।

१—ब्रह्माण्ड० ३।७४।२१७

२—भाग० १२।१।११

३—मत्स्य० २७१।१४

ह्रस्वरोमा

निमि वंश का २१ वाँ राजा। स्वर्णरोमा का पुत्र। सीरध्वज का पिता।

वायु० ८९।१८

विष्णु० ४।५।१२

ह्राद

हिरण्यकशिपु के चार पुत्रों में से एक। ह्राद की पत्नी का नाम धमनी था, जिससे दो पुत्र वातापि और इल्वल हुए। देवताओं और असुरों के युद्ध में वह असुरों का नायक था।

भाग० ६।१८।१३, १५

विष्णु० १।२१।२

परिशिष्ट

ऋच (१) पौरव वंश। २६ वीं पीढी में। अजमीढ और धूमनी का पुत्र। संवरण का पिता।

वायु० ६६।२७४

मत्स्य ५०।१९

भाग० ६।२२।३

ऋक्ष (२) [ऋष्य] चन्द्र (पौरव) वंश। ४२ वाँ राजा। देवातिथि का पुत्र। भीमसेन का पिता। भाग० में पाठ ऋष्य है।

वायु० ६६।२३४

विष्णु० ४।२०।३

भाग० ६।२२।११

ऋक्ष (३) [चक्षु, पृथु, अर्क] चन्द्र (पौरव) वंश। उत्तर पाञ्चाल शाखा। पीढी क्रम संख्या ४। पुरुजानु का पुत्र। विष्णु० में पुरुजानु का पुत्र चक्षु है। मत्स्य० में पृथु तथा भाग० में पुरुज का पुत्र अर्क है।

वायु० ६६।१६५

विष्णु० ४।१६।१५

मत्स्य० ५०।३

भाग० ६।२१।३०

ऋक्षराज जाम्बवान् का नाम।
ब्रह्माण्ड० ३।७।१८
वही ३।७१।१५

ऋजुदाय वसुदेव और देवकी का पुत्र, जो कंस द्वारा मारा गया।
ब्रह्माण्ड० ३।७१।१७८

ऋत (१) निमि-वंश। विजय का पुत्र। सुनय का पिता।
वायु० ८९।२२
विष्णु० ४।५।१२
ब्रह्माण्ड० ३।६४।२२
भाग० ९।१३।२५

ऋत (२) चक्षु मनु और नड्वला के बारह पुत्रों में से एक।
भाग० ४।१३।१६

ऋतध्वज पौरव वंश। काशिराज के कुल में प्रतर्दन का दूसरा नाम। दिवोदास (द्युमान्) का पुत्र। देखिए, दिवोदास (१)।
भाग० ९।१७।६
विष्णु० ४।८।५-७
वायु० ९२।६३

ऋतुपर्ण ऐक्ष्वाकु वंश। अयुतायु का पुत्र। विष्णु० के अनुसार अयुताश्व का पुत्र। तथा सर्वकाम का पिता। यह द्यूतक्रीडा में कुशल था। यह नल का मित्र था। उसने नल को द्यूत (जुए में पासा फेंकना) सिखाया और बदले में नल से उसने अश्वविद्या सीखी।
विष्णु० ४।४।३८
वायु० ८८।१७३-१७८
ब्रह्माण्ड० ३।६३।१७३-१७८

भाग० ६।६।१७
मत्स्य० १२।४६
ब्रह्माण्ड० ६।८०

ऋतेयु

पौरव वंश की १६ वीं पीढ़ी में। रौद्राश्व तथा घृताची नाम की अप्सरा से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक। रन्तिभार का पिता।

विष्णु० ४।१६।१-२
भाग० ६।२०।४-५

ऋषभ (१)

महाराज नाभि और मरुदेवी का पुत्र। इन्द्र की दी हुई कन्या जयन्ती के साथ उन्होंने विवाह किया, जिससे उनके १०० पुत्र उत्पन्न हुए। उन पुत्रों में महायोगी भरत ज्येष्ठ तथा सबसे अधिक गुणसम्पन्न थे। भरत के नाम से ही भारतवर्ष नाम पड़ा, जिसका पहले नाम ब्रह्माण्ड०, विष्णु० तथा वायु० के अनुसार दक्षिण में स्थित अजनाभ वर्ष (हिमाह्व वर्ष) था। महाराज ऋषभ ने विविध यज्ञ किये थे। उनके शासनकाल में प्रजा अत्यन्त सुखी थी।

भाग० ५।४ अ०
भाग० ५।७।३
ब्रह्माण्ड० २।१४।६०-६२
भाग० २।७।१०
विष्णु० २।१।२७
वही २।१।२८-३३
वायु० ३३।५०-५२

ऋषभ (२)

चन्द्र (पौरव वंश। बृहद्रथ शाखा। बृहद्रथ की तीसरी पीढ़ी में। कुशाग्र का पुत्र। सत्यहित (पुष्पवान्, विष्णु०) का पिता।

वायु० ६६।२२३
विष्णु० ४।१६।१६
मत्स्य० ५०।२८
भाग० ६।२२।६

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	२०	परिक्षित	परीक्षित
६	७	स्यमतक पचक	स्यमन्तपंचक
१०	३	स्वयंम्बर	स्वयंवर
१०	१३	१–विष्णु४।१०। १३	विष्णु० ४।५।१२
१०	१४	२–वायु० ६६। २२	×[1]
१०	१५	३–भाग० ६। १४। २३–२४	भाग० ६। १३। २३–२४
११	७	नहुला	नह्वला
१२	१२	पित	पिता
१५	४	सहस्त्र	सहस्र
१६	२६	६–वायु० ६४।२३	६–वायु० ६४।२६
१७	१५	द्वारिका	द्वारका
१७	१६	द्वारिका	द्वारका
१७	२७	अर्जुन	अर्जुन
१८	१४	द्रोपदी	द्रौपदी
१८	१५	द्रोपदी	द्रौपदी
१८	१६	द्रोपदी	द्रौपदी
१८	१८	का	की
१८	१९	द्वारिका	द्वारका
१९	३	कि	×
२४	१३ (के बाद)	(छूट गया है)	मत्स्य० २१४।४०
२४	,,	,,	अग्नि० २७०।८
२४	,,	,,	विष्णु० अ० २। २४।८
२५	२	माहक	×

[1] जिस शब्द के सामने यह चिन्ह है उस शब्द को अनावश्यक छपा हुआ समझना चाहिए।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५	७	उदयन के बाद राजा हुआ।	उदयन, (विष्णु०) दुर्दमन् (भाग०) दयन, (मत्स्य०) का पुत्र।
२६	२३	प्लाचद्वीप	प्लक्षद्वीप
२६	२४	ब्रह्माण्ड०२।१४।३६,१६,१७	ब्रह्माण्ड०२।१४। १६ तथा ४१
२७	६	आवर्त	आनर्त
२७	६	विष्णु० ६।४।१, ६३-४	×
२७	१०	मत्स्य० १२।२१।२	मत्स्य० १२। २१-२३
२६	७	दीक्षितर	दीक्षितार
२६	२५	ब्रह्माण्ड० ३।७१।१८	×
३०	—	आमीर	आमीर
३०	१०	बाहु	बाहु
३१	—	उग्र, उक	×
३१	२५	२-वायु० ६६ ।१६२	२-वायु० ६६। १८१-१८२
३८	१०	शिवि	शिवि
४०	२	१-भाग ६। २६। १३	भाग० ६। २३। १३
४०	१०	त्रिसक्री	त्रिसक्री
४०	१४	भाग० ६। २३	भाग० ६। २४। १६
४२	२५	१	×
४२	२६	क्रोष्ट	क्रोष्टु
४३	६	सोदार	सौदास
४३	१५	प्रादुर्भाव	प्रादुर्भाव
४४	११	ब्रह्मण	ब्राह्मण
४४	१५	पारद	पारद
४५	२	सुदेष्ण	सुदेष्णा
५२	२३	राज्ञा	राज्य
५५	२१	भानु	स्वयंभानु
५६	१५	द्वारिका	द्वारका
६४	१४	अनर्त	आनर्त

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६५	—	कुशस्थनो	कुशस्थली
७४	२	का द्वारका	द्वारका
७६	२१	न्यायिदका	लायिदक्य
८३	५	महाएड० ३।१४।१३०	महाएड० ३।७४। १३०
८५	—	खड्गधारी	खड्गधारी
८६	३	नामागोनेदिष्ट	नाभागोनेदिष्ट
८६	७	तुयो	तुर्गो
८६	८	तूणो	तूणो
६१	८	सारायण	नारायण
६२	१	द्वारिका	द्वारका
६५	७	द्रुह	द्रुह्यु
१००	—	दएडमी शान्तिकर्ण	चएडभी. शान्तिकर्ण
१००	६	मत्स्य० २७३। १५	मत्स्य० २७३। १५
१००	१३	चम्पा	चम्प
१०२	—	नाद	चाह
१०२	१२	वृष्णिशाला	वृष्णिशाला
१०३	३	वृष्णिशाला	वृष्णिशाला
१०५	१०	बुन्देलखण्ड	बुन्देलखण्ड
१०६	४	उनके	उसका
१०६	८	द्वारिका	द्वारका
११५	२०	के राजाओं के १४	के १४ राजाओं के
१२१	—	दएडभी॰ शातकर्णी	दएडभीः शातकर्णी
१२४	११	२-विष्णु० ४।१८	२-विष्णु० ४। १८। १-४
१२५	८	गया है	गया है[१] ।
१३३	२४	भगादे	भगादे
१३३	२८	मन	मनु
१३७	१८	वायु० ६६।१५२	वायु० ६६। १४२
१४२	६	द्रोनदी	द्रौपदी
१४६	३	'तरण्	दीर्घतरण्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५१	५	प्रवातत	प्रवर्तित
१५६	७	(छूट गया है)	शिशुनाग वंश। उदयी का पुत्र
१६०	६	वेंचित्ति	पूर्वचित्ति
१६२	१६	विष्णु० ४। २२। ११	विष्णु० ४। २०। ११
१६७	६	सुग्ववाल	सुग्रावल
१६७	१०	विष्णु० घ०	विष्णु०
१६६	१७	नील	भेद
१६४	१७	(छूट गया है)	ऐक्ष्वाकुवंश
१६४	२४	क्रोष्टु	क्रोष्टु
१६६	२	पृथुरुक्म का पुत्र।	पृथुरुक्म का पिता।
१६६	१६	प्रकृतिप	×
२०८	—	द्योतन	प्रद्योतन
२०८	१८	मत्स्य० २७२। १	मत्स्य० २७१। १
२११	६	प्रयव्रत	प्रियव्रत
२१२	—	प्रस्ताविं	प्रस्तावि
२२६	१३	वद्ध्यूयश्व	वद्ध्यूश्व
२३०	१३	१—भाग० ६।१।११६—१७	१—भाग०६। १८। १७—१८
२३३	१३	वानर	वानर
२४६	१६	नागजिति	नाग्नजिति
२५४	४	असमञ्जरी	असमञ्जस
२५८	१५	अससर	अवसर
२७२	७	कार्तवीर्या	कार्तवीर्य
२७४	२	१० आ	१० अ
२६१	१३	संहारकत	संहारकर्ता
२६३	—	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र
३०१	५	बीतिहोत्र	वीतिहोत्र
३०८	१	मित्रबिन्द	मित्रविन्द

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१०	—	मृष्टिक	मुष्टिक
३१२	५	मूवीप	मूवीप
३१७	१३	दराबवंश	नन्दराजवंश
३२०	११	मणिधान्यों	मणिधान्यकों
३२६	८	पृष्टि	पृष्टि
३३०	२६	नाघयी	नाघयो
३३३	३	वायु	वायु
३३४	७	व्याकुल	व्याकुल
३३८	८	रुम्रक (रुम्रकान्)	रुम्रक (रुम्रकान्)
३३६	—	रन्तिनरि	रन्तिर्नार
३३६	११	वायु	वायु
३४०	८	ऋच्रराज	ऋच्रराज
३४०	१०	दाशरयि	दाशरथि
३४०	१६	राबकुमार	राज्यमार
३४१	१७	तपगा	तपसा
३४४	१०	राबर्षि	राजर्षय
३५६	५	रुक्ममग्नी	रुक्ममाली
३५८	१४	रूपन्द्गु	रूपद्गु
३६१	२१	कुल	कुल
३६४	१४ तथा १६	गौरम (१) गौरस (२)	गौरम
३६६	१४	लद्दला	×
३६७	११	न्ध्रवंश	आन्ध्रवंश
३७३	४	यज्ञमित्र	यज्ञमित्र
३८२	१२	विष्णु	विष्णु०
३८५	१	मन्तग्वर	मन्वन्तर
३८७	१०	वायवंणी	×
३८८	१५	विकम्भन	विकम्पन
३८६	१६	प्रारमेतेद	प्रारमेनेद

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३६१	११	धृतराष्ट्र	धृतराष्ट्र
३६१	११	पाण्डु	पाण्डु
४०२	८	विष्णु	विष्णु०
४०२	१०	वैदेश	×
४०४	१७	वायु	वायु०
४०५	६	खट्वाङ्ग	खट्वाङ्ग
४०६	१६	बम्ब० संस्कृति	(बम्ब० संस्क० गो० ना०)
४१७	६	शतजित	शतजित्
४१८	१	नड्न	नड्वला
४१६	१४	सुबाहु	सुबाहु
४२३	१४	जरासंघ	जरासंध
४२७	४	शतधुम्न	शतद्युम्न
४२८	१२	शूकधान्य	शूकधान्य
४२८	२०	ब्रह्माण्ड	ब्रह्माण्ड०
४२८	२०	विष्णु	विष्णु०
४३०	१३	शैशुवाक	शैशुनाक
४३०	१३	शिशुनाक्	शिशुनाक
४३४	१५	मानुश्चन्द्र	×
४३५	१२	तल्लव	×
४३६	३	शिनी	×
४२१	८	चत्ररथ	चित्ररथ
४४३	१८	यया	गया
४४६	६	सहनवाले	सहनेवाले
४४६	१३	सास्वन	सात्वन
४५०	३	अतथ्य	और मैं पहले के तथ्य पढ़िये
४६२	१२	ज्ह	×
४६२	१२	सुनर्मा	सुधर्मा
४७३	१	हर्यंत	×
४७३	१३	एतरेय	ऐतरेय
४७४	१	हर्यंक्ष	×